मेरे आध्यात्मिक लेख

(डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री जी के वैदिक ज्योतिष आध्यात्मिक गूढ़ लेखों का संग्रह)

सम्पादिका -श्रीमती कुसुम शास्त्री

SVSP -N-2019-02

मूल लेखक-डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

श्रीविद्यासाधना पीठ बहादुरगढ़, हरियाणा।

मूल्य-- पठन ,आचरण एवं प्रचार मात्र।

उद्देश्य-- भारतीय संस्कृति, संस्कृत एवं वैदिक ज्ञान रक्षण।

सम्पादकीय

यह ग्रंथ पूज्य गुरुदेव डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री जी के फेसबुक वॉल के लेखों का संग्रह है जो जिज्ञासुओं के हितार्थ एकत्रित कर प्रकाशित किया गया है। इसमें आध्यात्मिक,ज्यौतिष,तंत्र मंत्र साधना तथा देव पूजन आदि विषयों पर रोचक एवं वैदिक जानकारी दी गई है। यह सामग्री २०१८-१९ के १०७लेखों का संकलन है।गत वर्षों का संकलन भी यथाशीघ्र प्रकाशित किया जाएगा ताकि पाठकों को लाभ हो। यह लेख शास्त्री जी की गहन साधना, असीमित स्वाध्याय तथा भगवद्कृपा का परिणाम ही है जो बड़ी सरलता से सनातन वैदिक धर्म के मर्म को उद्घाटित कर दिया है। शास्त्री जी उच्च स्तरीय साधकों/संतों का पता लगते ही तुरंत उनसे मिलने पहुंच जाते हैं चाहे वे दिग-दिगंत में ही क्यों न हों।तथा दूसरी ओर अपने से मिलने के इच्छुक जिज्ञासुओं का भी सहर्ष घर पर स्वागत करते हैं। पाठक अपनी जिज्ञासा krishansanskrit@gmail.com पर साझा कर सकते हैं।तथा फेसबुक पर भी फालो करके जुड़ सकते हैं। https://www.facebook.com/krishan.chand.125

सभी का धन्यवाद।

श्रीमती कुसुम शास्त्री

विषयानुक्रम

१०३.जपमंत्र_से_जीवनमंत्र_प्रबल_है

१०४.साधकों_के_प्रति

१०५. यद्_पिंडे_तद्_ब्रह्माण्डे

१०६.लाभ_हानि_जीवन_मरण_जस_अपजस_प्रभु_हाथ

१०७. उमा_दारुयोषित_की_नांई।

१ स्वसुरक्षा

अब दहाड़ मार कर रोने से क्या होगा?? यह उनके साथ ज्यादा हो रहा है जिन्होने मानव के आदि पिता मनु जी के वचनों में श्रद्धा नही रखी । मनु जी ने तो स्पष्ट ही कह दिया था ।पर मुर्खों को कौन समझाए ।लगे मनु का ही विरोध करने। परन्तु सावधान.....

वेदों में भी स्पष्ट लिखा है----यद् मनुरब्रीद् तदमृतम्.....

मनु जी ने जो कहा है वह अमृत है। और अमृत कभी एक्पायर नही होता,वह आज भी देदीप्यमान सत्य है। मनु जी ने स्पष्ट कहा है --- न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति।

अर्थात् स्त्रियों को हमेशा संरक्षण की आवश्यकता है।और वह संरक्षण कौन दे????

इसका उत्तर भी वहीं साफ साफ लिखा है-- उसे बचपन में पिता ,युवावस्था में पति,और वृद्धावस्था में पुत्र संरक्षण प्रदान करें ।नही तो ये आदमखोर गिरे हुए चरित्र वाले ,नीच, अपने कुल को कलंकित करने वाले, हराम के पिल्ले,साधु संन्यासी,चाचा,ताऊ,चचेरे-ममेरे भाई,पडौसी,मित्र आदि आदि रूप धारण करके उस निर्बल स्त्री को कलंकित कर ही देंगें।

इस कांड से उसे उसके उक्त तीनों संरक्षक ही बचा सकते हैं।पर कैसे????

उसे अपने पास रखकर...।क्योंकि बताएं कि बाहर किसके सहारे आप उसे छोड़ रहे है।साधुओं के आश्रम में???

जिस साधु के पास स्त्रियां रहती हैं चाहे गुरूकुल के ही बहाने ...वह सच्चा साधु ही नही है।लड़कियों को वहीं शिक्षा के लिए भेजें जहाँ से वह रोज अपने घर आ सके।मनु जी ने तो यहाँ तक कहा है कि रात में,एकांत में पिता,भाई भी अपनी युवती पुत्री,बहन आदि के पास अकेला न रुकें।क्योंकि इंद्रियाँ बलवान होती हैं। बडों बडो़ को डुबो देती हैं।अतः पहले सावधान---- पीछे सिर न धुनें। इति शम्।

२. ग्रहण विशेष

आज शाम ग्रहण काल में घास काटना,दंत मंजन,शयन,भोजन,यात्रा,वस्त्र धोना,पुष्प तोड़ना,क्षौर कर्म,दूध दूहना इत्यादि काम न करें ।बालक,रोगी या अशक्त व्यक्ति तीन मुहूर्त्त पहले भोजन कर लें।मंत्र पुरश्चरण के इच्छुक साधक ग्रहण से पूर्व ही स्नान करके आसन बैठकर न्यासादि कर लें। फिर पूरे ग्रहण काल जपते रहें। समाप्ति पर स्नान करके यज्ञोपवीत बदलें ।फिर अगले दिन उस मंत्र का हवन तर्पणादि करें। ग्रहणकाल में गर्भवती औरतें अपनी गोद में नारियल रखें व ईश्वर का भजन करें। यद्यद्विदामहे गाय, भैंसादि भी गर्भावस्था में है तो उसे उठा दें ,सोने बैठने न दें। इति शम्।

३. पुत्र-रत्न

पुत्र दो प्रकार के होते हैं ।एक नाद से उत्पन्न दूसरा बिंदु से उत्पन्न। वास्तव में सृष्टि नाद और बिंदु का ही खेल है। जिसने नाद और बिंदु को जान लिया समझो वह पार हो गया । यह ज्ञान सद्गुरू गम्य ही है।सारा ध्वनि विज्ञान नाद में समाहित है जिसका मूल ओंकार है।और बिंदु का विस्तार समस्त जीवविज्ञान है।बिंदु से उत्पन्न संतान अपनी संतति है और नाद (मंत्र)जिसको प्रदान करें वह शिष्य भी संतान के समान ही है । अतः जन्मदाता माता पिता और मंत्रज्ञानदाता गुरूजन ये पिता की श्रेणी में ही आते हैं । इनका ऋण हम कभी नही चुका सकते। इति शम्।

४.मंथन

हम उगते सूरज से लेकर सूर्यास्त तक और कुछ तो रातों में भी जागकर अपने शव पोषण की दुविधा में ही उलझे रहते हैं।और ज्यादा कहूँ तो समझो पाँच सात परिजनों के शवों के भविष्य प्रबन्धन में ही हम जीवनामृत को गवाँ रहे हैं। और आपकी बुद्धि पर तरस भी आता है कि शवों को ये क्या व्यवस्था दे पाएँगे? अपने जीवन्त क्षणों को हम अपने और परिजनों के शव पोषण में ही खर्च कर देंगे तो ,हमें अमृतत्व का स्रोत कैसे मिलेगा?अतः सचेत हो जाईये और समझिये कि जब तक अपने शव(शरीर) में शिवत्व की स्थापना न कर लें तो समझें यह श्रम व्यर्थ ही है। यह कोरा मुर्दा ढोंने के समान ही है। तो प्यारे इस शव से शिव की और बढ़े ।उपनिषद भी कहता है --इह चेदवेदिथ सत्यमस्ति, नोचेदवेदिथ महति विनष्टिः। इति शम्।

५ .वस्त्र परिधान शास्त्र के अनुसार

* एक वस्त्र धारण करके न तो भोजन करें, न यज्ञ करें, न दान करें, न अग्नि में आहूति दें, न स्वाध्याय करें, न पितृ तर्पण करें। (यज्ञं दानं जपो होमं... व्याघ्रपादस्मृति 381)

* जिसकी किनारी या मगजी न लगी हो, ऐसे वस्त्र धारण करने योग्य नहीं। (वर्ज्य च विदशं वस्त्रम्...)

* पहले के पहने हुए वस्त्र को बिना धोए पुन: नहीं पहनना चाहिए। (नाप्रक्षाोलतं पूर्वधृतं वसनं विभृयात...विष्णुस्मृति 64)

* वस्त्र के ऊपर जल छिड़क कर ही उसे पहनना चाहिए। (प्रोक्ष्य वास उपयोजयेत् आपस्तम्बधर्मसूत्र 1/5/15/15)

* धन के रहते हुए पुराने और मैले वस्त्र नहीं पहनने चाहिएं। (सति विभवे न जीर्णमलवद्वासां: स्यात्...गौतम स्मृति 9)

* मनुष्य को भीगे हुए वस्त्र नहीं पहनने चाहिएं। (न चैवाद्राणि वासांसि...महाभारत, अनु.104/52)

* अधिक लाल, रंग बिरंगे, नीले और काले रंग के वस्त्र धारण करना उत्तम नहीं। (न चापि रक्तवासा:...मार्कंडेय पुराण 34/54)

* कपड़ों और गहनों को उल्टा कभी न पहनें। (न च कुर्याद विपर्यासं...मार्कण्डेय पुराण 34/54)

* दूसरों के पहने हुए कपड़े नहीं पहनने चाहिएं। (तथा नान्यधृतं धार्यम्...महाभारत, अनु.104/86)

* सोने के लिए दूसरा वस्त्र होना चाहिए। सड़कों पर घूमने के लिए दूसरा और देवताओं की पूजा करने के लिए दूसरा वस्त्र रखना चाहिए। (अन्यदेव भवेद् वास: शयनीये नरोत्तम...महाभारत, अनु. 104/86-87)

उपरोक्त नियमों का यथासंभव पालन का प्रयास करें। y y y y

६. शिवरात्रि

मेरी जिज्ञासा के फलस्वरूप जैसा मेरे आराध्य भगवान साम्ब सदाशिव जी से उपदेश प्राप्त हुआ वैसा आप सबके लिए मैं (कृष्ण चन्द्र शास्त्री) संक्षेप में प्रस्तुत कर रहा हूँ ।ये रहस्य सूत्र वास्तव में सर्वथा नूतन और परम योगियों के लिए ही गम्य ,एवं कुतर्कियों मिथ्याभिमान से भरे लोगों से परमगोप्य हैं जो आज तक किसी भी सद्ग्रंथ में विवेचित नही हैं।जो प्रथम बार ही

प्रकट कर रहा हूँ अतः दुष्ट लोग इनसे दूर ही रहें क्योंकि उनके लिए ये घातक हैं ,जैसे श्वान को घी हजम नही होता पर इसमें घी का दोष नही है।(वास्तविक योगीजन तो इन सूत्रों को जानते ही हैं क्योंकि उनके ज्ञानचक्षुओं से कुछ छिपा भी नही है,पर नूतन साधकों हेतू ही ये विवेच्य हैं) ----- महाशिवरात्रि शिवशक्ति के विवाह मिलन की वेला है जो साधक के जीवन में केवल एक ही बार घटित होती है,उसके बाद वह पूर्ण अद्वैत को प्राप्त हो जाता है।यह शक्ति का बार बार जन्म नही बल्कि हमारी आत्मा का ही बार बार विविध योनियों में संसरण है ।और यह तब तक चलता है जब तक हमारी आत्मा(माँ पार्वती) परमात्मा(सदाशिव) को प्राप्त नही कर लेती । साधक रूपी शक्ति शिवरूप से एकाकार हो जाने जाने के बाद वह साधक परमाद्वैत में स्थापित होकर महायोग को प्राप्त कर लेता है।इसे ही ब्राह्मी स्थिति कहते हैं।अतः साधक जब इस दुर्लभ योग को पहली बार प्राप्त करता है ,उसके लिए यह शिवरात्रि ही पूर्णता का सूत्रपात् करती है। बाकि साधकों के लिए तो यह पर्व शिवशक्ति विवाह का प्रतीकात्मक पर्व ही है।यदि वह सद्गुरू की शरण ग्रहण करे और सद्गुरू कृपा करें तो उसकी आत्मा (पार्वति) का भी परमात्मा(सदाशिव) से मिलन संभव हो सकता है।अन्यथा आपकी पार्वति बार बार जन्म(आत्मा का योनियों में भटकना) लेने को मजबूर है।अतः सद्गुरू की शरण हो जाईये तभी महाशिवरात्रि का मंगलपरिणय (शिवशक्तिमिलन) संभव हो सकेगा। हाँ एक विशेष सावधानी--- सद्गुरू के चक्कर में किन्ही लम्पट को मत फँस जाना ।अन्यथा चमड़ी भी जाएगी और दमड़ी भी।सद्गुरू को कैसे पहचाननें ,इसके लिए मेरी पुरानी पोस्ट पढ़ें। जय शिवशक्ति। जय साम्बसदाशिव y y y y y सद्गुरूभ्यो नमः।

७. सात फेरे

>>>>>>विवाह में ७ फेरे (भांवर)केवल भ्रममात्र है

आज कल विवाह में कहीं तो 7 फेरों का प्रचलन है

तो कहीं 4 का ,इस विषय पर बहुत विवाद सुनने में आ रहा है । राजस्थान,गुजरात और मिथिला आदि प्रान्तों में कई स्थानों में 4 फेरों की परम्परा है और उत्तर प्रदेश आदि कुछ प्रान्तों के कतिपय स्थलों में 7 फेरों की परम्परा ।हम यहां सप्रमाण यह तथ्य प्रस्तुत करेंगे कि “फेरे कितने होने चाहिए ।यहां एक बात ध्यान में अवश्य रखनी है कि सभी बातें शास्त्रों में ही उपलब्ध नहीं होती हैं ।जैसे — वर वधू का मंगलसूत्र पहनाना,गले में माला धारण करवाना, वर वधू के वस्त्रों में ग्रन्थि लगाना (गांठ बांधना),वर के हृदय परदही आदि का लेपन, ऐसे बहुत से कार्य हैं जो गृह्यसूत्रों में उपलब्ध नही हैं ।इन सब कार्यों में कौन प्रमाण है ?इसका उत्तर है –”अपने अपने कुल की वृद्धमहिलायें ;क्योंकि वे अपने पूर्वजों से किये गये सदाचारों का स्मरण रखती हैं । इसलिए विवाहादि कार्यों में इनकी बात मानने का विधान शास्त्रों ने किया है ।देखें —शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन और काण्व शाखा इनदोनों का प्रतिनिधित्व करता है -महर्षि पारस्कर प्रणीत ” पारस्करगृह्यसूत्र”महर्षि कहते हैं –

”ग्रामवचनं च कुर्युः”-।। 11।।“विवाहश्मशानयोर्ग्रामं प्राविशतादिति वचनात्

‘।।12।।“तस्मात्तयोर्ग्रामः प्रमाणमिति श्रुतेः ।।13।।-----प्रथमकाण्ड, अष्टमी कण्डिका ।

यहां 11वें सूत्र का अर्थ “हरिहरभाष्य” में किया गया है कि“विवाह और श्मशान सम्बन्धी कार्यों में (ग्रामवचनं =स्वकुलवृद्धानां स्त्रीणां वाक्यं कुर्युः) अपने कुल की वृद्ध महिलाओं की बात मानकर कार्य करना चाहिए ।“गदाधरभाष्यकार”भी यही अर्थ किये हैं । इनमें कुछ बातें जैसे “मंगलसूत्र आदि” इनका उल्लेख इसी भाष्य के आधार पर मैने किया है ।सूत्र11 में ” च ” शब्द आया है । उससे “देशाचार, कुलाचार और जात्याचार ” का ग्रहण है ।“चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थकः –च शब्द जो बातें नहीं कहीं गयी हैं -उनका संकेतक माना जाता है ।अत एव ” च शब्दाद्देशाचारोऽपि ” –ऐसा भाष्यश्रीगदाधर जी ने लिखा ।यहां ” अपि ” शब्द कैमुत्यन्याय से कुलाचार और जात्याचार का बोधकहै ;क्योंकि विवाहादि कार्यों में जाति और कुल के अनुसार भी आचार में

भिन्नता कहीं कहीं देखने को मिलती है ।ग्रामवचन का अर्थ “भर्तृयज्ञ ” जो कात्यायन श्रौतसूत्रके व्याख्याता हैं उन्होने लोकवचन किया है –ऐसा गदाधर जी ने अपने भाष्य में संकेत किया है ।इसे लोकमत या शिष्टाचार — सदाचार कहते हैं । यहभी हमारे यहां प्रमाणरूप से अंगीकृत है ।पूर्वमीमांसा में सर्वप्रथम प्रमाणों की ही विशदचर्चा हुई है । इसलिए उस अध्याय का नाम ही” प्रमाणाध्याय “रख दिया गया है । इसमें शिष्टाचारको प्रमाण माना गया है । शिष्ट का लक्षण वहांनिरूपित है ।

" वेदः स्मृतिः सदाचारः " –मनुस्मृति,2/12,तथा "श्रुतिःस्मृतिः सदाचारः "–याज्ञवल्क्यस्मृति-आचाराध्याय,7,इन दोनों में सदाचार को धर्म में प्रमाण माना है ।किन्तु धर्म में परम प्रमाण भगवान् वेद ही हैं । उनसे विरुद्धसमृति या सदाचार प्रमाण नही हैं ।पूर्वमीमांसा में वेदैकप्रमाणगम्य धर्मको बतलाया गया –जैमिनिसूत्र-1/1/2/2,पुनः " स्मृत्यधिकरण "-1/3/1/2, से वेदमूलक स्मृतियों को धर्म में प्रमाण माना गया ।यदि कोई स्मृति वेद से विरुद्ध है तो वह धर्म में प्रमाण नही हो सकती –यह सिद्धान्त" विरोधाधिकरण "-1/3//2/3-4, से स्थापित किया गया ।इसी अधिकरण में सदाचार की प्रामाणिकता को लेकर यह निश्चित किया गया कि सदाचार स्मृति सेविरुद्ध होने पर प्रमाण नही है ।जैसे दक्षिण भारत में मामा की लड़की के साथ भांजेका विवाह आदि ;क्योंकि यह सदाचार" मातुलस्य सुतामूढ्वा मातृगोत्रां तथैव च ।समानप्रवरां चैव त्यक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् । ।इस शातातप स्मृति से विरुद्ध है ।

भागवत के 10/61/23-25 श्लोकों द्वारा इस विवाह रूपी कार्य को अधर्म बतलाया गया है ।। अस्तु।।तात्पर्य यह कि सदाचार से उसकी ज्ञापक स्मृति का अनुमान किया जाता है और उस स्मृति सेतद्बोधक श्रुति का अनुमान । जब आचार की विरोधिनी स्मृति बैठी है तो उससे वह बाधित हो जायेगा ।इसी प्रकार स्मृति भी स्वतः धर्म में प्रमाण नही हैअपितु वेदमूलकत्वेन ही प्रमाण है ।स्मृति से श्रुति का अनुमान किया जाता है । जब स्मृति विरोधिनी श्रुति प्रत्यक्ष उपलब्ध है तो उससे स्मृति बाधित हो जायेगी –" विरोधे त्वनुपेक्षं स्यादसति ह्यनुमानम् "–पूर्वमीमांसा,1/3/2/3,सदाचार से स्मृति और स्मृति से श्रुति का अनुमान होता है । इन तीनों में श्रुति से स्मृति और स्मृति से सदाचार रूपी प्रमाण दुर्बल है ।निष्कर्ष यह कि स्मृति या वेदविरुद्ध आचार प्रमाण नही है ।अब हम यह देखेंगे कि विवाह में जो फेरे पड़ते हैं –4 या 7,इनमें किसको स्मृति या वेद का समर्थन प्राप्त है और कौन इनसे विरुद्ध है ?यहां यह बात ध्यान में रखनी है कि स्मृति का अर्थ केवलमनु या याज्ञवल्क्य आदि महर्षियों से प्रणीत स्मृतियां ही नहीं अपितु सम्पूर्ण धर्मशास्त्र है—" श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः "–2/10,

धर्मशास्त्र के अन्तर्गत स्मृतियां ,पुराण,इतिहास,कल्पसूत्र आदि आते हैं –यह मीमांसकों का सिद्धान्त है–-- -----
स्मृत्यधिकरण,1/3/1/1-2,

इसी से 4 या 7 फेरों का निश्चय हो जायेगा ।विवाह में 4 कर्म ऐसे हैं जिनसे फेरों का सम्बन्ध है ।अर्थात् उन चारों का क्रमशः सम्पादन करने के बाद फेरे(परिक्रमा या भांवर) का क्रम आता है । वे निम्नलिखित हैं —

1-लाजा होम—इसमें कन्या को उसका भाई शमी के पल्लवों से मिश्रित धान के लावों को अपनी अञ्जलि से कन्या के अञ्जलि में डालता है । कन्या उस समय खड़ी रहती है ।यदि कन्या के भाई न हो तो यह कार्य उसकेचाचा ,मामा का लड़का ,मौसी का पुत्र या फुआ(बुआ -फूफू अर्थात् पिता की बहन) का पुत्र आदि भी कर सकते हैं–यह तथ्य श्रीगदाधर जी ने बहवृचकारिका को उद्धृत करके अपने भाष्य में दर्शाया है ।पारस्करगृह्यसूत्र के प्रथम काण्ड की छठी कण्डिका में"कुमार्या भ्राता –"–1 में इसका कथन है ।कन्या के अञ्जलि में लावा है । वर भी खड़ा होकर उसके दोनों हाथों से अपने हाथ लगाये रहता है और कन्या खड़ी होकर ही उन लावों को मिली हुई अञ्जलि से होम करती है –अर्यमणं देवं –इत्यादि मन्त्रों से ।

ये तीनों मन्त्र बहुत महत्त्वपूर्ण हैं । अतः इनका अर्थ प्रस्तुत किया जा रहा है –

1-अर्यमणं देवं– सूर्य देव, जो ,अग्निं –अग्निस्वरूपहैं ,उनकी वरप्राप्ति के लिए, अयक्षत –पूजा कीहै,स–वे,अर्यमा देवः–भगवान् सूर्य, नो–हमें,इतः–इस पितृकुल से , प्रमुञ्चतु –छुड़ायें, किन्तु ,पत्युः –पति से ,मा –न छुड़ायें , स्वाहा —इतना बोलकर कन्या होम करती है ।आज इस पद्धति का विधिवत् आचरण न करने का परिणाम इतना भयंकर दिख रहा है कि पति या तो पत्नी को छोड़ देता है अथवा पत्नी पति को ।

2-मन्त्र –" आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो ममस्वाहा।

अर्थ– मे पतिः –मेरे पति, आयुष्मानस्तु –दीर्घायु हों,और मम– मेरे ,ज्ञातयो– बन्धु बान्धव,एधन्तां –बढ़ें ,स्वाहा बोलकर पुनः होम ।विवाह में इस मन्त्र के छूट जाने का पहला परिणाम"पति असमय ही किसी भी कारण से अकालमृत्यु को प्राप्त होता है । या मृत्यु जैसे कष्टकारी रोगों से आक्रान्त हो जाता है ।और पत्नी के पतिगृह पहुंचने के कुछ समय बाद ही बंटवारे की नौबत भी आ जाती है ।जो आजकल का तथाकथित सभ्य समाज भुगत रहा है ।

3 मन्त्र –" इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव ।मम तुभ्य च संवननंतदग्निरनुमन्यतामियं स्वाहा ।

हे स्वामिन्! , तव –तुम्हारी , समृद्धिकरणं –समृद्धि करने के लिए, इमाँल्लाजान् –इन लावों को ,अग्नौ –अग्नि में , आवपामि –मैं डाल रही हूं । मम तुभ्य च — हमारा और तुम्हारा , जो, संवननं –पारस्परिक प्रेम है , तत् –उसका , ये, अग्निः–अग्नि देव,अनुमन्यन्ताम्—अनुमोदन करें अर्थात् दृढ करें , और, इयं –अग्नि की पत्नी स्वाहा भी ,स्वाहा –बोलकर पुनः होम ।

इस मन्त्र से होम किया जाता है कि दाम्पत्य जीवनसदा प्रेम से संसिक्त रहे ।पर आज जो पण्डित आधे घण्टे में विवाह करा दे उसे कई शहरों में बहुत अच्छा मानते हैं ।

इस मन्त्र से होम न करने का परिणाम है –दाम्पत्य जीवन का कलहमय होना ।अतः विवाहोपरान्त भविष्य में आने वाले इनसभी संकटों को रोकने के लिए हमारे ऋषियों ने हमेंजो कुछ दिया । उसकी अवहेलना का परिणाम आज घर घर में किसी न किसी रूप में दिख रहा है ।अतः वेदों के इन पद्धतियों की वैज्ञानिकता और आदर्श समाज की रचना के इन अद्भुत प्रयोगों को हमें पुनः अपनाना होगा ।

2-सांगुष्ठग्रहण–यह कर्म लाजा होम के बाद वरद्वारा किया जाता है । वह वधू का दांया हाथ अंगूठे सहित पकड़ता है ।और " गृभ्णामि से शरदः शतम् " तक मन्त्र पढ़ता है ।इस मन्त्र से वर वधू में देवत्व का आधान होता है ।तथा बहुत से पुत्रों के प्राप्ति की प्रार्थना की गयी है ।पुत्र वही है जो पुम् नामक नरक से तार दे -पुत् नामकात्नरकात् त्रायते इति पुत्रः ।इस मन्त्र के छूटने का परिणाम यह है कि आज कल लड़के अपने माता पिता का जीवन नरकमय बना रहे है । तारना तो दूर की बात है ।

3-अश्मारोहण– अग्निकुण्ड के उत्तर की ओर रखे हुए "पत्थर " के समीप जाकर वर वधू के दायें पैर को पकड़कर उस पर रखता है ।श्रीगदाधर ने अपने भाष्य मे सप्रमाण इसका उल्लेख किया है । और मिथिला मे यह आज भी वर द्वारा किया जाता है |इस समय वर स्वयं मन्त्र पढ़ता है–"आरोहे से लेकर पृतनायत" तक ।इस मन्त्र का अर्थ है कि कन्ये !तुम इस पत्थर पर आरूढ होकर इस प्रस्तर की भांति दृढ़ हो जाओ ।और कलह चाहने वालों को दबाकर स्थिर रहो । और उन शत्रुओं को दूर हटा दो ।यह कर्म कन्या द्वारा आज भी U.P आदि में देखा जाता है । कन्या उस अश्म को पैर के अंगूठे से प्रहार करके फेंक देती है ।यह कर्म अद्भुत भाव से ओतप्रोत है । यह कन्या को हर विषम परिस्थितियों में अविचल भाव देने के साथ ही शत्रुदमन की अदम्य ऊर्जा भी प्रदान करता है ।

4-गाथागान — इसमें एक मन्त्र का गान वर करता है जिसमें नारी के उदात्त व्यक्तित्व की सुन्दरझलक है ।

5- परिक्रमा या फेरे — अब वर वधू अग्नि की परिक्रमा करते हैं । इस समय वर –" तुभ्यमग्रे से लेकर प्रजया सह " तक 1 मन्त्र बोलता है ।1 परिक्रमा (फेरा) अब पूर्ण हुई |इसी प्रकार पुनः पूर्ववत् लाजाहोम, सांगुष्ठग्रहण,अश्मारोहण, गाथागान और 1 परिक्रमा करनी है ।तत्पश्चात् पुनः वही लाजाहोम से लेकर 1 परिक्रमा तक पूर्व की भांति सभी कर्म करना है ।इसका संकेत प्रथम काण्ड की सप्तमी कण्डिका में शुक्लयजुर्वेद के सूत्रकार महर्षि पारस्कर अपने गृह्यसूत्र में करते हैं —" एवं द्विरपरं लाजादि " इसका अर्थ " हरिहरभाष्य और गदाधरभाष्य " दोनो में यही किया गया कि "कुमार्या भ्राता —-" –जहां से लाजाहोम आरम्भ है वहां से परिक्रमा पर्यन्त कर्म होता है ।अब यहां हमारे समक्ष लाजा होम से लेकर परिक्रमा पर्यन्त सभी कर्मों का ३ बार अनुष्ठान सम्पन्न हुआ ।जिनमें 9 बार लावों की आहुति पड़ी ;क्योंकि १ -१लाजाहोम में ३ –३ बार कन्या ने पूर्वोक्त मन्त्रोंसे आहुति दिया है ।3 बार सांगुष्ठग्रहण, 3 बार अश्मारोहण, 3 बार गाथागान और 3 परिक्रमा (फेरे) सम्पन्न हो चुकी है ।अब चौथी बार केवल लाजा होम और परिक्रमा ही करनी है। पर इस चौथे क्रम में पहले से कुछ भिन्नता है ।क्या भिन्नता ?इसे महर्षि पारस्कर स्वयं सूत्र द्वारा दिखाते हैं —" चतुर्थं शूर्पकुष्ठया सर्वाँल्लाजानावपति–भगायस्वाहेति। "—-पारस्करगृह्यसूत्र,प्रथमकाण्ड,सप्तमीकण्डिका,5,कन्या का भाई शूर्प में जो भी लावा बचा है वह सब सूप के कोने वाले भाग से कन्या के अञ्जलि में दे दे और कन्या सम्पूर्ण लावों को " भगाय स्वाहा "बोलकर अग्नि में होम कर दे ।इसके बाद मौन होकर वर और वधु अग्नि की परिक्रमा करते हैं –इसमें "सदाचार"ही प्रमाण है |देखें हरिहरभाष्यकार लिखते है –" ततः समाचारात्तूष्णीं चतुर्थं परिक्रमणं वधूवरौ कुरुतः "|इसे सर्वसम्मत पक्ष बतलाते हुए गदाधर भाष्य में"वासुदेव ,गंगाधर ,हरिहर और रेणु दीक्षित जैसे भाष्यकारों के नाम का उल्लेख श्रद्धापूर्वक किया गया है |–प्रथम काण्ड ,सप्तमी कण्डिका,६इस प्रकार शुक्लयजुर्वेद के महर्षि पारस्कररचित "पारस्करगृह्यसूत्र" के अनुसार विवाह में 4 फेरे(परिक्रमा)ही प्रमाणसिद्ध है । 7 फेरे

केवल भ्रममात्र हैं।वाराणसी से छपी पण्डित प्रवर श्रीवायुनन्दन मिश्र जी की विवाहपद्धति तथा राजस्थान के पण्डितवर चतुर्थीलाल जी की पुस्तक में भी 4 फेरों का ही उल्लेख है ।और 4 फेरे कई प्रान्तों मे पहले बताये भी जा चुके हैं ।अतः यही मान्य और शास्त्रसम्मत है ।यदि कोई कहे कि 7 फेरों का सदाचार हमारी परम्परा में चला आ रहा है और सदाचारका प्रामाण्य सभी ने स्वीकार किया है । अतः यह ठीक है ।तो मैं उस व्यक्ति से यही कहूंगा कि सदाचार तभी तकप्रमाण है जब तक उसके विरुद्ध कोई स्मृति या श्रुति न हो ।पर यहां तो साक्षात् 4 फेरों की सिद्धि शुक्ल यजुर्वेदके " पारस्करगृह्यसूत्र "से ही हो रही है ।अतः इसके विपरीत 7 फेरों वाला सदाचार प्रमाण नही है ।>>जय श्रीराम<(कस्यचिल्लेखोऽयम्)

८. ब्राह्मण

क्या ब्राह्मण ब्राह्मण चिल्लाता है ? और ये वही चिल्ला रहा है जो संस्कारहीन है।क्योंकि षोडश संस्कारों को सम्पन्न कराने वाले भी ब्राह्मण ही हैं।ब्राह्मण उस मेधाशक्ति का नाम है जिन्होनें विश्व को गणित, ज्यौतिष,आयुर्वेद,अष्टांग योग, वेद विज्ञान की महान सम्पत्ति प्रदान की।विधर्मियों के आक्रमण पर भी वेद वेदांगों को अपने कंठ में सुरक्षित रखा।ध्यान दें--ब्राह्मण को न मानने वाले वेद को भी नही मानते ।और भगवान् के अवतारों को भी नही मानते ।क्योंकि सब अवतारों के कुलगुरू ब्राह्मण ही थे।और भगवान के अवतारों के सब संस्कार ब्राह्मणों द्वारा ही सम्पन्न किये गए हैं।भगवान् विष्णु जी ने सहर्ष स्वीकार किया है--

#अविद्यो सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः..... विद्वान हो अविद्वान ,ब्राह्मण मेरा शरीर है।

#गीता में भगवान् श्रीकृष्ण जी ने स्पष्ट कहा है --किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः। अर्थात् पुण्य ब्राह्मणों का तो कहना ही क्या।अतः #सावधान! ऐसा कोई शास्त्र ,संस्कार,प्रथा, गोत्र,प्रवर ,विद्या नही है जो ब्राह्मणों द्वारा पैदा न किया हो।और ब्राह्मण द्वेषी आज ही नही पहले भी होते थे जो राक्षस कहलाते थे। आज भी वही है ।जो ब्राह्मण से द्वेष करता है वह मानो ब्रह्म से ही द्वेष करता है क्योंकि ब्रह्म की ज्ञान विज्ञान परम्परा ब्राह्मण में ही निहित है।अतः घबराएं नही ,दैवी और आसुरी दो ही प्रकृतियां सृष्टि में है आप देखिये आप कौनसी में हैं?

और अन्तिम सारांश चाणक्य ने बताया है.....#धन्या द्विजमयी नौका विपरीता भवार्णवे।

तरन्त्यधोगताः सर्वे उपरिस्थाः पतन्त्यधः॥१३॥

_ शब्दार्थ :— यह द्विजमयी= ब्राह्मणरूपी नौका= नाव धन्या= धन्य है जो भव-अर्णवे= संसाररूपी सागर में विपरीता= उल्टी रीति से चलती है। उल्टी रीति क्या है? अधोगताः= इसके नीचे रहनेवाले, सर्वे= सब तरन्ति= तर जाते हैं, भवसागर से पार हो जाते हैं, परन्तु उपरिस्था= ऊपर रहनेवाले, ऊपर चढ़नेवाले अध= निचे पवन्ति= गिर जाते हैं।

_ भावार्थ :— इस श्लोक में आचार्य चाणक्य ब्राह्मणों के महत्व को दर्शाते हुए कहते हैं कि ब्राह्मणरूपी नाव संसाररूपी समुद्र में सदैव विपरीत दिशा की ओर चलता है। इस नाव के नीचे आश्रय लेनेवाले भवसागर से पार हो जाते हैं, जबकि नाव के ऊपर बैठे लोग समुद्र में डूब जाते हैं। अर्थात मोह-माया से ग्रस्त संसार विषय-वासनाओं की ओर धकेलता है। इसमें ब्राह्मण ही ऐसी नौका है, जो विपरीत चलते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होती है। ब्राह्मणों को सर्वोपरि माननेवाले, उनकी सेवा करनेवाले , उनके साथ नम्रता का व्यवहार करनेवाले भवसागर से तर जाते हैं और जो नम्र नहीं रहते, अभिमान से चूर रहकर उनका अपमान करते हैं उनका पतन हो जाता है।

ब्राह्मण सदा थे,हैं और रहेंगें। राक्षसों के विनाश के लिए राम,कृष्ण आदि को तैयार करते ही रहेंगे।

९. #रुद्राभिषेक में सावधानी......

जिस देवता को जो प्रिय हो वैसा करने से देवी देवता की कृपा पूर्ण रूप से मिलती है ऐसी मान्यता है।परन्तु हरियाणा ,दिल्ली के शिवालयों में जैसा मैने देखा कि जो कोई भी आए वही एक-एक लोटा जल से शिवलिंग के साथ-साथ गणेश,कार्तिक,गौरी आदि सभी को जल से सराबोर करके चला जाता है ,जबकि यह सरासर गलत है । ठीक है शिवजी को अभिषेकप्रिय है परन्तु अन्य शिव गणों को क्यों साथ में परेशान कर रहे हो?? यह है ज्वलंत प्रश्न??थोड़ा गौर करें...

शिव परिवार में गौरी उनकी अर्धांगिनी हैं वे #अर्चनप्रिय हैं।अतः उनका फूल फलादि से अर्चा करिए। कार्तिकेय जी #दीपप्रिय हैं उन्हें दीपदान करिए।गणेश जी #लड्डुकप्रिय हैं अतः उन्हें लड्डू का भोग लगाएं।उनको #तर्पणप्रिय व #दूर्वाप्रिय भी कहा गया है।तो उन्हें दूर्वा चढ़ाएं व तर्पण करें (ध्यान दें तर्पण अभिषिक नही है)।नंदी जी की पूजा करें परंतु अभिषेक केवल भगवान शिव का ही करें।...

#दीपप्रियो कार्तिकेयः मार्तण्डो नतिवल्लभः।

स्तुतिप्रियो महाविष्णुः गणेशस्तर्पणप्रियः।।

दुर्गाऽर्चनप्रिया नूनमभिषेकप्रियः शिवः।

तस्मात्तेषां प्रतोषाय विध्यात्तत्तदादृतः।।--मं०

अब आप कहेंगें कि सबको अभिषेक कराने में क्या हानि है ? तो सुनें....

यदि जो कोई भी आएं वो आपके सिर पर एक लोटा पानी डालकर चला जाए तो आपको कैसा लगे???

सब मूर्तियों को सुबह स्नान कराने का अधिकार वहां नियुक्त आधिकारिक विद्वान को ही ,आपको नही ।आप केवल शिव का अभिषेक करें ,वो भी प्रति प्रहर में विप्रदेव के मंत्रोच्चारण के साथ हो तो उत्तम है।और सबसे महत्वपूर्ण बात..#सावधान !....

आप मूर्तियों की पूजा करें उनका स्पर्श नही।क्योंकि यह स्पर्श आपके लिए निषिद्ध है।विधि में आप स्वतंत्र है पर निषेध सबको मानना है,व उसका मानना हितकर ही है ।जैसे आप अपने घर की बिजली जलाएं या न जलाएं आप स्वतंत्र हैं पर नंगे तार न छूएं यह निषेध आपको मानना ही होगा अन्यथा आपका अहित निश्चित ही है।

और एक #गौर करने योग्य प्रार्थना वेदज्ञों के लिए-----

आप जब भी शिवपरिवार की प्रतिष्ठा करवाएं तो गौरी,गणेश,कार्तिकेय जी की मूर्तियों को गर्भ गृह की दीवार में गवाक्ष बनाकर स्थापित करें व नंदी जी को मुख्य द्वार पर शिवाभिमुख स्थापित कराऐं ताकि सबका अभिषेक न हो और शास्त्र मर्यादा बनी रहे।

#ध्यान दें हमारे प्राचीन शिवालयों #श्रीसोमनाथ #श्रीमहाकालेश्वर आदि में यही क्रम अपनाया गया है ।और यह स्थापना करवाने वाले विद्वानों के ही हाथ में है।कृपया शेयर करें, प्रतिक्रिया दें पर कापी पेस्ट न करें मेहनत को समझें।

१०. कौन कहता है वेद में मूर्ति वर्णन नही है,

वस्तुतः सम्पूर्ण वेद ही देवताओं की मूर्तियों के वर्णन का भंडार है।

१   नमोस्तु नीलग्रीवाय.....

२ हिरण्यवर्णां हरिणीं....

३   सहस्रशीर्षाः पुरुषः...

४   इदं विष्णुर्विचक्रमे

५   पावका नः सरस्वती..

कितना ही लिखो सब साकार का वर्णन है ।सब दिव्य मूर्तियां हैं।

निराकार तो मन वाणी से परे है। उसका उपासक तो मौन ही आत्म चिंतन में लीन होगा। परमात्मा के बारे में जो बोला वह साकार के गुण धर्मों का विवेचन हो गया।

निराकार तो निर्गुण व वर्णनातीत है ।अतः सिद्ध है कि वेद की सब ऋचाएं साकार मूर्त का ही गुणगान करती हैं। भारद्वाज कृष्ण चंद्र शास्त्री इस निर्विवाद सत्य को पूर्वपक्ष के रूप में स्थापित करता है। आपका स्वागत है........

११. नारी

अपने अहं ,स्वाभिमान और अधिकार को भी मानवता हेतू समर्पित कर देती है और बल पौरुष सामर्थ्य का ख्याल किए बिना परिवार की ईकाई के रूप में स्वयं को अग्रेषित कर देती है।जो स्वयं के पूर्णाधिकार स्वामी को समर्पित कर एकमात्र उन पर पूर्णाधिकार चाहती है।जो जगद्गुरु एव जगदीश्वर की जननी है उस नारायणी नारी को सादर नमन।

१२. आश्चर्य

एक पिता अपने पुत्र को अपनी चलाचल सम्पत्ति सौंपता है यह तो जायज है परन्तु एक मठाधीश अपनी चलाचल सम्पत्ति यदि अपने परिवार या रिश्तेदार के अयोग्य ,साधना विहीन,मात्र अर्थलम्पट व्यक्ति को चेला घोषित करके उसे सौंपता है तो विचार किजिए यह कितना हास्यास्पद है? ρ

इससे उस मठाधीश के साधक होने पर भी प्रश्नचिंह लग जाता है ।और यह लगता है कि वह व्यर्थ ही आजीवन संन्यासादि का ढोंग करता रहा।उसका उद्देश्य मात्र धन बटोरना और अंत में उसे अपने भतीजे,रिश्तेदारादि के नाम करना ही था।और सबसे बड़े मूर्ख वे लोग हैं जो ऐसी संस्थाओं में दान देते हैं।वे यह अच्छे से समझ लें कि वे मात्र ऐयाशी के अड्डे के निर्माण में ही अपना योगदान दे रहे हैं।और अपने उस तथाकथित गुरू के साथ #रौरवनरक उनके ही इंतजार में हैं।सच्चे साधक ऐशो आराम के आदी नहीं होते ।वे तो---

#निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ--ऐसे होते हैं।अत: आपका दायित्व है ऐसे लम्पटों को चिंहित करें व उनका बहिष्कार करें।उनकी संस्थाओं में दिया दान आपको भी ले डूबेगा।क्योंकि सच्चे मठाधीश की यही पहचान है कि वह अपनी गद्दी बिना भेदभाव के योग्यतम शिष्य को ही सौंपता है।

१३.#कलि कौतुक

मिर्च मसाले टुथपेस्ट बेचने वाले व्यापारी स्वयं को योगसम्पन्न और सद्गुरू कहते हैं।नामदानी मुक्तिदाता भक्तों की सम्पत्ति अपने नाम कर के उनकी औरतों की इज्जत तार-तार कर रहे हैं।राजा लोग अपने पद का उपयोग अपने भोग साधन में कर रहे हैं।

सच्चा व्यक्ति मिलना दुर्लभ हो गया है।सब मतलबी व्यवहार करते हैं।यही कलयुगी कौतुक है।

तो प्रश्न है कि सच्चा साधक इस छल से कैसे बचे?

#उत्तर आसान है---

व्यवहार से पहचाने कौन असली है कौन नकली। पर वही पहचाने जो स्वयं निश्छल हो।अत: निश्छल बनें। निश्छलता ही साधना की कुंजी है।नान्य पंथा विद्यतेऽयनाय।

ये ब्राह्मणवाद को दोष देते हैं और खुद SC अपने में और ST में इतना फर्क समझते हैं जितना जमीन आसमान में।

ये नियम शाश्वत और सनातनिक हैं। सृष्टि के आरम्भ में जो जिसके योग्य था उसने वैसा ही कार्य किया।और आज भी जो जिसके योग्य है वह वैसा ही कर रहा है।यही प्राकृतिक कौतुक है।ये श्रेणियां हर धर्म में हैं ।कोम , गोत्र और वर्ण का अपना महत्त्व है।इसे विशुद्ध आध्यात्मिक स्तर से ही समझा जा सकता है।आप सोचिए एक विशुद्ध देशी गाय को वर्णसंकर बनाकर क्या हाल कर दिया साईंस के नाम पर। इस गाय का दूध और मूत्र वैसा गुणधर्म रखता है क्या? इस बात को कोई सिरफिरा कैसे समझ सकता है ।इसे तो वैद्य विद्या में निपुण ही समझ सकता है।और जब जान पर आन पड़ती है तब ढूंढ़ते फिरते हैं शुद्ध देशी गाय को।और आज नारे लगा रहे हैं देशी गाय को वर्णसंकर बनाने के।

यही स्थिति क्षत्रियत्व को नष्ट करने की है। क्षत्रिय अपने धर्म पर मर मिटने को तैयार था।यही उसका क्षत्रियत्व था।जिसका अर्थ था न अन्याय करना न करने देना।उनका युद्ध धर्म के लिए ही होता था।गीता में भी भगवान ने यही कहा है।वैश्य होते थे व्यापारी वर्ग।जो ६% से अधिक मुनाफा न लेना ही अपना धर्म समझते थे।आज ये व्यापार में लूट खसोट,ठगी क्यों हो गयी?क्योंकि वैश्य वर्णसंकर हो गये।शूद्र को समझें शूद्र प्यारा शब्द है जिसका अर्थ है(आशु द्रमति)जो शीघ्र कार्य करता है।जितने भी हाथ के दस्तकार थे वे शीघ्र कार्य निपुण थे।शूद्र+वैश्य इनका एक ग्रुप था।हाथ के दस्तकार अपनी कलाकृतियों को वैश्यों को बड़े पैमाने पर बेचते थे।वैश्य विविध देशों में जाकर इन्हें उचित और जायज मुनाफे पर बेचते थे।वैश्य+क्षत्रियों का एक ग्रुप था।वैश्य राजवंशों को कर देकर अपना व्यापार फैलाते थे।ब्राह्मणों का त्रिवर्णों से सम्बंध कार्यवशात् था।ब्राह्मण अपरिग्रह और असंग होकर लोक कल्याण हेतू तपो रत रहते थे।जो त्रिवर्णों का मोक्षमार्ग प्रशस्त करते थे।इन चार वर्णों के अतिरिक्त निषाद नाम का एक पंचम वर्ण था ।वह उपरोक्त चारों वर्णों को लूटना,मारना,हिंसा करता था,वह मांसाहारी था। (यह आज भी है)।यह हमारी वर्ण व्यवस्था थी जो विद्वेषमूलक बिल्कुल नहीं थी।सब सबका सम्मान करते थे। उदाहरण देखें- विवाह में तेली,दर्जी,कुम्भकार,ब्राह्मण,लोहकार,बढ़ई,आदि की उचित भूमिका रहती थी।यह उत्तम व्यवस्था थी।और प्रबुद्ध बताएं प्राकृतिक वैराईटी अधिक होना प्रकृति की महत्ता है और इसका कोई दोष भी नहीं है।जैसे आम,चावल,घोड़े आदि की अनेक नस्लें होना अच्छी बात है इसमें बुराई क्या है?

अब देखिए जो जाति व्यवस्था को मानव निर्मित कहता है वह कितना मूर्ख है।आपकी आंखों के सामने कोई जाति उत्पन्न हुई है क्या मानव निर्मित?

मुझे बताएं।

#यह व्यवस्था ईश्वर कृत है पर भेदभाव मानव निर्मित है यही एक सबसे बड़ा स्वार्थ है।यह जातियां सब धर्मों में है।और आप बताएं सब मानव हैं तो उनके अलग अलग नाम क्यों है?

इसका उत्तर है-व्यवस्था के लिए।

ठीक इसी प्रकार गोत्र,जाति आदि की भी अपनी आध्यात्मिक व्यवस्था है।आज कलि के प्रभाव से वर्ण,जाति,धर्म संकरता उत्पन्न हो गयी है किंतु बीज की सुरक्षा प्रबुद्ध लोगों का दायित्व है।अत: देशी गाय,घी,वर्ण ,जाति, गोत्र के बीज की रक्षा करें। विशुद्ध ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र अपने को बीज रूप में सुरक्षित रखें।भेदभाव से बचें।इसका कारण स्वार्थ ही है। स्वार्थी न बनें।जाट,ब्राह्मण,बनिया आदि कोई बुरा नहीं है बस स्वार्थी बुरा है।

१४.#अस्पृश्यता आज भी सार्थक है:---

पहले तो इस तथ्य को जान लेना चाहिए कि अस्पृश्यता का आधार शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य था।इसका

किसी जाति ,धर्म और संप्रदाय से कोई लेना देना नही था। वैदिक साहित्य में अस्पृश्यता पर क्या कहा गया है पहले इसे समझें--

१.शराबी,नसैड़ी सर्वदा अस्पृश्य हैं।

२.रजस्वला स्त्री अस्पृश्य हैं।

३.नवप्रसूता शुद्धि पर्यंत अस्पृश्य है।

४.पातकी,शवदाहकादि अस्पृश्य हैं।

५.गंदा व्यवसाय (मांसादि) वाले अस्पृश्य हैं।

६.और उपरोक्त के संगी साथी भी अस्पृश्य हैं।

इन नियमों में कहीं विद्वेष नहीं है और न ही ये किसी जाति से बंधे हैं।

१५. न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति------#मनुस्मृति।

स्त्री को कभी सुरक्षा के दायरे से निकलने की स्वतंत्रता न दें ।

कितनी दूरदर्शिता थी मनु जी की ।उन्होंने स्पष्ट कहा है बचपन में माता पिता ,जवानी में पति और वृद्धावस्था में पुत्र उसकी सुरक्षा का इंतजाम करें।यह सत्ययुग की बात है तब अधिकांशतः लोग धर्म परायण थे।और आज तो स्त्रियों की सुरक्षा पहले से भी ज्यादा जरूरी है क्योंकि आज युग भी कौन सा चल रहा है।आज सच्चे लोग कम हैं।जो अपनी बेटियों की तो सुरक्षा चाहते हैं पर दूसरों की बेटियों पर उनकी ताक-झांक रहती है।औरतें भी कम नहीं हैं पर पुरुषों के अपेक्षा काफी ठीक हैं।अत: मनु के वचनों में श्रद्धा रखते हुए अपनी बच्चियों को पुरुषों की छल कपट की सब बारिकियां माताएं समझाएं और लड़कों को पिता सब ग़लत ठीक अच्छे से समझाएं।विवाहित औरतें व युवतियां समझें जो पतिव्रत धर्म को छोड़कर लुकाछिपी में कुमार्ग पर चलती हैं।वे भरी जवानी में विधवा हो जाती हैं।और उनकी संतानों के साथ भी वही होता है।यह शास्त्र का वचन है। बच्चियों को सबसे ज्यादा खतरा अपने ही पड़ौसी,घर परिवार रिश्तेदारी के पुरुषों से है।अत: मां बाप उनकी सुरक्षा अपने पर ही लें।किसी और के सहारे पर न रहें।उन्हें अकेला न छोड़े।बचाव में ही सुरक्षा है।

१६.दयानंद जी

पाखंड विरोधी थे और तथाकथित समाजी सनातन वेद विरोधी हैं।ये न वेद की मानते हैं न दयानंद की। दयानंद जी ने माना----

१. तंत्र २.मंत्र ३.यंत्र ४.गंगादि नदी महत्त्व ५.जन्मना +कर्मणा ब्राह्मण ६.ज्यौतिष

७.दान ८.मोहन व उसका भोग ९.पितृपूजा १०यज्ञ ११. संस्कार

किसी को विरोध हो तो मुंह खोल सकता है,

#योग्यता -यज्ञोपवीती होना चाहिए।

१७.भगवान् परशुराम

अवतार परशुरामजी ने अनन्त वर्षों तक प्रजा को संरक्षण प्रदान किया तथा निरंकुश हो चुके पापी क्षत्रियों का संसार किया।संत अधर्म का नाश करके अधर्मी को स्वास्थ्य प्रदान करते हैं किंतु जो रोगी स्वयं ही रोगस्वरूप हो गये हैं उन पापियों को मिटाने ही भगवान आते हैं। उन्होंने कहा है --विनाशाय च दुष्कृताम्।

भगवान परशुराम जी ने केवल उन क्षत्रियों को मारा जो अत्यंत पापी और सृष्टि विध्वंसक थे।

#युद्ध में देवताओं की सहायता करने वाले पराक्रमी राजा दशरथ जी भी उनके क्रोध से डरकर स्त्रियों का भेष बनाकर छिप जाते थे।

#रावण भी उनके डर से थर-थर कांपता था।

#हैहयवंशी दुष्ट सहस्रबाहु को उन्होने समूल नष्ट करके प्रजा की रक्षा की।

#अपने इष्ट के मिलन में बाधा डालने वाले गणेशजी के दांत को तोड़कर उन्हें एकदंत बनाकर हमें यह शिक्षा दी कि साधक अपने इष्ट से मिलने की ठान लें तो अटल रहे।

#कर्ण को परिचय छिपाने का दंड देकर शिक्षा दी कि शिष्य गुरु से धोखा न करे।

#भीष्म से युद्ध करके शिक्षा दी कि धर्म के युद्ध में धर्म का साथ दे, अपनों को स्वार्थवश अहमियत नहीं दे।

#पूरी पृथ्वि को जीतकर उसे कश्यप को दान में दिया।जिससे यह बात आज भी सत्य है कि सब लोग ब्राह्मण का दिया ही उपभोग करते हैं।

#चिरंजीवी होकर सतत तप कर रहे हैं तथा यह प्रेरणा दे रहे हैं कि आयु का उपयोग ईश्वर की भक्ति में करो।

#मित्रो परशुराम किसी जाति,धर्म से न बंधकर यह संदेश देते हैं कि धर्म का पालन करो।

जो धर्म का पालन करता है वही अवतार है।और धर्म कौनसा ? इसका निर्णय स्पष्ट है- जो हमारे कुल,गोत्र,जाति,सपिंडता,वेद, शाखानुसार है वही धर्म है उसे समझें उस पर चलें। मनमाना आचरण न करें।

१८.#धर्म का मर्म

सबसे ज्यादा दोषी हैं ये तथाकथित धर्मगुरु।और ये मूर्ख अपने को भक्त कहने वाले अपने पापों से मुक्ति के लिए जाते हैं इन चरित्रहीन व्यापारियों के पास?जिन्होंने शास्त्र कभी देखें ही नहीं।

#जानिए धर्म का मर्म-----

१ सच्चा धार्मिक कभी व्यापारिक वस्तुएं नहीं बेचेगा।

२ सच्चा धार्मिक अधिकांशतः एकांत में भजन करेगा।वह अकेले किसी से नहीं मिलेगा।यदि वह अकेले किसी को लालचवश बुलाता है तो १००% धोखेबाज है।

३ सच्चा धार्मिक कभी किसी को धन, नौकरी,पुत्र ,आरोग्य आदि देने का दावा नहीं करेगा।यदि ऐसा करता है तो समझें वह महापाखंडी है।

४ सच्चा धार्मिक कभी समाचार पत्र,टीवी आदि पर अपने पास भीड़ इक्कट्ठी करने का शौक नहीं रखेगा।

५ वह स्वयं में ही लीन रहेगा।उसे चेला चेली ,संगत बढ़ाने में कोई रूचि नहीं होगी।

६ वह जगह जगह जमीन लेकर आश्रम नहीं बनाएगा।

और #अंतिम सत्य स्त्रियां किसी पुरुष की धार्मिक निष्ठा की अन्तिम कसौटी है।यदि वह स्त्रियों को अकेले किसी भी बहाने से अपने पास बुलाता है तो समझ लीजिए कि वह महालंपट है।

अभिभावक भी ध्यान दें कि किसी भी कैंप,होस्टल, गुरुकुल,दीक्षा शिविर में अपनी लड़की को अकेले न भेजें।ये सब आज व्यभिचार के केंद्र बन गए हैं।

#और सबसे महत्वपूर्ण बात----

 * हमारे पाप को दुनिया की कोई ताकत नहीं काट सकती ,उसे हमें हर हाल में भोगना ही पड़ेगा

* ये पाखंडी क्या सुनाते हैं--अच्छी बातें। ये हमारी रामायण,पुराण में हैं जो हजार दो हजार में मिल ही जाएंगी।माताएं इक्कट्ठी बैठकर घर पर ही आपस में सुनें।कृपया अपनी इज्जत दांव पर न लगाएं।

* नाम लेने ,गुरू बनाने के चक्कर में न पड़ें।स्त्रियों का पति ही उनका गुरु है।उनकी आज्ञापालन ही सर्वोपरि है।(सीता, सावित्री का अनुसरण करें) पुरुष अपना यज्ञोपवीत संस्कार करवाएं व मंत्र जपें।

#और चमत्कारी वचन--

राम-राम,सीता-राम,राधेश्याम आदि जपें।यही महामंत्र है जिनको जपकर ही अजामिल जैसा हत्यारा और गजेंद्र का उद्धार हुआ।

भगवान को ही अपना गुरु मानकर उसका नाम घर पर ही जपें।ज्यादा चक्कर में न पड़ें।

#भगवान ही यह दावा करते हैं कि मैं तुम्हें तुम्हारे पापों से पार कर दूंगा---

#सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच:।।

कृष्णं वंदे जगद्गुरूम्।

(नोट:- उपरोक्त विवेचन शास्त्रानुसार है यदि किसी को कोई शंका है तो संपर्क करें।यही अटल सत्य है)

 १९.

 नेकदिल सब वर्गों में हैं जो अपने पूर्वजों, भगवदवतारों और वाल्मिकी, संत रविदास के मार्ग पर बेखूबी चल रहें हैं।जैसे एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है ऐसे ही कुछ नासमझ यहां हैं उनको मैंने इस रचना में "पलित"कहा है।क्योंकि वे पीढ़ियों से इसी धर्म का खाकर पीकर पले हैं और अपने पूर्वजों को धत्ता बताकर आज इतने बड़े हो गये हैं कि पूर्वजों के धर्म से उन्हें बू आने लगी है।वे स्वयं सोचें और ज़बाब दें---

हे पलित तेरा कौन सहाई

हमने सुना था धन्ना नाई

हरिगुण गाकर उम्र बिताई

रीति उसकी तुमने ठुकराई

हे पलित! तेरा कौन सहाई।।

रामभजन हरिगुण गाई

जग में रैदास भक्त कहाई

उनकी सीख तूंने बिसराई

हे पलित! तेरा कौन सहाई।।

भक्त कहाया सदन कसाई

निशदिन हरि महिमा गाई

क्या तुम उनसे बड़े हो भाई?

हे पलित! तेरा कौन सहाई।।

कबीर राम की कुतिया कहाई

खुद उसने यह युक्ति बताई

फिर मूर्ख तूं क्यों भरमाई

हे पलित! तेरा कौन सहाई।।

२०.#ब्रह्मज्ञान

।।१।।

दादा लख्मिचंद जी का ज्ञान हरियाणा सहित कई प्रदेशों में हरियाणवी लोकभाषा में बड़े शौक से गाया जाता है।यह वास्तव में भगवान के नि:श्वासभूत #वेद की शिक्षाओं का ही प्रसार करता है।इस दिव्य अमृत की झलक मेरे फेसबुक पर जुड़े आध्यात्मिक मित्रों के लिए प्रस्तुत है। प्रसंग तब का है जब सुदामा के लड़के को भूख लगती है,पर घर कुछ खाने को नहीं था।बच्चा अपनी मां से रोकर कहता है मां ,आप कैसी मां हो? आपका बेटा भूख से मर रहा है।इसी भाव को देखें---

तेरे घर मैं कोन्या टूक, लागरी भूख ,कालजा खा सै।

तेरे बेटे रोवैं चार कड़े की मां सै।

पति-पत्नी दोनों मिलके मैथुन से औलाद करैं।

पिता जी का फ़र्ज़ अपने पुत्र की जायदाद करै

पुत्र का भी फर्ज अपने पिता जी को याद करै

पिता जी से पुत्र बनता पुत्र से चलै वंश बेल

आत्मा का आत्मा से आत्मा के संग मैं खेल

तीन आत्मा इक्कट्ठी होकै पुत्र का रचावैं खेल

मोह ममता का नीर,बणा दिया शरीर धर्म की ना(नाव) सै।

तेरे बेटे रोवैं चार कड़े की मां सै।।

#भाव----

पति-पत्नी से पुत्रोत्पत्ति होती है।पिता का दायित्व केवल जन्म देना नही बल्कि पुत्र की अच्छी परवरिश भी है।और पुत्र का फ़र्ज़ पितृसेवा व मृत्यूपरांत श्राद्धादि करने में ही है।तीन आत्माओं के खेल से पुत्र की उत्पत्ति होती है।यह शरीर मोह-माया का नीर है,तथा पार होने के लिए धर्म की नौका ही काम आएगी।......क्रमशः

#दादा लखमीचंद ज्ञान

।।२।।

पति-पत्नी दोनो मिलकै पुत्र की बणावैं शान

पांच तत्व आण मिले जीव को मिल्या स्थान

पच्चीसों से मेल होता आत्मा को पूर्ण ज्ञान

सत रज तम तीनों सृष्टि के रचाने वाले

मन चित बुद्धि अहं माया के दिखाने वाले

अंड पिंड और ब्रह्मंड खेल के खिलाने वाले

काल बली की गैल खिलाकै खेल जमाना जा सै।

तेरे बेटे रोवैं चार कडे की मां सै।।

दादा जी बताते हैं कि संतान की शक्ल का आधार दोनों पति-पत्नी की शक्ल है।तभी तो ऐसा ऐसा लगता है कि जैसे दोनों की ही झलक संतान में झलक रही हो।यह शरीर पांच पृथ्वी आदि तत्वों से जीवात्मा के ठहरने का स्थान बना है।सांख्यदर्शन के पच्चीस तत्वों के ज्ञान से ही आत्मज्ञान हो सकता है।यह सृष्टि तीन गुणों की ही वैषम्यावस्था है। मन आदि अंतःकरण चतुष्ट्य के माध्यम से माया का खेल अंड(सूक्ष्मशरीर) पिंड(स्थूलशरीर)वह ब्रह्मंड में फैलता है। बलवान काल के साथ खेल खेलकर

यह जमाना मृत्यु चक्र में फंसा जा रहा है.....................क्रमशः

२१.#दिव्य नेत्र

आज हमारे नेत्र भौतिक चकाचौंध से तिमिरान्ध सदृश हैं और हम उम्मीद करते हैं कि हमे भूतभविष्य का ज्ञान हो जाए या परमात्मा की झलक हमें मिल जाए।

#कितनी हास्यास्पद बात है कि हम अपनी आंखों से गंदे चलचित्र देखते हैं।सड़कों पर दैनिक कार्यों में हमने अपनी एक जोड़ी आंखों को इतना मुस्तैद कर रखा है कि एक भी युवती इनकी नुमाइश से बचनी नहीं चाहिए। मैं प्रतिदिन नि:शब्द होकर इन दृश्यों को अमूमन देखता ही हूं। बुढ्डे भी इस कार्य में मुस्तैदी से लग्न हैं।विविहित पुरुष तो अविवाहितों से भी ज्यादा रोल अदा कर रहे हैं मानो अपने अनुभव को यहीं आजमा रहे हों।इसी कशमकश में दुनिया के तमाम पुरुष उलझे हुए हैं। यह है हमारे नेत्रों की उपयोगिता?

#और एक भाई जो भगवान की अनुकम्पा से अच्छी स्थिति में है उसके नेत्र सगे भाई की दयनीय स्थिति को देखने में असमर्थ हैं।वह पैसे देगा तो ब्याज पर, चाहे लेने वाला उसका बाप ही क्यों न हो। पुरुष वर्ग ज्यादातर अपने पद, राजनीतिक धौंस,और धन का प्रयोग औरत को फांसने व धन को चूसने में ही करते हैं

#औरतों ने अधिकांशत:(यद्यपि पुरुषों की तुलना में काफी शालीन हैं,और जो बिगड़ी हुई हैं उनमें भी पुरुषों का ही हाथ है) अपने शरीर रूपी अस्त्र को रोजमर्रा का खर्च निकालने का साधन समझ लिया है।यह हाल है समाज का।

#और वे चाहते हैं कि मंदिर में जाते ही भगवान हम पर कृपा बरसाएं।हमें दर्शन दें।

आप ही बताएं यह कैसे संभव है?

#नेत्र साधना

अब थोड़ा प्रकाश दिव्य दृष्टि कैसे मिले ताकि हमें भी अतीन्द्रिय ज्ञान हो सके। इसके लिए आपको पहले तो उपरोक्त दुर्गुणों से बचना होगा।फिर इष्टदेव को पूरे मनोयोग से प्रसन्न करना होगा।जब आपका "रोम रोम कहे राम" की स्थिति हो जाएगी तब भगवद् कृपा होगी और आपको दिव्यदृष्टि प्राप्त होगी। अर्जुन को भी भगवान ने जब यह कहा कि--दिव्यं ददामि ते चक्षु: .... तभी वह उनके दिव्यस्वरूप को देख सके।

#आप भी जब साधना में गहनतम उतरते हैं तो आपको भी यह दृष्टि प्राप्त होगी और आप तब गलियों से गुजरते हुए विभिन्न भूत प्रेतों को,मंदिर के देवों को, और यात्रा के दौरान स्थान,ग्राम,वन देवताओं को देख सकोगे।फिर उनमें से कुछ आपका स्वागत,कुछ दिव्याशीष और कुछ दिव्य संदेश देते हुए दिखाई देंगे।और आपका जीवन दिव्य हो जाएगा।इस नेत्र साधना के लिए आपको प्रथम तो कूड़े कचरे से अपनी दृष्टि फेरनी होगी।

परमात्मा को सनातन पुरुष कहा गया है।-#सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे

#और परमात्मा द्वारा प्रतिपादित सनातन धर्म है।

#और इस सनातन धर्म के रक्षक परमात्मा ही है।इसलिए वे #सनातनधर्मगोप्ता कहलाते हैं।

यह धर्म वेद पर आधारित है।वेद इसका संविधान है। वेद के अन्तर्गत संहिता,ब्राह्मण,आरण्यक व उपनिषद आते हैं।

#ईतिहास(महाभारत, रामायण) व पुराणों द्वारा विधि निषेध से शिक्षा दी गई है।इसे समझें।

#ईतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।

अत:वेद के तत्त्वार्थ को जानने के लिए रामायण ,महाभारत,पुराण व स्मृतियां पढ़े ।क्योंकि धर्म व कर्म की गति सूक्ष्म है। दुविधा होने पर जिनसे यह पता चल सकेगा कि पूर्वज धर्मवेत्ताओं ने क्या निर्णय लिया था।

और सनातन धर्म का मूल उद्देश्य चरित्र की रक्षा और अच्छा आचरण ही है। सदाचार ही सनातन धर्म का आधार है।

अत: सदाचारी बनें और अपने स्वाध्याय को बढ़ाएं।स्वाध्यायान्मा प्रमदितव्यम्।

२२.

#धर्म एवं हतो हन्ति जो अपने धर्म (सनातन वैदिक ,परम्पराप्राप्त) जो व्यक्ति अपने धर्म को मार देता है,वही धर्म उस व्यक्ति को मार देता है।और धर्म की ही विजय होती है।

पृथ्वि आदि लोक यदि अब तक बचे हुए हैं तो इसके ये सात कारण हैं--

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभि: सत्यवादिभि: ।

अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ।।

अर्थ :- गोवंश , ब्राह्मणवंश , वेद , सती स्त्रियां , सत्यवादी लोग , निर्लोभ और दानशील – इन सातों के द्वारा पृथिवी धारण की जाती है ।

अत:इनकी सुरक्षा ही सबका धर्म है।और इनकी सुरक्षा में ही सबकी सुरक्षा है।इनको जो मन कर्म वाणी से प्रताडित करें वह राक्षस है उस राक्षस का और उसके पक्षधरों का विनाश धर्म ही कर देता है और धर्म की सहायता समय समय पर परमात्मा अवतार लेकर करते हैं।

२३.प्रकृति

दैवी और आसुरी दो प्रकृति सदा से ही समाज में रही हैं।इनकी पहचान गीता में बताई गयी है हम किस प्रकृति के हैं वहां से पढ़कर पता लगाएं।अथवा अगली पोस्ट का इंतजार करें।ये दोनों प्रकृतियां ईश्वर का खेल ही है।हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने को आसुरि प्रकृति से बचाएं। क्योंकि आसुरि प्रकृति से दुर्गति व अधोगति होती है ,दु:ख की परम्परा में फंसकर पूरा कुल दौर्भाग्य को प्राप्त हो जाता है।मानव जीवन बड़ा दुर्लभ है इसे व्यर्थ न गंवाएं।धन,पद, जमीन सब यहीं रह जाएगा।धर्म ही साथ जाएगा।

१.ग़लत धर्मविरोधी बातों का समर्थन करने वाले

२. उनका साथ देने वाले

३. और धर्म की सुरक्षा में केवल चुप्पी साधने वाले

ये तीनों कौरव सभा के समान अपना दंड भोगते हैं।

यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न पूछा था कि मृत्यु के बाद जीव के साथ कौन साथी होता है।

युधिष्ठिर ने उत्तर दिया--#धर्म

और धर्मरक्षा के लिए ही मत्स्य,कूर्म,वराह, श्रीकृष्ण, परशुराम,राम,बुद्ध आदि अवतार हुए हैं।आपकी धर्म और अधर्म के पक्ष में मन,वाणी,कर्म से किया गया और मात्र सोची गयी योजना तुरंत नोट हो जाती है जैसे दिल की धड़कन मशीन में दर्ज हो जाती है।

#कौन दर्ज करता है?

उ० लोकपाल, दिकपाल,पंचतत्वदेव और धर्म के रक्षक नो नाथ , चौरासी सिद्ध और सिद्धाश्रम में निवास करने वाले अनन्त योगी गण।

अत:

*धर्म क्या है?

*हमारी प्रकृति क्या है?

*हमारा कर्त्तव्य क्या है?

इन तथ्यों पर आत्मचिंतन करें।और धर्म की रक्षा करें तभी आपकी रक्षा होगी।

२४. सावधानी

आज सुबह स्नानोपरान्त पूजाकक्ष की ओर बढ़ा तो आसमान में काली घटाएं देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे अभी तेज बरसात होगी।पूजा के उपरांत बाहर आया तो देखा धूप खिली हुई थी ।देखकर मुंह से निकला कि "अभी तो बारिश की तैयारी थी अभी क्या हो गया?(यद्यपि प्रकृति के मनोविपरित कार्य को देखकर कभी भी मुखरालोचना नहीं करता था,मन में ही "इसकी माया है"ऐसा विचार कर संतुष्ट हो जाता था।)ऐसा कहते ही धूप में ही तेज बारिश शुरु हो गई।गजब है प्रभु आपकी माया Ÿ Ÿ । तुरंत गलती का अहसास हुआ ,क्षमा मांगी और बारिश बंद हो गई।लगा जैसे मेरे ही उलाहने को उतारने की लीला प्रभु ने की।मैने भी प्रण किया आगे से ऐसा कोई आक्षेप नहीं करूंगा। अभिभूत हूं आपके गुप्त संदेशों से ∊ ∊

२५. लिबास

फटे कपड़े पहने एक स्टाइलिश युगल को देखकर बेटे ने प्रश्न किया "तात! इनके कपड़े फटे क्यों हैं?

मैंने कहा- बेटा इनके भाग्य में ऐसा ही लिखा है।और विधाता के लेख को कोई नहीं टाल सकता।

#शास्त्रानुसार तो फटे कपड़े पहनना व टूटी खाट पर सोना टूटे बर्तन में खाना दौर्भाग्य का सूचक है। क्योंकि ज्यौतिषानुसार इन पर शनि का अधिकार है।ऐसा करने से यदि शनि प्रतिकूल है तो पारिवारिक विघटन,नसों की दिक्कत इन लोगों को यह सकती है ।

पर हमारी कौन माने? उन्हें तो अपने आधुनिक फैशन के स्टाइल से मतलब?

२६. जन्म

जन्म पूर्व संचित कर्मों का फल है।आप कीड़े,सांप, बिच्छू,खरगोश,पेड़,लता आदि हो सकते थे । लेकिन आप मनुष्य ही हुए ,अत: आप पिछले जन्म के फलस्वरूप भाग्यशाली थे ।

२ अब सोचिए मनुष्य होकर भी आप दिमाग से पागल हो सकते थे। फिर क्या करते?

आप ठीक हैं तो समझें आपका पूर्व पुण्य है।

३ ठीक होकर भी कुछ लोग मांसाहारी घर में, पैदा हुए।इसका जिम्मेदार कौन?

-----पूर्व संचित कर्म।

#अब विभाग समझें

कोई डाकू के घर में,कोई करोड़पति के घर में, कोई भिखारी के घर में, कोई वेद मंत्रों से पवित्र ब्राह्मण के घर में।

इसका जिम्मेदार कौन?

----- हमारे पूर्व जन्म के संचित कर्म

४ अब बोलो एक कमरे में सब (पागल, डाकूपुत्र, मांसाहारीपुत्र करोड़पतिपुत्र भिखारीपुत्र ब्राह्मणपुत्र,)बैठे हों तो बताइये इनमें श्रेष्ठ कौन?

#उत्तर अलग अलग हैं जैसे--

लूटपाट में डाकू पुत्र

धन में करोड़पति पुत्र

हिंसा में मांसाहारी पुत्र

ज्ञान में ब्राह्मण पुत्र

५ सबका अपना अपना स्तर है

पर ईश्वर के नजदीक कौन है----

उत्तर- जो धार्मिक है

अब ध्यान से समझें----

#परमात्मा की कक्षा में सब बालक बैठे हैं ।किसी ने पिछले कक्षा(जन्म) में 90% किसी ने 60% किसी ने 30% अंक पाए हैं। परमात्मा तक वहीं पहुंचेगा जो 100% अंक पाएगा।

तो बताएं 100% कौन पाएगा?

उत्तर-- कोई भी मेहनत करें तो पिछला स्तर सुधार कर 100% अंक पा सकता है।

#यही वर्ण एवं जाति व्यवस्था का मर्म है।

#वैदिक तथ्य पूर्वजन्म_आधारित_है_जाति_और जाति आधारित है वर्ण_और वर्ण पर आधारित है आश्रम और इन से बंधे हैं कर्म।

#सारतत्व ---सब वर्णों में उत्पन्न व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त कर सकता है ,उसे अपने अपने वर्ण के अनुसार कर्म करके उन कर्मों से भगवान का अर्चन करना है ,उन्हीं कर्मों को पूजा कहा है।

#गीता में भगवान कहते हैं--#स्व स्व कर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदति मानव:

और स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:।

#अर्थात् अपने धर्म पर मर जाना श्रेष्ठकर लेकिन परधर्म भय देने वाला है उसे न अपनाएं।

अपना जातिकुलवर्णाश्रमधर्म का पालन करें ,यही एकमात्र उपाय है इसमें ही सबके लिए रास्ते खुले हैं।

परधर्म कैसे दु:खदाई है इस पर विचार क्रमश:.......

२७.#रुद्राक्ष कथा

जो काजू के आकार में हैं वे सब रुद्राक्ष नकली हैं ।ये पिछले दस पंद्रह साल से ज्यादा प्रचलन में आए हैं। हाइब्रिड बीज से ये तैयार होते हैं।सबसे असली रुद्राक्ष हैं पंचमुखी।यह सबसे ज्यादा बाजार में मिलता है।इसी की मालाएं बनाई जाती हैं।जो गोल दाने मिलते हैं वे चार,छह,सात मुखी भी असली हो सकते हैं।इनको ही शिव मंत्र से अभिमंत्रित कर धारण करें।

एक या दो मुखी असली होंगे इस धोखे में न आएं।ये बिल्कुल नकली हैं।

#हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने अपनी पुस्तक"नाथपंथ" में एकमुखी रुद्राक्ष की पहचान आंखों देखी बताई है कि एक मुखी रुद्राक्ष को बकरे के गले में पहनाकर यदि उसकी बलि देने के लिए उसपर तलवार का वार किया जाए तो उसका गला नहीं कटेगा।यह होती है असली एक मुखी रुद्राक्ष की पहचान।मैंने जितना समझा उतना आपके लिए उद्घाटित किया।जय जय शंकर,जय भवानी।

२८.फ्रैंड

 नए बालक मुझे फ्रैंड रिक्वेस्ट भेजते हैं ।मैं उन्हें रिजेक्ट कर देता हूं।और कुछ पुराने मित्र हो चुके हैं पर जब भी फेसबुक पर अपना मुंह खोलते हैं तो साफ बेशर्मी झलकती है ,उन्हें भी मैं तुरंत रिलीव कर देता हूं।

#कारण ---

१. जिनकी वाल पर गंदी शायरी है उनका मेरी दोस्ती से क्या भला होगा?

२. जो फिल्म व क्रिकेट के कीड़े हैं वे मुझसे दूर रहें । मैने इन बेकार के कामों से किसी का आज तक भला होते नहीं देखा।

३. जो सनातन वैदिक धर्म के खिलाफ हैं वे नरक से आए हैं उसी की तैयारी करें,मेरे साथ से उनकी तैयारी में खलल पड़ेगा।४. जो ज्ञान सम्पन्न ब्राह्मणों से द्वेष करते हैं वे मेरे किस काम के? क्योंकि जितने भी अवतार, महापुरुष हुए हैं सबकी ब्राह्मणों में निष्ठा रही है।और सबके संस्कार ब्राह्मणों से सम्पन्न हुए हैं।बिना क्षत्रियोचित संस्कार के कर्ण का देखो क्या हाल हुआ था।

५.जो भारतीय संस्कृति के मानबिन्दुओं(गो ,विप्र,वेद,सत्य,सतीस्त्रियां,सन्तोष,दान)में निष्ठा नहीं रखते व उन्हे विकृत करने में कसर नही छोड़ते वे मुझसे दूर ही रहें।

मैं कट्टर पुरातन जातिवर्णाश्रमकुलधर्मसंस्कृति को जीने का आदी हूं।

#उन्मुक्त स्वेच्छाचारी, हाथ -पांव-लिंग-गुदा-सिर आदि में भेदभाव न रखने वाले व माता-बहन-पुत्री-पत्नी को एक नजर से देखने वाले तथाकथित आधुनिक विद्वान मुझ पुरातन परम्परा निष्ठ से दूर ही रहें तो ठीक है क्योंकि इससे उनके संस्कार बचे रहेंगे।

२९. कुबुद्धि

#न कालो दंडमुद्यम्य शिर:कृन्तति कस्यचिद्।

कालस्य बलमेतावद् विपरीतार्थदर्शनम्।।

अर्थात् - समय तलवार लेकर किसी के सिर को नहीं काटता अपितु वस्तुओं तथ्यों को विपरीत दिखा देता है जिससे व्यक्ति की बुद्धि फिर जाती है और वह कुमार्ग गामी हो जाता है जैसे गुरु+गंगा+ग्रंथ द्रोही आधुनिक असुर।

३०.

सच्चा शूद्र है वेद भी उसको प्रणाम करता है। क्योंकि #धर्म पालक ही सर्ववंद्य और पूज्य है मात्र जन्म से गर्वित नही। धर्म के रक्षक व पालक पर ही लोक टिके हुए हैं।

— नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नम : कुलालेभ्य : कमरिभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्य : पुंजिष्ठेभ्यश्च वो नमो नम : श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नम : श्वभ्य : श्वपतिभ्यश्च .....

३१ #वह रहस्यमय साधू----

सर्दी के उन दिनों मैं उस मंत्र जप में संलग्न था जिसके जप से सिद्धों के दर्शन हाते हैं।प्रवास पर एक दिन दिव्य नगरी में गया।उस जगह मेरी परिचित मातृ स्वरूपा "मूर्त्ति" नामक महिला है।वह भी वास्तव में भक्ति का ही पर्याय है।उसकी गजब की दिनचर्या है।हरि भजन और Ⱥ को ȫ को भोजनादि देना उसका नित्य कर्म है।वह अक्सर कहती कि पास के तपोवन में एक साधू रहता है।जो घंटों निश्चेष्ट समाधि में रहता है। सेवादार उसे चिकोटी काटते हैं उसका भी उस पर कोई असर नही होता।स्वयं ही वह स्वेच्छा से चेतना में लौटता है।

#मैने पूछा - तुम कब से जानती हो? कभी उनसे कुछ पूछा?

मूर्त्ति ने कहा- वह एकबार भोजन करते हैं। मैं पिछले बीस वर्ष से उनका भोजन दें आती हूं। एकबार बीमार हुए थे,तब से नियमित भोजन पहुंचा देती हूं।

पर वह संसारिक समस्या पर कोई हल नहीं बताते।अपने में मग्न रहते हैं।

#चलो! "आज तुम भी दर्शन कर आना।तुम जिज्ञासु और पढ़ें लिखे हों। तुम्हें वे कुछ बता देंगे"।उसने कहा।

मैं ऐसे अवसर नहीं चूकता।तुरंत साथ हो लिया।

मूर्त्ति ६५ वर्षिया वृद्धा बड़े थैले में फल,अनाज भरकर आश्रम की ओर बढ़ी,साथ में सपत्नीक मैं और एक शिष्य।

आश्रम में पहुंचते ही सैंकड़ों बंदरों ने हमें घेर लिया। मूर्ति अपने हाथों से उन्हें फल ,अनाज लुटाने लगी।किसी Ⱥ को डांटती तो किसी को थप्पड़ लगाती।

वे इनसे परिचित थे।यह उनका रोज का काम था। अद्भुत नजारा था।

इनको निपटाकर बाबा की कुटी की और बढ़े।बाबा को प्रणाम किया। मूर्ति ने परिचय करवाया और उलहाना देते हुए बाबा से बोली- मुझे तो आज तक कुछ नहीं बताया ,ये तुम्हारे जैसे हैं(विचारों से)।इन्हें कुछ बताओ।

#मैंनें कल्याण का मार्ग पूछा,तो बाबा हंसने लगे।और लगातार हंसते रहे।उनकी हंसी भी उनकी तरह रहस्यमयी थी।शतायु के करीब ,दुर्बल शरीर ,पिछले अनेक दशकों से आश्रम में ही एकांत वास करने वाले। अद्भुत व्यक्तित्व था उन संत का।

#उत्तर के स्थान पर केवल उनकी वही हंसी, मैंने वैसी दिव्य हंसी आज तक नहीं सुनी थी।उनकी वह हंसी ही मानो हमें कहीं रही थी-" तुम सांसारिकों को कल्याण की चिंता कब से होने लगी? "

#मैने और मूर्त्ति ने पुन: अनुरोध किया।पर वे हंसते ही रहे।

#और बोले कल दस बजे आना।

हमने प्रणाम किया और पुरातन शिवमंदिर में अर्चना कर वापिस आ गये।

..... क्रमश:

........#रहस्यमय साधू

अगले दिन मातृस्वरूपिणी मूर्त्ति के साथ फिर आश्रम में पहुंचे। A̸ को उनका भोजन खिलाने के बाद हम साधू के समक्ष उपस्थित हुए। बाबा जी बाहर धूप में ही बैठे हुए थे। हमने प्रणाम किया और मूर्ति ने बाबा जी से मेरी ओर संकेत करके कहा कि ये कल भी आए थे।आपने इन्हें आज बुलाया था।बाबा ने न पहचानने का अभिनय किया।फिर बोले-बताओ मृत्यु क्या है?

मैने कहा-शरीर का छूटना ही मृत्यु है।

वे बोले --नही।

परमात्मा को भूलना ही मृत्यु है।

मैने कहा "सत्यवचन है।"पुन: मैंने पूछा कि आप अपनी साधना पद्धति मुझे बताएं।

फिर उन्होंने धीरे-धीरे प्राणायाम की सटीक पापशोधक विधि और ध्यान की विधि व उसमें गहनता हेतू "दो गुप्त मंत्र" प्रयोग बताए।

मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि ये वही मंत्र थे जिनका विशेष अनुष्ठान मैं करने की सोच रहा था।पर गुरुमुख से प्राप्त न होने के कारण शुरू नहीं कर पा रहा था।(मंत्र पुस्तक से न लेकर गुरुमुख/शुद्ध ब्राह्मणमुख/मंत्रसाधक के मुख से ही ग्रहण कर जपने से फलदायी होते हैं)।ध्यान साधना के अनेक उत्तर प्राप्त करके मन प्रसन्न हुआ।मना करते हुए भी बाबाजी को भेंट देकर हम घर की ओर चले।

मूर्ति ने कहा-मैं अनपढ़ तो तुम्हारी बातों को कुछ समझी नहीं,पर तुम्हारे काम तो आएंगी।

फिर उसने कहा कि दूर उस दूसरी कुटी में एक साधू और रहता है।पर इन दोनों साधुओं को मैंने कभी आपस में मिलते या साथ बैठे नहीं देखा।उनसे भी मिलोगे?

मैने कहा ऐसे निष्काम साधु से भी अवश्य मिलेंगे।आज देर हो गई है।कल पुन: आएंगे.....

||३||

#वह रहस्यमय साधू

तीसरे दिन आश्रम की दूसरी कुटिया के साधू के चरणों में नित्यकर्म से निवृत्त होकर पहुंच गया।प्रणामोपरांत तपस्वि साधू ने निस्पृह किंतु अपनत्व दिखाते हुए परिचयादि पूछा। तत्त्वज्ञान पर चर्चा करते हुए बिल्कुल साधारण से दिखने वाले साधू ने कितना उच्चकोटि का व्याख्यान दिया ,सुनकर मन गद्गद् हो गया। उपनिषद,गीता, योगसूत्रों के मिश्रण से उन्होंने गागर में सागर

भर दिया।आज मुझे अहसास हुआ कि शास्त्रज्ञान के साथ साधना का संगम इन दुर्लभ आश्रमों में ही मिल सकता है तथाकथित विश्वविद्यालयों में नहीं। क्योंकि विश्वविद्यालयों में तो परस्पर अपने भाई भतीजावाद को महत्त्वपूर्ण पदों पर लगवाने का ड्रामा चल रहा है। लायक खड़ा देख रहा है और नालायक प्रोफेसर हो रहे हैं एकाध को छोड़कर।वे एकाध भी ईशकृपा से ही लग रहे हैं ।

खैर इस पर अलग पोस्ट लिखेंगे।

साधू ने स्पष्ट किया कि-इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टि: । ... अर्थात् इस दुर्लभ मानुष तन को प्राप्त करने के बाद भी यदि परमात्मा को प्राप्त नहीं हो सके तो यह अपना महान विनाश ही समझो।उन्होने फिर पूछा--हम संतान पैदा क्यों करते हैं?

मैने कहा उत्तराधिकारी हेतू।

उसने कहा--आजकल लोग प्रोपर्टी, धन,दौलत को ही उत्तराधिकार कहते हैं।वास्तव में सन्तान धन, प्रोपर्टी सम्भलाने के लिए नहीं बल्कि संस्कृति एवं संस्कारों को आगे की पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए सन्तान पैदा करते हैं।यदि हम संतान को धन दौलत देंगे और संस्कार से वंचित रखेंगे तो संतान उन्हीं का सिर फोड़ेगी और धन को ऐयाशी में उड़ा देगी।आजकल यही हो रहा है।.......

.........क्रमश:

।।४।।

#वह रहस्यमय साधू

उस संन्यासी के सारगर्भित वचन मुझे अमृतमय लगे। फिर उसने पूछा --बताओ मनुष्य सामाजिक प्राणी कैसे है?

प्रश्न साधारण सा था ,जो हम विभिन्न परीक्षाओं में उत्तर देते आए थे। मैने भी कहा--- क्योंकि उसे समाज की आवश्यकता है।

संन्यासी मुस्कुराने लगे और बोले-- इसका उत्तर साधारण मत समझो।आज तो धन,पद,जवानी के नशे में हर व्यक्ति बेबाक होकर मां-बाप तक को कह देता है "निकल जाओ यहां से मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है।"जब मां बाप के लिए यह जबाव है तो बाकि समाज से उसे क्या मतलब?

मैने कहा-महाराज जी,आप ही समझाएं कि मनुष्य सामाजिक प्राणी कैसे है?

तब उस साधु ने जो समझाया उसे सुनकर मैं रोमांचित हो उठा।मैने देखा साधु की ज्योतिष्मती प्रज्ञा जागृत थी।

उन्होंने समझाया----

#ठीक है कि जवानी के धन,पद,बल के घमंड में तो वह बिना समाज के भी काम चला लेगा परन्तु जन्म से लेकर बारह पंद्रह साल तक उसे मां-बाप या किसी अन्य कि आवश्यकता अवश्य ही पड़ेगी।और बुढ़ापे के बारह पंद्रह साल भी समाज के सहयोग की आवश्यकता अवश्य पड़ेगी।इन दोनों अवस्थाओं में उसे समाज का भरपूर सहयोग अत्यावश्यक है।इसके बिना उसका जीवन ही सम्भव नहीं है।।

#अत: पूछो उस सिरफिरी कृतघ्न औलाद से जो गर्ज निकलने पर 'मां-बाप' को कहते हैं कि मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं।पर उन्हें उस दिन को याद रखना चाहिए जिस दिन "तू जेर में लिपटा था तेरे शरीर के सारे छिद्र बंद थे।और ये समाज वाले तेरे नथुनों को न खोलते तो तूं कैसे जीता।"आज जिनको देखकर नथुने फूलाता है 'ओ' अहसान फरामोश! याद रख उन नथुनों

को हवादार बनाने का काम समाज ने ही किया है। समाज के बिना हमारा अस्तित्व ही नहीं है।

#इसलिए कहा है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

बाबा के ज्ञान के आगे मैं नतमस्तक था।।

(#इस लेख से मां-बाप को घर से निकालने वाले व घर में कैद करके रखने वाले आधुनिक कंस शिक्षा लें)

क्रमश: ....

।।५।।

वह रहस्यमय साधू

वह साधू कद काठी से मुझे पर्वतीय स्थान का प्रतीत हुआ। दार्शनिक प्रश्नों के समाधान के बाद मैंने जिज्ञासावश पूछा --क्या आप कभी कामाख्या भी गये?

उन्होने कहा-हां।

आप सात्त्विक संत हैं और निष्काम हैं ,आप उस तंत्र के क्षेत्र में क्यों गये?मैने पूछा।

वे बोले-- देशाटन के लिए।

मैने कहा-- सुना है वहां मांसाहारी ज्यादा हैं।बलि आदि दी जाती है।

वे बोले--वहां के मंदिर के पूजारी प्रसाद को भी रक्त से सिंचित कर देते हैं।अत: उत्तर भारत के सात्त्विक ब्राह्मण को वहां का प्रसाद खाना नहीं चाहिए। दक्षिण भारत के ब्राह्मण अधिकांश मांसाहारी हैं। उत्तर के सात्त्विक हैं।वे अपना धर्म बचाए रखें।

बाबा के इस रहस्योद्घाटन से मैं सचेत हुआ। क्योंकि मेरी वहां जाने की इच्छा हो रही थी। उन्होंने स्पष्ट किया कि मिथिला , उड़िसा,बंगाल,आसाम आदि प्रदेशों में सात्त्विक को विना तीर्थाटन के यात्रा भी नहीं करनी चाहिए।अन्यथा वह ब्राह्मण संस्कार से भ्रष्ट हो जाता है।

खानपान को देखकर ही कह सकते हैं कि उतर भारत के ब्राह्मण शुद्ध हैं। दक्षिण भारतीय तो मछली को तो मांस में भी नहीं गिनते।वे व्रत में प्याज तो बंद कर देते हैं पर मछली जरूर खाते हैं।

बाबा जी से इस मुलाकात से काफी ज्ञानार्जन हुआ।

।। ६।।

वह रहस्यमय साधू

गांव के ही भट्टेश्वरतीर्थ पर एक बंगाली बाबा जी रहते थे।मैं अक्सर तीर्थ के मंदिरों के दर्शनार्थ वहां जाया करता था। बाबा जी के पास अनेक भक्त अपनी समस्याओं को लेकर जाया करते थे। बाबा जी सबकी समस्याओं को यथानानुरूप समाधान किया करते थे। बाबा जी सिद्ध व्यक्तित्व थे।तीर्थ का पुनर्निर्माण,अनेक मंदिरों का निर्माण व प्रतिवर्ष भंडारे का आयोजन करना बाबा का महनीय कार्य था। संगमरमर की मूर्तियों से गांव के तीर्थ पर मंदिरों का निर्माण कराने का श्रेय बाबा जी को ही जाता है।अकाल पड़ने पर बाबाजी को पानी में बैठकर तपस्या करते मैंने भी देखा है। बाबा जी ब्राह्मणों से विशेष स्नेह रखते थे तथा प्रतिवर्ष अनेक अनुष्ठान ब्राह्मणों से करवाते थे। क्योंकि शास्त्र कहते हैं कि "जिस गांव में विद्वान ब्राह्मण,वैद्य व ज्यौतिषी न हो

उस गांव में नहीं रहना चाहिए"। बाबा जी मूल रूप से बंगाल के थे ।अत: तंत्र में माहिर थे।उनको सब तंत्र क्रियाएं सिद्ध थी। एकबार मैं तीर्थ पर एक अनुष्ठान कर रहा था।एक पंचायत के लोग जिनका लड़का घर से भाग गया था ,अपनी समस्या लेकर बाबा जी के पास आए। बाबा जी ने मुझे बुलाया और कहा--शास्त्री जी,इनका पंचाग देखो, लड़का कहां गया है।मैने कहा - आपके रहते मेरी क्या सामर्थ्य।

बोले -नहीं, नहीं; देखो देखो।

मैने देखकर बताया कि लड़का उत्तर दिशा में है। बाबा जी तुरंत बोले-- कटड़ा है धर्मशाला में रुका है जाकर देखो।वे पूछकर चले गये।

कई दिनों बाद पता लगा कि बात सत्य थी।

बाबा जी ने मुझे सर्वसमस्या निवारक भगवती का यंत्र एवं मंत्र दिया ,जिसका प्रयोग अकाट्य है तथा मंत्र भगवती के दर्शनार्थ अनुभूत है।

#दुखद: यह रहा कि बाबा जी का सानिध्य जब था तब तक हम परिपक्व नहीं हुए थे। बाबाजी को गोलोकवासी हुए डेढ़ दशक के लगभग हो गया , उनकी समाधि एवं भव्य प्रतिमा अब भी तीर्थ पर सुशोभित है।

(बाबाजी ने दिल्ली के कालका जी मंदिर में पहले वर्षों तपस्या की थी, बाद में हमारे गांव आए थे। संयोग देखिए जैसे ही बाबाजी के पूर्व तपस्थल कालकाजी का ध्यान आया व लिखने ही लगा तो बीच में ही एक शिष्य का फोन आया कि -गुरुजी कालकाजी दर्शन के लिए चलना हो तो वहां के मालिक से बात करूं,मैंने तुरंत स्वीकृति दे दी।) जय मातेश्वरी।

चक्षुर्भ्यां हसति विद्वान् दन्तौष्टैश्च मध्यमाः

अधमा अट्टहासेन न हसन्ति मुनीश्वराः।।

।।७।।

वह रहस्यमय साधू

मेरी यात्राओं का उद्देश्य तीर्थाटन के साथ साथ संत दर्शन भी है।सच पूछिए तो मैं संत समागम को तीर्थाटन से भी अहं मानता हूं। मेरे शिष्य भौमानंद लगभग दो साल से बनखंडी बगलामुखी मंदिर हिमाचल में अनुष्ठान रत हैं। उन्होंने पास के गांव वालों के माध्यम से एक ऐसे साधू का पता चला जो अनेक वर्षों से पास के ही जंगल में रहते हैं। किसी से मिलते नहीं। कोई बात नहीं करते।वे उनसे मिलने गये।और जाकर घंटों साधू के पास प्रतीक्षारत बैठे ,तब कहीं जाकर साधू ने उनसे कहा -- क्यों आए हो यहां। यहां कोई नहीं आता। तुम्हें भी नहीं आना चाहिए।भौमानंद इस प्रसंग से बड़ा खुश हुआ और आते ही मुझे फोन करके सारी बात बताई और कहा -- गुरुजी मैं चाहता हूं आप यहां आएं और उस साधु से अवश्य मिलें। मैने कहा कि जब आना होगा तो अवश्य मिलेंगे।इन बातों को कई महिने बीत गए।अब जब हिमाचल यात्रा को गये तो उस साधु के दर्शनार्थ शाम छह बजे पैदल जंगली मार्ग से हम चल पड़े। एकान्त व शांत वातावरण में पुराने आश्रम में पहुंच कर हमने उस आश्रम को आध्यात्मिक ऊर्जा से भरा हुआ पाया। साधू महाराज धूने के पास बैठे हुए थे।उनकी पीठ हमारी और थी। मुझे बड़ा घोर आश्चर्य लगा कि बाबा जी ने हमारी आहट सुनकर भी पीछे मुड़कर नहीं देखा।पत्थर की भांति यथावत् बैठे रहे। हम ही आगे की ओर बढ़ें बाबा जी के सामने जाकर प्रणाम किया और बैठ गये। बाबा जी निर्विकार बैठे रहे।भौमानंद ने ही बताया कि बाबा जी मैं महिनों पहले यहां आया था।ये हमारे गुरु जी हैं आपके दर्शनों हेतू आए हैं। बाबा जी ने आत्मीयता दिखाई और बोले -- मंदिरों में क्या है? ईश्वर सब जगह है देखने वाली आंख चाहिए। यहां कौन किसका है? पल पल हम मर ही रहे हैं ,ईश्वर को भूलना ही मृत्यु है। एकांत वास व अकेला रहना ही साधना का आधार है यह बाबा जी के उपदेश का सारांश था। वे बोले-- जिसके साथ रहोगे उसके संस्कार हमारे में आएंगे।पति में पत्नी के ,मित्र में मित्र के ऐसे ही संस्कारों में उलझने से कष्ट बढ़ेगा।अत: एकांत वास

करो। बाबा जी जो कह रहे थे वह उनके आसपास आचरण से स्पष्ट झलक रहा था।बातों से मुझे स्पष्ट लगा कि बाबाजी उच्च कोटि के सिद्ध हैं।उस जंगल में निर्भय होकर रहना ही अपने आप में एक सिद्धावस्था है। जितने भी साधू मैंने देखे हैं उनमें ये पहले ऐसे देखे हैं जो बिना चेलों के नितांत अकेले हैं।अपने में ही मस्त हैं। संस्कृत श्लोंक/गीता/दोहे/पंजाबी कुंडली आदि के प्रयोग से लगा कि वे उच्च स्वाध्यायी ब्राह्मण थे।भौमानंद ने बताया कि मेरे साथ इनकी भाषा इतनी संस्कृतनिष्ठ व विद्वत्तापूर्ण नहीं थी जितनी आप के साथ।मैने भी देखा कि वे हमारे हितार्थ ही व्यवहार भूमि में उतरे थे अन्यथा उन्हें उपदेश दान से कोई मतलब नहीं था।वे लोगों से बातचीत/उपदेश का मार्ग त्याग चुके थे।यह तो हमारा सौभाग्य था कि उन्हें हमारे कारण उच्चावस्था छोड़कर हमारे साथ चर्चा की।यह उनकी करुणा ही थी। उन्होंने कुछ चमत्कारपूर्ण रहस्यमय वचन भी कहें।मन बहुत प्रसन्न था.......क्रमश:

(संलग्न आश्रममार्ग चित्र)

।।८।।

वह रहस्यमय साधू

उस दिव्य बाबाजी का उपदेश ईश्वर का किसी स्थानमूलक बंधन न होकर इसी बात पर था कि वह सर्वत्र सर्ववित् है। अपने दिनचर्या के बारे में संक्षेप में बताते हुए कहा कि मेरी कोई पूजा पद्धति नहीं है।पेट की चिंता मुझे नहीं है।मैं क्या/कब खाता हूं यह कोई नहीं जानता। परमात्मा सर्वसुलभ नित्य प्राप्त है।(दिन में वैजनाथ मंदिर में एक बालक को मैंने बैल्ट लगाकर गर्भगृह में प्रवेश करते देख कर उसे टोका था) मुझे आश्चर्य हुआ कि बाबाजी ने अचानक कहा कि चमड़े से भगवान को कोई दिक्कत नहीं।यह शरीर भी तो चमड़े का है। इसमें भी भगवान रहता है।इस चमड़े के मंदिर में भी तो भगवान का वास है।मैं बाबाजी का संकेत समझ गया था। मुझे विश्वास हो गया कि बाबा जी सर्वज्ञ हैं।आगे पतिव्रता नारी के प्रति बाबाजी ने श्रद्धा दर्शाने वाली एक घटना सुनाई। फिर बिना दूध की चाय धूने पर बनाकर हमें प्रसाद रूप में दी जो घर की चाय से कहीं ज्यादा स्वादिष्ट थी। बाबा जी ने मंदिर/आश्रम के उन साधकों पर भी कटाक्ष किया जो हाथ में तो माला नेत्र बंद रखते हैं पर कोई स्त्री/उसकी आवाज आने पर धीरे से आंख खोल कर देखते हैं कि कितनी सुन्दर है। लोगों की ठगबाजी पर वे कई बार मुस्कुराए।उनका उपदेश माया के प्रवाह से बचने पर ही था। बाबा जी एक अच्छे चित्रकार भी थे। धूने के पास कई सुंदर चित्र बाबाजी ने स्वयं बनाए थे । वहां चरण स्पर्श की मनाही भी लिखा था......... ....क्रमश:

(संलग्न चित्र धूने का है)

।।९।।

वह रहस्यमय साधू

बाबा जी ने स्पष्ट किया कि आज हर व्यक्ति माया

के उच्चाटन से ग्रसित है।कभी जिह्वा के रस में,कभी कानों के रस में ,इसी प्रकार हर इंद्रिय के वशीभूत होकर वह विषय भोग में दौड़ पड़ता है।पूजा/जप/तप को भी वह इंद्रियों के उच्चाटन के वशीभूत होकर छोड़ बैठता है।अत: निस्संग होकर इस मायावी उच्चाटन से बचने का अभ्यास करें। बाबाजी के पास बैठे बैठे शाम के आठ बज गये।हमने दिन में यह निर्णय लिया था कि सांयकाल से देर रात तक मां के मंदिर में जप करेंगे। बाबा जी ने अचानक कहा --यहां भी मंदिर में ही अपने को बैठा समझो।इसको भी जप के समान समझो।मैं आश्चर्यचकित था कि बाबा जी को हमारा अभिप्राय कैसे मालूम हो गया। बाबा जी ने अपने छोटे से मंदिर में रखे शंख से शंखनाद करने के लिए मुझसे कहा।मैने शंखनाद तथा मेरे अन्य दोनों शिष्यों ने घंटानाद व वैदिक मंत्रों का पाठ किया। मंदिर के बाहर हनुमान जी की मूर्ति व नंदी जी की मूर्ति बाबाजी ने स्वयं बनाई थी। मंदिर के अंदर शिवलिंग भी बिल्कुल चपटे आकार का विचित्र एवं आकर्षक था।ऐसा मैंने पहली बार ही देखा। बाबा जी मंत्र व शंखनाद सुनकर बोले--वाह! आज तो कृष्ण जैसा शंखनाद था। बाबा जी के वचन सुनकर मन प्रसन्न हो गया।(बाबाजी की हर बात द्वि

अर्थक थी)इसी क्रम में दस बज गए।जहां हम रुके थे उनका भोजन के लिए फोन आ गया था ।हमने जाने की इजाजत मांगी।पर लगा कि बाबा जी जाने नहीं देना चाहते। हमनें पुन: पूछा। बाबा जी ने अनुमति दी हमने अगले दिन सुबह आकर उस मंदिर में रुद्राभिषेक की आज्ञा मांगी, बाबाजी ने स्वीकृति दे दी।......

.... क्रमशः

(संलग्न चित्र उसी मंदिर के हैं,बाहर हनुमान जी की मूर्ति भी है)

।।१०।।

वह रहस्यमय साधू

अगले दिन सुबह हम बाबाजी के पास रुद्राभिषेक करने गये। बाबा जी ने हमें बिछाने के लिए आसन दिए।मेरे साथ गये दोनों शिष्यों ने अभिषेक का सामान उस छोटे से मंदिर के अंदर रखा और पूजा के लिए तत्पर होगये। मंदिर के सामने बैठकर रुद्रीपाठ से अभिषेक सम्पन्न किया।उठकर बाबाजी को कुछ दक्षिणा समर्पित की पर बाबाजी ने दक्षिणा लेने से साफ मना कर दिया और कहा कि तुम्ही रखो तुम्हारे काम आएगा। बाबा जी वेदध्वनि से बड़े प्रसन्न हुए और बोले-बहुत बढ़िया। इससे वातावरण पवित्र होता है। तुम्हारी ध्वनि सदा सर्वदा आकाश में सुरक्षित हो गयी। बाबाजी ने हमें शुभाशीर्वाद व प्रसाद दिया।हमने बाबाजी के साथ फोटो लेने का अनुरोध किया तो बाबा जी ने कुछ नाराज सा होकर तुरन्त मना कर दिया।

#बाबाजी से उपरोक्त मिलन बड़ा ही आनन्ददायक रहा।

सारांश में कहूं तो बाबा जी नितान्त एकान्तवासी तथा पूरी दुनिया से निर्लिप्त थे। दुनियावी लोगों से उन्हें कोई मतलब नहीं था। उन्होंने बिना किसी स्वार्थ के हमसे प्रेमपूर्ण व्यवहार किया,यह उनकी संत सरीखी अकारण करुणा ही थी।मैं खुद यदि उन जैसी पहुंची हुई स्थिति में होता तो शायद किसी व्यक्ति से कोई बात न करता।पर हमें कुछ पात्र समझकर ही भगवद्कृपा से वे लौकिक व्यवहार भूमि में उतरे।यह शायद हमारे ऊपर प्रभु एवं संत कृपा ही थी। बाबा जी एक कुशल मूर्तिकार ,चित्रकार भी थे।उनके द्वारा अपनी कुटिया पर बनाई गई हनुमान जी,नंदी,व भगवान शिव की मूर्ति अपने आप में अनोखी थी। बाबा जी का चोरी छिपे लिया गया फोटो (यद्यपि बाबाजी सर्वज्ञ थे और हमारी बाल सुलभ चपलता,वे पितृवत् हमें क्षमा कर ही देंगे) वह अन्य मूर्त्तियों के चित्र, शिवलिंग एवं तपोवन के चित्र आपके लिए संलग्न है।यह यात्रा सतत स्मरण रहेगी।ॐशम्।

।।११।।

वह रहस्यमय साधू

बात काफी पुरानी है।सन 1999 की बात है।चंड़ीगढ़ से पैदल माता मनसा देवी की यात्रा करके मैं लोट रहा था।उन दिनों एक वर्ष के लिए संस्कृत बीएड की पढ़ाई वहां कर रहा था। रास्ते में एक साधू मिला।वह मुझे कोई बहुमूल्य वस्तु देना चाहता था। उसने वह वस्तु मुझे सौंपनी चाही पर मैंने साफ़ मना कर दिया।क्यों कि हमारी इच्छा शक्ति का मूल भी प्रकृति की प्ररेणा ही है।मन में मनाही का ख्याल उठा तो मैंने मना कर दिया।और बात आई गई हो गयी। मुझे यह घटना बिल्कुल याद नहीं रही, क्योंकि घटना इतनी सामान्य थी कि याद रखने का कोई मतलब ही नहीं बचता।

महत्त्वपूर्ण मोड़ तब आया जब मैं इस घटनाक्रम के अठारह साल बाद पिछले वर्ष एक सिद्ध तांत्रिक (जो मेरा ही शिष्य हैं,मन से जब किसी के बारे में बताता है तो गजब बताता है)से मिला।उसने हाथ देखकर पूछा -- आपको कई साल पहले एक साधू

मिले थे। मुझे याद आया और मैने कहा--हां।

उसने कहा-- आपको वो कुछ देना चाहते थे।आपने मना कर दिया।आपको वह वस्तु ले लेनी चाहिए थी।

मैने कहा-- प्रभु की यही इच्छा रही होगी।

(इस रहस्यमय साधू के माध्यम से प्रकृति कोई रहस्य खोलना चाहती थी,पर मेरे इष्टदेव ने मना कर दिया)

संलग्न चित्र पंचतीर्थ (व्यास नदी)के कालीनाथ कालेश्वर मंदिर स्थित महाकाली की प्राचीन प्रतिमा है।

३२. ।।सरस्वती।।

सरस्वती ब्रह्माजी के मुख से उत्पन्न हुई हैं तथा ज्ञान की देवी हैं--

आविर्बभूव तत्पश्चात् मुखतः परमात्मनः । एषा देवी शुक्लवर्णा वीणापुस्तकधारिणी । वागधिष्ठातृदेवी सा कवीनानिष्टदेवता । शुद्धसत्त्वस्वरूपा च शान्तरूपा सरस्वती” ।।

इनके दो रूप हैं सर्जनात्मक एवं विनाशात्मक।

जो सज्जन हैं उनके मुख में सरस्वती कल्याणरूपा होकर सृजनात्मका है।जो दुष्ट हैं उनके मुख में कठोररूपा होकर उनके विनाश का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

मां #सरस्वती कब रुष्ट होती हैं?

ध्यान से समझें----

हमारे मुख में वाणी(सरस्वती) न हो तो हम गूंगे ही रह जाएंगे।अत: सरस्वती हमें सवाक् करने के लिए ब्रह्मलोक से हमारे मुख में उतरती है।संत कहते हैं कि ब्रह्मलोक से यहां तक आने से मार्ग की थकान उसे हो जाती है।अत: उसे रामनाम के पावन जल से नहलाना पड़ता है, अर्थात् जिह्वा से हरिगुण गान करने से ही उसकी थकान दूर होकर वह कल्याणकारिणी बनती है।जो ऐसा नहीं करते उनके मुख पर विनाशात्मिका होकर उनके विनाश का मार्ग तैयार करती है। अतः आपके हाथ में है जैसा परिणाम चाहें वैसा करें।

जय वागीश्वरि!

३३

।।गुप्त नवरात्रि साधना।।

शास्त्र कहता है कि --#परोक्षप्रिया: हि देवा:

अर्थात् अपने इष्टदेव को छिपाइये।किसी को न बताएं कि आप किनकी पूजा करते हैं।उनके गुप्त अनुभव भी आप दुनिया से छिपाकर ही रखें।(यद्यपि मैं प्रकट कर देता हूं पर साधकों के हितार्थ,और दैवी प्रेरणा से)

#तंत्र में तो यहां तक कहा है--#कुलपुस्तकानि गोपयेत्। अर्थात् अपनी पूजा से संबंधित #कुलाचार #कुलदेवी #कुलमंत्र #कुलपद्धति #कुलपरम्परा व #कुलग्रंथों को गुप्त ही रखें।सबके सामने प्रकट न करें।(यहां कुल से मतलब गुरू परम्परा प्राप्त)

यह साधना हालांकि चैत्र और शारदीय नवरात्र से कठिन होती है लेकिन मान्यता है कि इस साधना के परिणाम बड़े

आश्चर्यचकित करने वाले मिलते हैं। इसलिये तंत्र विद्या में विश्वास रखने वाले तांत्रिकों के लिये यह नवरात्र बहुत खास माने जाते हैं। चूंकि इस दौरान मां की आराधना गुप्त रूप से की जाती है इसलिये इन्हें गुप्त नवरात्र भी कहा जाता है।

अनुष्ठान में पालन करने के लिए दो नियम अनिवार्य हैं...

1. इन 9 दिनों ब्रह्मचर्य पालन अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

2. दूसरा अनिवार्य नियम है उपवास, जिनके लिए संभव हो वे नौ दिन फल, दूध पर रहें। एक समय अन्नाहार, एक समय फलाहार, दो समय दूध और फल, एक समय आहार, एक समय फल दूध का आहार, केवल दूध का आहार इनमें से जो भी उपवास अपनी सामर्थ्यानुसार हो उसी के अनुसार साधना आरंभ कर देनी चाहिए। जिनसे इतना भी न बन पड़े वे अन्नाहार पर भी रह सकते हैं, पर नमक और शक्कर छोड़कर अस्वाद व्रत का पालन उन्हें भी करना चाहिए। भोजन में अनेक वस्तुएं न लेकर दो ही वस्तुएं ली जाएं। जैसे- रोटी, दाल। रोटी- शाक, चावल- दाल, दलिया, दही आदि।

अनुष्ठान के दिनों में मनोविकारों और चरित्र दोनों पर कठोर दृष्टि रखी जानी चाहिए। साथ ही पने मन को भटकने न दें। झूठ, क्रोध, छल, कटुवचन , अशिष्ट आचरण, चोरी, चालाकी, जैसे आचरणों से बचा जाना चाहिए। ईर्ष्या, द्वेष, कामुकता, प्रतिशोध जैसी दुर्भावनाओं से मन को जितना बचाया जा सके उतना अच्छा है।

३४

#वैदिक तीर्थ

तीर्थ तीन प्रकार के होते हैं-

१ जंङ्गम(चलते फिरते)

२ मानस(मन से स्वच्छ)

३ स्थावर(स्थिर)

सबसे #पहले तो ब्राह्मणों (संन्यासी आदि)को ही तीर्थ कहा है क्योंकि उनके पवित्र वचनों से पापी व्यक्ति भी पवित्र हो जाते हैं--

ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं निर्मलं सार्वकामिकम् । येषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिनाजनाः।।

#दूसरे जिनके मन स्तरीय,दया,दान आदि सद्गुणों से युक्त व मन से पवित्र हैं वे मानस तीर्थ कहे गये हैं।इन गुणों में स्नान करके भी मनुष्य पवित्र हो जाता है--

शृणु तीर्थाणि गदतो मानसानि ममानघे! ! येषु सम्यक् नरः स्नात्वा प्रयाति परमां गतिम् । सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः । सर्वभूतदया- तीर्थं सर्वत्रार्जवमेय च! दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थमुच्यते । ब्रह्मचर्य्यं परं तीर्थं तीर्थञ्च प्रियवादिता । ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यं तीर्थ- मुदाहृतम् । तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः पुरा । एतत्ते कथितं देवि! मानसं तीर्थलक्षणम्।।

#तीसरा-- जो पृथ्वी पर स्थाई तीर्थ हैं वे भी अनेक हैं। उनसे भी मलिन प्राणियों को शुद्धता प्राप्त होती है। जैसे शरीर के कुछ

भाग शुद्ध हैं वैसे ही पृथ्वी के कुछ भाग परम पावन होने के कारण तीर्थ कहे गये हैं--#तथा पृथि- व्यामुद्देशाः केचित् पुण्यतमाः स्मृताः ।

इन स्थावर तीर्थों के अनेक भेद हैं---पिंडारक,रामहृद, कुरुक्षेत्र, पुष्कर आदि।सबके नाम विद्वान समझ लें---

#(कृष्ण चंद्र शास्त्री)

#प्रथमं पुष्करं तीर्थं नैमिषारण्यमेव च । प्रयागञ्च प्रवक्ष्यामि धर्म्मारण्यं द्विजोत्तमाः! । धेनुका चम्पकारण्यं सैन्धवारण्यमेव च । गया प्रयागं श्रीतीर्थं दिव्यं कनस्वलन्तथा । भृगुतुङ्गं हिरण्याक्षं भीमारण्यं कुशस्थली । लोहार्गलं सकेदारं मन्दरारण्यमेव च । महाप्रमं कुरुक्षेत्रं सर्वपापहर- न्तथा । रूपतोर्थं शूकरञ्च चक्रतीर्थं महाफलम् । योगतीर्थं सोमतीर्थं तीर्थं शाखोटकं तथा । तीर्थं कोकामुकं पुण्यं वदरीशैलमेव च । सोमतीर्थं तुङ्गकूटं तीर्थं स्कन्दाश्रमन्तथा । सूर्य्यप्रभं रामतीर्थं सप्तसामुद्रकं तथा । धर्मोद्भवं कोटितीर्थं तीर्थञ्चाध प्रणाशनम् । गङ्गाद्वारं पञ्चकुब्जं मध्यकेशवमेव च । चक्रप्रभं मतङ्गञ्च कुशदण्डञ्च विश्रुतम् । दंष्ट्राकुण्डं विष्णुतीर्थं सर्वकामिकमेव च । तीर्थं सुमलिनञ्चैव वदरीसुप्रभं तथा । ब्रह्मकुण्डं वह्निकुण्डं तीर्थं सत्य- पदन्तथा । चतुःस्रोतश्चतुःशृङ्गं शैलं द्वादशर्वारकम् । मानसं स्थूलशृङ्गञ्च स्थूलदण्डं तथोर्वशो । लोकपाली मरुवकं सोमाद्रिशैलमेव च । सदाप्रभं मेरुकुण्डं तीर्थं सोमाभिषेचनम् । महाशोभं कोचवकं पञ्चधारं त्रिधार- कम् । सप्तधारैकतीर्थञ्च तीर्थञ्चामरकण्टकम । शालग्रामं चक्रतीर्थं कोटिद्रुममनुत्तमम् । विन्दुप्रभं देवहृदं तीर्थं विष्णुप्रभन्तथा । शङ्खप्रभं दारुकुण्डं तीर्थं वज्रायुधं तथा । अग्निप्रभं सुपुन्नागं देवप्रभमनुत्तमम् । विद्याधरं सगन्धर्वं श्रीतीर्थं ब्रह्मणा कृतम् । तीर्थञ्च लोकपालाख्यं पुण्यं पिण्डारकं तथा । वस्त्रापदं दारुवनं छायारोहणमेव च । वटावटं भद्रवटं कोषाक्षी च दिवाकरा । द्वीपं सरस्वती चैव विजयं कामजन्तथा । सारवं गोप्रतारञ्च गाचरं वटमूलकम् । स्नानकुण्डं प्रयागञ्च गुह्यं विष्णुपदन्तथा । कन्याश्रमं विष्णुपदं जम्बुमार्नं तथोत्तमम् । गभस्तितीर्थञ्च तथा ययाति पतनं शुचि । कोटितीर्थं भद्रवटं महाकालवनं तथा । नर्मदातीर्थपरमं तीर्थं वर्षं तथार्बुदम् । पिङ्गुतीर्थं सावशिष्टं तीर्थञ्च प्रियसङ्गमम् । तीर्थं दौर्वासिकं नाम तथा पिञ्चरकं शुभम् । ऋषितीर्थं ब्रह्मकुण्डं वसुतीर्थं कुमारिका । शक्रतीर्थं शापनदं रेणुकातीर्थमेव च । पैतामहञ्च विमलं रुद्रपादं तथोत्तरम् । मणिमन्थञ्च कामाख्यं कृष्णतीर्थं कुमारिणम् । यजनं याजनञ्चैव तथैव ब्रह्मवालकम् । पुष्पाभ्यासं पुण्डरीकं मणिपूरं तथोत्तरम् । दीर्घसत्रं हंसपदं तीर्थञ्चानशनन्तथा । गङ्गोद्भेदं शिवोद्भेदं नर्मदोद्भेदमेव च । वज्रकोटि शङ्कुमानं तीर्थं शक्रावनामितम् । समन्तपञ्चकं तीर्थं ब्रह्मतीर्थं सुदर्शनम् । सततं पृथिवीतीर्थं पञ्चप्लव पृथूदकौ । दशाश्वमेधिकं तीर्थं सर्पिदं विषयान्तिकम् । कोटितीर्थं पञ्चनदं वाराहं पक्षिणीहृदम् । पुण्डरीकं सोमतीर्थं मञ्जुवाटं तथोत्तमम् । वदरीवनमासीमं रत्न- मूलकमेव च । लोकद्वारं पञ्चतीर्थं कपिलातीर्थमेव च । सूर्य्यतीर्थं शङ्खिनी च धराभवनमेव च । तीर्थं च यक्षराजस्य ब्रह्मावर्तं सुतीर्थकम् । कामेश्वरं मातृ- तीर्थं तीर्थं शीतवनं तथा । श्वानहोमायनञ्चैव मांस- मशनकं तथा । दशाश्वमेधं केदारं ब्रह्मोडुम्बरमेव च । सप्तर्षिकुण्डञ्च तथा तीर्थं देव्याः सुजम्बुकम् । इडास्पदं कोटिकूटं किन्नरं किंजपं तथा । कारण्डवञ्च बिन्ध्यञ्च त्रिपिष्टपमथापरम् । पाणिक्षारं मिश्रकञ्च मधुवटमनोजवौ । कौशिकी देवतीर्थञ्च तीर्थञ्च ऋणमोचनम् । दिव्यञ्च तृणमूलाख्यं तीर्थं विष्णुपदन्तथा । श्रीकुण्डं शालितीर्थञ्च नैमिषेयञ्च विश्रुतम् । ब्रह्मस्थानं सोमतीर्थं कन्य तीर्थं तथोत्तरम् । ब्रह्मतीर्थं मनस्तीर्थं तीर्थञ्चैलावनन्तथा । सौगन्धिकवनञ्चैव मणितीर्थं सरस्वती । ईशानतीर्थं प्रवरं पाणिनं पाञ्च- यज्ञिकम् । त्रिशूलधारा माहेन्द्रं देवस्थानं कृतालयम् । शाकम्भरी देवतीर्थं स्वर्णाख्यं कालियं ह्रदम् । क्षीरे- श्वरं विरूपाक्षं भृगुतीर्थं कुशोद्भवम् । ब्रह्मतीर्थं ब्रह्म- योनिं नीलपर्वतमेव च । कुब्जाभ्रकं भद्रवटं वशिष्ठ- पदमेव च । धूमावर्त्तं तथा मेकं वारुणं कपिलञ्च यत् । स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं कालिकाश्रममेव च । रुद्रावर्त्तं सगन्धाश्वं कपिलावनमेव च । भद्रकर्ण ह्रदञ्चैव शङ्कुकं ह्रदकं तथा । सप्तसारस्वतञ्चैव तीर्थ- मौशनसं तथा । कपालमोचनञ्चैव नरकञ्चैव काम्य- कम् । तत्र सामुद्रिकञ्चैव शतिकञ्च सहस्रिकम् । रेणुकं पञ्चवटकं विमोचनमथौजसम् । विश्वेश्वरं वामनकं कक्षं नारायणाश्रमम् । गङ्गाह्रदं वटञ्चैव वदरी पचनन्तथा । ऐन्द्रमार्गमेकरात्रं क्षीरिकाराममेव च । सोमतीर्थं दारवञ्च श्रुततीर्थञ्च भोद्विजा! । कन्याश्रमं सन्निहितं कोटितीर्थञ्च पुन्नदी । कोटितीर्थस्थलीञ्चैव भद्रकालीह्रदन्तथा । अरुन्घतीवनञ्चैव ब्रह्मावर्त्तन्तथो- त्तमम् । अश्ववेदी कुब्जवनं यमुनाप्रभवं तथा । वीरप्रभोक्षं सिन्धूत्थं शमीकुल्या सकृत्तिका । उर्वशी- क्रमणञ्चैव मायाविद्योद्भवन्तथा । महाश्रमो वेतसिका- रूपं सुन्दरिकाश्रमम् । ब्रह्मतीर्थन्तु वैश्वासं गङ्गोद्भेदं सरस्वती । अरुणोदं तथा चान्द्रं शक्रतीर्थं सवालु- कम् । तीर्थञ्चैवाविमुक्ताख्यं नीलकण्ठह्रदन्तथा । स्वर्गद्वारं किम्पुलिका तीर्थकोटिस्तथैव च । पिशाच मोचनञ्चैव सुभद्राह्रदमेव च । कुण्डं विमलदं तस्यां तीर्थं चण्डेश्वरस्य च । अष्टस्थानह्रदञ्चैव हरिकेश- वनं तथा । अजामुखवनञ्चैव घण्टाकर्णह्रदन्तथा । पुण्डरीकह्रदञ्चैव वापीकङ्कोटिकन्तथा । कुण्डं घर्घ- रिकायाश्च श्यामाकं पञ्चपुण्यदम् । श्मशानशुम्भकुण्डञ्च विनायकह्रदन्तथा । कूपं सिद्धभवञ्चैव पुण्यं व्रह्मसर- न्तथा । रुद्रावासं तथा तीर्थं

नागतीर्थं सुलोमकम् । शृङ्गतीर्थं महातीर्थं श्रेष्ठा चैव महानदी । दिव्यं ब्रह्मसरः पुण्यं गयाशीर्षाक्षयं वटम् । दक्षिणञ्चोत्तर- ञ्चैव गोमयं रूपशान्तिकम् । कपिह्रदं गृध्रकूटं सावित्रीह्रदमेव च । प्रभासनं शीतवनं योनिद्वारञ्च धेनुकम् । रम्यकं कोकिलाख्यञ्च मतङ्गह्रदमेव च । पितृकूपं रङ्गतीर्थं शक्रतीर्थं सुमालिनम् । ब्रह्मस्थानं सप्तकुण्डं मणिरत्नह्रदन्तथा । मुद्गलस्याश्रमञ्चैव मुद्गल्या-ह्रदमेव च । तीर्थं जनककूपाख्यं वैश्यं विनशन- न्तथा । आद्यं विनाशतीर्थञ्च धारा माहेश्वरी तथा । देवपुष्करिणी रम्या पर्य्यङ्ककूपमेव च । जातिस्मरं वामनकं वटेश्वरह्रदन्तथा । कौशाख्यं भरतञ्चैव तीर्थं श्रेष्ठात्मिका तथा । विश्वेश्वरं कल्पशतं कन्यासायुज्य- मेव च । वाराहकं कोटितीर्थं कुमारं सर्व- तीर्थकम् । वीराश्रमं ब्रह्मसरो वीरवीरा च तापिनी । कुमारधारा श्रीधारा गौरीशिखरमेव च । कुम्भकर्ण पदञ्चैव कौशिकीह्रदमेव च । धर्मतीर्थं कामतीर्थं तीर्थमुद्दालकं तथा । दण्डा विमालिनी तीर्थं तीर्थ - ञ्चैव नरेभिका । सन्ध्यातीर्थं कारतोयं कपिला लोहितार्णवम् । सोमोद्भवं वंशगुल्ममृषभं कालतीर्थकम् । पुण्यतीर्थह्रदं तीर्थं तीर्थं वदरिकाश्रमम् । रामतीर्थं सिन्धुवनं विरजातीर्थमेव च । मार्कण्डेय- वनञ्चैव कृष्णतीर्थं तथा वटम् । ध्रुवं स्वरूपं प्रवर-मिन्द्रद्युम्नसरश्च यत् । सानुगर्त्तं समाहेन्द्रं श्रीतीर्थं श्रीवनन्तथा । इषुतीर्थञ्चर्षभञ्च कावेरीतीर्थमेव च । कन्यातीर्थञ्च गोतीर्थं गोमतीस्थानमेव च । संवर्त्त- स्थापिनी स्थानं सप्तगोदावरीह्रदम् । वदरीह्रदमन्यच्च ब्रह्मतृष्णाविकर्त्तनम् । जातिह्रदं वेदह्रदं कुशपवणमेव च । सर्वदेवव्रतञ्चैव कन्याश्रमह्रदन्तथा । तथान्यत् वा लिखिल्वानां सप्तर्षीणां तथा परम् । तथान्यच्च महर्षी-णामखण्डितह्रदन्तथा ।

#इन तीर्थों में जो श्रद्धालु तीन रात्रि निवास करके देवार्चन करता है उसे पूर्ण फल मिलता है--

#तीर्थेष्वेतेषु विधिवत् सम्यक् श्रद्धासमन्वितः । स्नानं करोति यो मर्त्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते । अभ्यर्च्च्य देवतास्तत्र स्थित्वा च रजनी- त्रयम् ।।

#और जो दुष्प्रभाव से असंयमित वाणी,कर्मों वाला है उसे तीर्थ का कोई फल नहीं मिलता।-+

#चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थ- स्नानं न शुध्यति । शतशोऽथ जलैर्धौतं सुराभाण्ड- मिवाशुचि । न तीर्थानि न दानानि न व्रतानि न चाश्रमाः । दुष्टाशयं दम्भरुचिं पुनन्ति व्यथितेन्द्रियम् ।।

#विशेष----- जिस पवित्रात्मा की इन्द्रियां वश में है वह जहां भी रहता है वहीं कुरुक्षेत्र,प्रयागादि तीर्थ वहीं निवास करते हैं।----

#इन्द्रियाणि वशे कृत्वा यत्र तत्र वसेन्नरः ।तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं प्रयागं पुष्करं तथा ।।

कृष्ण चंद्र शास्त्री।

।।२।।

तीर्थ महिमा

"देवे तीर्थे द्विजे मन्त्रे दैवज्ञे भेषजे गुरौ । यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ।।

अर्थात् देवता, तीर्थ,ब्राह्मण,मंत्र,ज्यौतिषी,वैद्य तथा गुरु , इनके प्रति जिसकी जैसी भावना होती है उसको वैसी ही सिद्धी मिलती है।अत:तीर्थ पर श्रद्धा से जाकर नियम से रहिए। वहां #परनिंदा,#परस्त्रिदर्शन,#कामक्रोधादि दुर्गुणों से बचना चाहिए।जो अपने परिवार,पत्नि आदि को ले जाते हैं उन्हें भी ब्रह्मचर्यपूर्वक ही रहना चाहिए।क्योंकि तीर्थ एक विशुद्ध क्षेत्र है कोई पिकनिक स्पोट नहीं।

कहा भी है--

#अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति।

तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।।

#अर्थात् अन्य जगहों पर किया गया पाप तीर्थ स्नान से नष्ट हो जाता है पर तीर्थ स्थल पर किया गया पाप वज्रलेप के समान सर्वथा स्थाई हो जाता है।

।।३।।

तीर्थ महात्म्य

आजकल आधुनिकता की दौड़ में सारे मंदिर एवं तीर्थों ने अपना सार छिपा लिया है। क्योंकि मलेच्छ ,सर्वभक्षी लोग गर्भगृह में पैसे के बल पर लोट लगाते हैं।और वहां के व्यवस्थापक ब्राह्मण पैसे के लालच में उन्हें सीधा सार्टकट से अंदर ले जाते हैं। भगवान को भी पता है यह पोपलीला तो कलयुग में होनी ही है।परीक्षा तो उन लालची ब्राह्मणों की तथा उन धन,पद के गर्वित अनाचारियों की है जो सीधे जाकर भगवान की मूर्ति को स्पर्श करते हैं/गर्भगृह में प्रवेश करते हैं।(भगवान ने उन दोनों के लिए भी नरक में जाने का शार्टकट सोच रखा है ।जो उनके वहां प्रवेश करते ही कन्फर्म हो जाता है)

#ध्यान दें ,भक्त सच्चे मन से जहां भी भगवान को याद करते हैं भगवान अपना आशीर्वाद उसे तत्काल दे देते हैं।बल्कि खुद भी दौड़े आते हैं। सच्चा भक्त तो तीर्थों को भी पवित्र करने का सामर्थ्य रखता है। जगन्नाथ के द्वार बंद हो जाने पर भी एक प्रसिद्ध भक्त के लिए भगवान ने दरवाजे को ही पारदर्शी बना दिया था।

#अत: भक्त निराश न हों,न आगे जाने की चिंता करें। भगवान उनको देखकर प्रसन्न हो जाते हैं इसलिए तथा तीर्थ उनसे पावन हो जाते हैं इसलिए वे यात्रा करते रहें।

(संलग्नचित्र ओंकारेश्वर के सबसे उपरि तल पर स्थापित शिवलिंग का है ,जिस तक कम ही लोग पहुंचते हैं,शायद पता न होने के कारण।नीचे किलोमीटर लम्बी लाईन है और यहां असीम शांति)

।।४।।

तीर्थ रहस्य

तीर्थों नदियों में मिलने वाले नर्मदेश्वर आदि शिवलिंग/शालग्रामशिला आदि साक्षात् परमात्मा का स्वरुप है , उनकी प्रतिष्ठा की कोई आवश्यकता नही होती।परंतु मैंने देखा कि दुकानदार उन शिवलिंगों को मशीनों से घिसाकर ,पालिश करके ,बेचते हैं ।इससे उनकी प्राकृतिकता नहीं रहती।अत: श्रद्धालु जन अपने लिए खुद ही नदी से शिवलिंग का चयन करें।यदि दुकान से लें तो उनकी प्रतिष्ठा अवश्य कराएं।

३५..

।।१।।परमात्मा कौन है?

परमात्मा सब आत्माओं का आधार उनका समष्टि रूप है।सच पूछो तो हम उसके एक अंश की भी व्याख्या करने में भी समर्थ नहीं हैं।स्वयं गीताकार वैदिक ज्ञान को मात्र कूपवत् कहकर उस परमात्मा को अखंड महासागर जब कहते हैं तो विज्ञ समझ जाते हैं कि परमात्मा कौन व कितना सामर्थ्यवान् है।

#वेद स्वयं नेति नेति कहकर अपने को दम्भी होने से बचा लेते हैं और परमात्मा की दृष्टि में सत्यवादी व निर्दोष सिद्ध हो जाते हैं। देव व दानव जिसका आर-पार नहीं पा सके(यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा:)

स्वयं ब्रह्मा विष्णु महेश आदि भी जिसकी स्तुति मस्तक पर हाथ बांधे सतत करते रहते हैं।उसको कौन जान सकता है?

#जो जानने का दावा करते हैं वे सारे पाखंडी हैं।और भोली भाली जनता को अपने चंगुल में फांसकर उनके धन और औरतों

को लूट रहे हैं।यह आजकल एक मजबूत धंधा बन गया है।अत: #सावधान!

इस चंगुल से तुरंत बचें व अपने आस-पड़ोस/रिश्तेदारों/मित्रों को बचाएं।

#परमात्मा पूर्णत: अज्ञेय है तभी तो वह अन्नत,असीम,अलख,अगोचर है।उसको देखने का सामर्थ्य किस में है?

ब्रह्मादि भी उसे अंशत: जानते हैं।और मृत्युलोक का कोई दुर्लभ प्राणी यदि अंशादपि स्वल्पांश उसको जानता है तो वह मौन है।वह यह दावा भी नहीं करता कि मैंने परमात्मा का मार्ग पा लिया।वह अपने चारों ओर भीड़ बढ़ाना ही नहीं चाहता। क्योंकि यह भीड़ उसके किस काम की है।इससे तो उसकी एकाग्रता/लग्न/भजन/योग में बाधा ही पड़ेगी।

तो भीड़ वाले पाखंडियों से बचें।

(क्रमश: श्रुति/स्मृति/अनुभव से परमात्मा पर लिखते रहेंगें) कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली १५.७.१८

३६.◆ सिद्ध पुरुषों के दर्शन और अनुदान ◆

लम्बी अवधि तक अपना अस्तित्व बनाये रहने वाले सिद्ध पुरुष सूक्ष्म शरीर धारी होते हैं। स्थूल शरीर की एक सीमा मर्यादा है। भारत की जलवायु में सौ वर्ष की आयु को पूर्ण माना गया है। “जीवेम शरदः शतम्” आदि वेद मन्त्रों में इसी तथ्य का रहस्योद्घाटन किया गया है। आशीर्वादों में सौ वर्ष तक जीवित रहने की कामना की जाती है। कभी-कभी कहीं-कहीं कुछ लोग अधिक समय भी जीवित रहते देखे गये हैं। पर वे अपवाद हैं। अपवाद तो किसी भी क्षेत्र में दृष्टिगोचर हो सकते हैं।

सिद्ध पुरुष बहुधा हिमालय क्षेत्र में निवास करते हैं। जहाँ शीत की प्रधानता होती है। उस क्षेत्र का अधिकांश भाग बर्फ से ढका रहता है। जो हिमि प्रदेश के जीव-जन्तु हैं, वो तो गुफाओं में जाकर गहरी निद्रा में सो जाते हैं और जब बसन्त आता है और आहार तथा जल की व्यवस्था हो जाती है तो नींद खुलती है और बाहर निकलते हैं। यह हिमानी प्राणियों के लिए प्रकृति की विशेष व्यवस्था है। मनुष्य शरीर की संरचना ऐसी नहीं है। उसे अन्न जल ही नहीं आग जलाने के लिए ईंधन की भी व्यवस्था करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त मल-मूत्र त्यागने एवं आच्छादन की भी। वह सामान्यतया बन नहीं पाता। इसलिए बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, जमुनोत्री आदि के देवालयों की प्रतिमाएं भी अन्यत्र ले जायी जाती हैं। उतने समय के लिए कपाट बन्द रहते हैं। ऊँचे क्षेत्रों के निवासी भी अपने पशुओं को लेकर नीचे मैदानी क्षेत्रों में आ जाते हैं। और वह समय सुविधा के स्थानों में ही व्यतीत करते हैं।

हिमालय पर जो लोग साधना के लिए जाते हैं, वे भी शीतकाल में वह स्थान छोड़कर नीचे चले आते है। स्थूल शरीर धारी यह गतिविधि अपनाते हैं। क्योंकि उसे जीवित रखने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता पड़ती है, वे सहज उपलब्ध नहीं होते। यदि कोई हठ-पूर्वक वहाँ रहना ही चाहे तो उसे ढेरों सामग्री एकत्रित करनी पड़ेगी जैसी कि पर्वतारोहियों को कुलियों का काफिला समान ढोने के लिए साथ लेकर चलना पड़ता है। जो इस प्रकार की व्यवस्था करेगा, उसके लिए शरीर धारण किये रहना ही एक समस्या हो जायेगी। इसलिए हिमालय यात्रा एवं उधर टिकने के लिए मई से सितम्बर तक के ही प्रायः छह महीने वहाँ रहकर अपना स्थान छोड़ देना पड़ता है। ऐसी उलट-पुलट में गहन स्तर की साधनाएं नहीं हो सकतीं। यह एक साधारण बात है। सामान्य जन स्वास्थ्य लाभ या साधना आदि प्रयोजनों के लिए उपरोक्त व्यवस्थाएं बनाते और सुविधा के स्थान बदलते रहते हैं।

प्रश्न सिद्ध पुरुषों का है। वे सूक्ष्म शरीरधारी ही होते हैं। स्थूल शरीर का समापन कर चुके होते हैं। सूक्ष्म शरीर धारी सत्ताएँ स्थूल शरीर से नेत्र आदि इन्द्रियों से नहीं देखे जा सकते। यदि दीखने लगें तो मनोकामनाओं वाले लोग उन्हें कहीं से भी ढूँढ़ निकालें और हजार प्रकार के प्रपंच रचकर अपनी हठ पूरी करके टलें। ऐसी विपत्ति में यदि वे फँसते फिरें तो वे प्रयोजन पूरे किस प्रकार कर सकेंगे, जिसके लिये ऐसी कष्ट साध्य परिस्थितियों में रहने और भीड़ से बचने का उनने निश्चय किया होता है। यदि प्रपंच में फँसने और लोगों से घिरे रहने का ही मन होता तो फिर उनके लिए शहर कस्बों में डेरा डालना क्या बुरा था? साधन भी जुटते रहते। लोगों की भीड़ भी जमी रहती और प्रचार विज्ञापन भी होता रहता, जैसा कि आजकल के महन्त मठाधीशों के साथ होता देखा जाता है।

आजकल भारत में कुछ गुरु लोगो ने खुदको सिद्ध घोषित किया है। जिनके शिष्यो की फौज हजारो में होती है। ये शिष्य यह भी समझ नही पाते की उसके गुरु के शब्दों में कितनी सच्चाई है । क्योंकि सिद्ध या सिद्धात्मा की बात आती है तब सच्चा सिद्ध टोलियों में घुमा नही करता , शिबिर लेना प्रवचन देना ऐसे कार्य नही करता , ईश्वर को धंधा बनाकर खुदके नाम के फोटो , यंत्र , किताबे बेचा नही करता। लोगो के मन को सम्मोहित करने की कला ऐसे ठगी गुरु के पास होती है। और वास्तव में इसका अभ्यास करेंगे तो ऐसे ठगी गुरु के पास शिष्य होते है वो मानसिक रूप से कमजोर होते हैं। इसलिए भलीभाती अपने गुरु की सत्यता पहचान के लेनी चाहिए।

यह भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि जीवन निर्वाह के दुर्लभ साधनों का छः महीने चल सकने वाला जखीरा जमा करने के उपरान्त ही कोई हिमाच्छादित प्रदेशों में रहने का साहस कर सकता है। ध्रुव प्रदेशों की यात्रा करने यों अनेकानेक खोजी दल गये हैं, उन्हें कितना साधन साथ लेकर चलना पड़ा है, इस विवरण के रुचि रखने वाले लोग पत्रों तथा पुस्तकों में पढ़ते रहते हैं, फिर सामान्य शरीर लेकर सामान्य व्यक्ति वहाँ किस तरह रह सकेगा? यह समझ में आने योग्य बात नहीं है।

ऐसी अनगढ़ किम्वदंतियां अकसर सुनने को मिलती रहती हैं, जिनमें किन्हीं कौतूहल प्रियों को अपनी विशेषता का ढिंढोरा पीटने वालों द्वारा यह कहते हुए सुना गया है कि हम हिमालय गये। हमसे किसी सिद्ध पुरुष ने भेंट की कठिनाईयाँ पूछीं। गुफा में ले गये। अमुक भोजन कराये और मनमाँगे आशीर्वाद दिये। इन कथा गाथाओं के पीछे तनिक भी सच्चाई नहीं होती। क्योंकि साधारण चर्म-चक्षुओं से किसी सिद्ध पुरुष के सूक्ष्म शरीर को नहीं देखा जा सकता। न कानों से उनकी बात सुनी जा सकती है, न जीभ से कुछ कहा जा सकता है। एक सूक्ष्म शरीर दूसरा स्थूल शरीर इनकी परस्पर संगति बैठती ही नहीं।

फिर अदृश्य रहने के लिए जब उन्होंने सूक्ष्म शरीर अपनाया है तो वे सभी को देख सकते हैं। उन्हें कोई सामान्य व्यक्ति नहीं देख सकता। विशेषतया वे व्यक्ति जो अपनी लौकिक कामनाएं पूरी करने के फेर में हैं। उनमें इतनी विशेषता होती है कि किसी भी मन की बात जान सकें और यदि वह व्यक्तिगत लाभ से नहीं, विश्वकल्याण की किसी महती आवश्यकता के निमित्त समर्पित है तो उनके भीतरी अन्तराल में ही आवश्यक जानकारी एवं क्षमता प्रदान कर दें। लौकिक और पारलौकिक स्वार्थ साधना के फेर में जो लोग हैं, उन्हें वे अपना सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर में परिणत करके पिछलगू बनाएँ, इसके पीछे न कोई तर्क है, न तथ्य।

सिद्ध पुरुषों का भी अपना स्वरूप, प्रयोजन एवं स्तर है। वे किसी को अपनी सहायता प्रदान करते हैं। अपने तप का कोई भाग काट कर प्रदान करते हैं, तो उसका कारण कोई अत्यन्त उच्चस्तरीय प्रयोजन होना चाहिए। यह दर्शन परामर्श अनुदान चमत्कार दिखाने, अहंकार बढ़ाने एवं स्वार्थ साधने के निमित्त नहीं हो सकता।

सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले, साधारण प्रपंचों में फँसे रहने वाले व्यक्ति उन्हें देख पायें या संपर्क साध पायें, जब काट लायें यह सम्भव नहीं। वे इतना विवेक सँजोये होते हैं कि इधर-उधर फिरने वाले प्रपंचियों की वास्तविकता पहचान सकें और अपने को उनके चंगुल से बचाने के लिए अदृश्य स्थिति में ही बने रहें। यही कारण है कि चेला मूँड़ने वालों से वे किसी भी प्रकार सम्बन्ध स्थापित नहीं करते। वे अपनी कल्पना के आधार पर जो कुछ गढ़ते रहें, कहते रहें, यह उनकी इच्छा।

सिद्ध पुरुष अपनी व्यक्तिगत अपूर्णताएं, सूक्ष्म शरीर धारण करने से पहले ही पूर्ण कर चुक होते हैं, उन्हें स्वर्ण मुक्ति, सिद्धि प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उनका उस स्थिति में रहने का एक ही प्रयोजन होता है। ईश्वर के पार्षद के रूप में उनकी सृष्टि के असन्तुलनों को सन्तुलनों में बदलने के लिए अदृश्य वातावरण को प्रभावित करना। यह कार्य उन्हें ईश्वर ही सौंपता है। अपनी निजी इच्छाएँ, तो वे बहुत पहले ही समाप्त कर चुक होते हैं, उनकी कोई निजी योजना भी नहीं होती। जो

बताया जाता है, मात्र उसे ही उतना ही करते रहते हैं।

सिद्ध पुरुषों को भी कभी-कभी शरीर धारियों के साथ संपर्क बनाने की आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि वे स्वयं तो शरीर धारी होते नहीं। पर कुछ काम ऐसे कराये जाने की जरूरत पड़ती है, जिसके लिए क्या एवं साधनों की आवश्यकता होती है। इसके लिए उन्हें ऐसे सत्पात्र ढूंढ़ने पड़ते हैं जो प्रामाणिकता और उत्कृष्टता की कसौटी पर पहले से ही अपने को खरा सिद्ध कर चुक हों। अप्रामाणिक और अनगढ़ व्यक्ति तो सिद्धि अनुदानों को पाकर बौखला जाते हैं और ऐसा कुछ कर बैठते हैं, जिसे अनर्थ ही कहा जा सके। इस कारण किसी को सिद्ध पुरुषों की तलाश में नहीं जाना पड़ता, वे स्वयं ही उन्हें आवश्यकता अनुभव करा देते हैं और सौंपे गये कार्य के लिए जितनी दिव्य क्षमता की आवश्यकता पड़ती है, उसे हस्तान्तरित कर देते हैं।

शिवाजी, चन्द्रगुप्त, विवेकानंद आदि को गुरुओं ने ही तलाश किया था। वे उन्हें ढूंढ़ने तलाशने के लिए कहीं मारे-मारे नहीं फिरे थे। विश्वामित्र स्वयं ही दशरथ पुत्रों को माँगने उनके घर गये थे। सिद्ध पुरुषों को मात्र अपना हाथ बँटाने के लिए किसी शरीर धारी की काया तलाश करनी पड़ती है। जब वे परख लेते हैं कि यहाँ कामनाओं की कीचड़ नहीं, समर्पण की दिव्य भावना का अस्तित्व मौजूद है, तो वे स्वयं ही उनके सिर पर छा जाते हैं। उसकी समूची सत्ता को अपने में धुला लेते हैं, पर इससे पूर्व वे हजार बार परखते हैं कि कोई अपनी निज की लौकिक या पारलौकिक स्वार्थ सिद्धि के लिए उन्हें फँसाने और अनुचित लाभ न उठाने लगे। जो हर कसौटी पर खरे सिद्ध होने की स्थिति में पहुँच चुके होते हैं, मात्र उन्हीं पर हाथ डालते हैं, उन्हीं से कुछ आशा करते हैं और जो देनी हो, उन्हीं को देते हैं।

साथ ही यह चौकसी भी रखते हैं कि मनुष्य में आमतौर से पाई जाने वाली वासना, तृष्णा और अहन्ता की पूर्ति के लिए उनके दिये अनुदानों का दुरुपयोग तो नहीं हो रहा है। यदि ऐसा दीखता है तो अपने अनुदान वापस भी ले लेते हैं। ऐसी दशा में वह देव दीक्षित नहीं रहता, वरन् जादूगरों की तरह माया जाल रचता रहा है। ऊँचा चढ़कर गिरने वाले को चोट भी अधिक लगती है। जबकि जमीन पर खड़ा हुआ व्यक्ति फिसल पड़ने पर यत्किंचित् चोट खाकर ही खड़ा हो जाता है।

सिद्ध पुरुषों की तलाश में न हम हिमालय जाएं और न कहीं अन्यत्र। अपनी पात्रता बढ़ायें। कमल पुष्प वत अपने को खिलाने का प्रयत्न करें, ताकि मधु-मक्खी भौंरे, तितली उस पर स्वयं मंडराने लगें। चिड़ीमारों और मछुआरों की विधा अपना कर कोई सिद्ध पुरुषों को नहीं फँसा सकता। उनकी मनुहार भी नहीं करती पड़ती और न भटकने तलाशने की आवश्यकता पड़ती है। अपनी पात्रता का विकास ही वह उपाय उपचार है जिसके सहारे सिद्ध पुरुषों को सत्पात्रों की तलाश करनी पड़ती है। स्मरण रखने योग्य तथ्य एक ही है कि दैवी विभूतियाँ मात्र दैवी प्रयोजनों के लिए ही हस्तगत होती हैं। उनसे प्रत्यक्ष सा परोक्ष स्वार्थ नहीं साधा जा सकता। ईश्वर की विश्व वाटिका को सींचने, समुन्नत, सुव्यवस्थित बनाने के निमित्त ही किसी को दिव्य-सिद्धियाँ मिली हैं और भविष्य में मिलती रहेंगी। (कस्यचिल्लेखोऽयम्)

३७.

१।।ग्रहण।।

ग्रहण या उपराग एक ज्यौतिषीय घटना है।राहू का आंखों से दर्शन होना ही ग्रहण का लक्षण है -चक्षुषा दर्शनं राहोर्यत्तद्ग्रहणमुच्यते”

ग्रहण की स्थिति विशेष महत्वपूर्ण मानी गई है।इस दौरान सभी प्राणियों/वस्तुओं को सूतक लग जाता है।अपने परिवार में जनन/मरण का जैसे सूतक लगता है ठीक वैसा ही सूर्य/चंद्रग्रहण का अशौच लगता है।जनन/मरण सूतक जीवकृत है ग्रहण सूतक कालकृत है।

जैसे राजा के घर जननादि होने पर सबको सूतक लगता है वैसे ही सूर्य/चंद्र को राजा/रानी का दर्जा प्राप्त है। उनके ग्रसित होने पर भी सबको सूतक मान्य है।

#जनन/मरण सूतक

जैसे सागर में एक बूंद यदि गिरा/हटा दें तो थोड़ी हलचल वृताकार रुप में होगी।उस वृताकार दायरे को ऋषियों ने इक्कीस पीढ़ी तक सूतक के रूप में प्रभावित माना है।इसका हमारी शरीर/रक्त/अन्त:करण पर गहन प्रभाव एक विशेष दबाव पड़ता है।

#ग्रहण सूतक

ग्रहण सूतक में जगत की आत्मा(सूर्य)वह मन(चंद्र) के (राहू)छाया से ग्रसित होने पर प्रभावित क्षेत्र के जीवों/वस्तुओं पर स्पष्ट प्रभाव रहता है।यह समय विशेष सावधानी व साधना हेतू ही है। इसमें क्या करें ,न करें ,इस पर क्रमशः प्रकाश डाला जाएगा।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २२.७.१८

२ ।। ग्रहण।।

ग्रहणादि से उत्पन्न सूतक का सूक्ष्म प्रभाव हमारे तन मन पर बहुत गहरा पड़ता है। इसलिए सूतक काल में काम्यादि कर्म वर्जित माने गए हैं। हमारे पूज्य गुरुदेव ने एक घटना बताई कि दीपक नामक युवक हररोज बांकेबिहारीजी के दर्शनों के लिए रोज मंदिर जाता था । एक दिन वह मंदिर गया पर उन्हें बिहारी जी के चरणकमल के दर्शन नहीं हुए। उन्होंने पुजारी जी से पूछा कि आज बिहारी जी के चरणकमल ढ़क क्यों रखे हैं, दर्शन नहीं हो रहे?

पुजारी जी ने कहा-- ऐसा नहीं है।चरण तो स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।दीपक को मामला समझ नहीं आया।वह परेशान हो कर घर लौटा।घर आकर पता चला कि जब तुम घर से निकले थे तभी थोड़ी देर बाद परिवार में बच्चा पैदा हुआ है।अब दीपक के यह मामला समझ आया कि सूतक के कारण ही बिहारी जी के चरणों के दर्शन नहीं हो सके।

#दूसरी कथा महाभारत की है।एक ब्राह्मण ने गुरु जी को गुरुदक्षिणा देने के लिए राजा के दरबार में आकर राजा से रानी के कानों के कुंडल देने की याचना की। राजा ने खुशी खुशी कहा कि जाओ , अंदर रानी बैठी है जाकर उनसे ले आएं। ब्राह्मण अंदर गया परन्तु उन्हें रानी बैठी हुई दिखाई नही दी।आकर राजा से कहा कि रानी तो अंदर नहीं है। राजा ने कहा-- नहीं रानी तो अंदर ही है।तुम शुद्ध तो हो?

ब्राह्मण ने कहा-ओह! याद आया , मैं लघुशंका करके हाथ धोना भूल गया। राजा ने कहा- जाओ, हाथ पांव धोकर फिर अंदर जाओ। ब्राह्मण वैसा करने के बाद अंदर गया तो रानी के दर्शन हुए।ऐसा होता है अशौच का प्रभाव।

राजा नल को भी कलियुग बारह वर्ष तक पराजित नहीं कर सके। एक दिन जब अशौच को प्राप्त हुए तब,मौका मिला।

तो इस ग्रहण में क्या करें इसे क्रमशः बताएंगे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २३.७.१८

३ ।।ग्रहण।।

ग्रहण काल में सभी को स्नान करना जरूरी है।रोगी भी चाहे तो गर्म पानी से स्नान कर सकता है-

आदित्यकिरणैः पूतं पुनः पूतञ्च वह्निना । जलं, व्याध्यातुरः स्नायात् ग्रहणेऽप्युष्णवारिणा” व्यासः ।

#ग्रहणकाल में सभी दान भूदान के समान,सभी ब्राह्मण वेदव्यास के समान तथा सभी जल गंगाजल के समान माने गये हैं।अत: इस दौरान ,दान ,स्नान तथा

ब्राह्मण पूजन का अत्यंत महत्व है।

#सर्वं भूमिसमं दानं सर्वे व्याससमा द्विजाः । सर्वं गङ्गासमं तोयं ग्रहणे नात्र संशयः" ।

ग्रहण काल में कच्चे अन्न से श्राद्ध करने का बड़ा महत्व है-

आपद्यनग्नौ तीर्थे च चन्द्रसूर्य्यग्रहे तथा । आम- श्राद्धं द्विजैः कार्य्यं शूद्रेण तु सदैव हि" ।

ग्रहण काल में गुरु जी से मंत्र दीक्षा का विशेष महत्व है। इसमें मुहूर्त आदि का विचार भी नहीं किया जाता। क्योंकि यह विशेष काल है।

#सत्तीर्थेऽर्कविधुग्रासे तन्तुदामनपर्वणोः । मन्त्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन् न शोधयेत्" सारसंग्रहः ।

#ग्रहणकाल_एक_चमत्कारिक_समय

यह समय साधना के लिए चमत्कार से भरा हुआ होता है।ग्रहण आरंभ से समापन तक यदि हम किसी मंत्र का जप करें तो उसके पुरश्चरण का फल प्राप्त होता है।ग्रहण के बाद उस मंत्र का दशांश हवन व तर्पण करें। फिर गुरुदेव को दक्षिण दें।

पुरश्चरणप्रकार: "अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते । ग्रहणेऽर्कस्य चेन्दोर्वा शुचिः पूर्वमुपोषितः । नद्यां समुद्रगामिण्यां नाभिमात्रोदके स्थितः । यद्वा पुण्योदके स्नात्वा शुचिः पूर्वसुपोषितः । ग्रहणादि विमोक्षान्तं जपेन्मन्त्रं समाहितः । अनन्तरं दशाशन क्रमाद्धोमादिकं चरेत् । तदन्ते महतीं पूजां कुर्य्याद्ब्राह्मणतर्पणम् । ततो मन्त्रप्रसिद्ध्यर्थं गुरुं संपूज्य तोषयेत्।।

जो ग्रहण काल में स्नान नहीं करते वे अभागे हो जाते हैं,कोढ़ी हो जाते हैं।

वृहद्वसिष्ठः "संक्रमे ग्रहणे चैव न स्नायाद्यस्तु मानवः । सप्तजन्मसु कुष्ठी स्याद्दुःखभागी च सर्वदा"

डा०कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २४.७.१८

३८.

#पीपल का महत्व

पीपल भगवान का ही स्वरूप है गीता में भगवान ने कहा है कि वृक्षों में मैं पीपल का वृक्ष हूं--

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम् गीता" तस्य विष्णुरूपित्वेन सर्व्वामङ्गलनाशकत्वम्।

पार्वती के शाप से समस्त देवता पीपल के पेड़ के रूप में अवतरित हुए-

#शशाप पार्वती क्रुद्धा सर्वा- नेव दिवौकसः" इस्युपक्रम्य "तस्मान्मम सुखभ्रंशात् यूयं वृक्षत्वमाप्स्यथ" पार्वतीशापमुक्त्वा "तस्माद्वृक्षत्वमापन्ना ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।

लेकिन #सावधान! पीपल का स्पर्श शनिवार को ही करें , अन्य किसी दिन नहीं। क्योंकि लक्ष्मी की बहन दरिद्रता अपने पति उद्दालक के साथ चली तो ऋषि उसे पीपल के पास बैठाकर वापिस नहीं आए। दरिद्रता रोने लगी।तब भगवान विष्णु लक्ष्मी के साथ उसके पास आए और विष्णु जी ने उससे कहा कि यह पीपल मेरे ही अंश से उत्पन्न है।तुम इसमें वास करो।लक्ष्मी तुमसे मिलने हर शनिवार को आया करेगी।अत: शनिवार को ही पीपल का स्पर्श करें।

#लक्ष्म्या ज्येष्ठ- भगिन्या अलक्ष्म्या सह उद्दालकस्य विवाहमुक्त्वा पत्या “यावदागमनं मम तावत् अश्वत्थमूले त्वं निषीद” इत्युक्तया अलक्ष्म्या तत्रैव स्थितया बहुतिथे काले गतेऽपि पत्यु- रागमनमनालोक्य क्रन्दितं, तच्श्रुत्वा च लक्ष्म्या कनिष्ठ- भगिन्या नोदितो विष्णुस्तत्रागत्य तामुवाच यथा । “लक्ष्म्या सह ततो विष्णुस्तत्रागात् कृपयान्वितः । आश्वासयन्नलक्ष्मों तामिदं वाक्यमथाब्रवीत् । अश्वत्थ- वृक्षमासाद्य सदाऽलक्ष्मीः स्थिरा भव । ममांशसम्भवोह्येष आवासस्ते मया कृतः । मन्दवारे सदा ह्येनं लक्षमीरत्रा गमिष्यति । अस्पृश्योऽसौ भवेत्तस्मान्मन्दवारं विना किल” एवञ्च अलक्ष्म्याः सर्वदावासादन्यदिने तस्यास्पृश्यत्वं मन्दवारे लक्ष्मीसमागमाच्च स्पृश्यत्वमिति मर्य्यादा कृता ।

उसका सेचन नित्य कर सकते हैं। वैशाख में विशेष महत्व है।

पीपल की जड़ों में चबुतरा बनाने का बड़ा पुण्य है-

अश्वत्थमूलं विप्रर्षे! यो बध्नाति शिलादिभिः । अश्वत्थरूपी भगवान् किं तस्मै न हि यच्छति”।

पीपल को देखते ही नमस्कार करें तो आयु व सम्पत्तियां बढ़ती हैं--

“#अश्वत्थद्रुममालोक्य प्रणामं कुरुते तु यः । आयुर्वृद्धिर्भवेत्तस्य वर्द्धन्ते सर्वसम्पपदः” ।

बुरा स्वप्न दिखे तो प्रार्थना करें - हे ! ब्रह्मदेव मेरे बुरे स्वपनफल को दूर करें--

अश्वत्थरूपी भगवान् दुःखप्नं शमयाशु मे ।” इति मन्त्रेण प्रणामोविहितः ।

उसकी जड़ों में बैठकर धर्म कर्म करने का महान शुभफल है--

यदाश्वत्थतले विप्र! धर्मकर्म विधी- यते । न्यूनातिरिक्तता न स्यात्तस्मिन् कर्मणि जैमिने! । तत्र तीर्थानि सर्व्वाणि तिस्रोतादीनि सन्ति वै!” ।

इसको न काटें। इसकी छोटी शाखा यज्ञ के समिधा के अलावा तोड़ने का फल ब्रह्महत्या के समान पापप्रद है। यह पेड़ साक्षात् विष्णु जी ही है---

अश्वत्थोवृक्षराजोऽयं हरिमूर्त्तिः प्रकीर्तितः । तस्मादश्वत्थहन्तॄणां त्राता कोऽपि न विद्यते । अश्वत्थशाखामेकां च स्वल्पामपि छिनत्ति यः । स कोटि ब्रह्महत्यानां फलं प्राप्नोति मानवः”

शास्त्रों में पीपल को विष्णु,बरगद को शिव व ढ़ाक(पलाश) को ब्रह्मा जी का स्वरुप माना गया है---

अश्वथरूपो भगवान् विष्णुरेव न संशयः । रुद्ररूपो वटस्तद्वत् पलाशो ब्रह्मरूपधृक् । दर्शनस्पर्शनादेव ते वै पापहराः स्मृताः”

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २८.७.१८

३९..#मूर्ति से बचो

जल्दी करो आकार से घृणा करने वालो मूर्त्ति स्पर्श/पूजा और मूर्त्ति को सम्मान देने से बचो।

तुम्हारा शरीर भी एक मूर्त्ति ही है और तुम्हारे परिचित भी एक आकार रखते हैं । फिर क्यों इन आकारों को सहन करते हो?

#धिक्कार है तुम पर। तुम तो निराकारवादी हो।

तुम्हारे घर/गाड़ी/कपड़ों का भी एक आकार है जिसे तुमने खुद सलैक्ट किया है।बोलो कुछ...?

यदि जूतों का आकार तुम्हारे माफिक न हो तो तुम परेशान हो जाते हो?

तुम्हारा बेटा खो जाए तो तुम ढुंढते फिरते तो उसी आकार को बड़े बड़े इश्तिहार लगाकर? तब तुम्हें पता लगता आकार का महत्त्व।

थोड़ा और गहरे उतरेंगे....

१.भोजन भी एक आकार(रोटी) लेकर ही तुम्हारे सामने आता है।क्या उसे तुम प्रणाम नहीं करते?

२. यज्ञ वेदी का एक आकार है ,क्या वह यज्ञ से पूर्व/पश्चात् पूजा योग्य नहीं है?

३. यज्ञोपवीत में मंत्रपूर्वक देवता स्थापित हैं क्या वहां मूर्ति पूजा नहीं है?

४. प्रणिता/प्रोक्षणी आदि पात्र साकार तथा पूज्य नहीं हैं?

५. क्या यज्ञाग्नि साकार/पूज्य नहीं हैं? दें दो न हवा में आहुति।

५. क्या वेदादि ग्रंथ साकार व पूज्य नहीं हैं?

६. क्या वर्णमाला का आकार नहीं है ?यह देवलिपि और इसका स्वामी "ॐ" स्वयं देदीप्यमान साकार /पूज्य नहीं है?

७.क्या सूर्य/ चंद्र/जल/अग्नि साकार एवं मंत्रों से पूज्य नहीं हैं?

#दार्शनिक पक्ष--

रूप आते ही आकार आ जाता है।आकाश ,वायु को छोड़कर अग्नि/जल/पृथ्वि व इनके कार्य साकार ही है ।इनसे कहां तक बचोगे?

यदि पृथ्वी साकार न होती तो तुम कहां टिकते?

#क्या पृथ्वी को अपना आधार/पोषक/पूज्य मानकर बिस्तर छोड़ने से पहले उसे हाथ से छूकर प्रणाम नहीं करते?

अब मत कहना हम आकार को नहीं पूजते।

#बिना आकार के सृष्टि रचना ही नहीं हो सकती। और तुम्हारा अस्तित्व भी तभी तक है जब तक तुम्हारा आकार है?

#एक और रहस्य और निराकारियों के लिए #चैलेंज----

वेद का प्रत्येक मंत्र साकार है और साकार का ही वर्णन करता है ।ग़लत सिद्ध कर सको तो बताना।

#पुरुष एव इदं सर्वं यदभूतं यच्च भाव्यम्।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०२.०८.१८

४०.शिव

शिवरात्रि के परम पावन अवसर पर साम्बसदाशिव की कृपा से मानव को सहज आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार हो जाए ऐसा दिव्य ग्रन्थ लिखने की प्ररेणा हुई है।जिसका नामकरण है--"मुक्तिमुक्तावलीसूत्रमाला"

वैसे तो वेद पुराण उपनिषद आदि में यह विषय खूब विवेचित हुआ है।इस विषय में सब कुछ अच्छे से कहा जा चुका है।फिर भी सामान्य बुद्धि के मुमुक्षुजनों के लिए तथा स्वान्त:सुखाय यह ग्रंथ लिखने को प्रवृत्त हुआ हूं।(इसको १००%आचरण में लाते ही काम बन गया समझें)

जो इस पर चलेगा वह निश्चय ही शुद्ध अन्तःकरण वाला होकर परमात्मा के निकट पहुंच जाएगा।और परमात्मा तो ऐसे भक्तों के स्वागत लिए आतुर ही हैं। इस ग्रंथ के सूत्र मेरी साधना काल के दौरान प्राप्त हुए मोती हैं।

#येन_कोऽपि__न_दूयते_स_समाजधर्म:।।१।।

चराचरे देवजीवभावनारक्षणाद्....अर्थात्

...........हमारे किसी भी कार्य से कोई जड़ चेतन दु:खी न हो यही हमारा समाज के प्रति धर्म है।क्योंकि सबमें देवत्त्व है।

यह यहां (स्वल्प)ही कहा है समयाभाव से।

इस पहले सूत्र के आचरण से ही आप दुर्गुणमुक्त हो जाएंगे।

जय शम्भो! डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०९.०८.१८

#मुक्तिमुक्तावलीसूत्रमाला

#सर्वं_रामायणमिव_जगद्।स्वस्वभाववदाचरन्ति_जीवा:।।२।।

#अर्थात् विश्वमिदं रामचरितमिव।अत्र दैवासुरिसम्पद्युक्ता: जीवा: स्वेच्छानुसारमाचरन्ति।सद्भिस्तु नानम्यत एवैष जगत्।#सीताराममयमिव ।

अर्थात् संसार के समस्त कार्यकलाप रामायण की चौपाईयों के समान हैं।जो जैसा है वैसी ही चौपाईयां बोल रहा है।

कोई छली,कपटी,कामी,चौर,परोपकारी है तो कोई संत हैं।आप समझें आपके हिस्से में कौन सी चौपाईयां हैं।

संत के लिए तो सब सीताराममय ही है ।वह अद्वैतरुप से इसको नमन ही करता है।

यही जगत है। डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १०.८ .१८

#मुक्तिमुक्तावलीसूत्रमाला

#स_सर्वेश्वरेश्वर:।।३।।

परमात्मा कौन ?

उत्तर--

अर्थात् वह परमात्मा सबका ईश्वर है। सबका का अभिप्राय

१ .स्थानदेव-ग्रामदेव-कुलदेव-महादेव(ब्रह्मा विष्णु शिवादि) आदि का भी ईश्वर

२. समस्तगुरुजनों का ईश्वर

३. जड़ चेतनात्मक सृष्टि का ईश्वर

सकाम(कामनाओं के इच्छुक) को नं १ में उतरते क्रम से अधिकाधिक सबका पूजन अनिवार्य है।

निष्काम को इस पूजा की विशेष आवश्यकता नही है।वह आन्तरिक पूजा से सबका बीजभूत सर्वेश्वर में ही लीन रहता है।

४१ शुद्ध.

सभी कर्मकांड कर्ता अपने गुरुदेव से वैदिक मंत्रों का शुद्ध उच्चारण सीखें,तब पूजा में प्रवृत्त हों। अन्यथा यह वेद वाणी अशुद्ध उच्चारण से ब्राह्मण व यजमान दोनों के लिए घातक हो सकती है।

अशुद्ध वेदपाठ #वाग्वज्र अर्थात् वाणी रूपी वज्र है जो प्रयोक्ता का विनाश कर सकता है।

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।

४२. परिवार

भारतीय संस्कृति का आधार सुदृढ़ पारिवारिक व्यवस्था है।जिसके आधार पर हमारे नातों और रिश्तों का ताना-बाना बुना गया है। अतः हम सभी का यह दायित्व है कि भारतीय संस्कृति के इन आधारभूत मानदंडों को सुरक्षित रखें। आजकल आधुनिकता का ढोंग करके युवा वर्ग इन नाते रिश्तों को भुलाने का मिथ्या प्रयास कर रहा है जो अशोभनीय है।

#ध्यान दें जो नाते रिश्तों का ध्यान नहीं रखते और खुद को पढ़ा-लिखा कहते हैं वे अपने आपको बिना पूंछ का पशु ही समझें।

क्योंकि पशु नाते रिश्ते का ध्यान नहीं रखते और समझदार मानव उनको देखकर सोच ऊठता है कि सच में ये पशु हैं।न कोई रिश्ता न नाता।

अपने पूर्वजों की इक्कीस पीढ़ियों तक सपिंडता,सोदकता व सगोत्रता मानी गई है।

विवाह में भी अपना/माता/दादी/ नानी का गौत्र छोड़ने का विधान है।

अब आजकल की समस्या देखिए--- नई पीढ़ी के युवा अपने गांव के चाचा/ताऊ/दादा आदि को यदि वे चाचा आदि उम्र में कम हैं तो चाचा ही नहीं कहते।

जबकि कायदा तो यह है कि यदि चाचा आदि उम्र में छोटा भी हो तो भी उससे इज्जत से पेश आएं,व उसकी पत्नी आदि को इज्जत से चाची आदि कहकर ही सम्बोधित करें।

रिश्तेदारों में भी यही ध्यान रखें। पैसा आदि का घमंड दूर करें और व्यवहार को शुद्ध बनाएं।(गरीब की बहुत सबकी भाभी) ऐसा न करें।

#और विशेष सावधानी----

नाते रिश्ते के व्यक्तियों की इज्जत भी करें।यदि दो एक ही नाते के समकक्ष व्यक्ति वाद विवाद करें तो उन्हें शांत कराएं पर कटु वचनादि से किन्हीं का पक्ष न लें।आप खुद अपने से बड़ों से न उलझें।

एक गुरु/गुरुकुल से पढ़ें पूर्व स्नातकों का भी ऐसे ही सम्मान करें।

जिससे "एक भी" शब्द पढ़ा है उसे गुरु मानें तथा उसका यथोचित सम्मान करें।

यह शास्त्राज्ञा है, जो इसे नहीं मानता वह शास्त्रघ्न है ।और वह अगला जन्म पशु के रूप में प्राप्त करता है।

४३. सुनें

#शिवलिंग पर दुग्धाभिषेक महत्त्व बनाम कुतर्कियों की हुंआं हुंआं ....

दूध से अभिषेक पहले सब देवताओं की मूर्त्तियों पर होता था।उससे थोड़ा पहले चले तो भारतवर्ष में इतना दूध होता था कि दूध से आम लोग भी स्नान करते थे।यह कहावत भी थी---"दूधों नहाओ पूतों फलो"

थोड़ा और पहले चलें तो भारत में दूध की नदियां बहती थी।

थोड़ा और वैदिक युग में जाएं तो यहां "क्षीरसागर" था यानी कि दूध से परिपूर्ण महासागर।

#दूध_से_अभिषेक वैदिक विधा है इन वैदिक पूजा पद्धतियों का सम्मान वही लोग करते हैं जो हिंदू हैं।मलेच्छ तो अपने बासी मुंह के सडे हुए दांतों को खोलकर दुनिया भर की निंदा करने वाली जीभ को दोनों संध्याओं में शराब भिगोकर अंधेरे में पड़े रहे और मौका मिलते ही अपने नजदीकियों को भी अपने कुकर्मों में शामिल कर लें ताकि नरक में भी एकाध साथी साथ चल सके।

वेद तो पृथ्वी, औषधियों,अन्तरिक्ष, नदियों व दिशाओं से दूध की बौछार करने की कामना करता है (पय: पृथिव्यां पय:...)

और वैदिक निष्ठावान भक्त आपके घर से मांगकर दूध शिव पर नहीं चढाता।उसका अपना है और वह पृथ्वी की उर्वरता में ही सहयोग दे रहा है।

आजकल तो पापी लोग देव मूर्तियों के दूध का पूरे साल का ठेका लेकर दूध से मोटा मुनाफा कमा रहे हैं और मौका लगते ही भगवान को भी आंख दिखा रहे हैं।धिक्का र है ऐसे दोगलों पर।

#तात्त्विक विश्लेषण

शिव का अर्थ है कल्याण और कल्याण तब होगा जब पांचों तत्वों का शोधन होता रहेगा।

यज्ञ के धुंए से आकाश+वायु का शोधन होता है।

यज्ञाग्नि से अग्नितत्व का शोधन होता है जो शरीरस्थ व जड़-चेतनस्थ अग्नि को शुद्ध करती है।

यज्ञ भस्म नदियों में प्रवाहित करने से जल व मिट्टी का शोधन होता है।

मूर्तियों पर विभिन्न गंध द्रव्यों के अभिषेक से व दूध के अभिषेक से मिट्टी व भूमिगत पानी की उर्वरता बढ़ती है।

आज हर जगह RO लगा रहे हैं और फिर भी पानी विषाक्त हो रहा है। पहले खेतों के तालाब का पानी भी लोग खूब पीते थे फिर भी कुछ नहीं होता था।

#कारण

पानी शुद्ध था। प्रतिवर्ष गांव के चारों और दूध +गंगाजल की धारा देने का विधान था जिससे जल व भूमि शुद्ध रहती थी। फसलें निरोग थी।

आज जिन गांवों में नास्तिक ज्यादा हैं वहां कैंसर के रोगी ज्यादा हैं। डाक्टर की टीम ने गांव के पानी में दिक्कत बताई है।

वे मूर्ख देवताओं के दूध के अभिषेक के पैसे की शराब पी रहे हैं , फिर सोचो कैंसर किसे होगा?

#ध्यान दें --- कोई भी वस्तु नष्ट नहीं होती।दूध पर केवल मनुष्य का ही हक है क्या? अन्य जीवों का नहीं है?

मिट्टी ,नाले के छोटे-छोटे जीवाणु भी तो शिव की ही सृष्टि है। क्या उन्हें दूध की मिठास लेने का कोई अधिकार नहीं?

कितना स्वार्थी हैं आदमी। दूध खुद पीता है और बच गया तो उसे बेचकर शराब, गुटखे में उड़ाएगा।

सावन में वर्षा के जल से विषाक्तता न फैले , इसलिए श्रावण में शिव पर दूध से अभिषेक का महत्त्व है ताकि दूध पृथ्वी में अवशोषित होकर मिट्टी व जल की शुद्धता को बढ़ाए।

तभी तो शिव "पुष्टिवर्धनं" कहें गये हैं।

#और सुनें

जो गरीब बच्चों को दूध पिलाने का तर्क देते हैं वे ...

१ अपनी शराब की जगह गरीब बच्चों को दूध पिलाएं

२ मांसाहारी बकरे,गाय,मुर्गे न काटकर गरीबों को अपना रक्त दान करें।

३ नास्तिक अमीर अपने बच्चों के बादाम दूध का आधा गरीबों में प्रतिदिन बांटें।

४ चंद लोग ही दूध मिला पानी शिव पर चढ़ाते हैं ,बाकि लोग प्रतिदिन या प्रति सप्ताह दूध गरीबों को पिलाएं,केवल भाषण न दें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २०.८.१८

४४. ।।#तंत्ररहस्य।।

।।१।।

आज से वेदसम्मत तंत्र पर प्रकाश डाला जाएगा।जिससे वैदिक विद्वान भी लाभान्वित होंगे और तंत्र के जिज्ञासु भी हर्षित होंगे तथा तंत्र के विषय में आम पाठकों को भी लाभ पहुंचेगा। ताकि वे रास्ता न भटकेंगे।

#शरीर के बंधन में घिरकर जीवात्मा मुक्ति चाहती है। गर्भस्थ जीव को अपना पूर्वजन्म स्मरण रहता है।वह परमात्मा से प्रार्थना करता है कि मुझे यहां से बाहर निकलो मैं देव,द्विज,गुरूओं की पूजा-अर्चना करूंगा तथा योगी होकर भगवान को भजूंगा।पर बाहर आते ही सांसारिक हवा से सब वायदे भूल जाता है।महामाया उसे भ्रमित कर देती है।

#महामाया तो विष्णु शिवादि को भी मोहित करने का सामर्थ्य रखती है।--

सैव माया प्रकृतिर्या

सम्मोहयति शंकरम्।

हरिं चैव विरंचिं च

तथैवान्याश्च निर्जरान्।।

#महामाया के दो भेद हैं--

विद्या व अविद्या

जो मुक्त कर दे वह विद्या, जो बांध दें वह अविद्या।

वह विद्या ही आदिशक्ति है।उसका ही भजन करें---

#वंदनीया सदा स्तुत्या

पूजनीया च सर्वदा।

श्रोतव्या कीर्तितव्या च

माया नित्या नगात्मजा।।

उस माया को नित्या भी कहा है।

वही ब्रह्मा विष्णु शिव को उत्पन्न करती है---

#ब्रह्मविष्णुशिवादीनां

भवो यस्यां निजेच्छया।

पुनः प्रलीयते यस्यां

नित्या सा प्रकीर्तिता।।

शेष पुनः.........डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २३.८.१८

।।#तंत्र रहस्य।।

।।२।।

विद्या से ही जीव मुक्त हो सकता है।अत: अविद्या को छोड़कर विद्या की दीक्षा सदगुरुदेव से लें। क्योंकि बिना दीक्षा के जीव के पाश नहीं कटते।और बिना पाश कटे वह "पशु"ही बना रहता है।

गुरुजी से दीक्षित व्यक्ति ही देवपूजा,जप,हवनादि का अधिकारी है, दीक्षित को सूतकादि जन्य पाप नहीं लगता---

#जपो देवार्चनविधि: कार्योदीक्षान्वितैर्नरै:।

नास्ति पापं यतस्तेषां

सूतकं च यतात्मनाम्।।

तंत्र को आगम कहा गया है।शिव जी के पंचमुखों से ही पंचाम्नायों की उत्पत्ति हुई है।

#आगम (तंत्र)शिव के मुख से आगत ,गिरिजा के मुख में गत होने व वासुदेव से अनुमोदित होने के कारण ही आगम कहलाया----

#आगत: शिववक्त्रेभ्यो

गतश्च गिरिजामुखे।

मत:वासुदेवस्य

तस्मादागम उच्यते।।

अत: वासुदेव सम्मत "सत् आगम" अर्थात् सात्विक तंत्र ही वेद सम्मत होने से प्रशस्त है। उसमें दीक्षित होने का वैदिक को भी दोष नहीं है। क्योंकि शिव ने असत् तंत्र (वेदविरोधी मार्ग) के उपासकों के लिए कहा है कि वे वेदविरोधी आचरण करेंगे तो भूत प्रेत हो जाएंगे---

#आवाभ्यां पिशितं रक्तं

सुरां चैव सुरेश्वरि!

वर्णाश्रमोचितं धर्ममविचार्यार्पयन्ति ये।

भूतप्रेतपिशाचास्ते

भवन्ति ब्रह्मराक्षसा:।।

#अत: सावधान!!!

द्विज अपने वर्णाश्रम धर्म पर ही चले।तथा कहीं भी भैरवादि मंदिर में मदिरा,मांस आदि न चढ़ाएं।वहां अनुकल्प का प्रयोग करें।अन्यथा शिव के वचनानुसार राक्षस हो जाओगे।

।।#तंत्र रहस्य।।

।। ३।।

तंत्र में तामसिक देवों को भी मद्य,मासादि शूद्र ही अर्पित करें,अन्य द्विजाति नहीं। शूद्रों की भी यदि इच्छा न हो तो न चढ़ाएं।

ब्राह्मण को तो सुरा व मांसादि से सर्वथा दूर रहना चाहिए।

#न दद्याद् ब्राह्मणो मद्यं

महादेव्यै कदाचन।

ब्राह्मणो वामकामोपि

 मद्यं मांसं न भक्षयेत्।।

ब्राह्मण मद्य की जगह गोदुग्ध या ताम्रपात्र में शहद दें।

क्षत्रिय गाय का घी,

वैश्य मधु तथा शूद्र भी पुष्प रस चढ़ाएं।

अथवा सभी के लिए कांस्य पात्र में नारियल का पानी निवेदन करने का विधान है।

देवता के यंत्र के पश्चिम में यह द्रव्य निवेदित करें।

देवता को प्रसन्न करने हेतु मंत्र दीक्षा अवश्य लें। क्योंकि दीक्षा बिना मुक्ति नहीं है।----

#बिना दीक्षां न मोक्ष: स्याद् प्राणिनां शिवशासने।

अदीक्षित की पूजा देवता स्वीकार नहीं करते---

#उपचारसहस्रैस्तु

पूजिता भक्तिसंयुतै:।

अदीक्षितार्चनं देवा

 न गृह्णन्ति कदाचन।।

#सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न----

किस गुरु से दीक्षा लें??

सावधान!!!

कलियुग में #कालनेमि गुरु बहुत हैं। उनसे बचें----

बहरुपियों की पहचान #कैसे----?

पहचान स्पष्ट है । यहां #महाविद्या की दीक्षा की बात है।यहां जीवन-मुक्ति व परमात्मा प्राप्ति के लिए दीक्षा की बात हो रही है।जो धन,स्त्री,पुत्र,पद,सर्विस के लिए, चमत्कारों के लिए दीक्षा लेना चाहते हैं वे महामूर्ख हैं।वे इस प्रकरण से दूर रहें। क्योंकि उपरोक्त चीजों को ही #संसार

कहते हैं।और दीक्षा संसार से पीछा छुड़ाने के लिए है, बढ़ाने के लिए नहीं।

१ सद्गुरु आत्मसंतुष्टि वाला होगा।

२. वह धन का जरा सा भी लालची नहीं होगा।व धन प्राप्ति के हथकंडे(प्रसाद ,मालादि बेचना, व्यापार करना,नाम कमाना, राजनीति करना,पक्षपात करना)से दूर होगा।

३. वह औरतों से कोई सम्पर्क नहीं रखेगा।उसके पास कोई औरत अकेली नहीं मिलेगी न रुकेगी।

४.वह कोई भीड़ इकट्ठी नहीं करेगा।

५. सिनेमा,डांस,भौतिकता से वह कोसों दूर होगा।

६. वह फिजूल की बातों की बजाय अपना अधिकांश समय जप तप में लगाएगा।क्योंकि उसके पास बेकार के जूलूस के लिए समय नहीं होता।

#और अंतिम महत्त्वपूर्ण शर्त-----

#वह वेदों का मर्मज्ञ #ब्राह्मण ही होगा। क्योंकि अन्य वर्ण वाला भी यदि उपरोक्त गुणों वाला है तो भी वह अपने से निम्न वर्ण वालों को ही दीक्षित कर सकता है ब्राह्मणों को नहीं।

क्योंकि सदाचारी द्विज ही सबका गुरु कहा गया है।----

#सदाचारो द्विजो यस्तु वर्णानां गुरुरेव स:।

शूद्रादि के मुख से मंत्र दीक्षा से नरकगामी हो जाओगे शास्त्र तो कहता है कि शूद्र भी शूद्र से मंत्र दीक्षा न ले ---

#शूद्र:शूद्रमुखाच्छ्रुत्वा

विद्यां वा मंत्रमेव वा।

गृहीत्वा नरकं याति

दुखमाप्नोति निश्चितं।।

(शूद्रस्यार्थोऽज्ञानी)

यहां संसार से निवृत होने वालों के लिए ही ये नियम हैं ।राजनीति के लिए नहीं,अत: राजनीतिज्ञ पेज से दूर रहें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली २५.८.१८

।।तंत्र रहस्य।।

।।४।।

"जीवन-मरण के चक्र से छुड़ाने वाला गुरु ब्राह्मण ही हो" इस शास्त्रोक्त वचन पर कई तथाकथित विद्वान "बकवास" कहने

लगे।कुछ भाग गये। कुछ मौन हो गये।

पर इससे शास्त्र को कोई फर्क नहीं पड़ता। शास्त्र वही कहता है जिससे जीव का कल्याण हो।

जो जिस काम में योग्य है उसी का अधिकार है। इसे विद्वान जानते ही हैं। उदाहरण देखिए----

१.#माली के घर फूल रखे बासी नही होते--इसमें माली का एकाधिकार है।बाकि लोग ईर्ष्या क्यों करें..?

२. जीवनदायक औषधि में देशी कपिला गाय का घी ही अत्यावश्यक है।अत: उसी का एकाधिकार है।बाकि गाय ईर्ष्या क्यों करें..?

३. पूजा में गंगाजल चाहिए।गंगाजी का ही एकाधिकार है।बाकि नदियों के वकालती ईर्ष्या क्यों करें...?

४. नर्मदाजी का हरेक कंकर शंकर है। उन्हें नर्मदेश्वर कहते हैं।बाकि कंकर ईर्ष्या क्यों करें...?

५. दंडीस्वामी ही संन्यासियों में श्रेष्ठ हैं।और सबसे पूज्य शंकराचार्य जी।बाकि संन्यासी ईर्ष्या क्यों करें....?

६. हवन में आम,पीपलादि की समिधाएं प्रयुक्त हैं तो बाकि पेड़ ईर्ष्या क्यों करें (यद्यपि पीपलादि की गीली हों तो धूंआ दे सकती हैं और शहतूत की पास में ही सुखी लकड़ी रखी हों तो भी विज्ञ पीपल की समिधाएं ही यज्ञाग्नि में लगाएगा।)

#विशेष---

जब साधारण यज्ञ भी वेदविद् ब्राह्मण से करवाने का विधान है और हम करवाते भी हैं तो जीवन मरण से मुक्त करने वाली विद्या की दीक्षा में संशय क्यों?

और जो संशय करते हैं वे परमात्मा में भी संशय ही करते हैं। क्योंकि जो शास्त्र परमात्मा का संकेत देते हैं वहीं ब्राह्मण को आध्यात्मिक विद्या का रहस्यविद् कहते हैं।

#और सुनें--- निर्लोभ,निर्वैर,शान्त, निष्काम और वेदविद्या में निष्ठ ब्राह्मण को शास्त्र ने "भूसुर" अर्थात् पृथ्वी का देवता कहा है और बाकि जीवों को निर्देश दिया है कि जल्दी करो "इस ब्राह्मण से अपना हित साध लो"

विज्ञ तो जानते ही हैं कि विद्वान ब्राह्मण साक्षात् देवता ही है।

#मनुष्यों कि बात ही क्या ? देवता बृहस्पति जी को और राक्षस शुक्राचार्य जी को अपना गुरु बनाए हुए हैं। दोनों ही ब्राह्मण हैं।

राक्षसों में भी बुद्धि है ।और एक बार इन्द्र गुरु जी को देखकर खड़े नहीं हुए तो गुरु की नाराज़गी से सिंहासन चला गया और दर दर भटके।

#अब एक वास्तविक संस्मरण सुनें----

दिल्ली के निगम बोध घाट पर एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी जी रहते थे।जो श्रीविद्या में निपुण थे।आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न चमत्कारी ,तपस्वि संत थे।मेरे मित्र(संस्कृत प्रवक्ता, परमविद्वान,वेदज्ञ) ने ब्रह्मचारी जी से कई बार अनुरोध किया कि आप मुझे श्रीविद्या की दीक्षा दें।

पर ब्रह्मचारी जी एक ही बात कहते कि"शास्त्री जी आप विशुद्ध ब्राह्मण हैं और मैं कायस्थ। मैं आपको दीक्षा देने का अधिकारी नहीं हूं।हां! आप एक काम करें ,आप श्रीविद्या का मंत्र किसी ब्राह्मण से सुनकर आ जाए।बाकि पूरी प्रक्रिया मैं आपको बता दूंगा और रहस्य भी समझा दूंगा"।

शास्त्र में कैसी उच्च निष्ठा थी ब्रह्मचारी जी की।

अत: स्पष्ट है कि यदि हमें फल शास्त्रोक्त चाहिए तो नियम भी शास्त्रोक्त मानने पड़ेगें।

#और सुनें सावधान!!!

व्यक्ति तभी तक नास्तिक और मनमानी करता है जब तक स्वस्थ है। समस्या आने पर तो सब ऐंठ निकल जाती है और दर दर भटकता है।

मेरे पास अनेकों आते हैं जो कहते हैं कि हम परम नास्तिक और ब्राह्मण निंदक थे।पर समय का ऐसा रगड़ा लगा कि जिसने जहां कहा वहीं माथा रगड़ा ,और सारी ऐंठ निकल गयी।

#ध्यान दें-- ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण गत जन्मों की आध्यात्मिक सम्पत्ति का आश्रय है।वही जीवित और मृत दोनों की गति करने का सामर्थ्य रखता है।

#ये तो शुक्र है कि ब्राह्मण आज दान दक्षिणा से दूसरों की समस्याओं का हल निकाल देता है।(समस्याएं आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक तीन हैं सबका इलाज वेदों में है)वरना एक समय ऐसा दुर्भाग्यशाली समय भी आएगा कि पैसे हाथ में लिए फिरेंगे और कोई सुपात्र दान लेने वाला नहीं मिलेगा।

ब्राह्मण कि प्रशंसा में भगवान कहते हैं कि विद्यावान् हो या अविद्यावान्(पर सदाचारी हो)वह ब्राह्मण मेरा ही शरीर है--

#अविद्यो सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनु:।

डा०कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २६.८१८ #समस्त ब्राह्मणों के चरणों में दण्डवत प्रणाम।

।।तंत्र रहस्य।।

।।५।।

तपस्विनी स्त्री से मंत्र दीक्षा उत्तम मानी गई है।माता से दीक्षा आठ गुणा अधिक शुभ मानी गई है।विधवा स्त्रियों से दीक्षा न लें।यदि विधवा किसी देवता से सिद्धमंत्र हैं तो केवल उस मंत्र की दीक्षा दें सकती हैं।

#स्त्रियो दीक्षा शुभा प्रोक्ता मातुश्चाष्टगुणा स्मृता।।

स्त्री गुरु पद योग्य स्त्री साध्वी, सदाचारी,व जितेन्द्रिय हो---

साध्वी चैव सदाचारा गुरुभक्ता जितेन्द्रिया।

#जितेन्द्रिय ,तड़क भड़क से दूर,निर्लोभी,परस्त्री से कोसों दूर और तत्वज्ञ ये सदगुरुदेव के लक्षण हैं।

सबको सब मंत्र दिये जी सकते हैं पर स्त्री व शूद्रों को वेदमंत्र, ऊँकार,स्वाहा आदि मंत्र न दें । क्योंकि इनसे   उनका भला नही होगा बल्कि अधोगति हो जाएगी।और मंत्रदाता भी पाप का भागी होगा।

उनके लिए और अनेक कल्याणकारी मंत्र हैं।

#ननु स्वाहाप्रणवसंयुक्तो शूद्रे मंत्रं दद‌द्विज:।

शूद्रो निरयगामी स्याद् ब्राह्मणो यात्यधोगतिम्।।

#सावित्रीं लक्ष्मीं यजु: प्रणवं यदि जानीयात् स्त्रीशूद्र: स:मृतोऽधो गच्छति।

गोपालमंत्र, पार्वती मंत्र,सूर्य, गणेश मंत्र दिया जा सकता है।काली के समस्त मंत्र दिये जा सकते हैं।शिव, विष्णु के समस्त मंत्र तांत्रिक प्रणव जोड़ कर दिये जा सकते हैं।

क्योंकि सब मंत्र सबके लिए नहीं होते।ब्राह्मणों के लिए भी पात्रता अनुसार सब मंत्र नही हैं।

संन्यासियों के लिए भी सब नही हैं। शास्त्राज्ञा ही यहां सर्वोपरि है। मनमानी नहीं।

।।तंत्र मंत्र रहस्य।।

।।६।।

संसार में सदगुरु दो प्रकार के हैं ।एक होता है योगी दूसरा होता है वेदविद्या सम्पन्न सदाचारी ब्राह्मण।

दोनों ही निर्लोभी,शिष्यहित चिंतक तथा परोपकारी होते हैं।

योगी गुरु सर्वसाधारण के लिए दुर्लभ है। लेकिन दूसरा कुछ सुलभ है।योगी गुरु सामने वाले के आध्यात्मिक स्तर को बेखूबी पहचानकर उसके अनुरूप ही उस पर कृपा करके जीवन-मरण के चक्र से जीव का उद्धार कर देता है।वह साक्षात् परमात्मा ही होता है।

उपरोक्त दोनों गुरुओं का एक क्रम है।सर्वप्रथम दूसरे गुरु की शरणागति जरुरी है।यह वेदविद्या सम्पन्न निष्काम विद्वान भी अधम लोगों के लिए अप्राप्य ही है क्योंकि वे नास्तिक अधम अपने अहं के सिवाय किसी को कुछ मानते ही नहीं।

अत: मुमुक्षुजन द्वितीय गुरू की शरण में जाकर अपने इष्टदेव के मंत्र की दीक्षा की कामना करें। फिर गुरु जी के आदेशानुसार प्राप्त मंत्र का पुरश्चरण करें।मंत्र,देवता व गुरु को एकस्वरुप ही समझें। मंत्रसिद्धि हेतू दश संस्कार सम्पन्न करें।मंत्र सिद्धि रूपी देवकृपा होगी तब प्रथम योगी गुरु (या साक्षात् इष्टदेव)की प्राप्ति होगी जो साक्षात् ईश्वरस्वरुप ही होगा।अब आपके मायाराज्य के चक्र से निकलने में कोई संदेह नहीं रहेगा।

अतः आध्यात्मिक साधना का इच्छुक उपरोक्त क्रम को अवश्य अपनाएं।अन्य लम्पटों के झांसे में न आएं।

और सुनें -यज्ञ, दान,जप तप ,ज्यौतिष भविष्य व उसके उपाय भी यदि पूछने हैं तो वेदनिष्ठ ब्राह्मण से ही पूछें।दिव्य ब्राह्मण जो कहते हैं देवता उसे मानते हैं। क्योंकि वही उसका शास्त्रोक्त अधिकारी है।

बिना अधिकारी के किया हुआ कर्म निष्फल होता है जैसे बिना न्यायधीश के अन्य द्वारा सुनाई गयी सजा व्यर्थ व बकवाद होती है।

गुरु पास ही हो तो प्रतिदिन,थोड़ी दूर हो तो प्रतिमाह ज्यादा दूर हो तो भी वर्ष में एकबार अवश्य दर्शनार्थ जाएं।

।।तंत्र मंत्र रहस्य।।

।।७।।

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" अर्थात् शरीर ही धर्म तपस्या,साधना का पहला साधन है। महाकवि कालिदास जी ने यह गुप्त एवं महत्वपूर्ण सूत्र साधकों के हितार्थ अभिव्यक्त किया है। संस्कृत कवि मात्र कवि नहीं थे अपितु क्रान्तदर्शी साधक थे।

#काली के दास ही कालिदास नाम से प्रसिद्ध हुए।मां काली इन्हें प्रत्यक्ष थी।

हम इस सूत्र से सीख लें,और समझें। #सावधान!

उसने मानव जीवन का महत्तम उद्देश्य प्राप्त करने का मौका खो दिया जिसने शरीर रूपी इस यंत्र को नहीं साधा।

शरीर वास्तव में ही साधना का यंत्र है।इसे सर्वशुद्ध रखने में तत्पर हो जाईये।

इसी क्रम में हम कुछ मार्गोपदेश करेंगे ।तत्वग्राही ध्यान दें और अमल करें।

१. नित्य स्नान करें। विशेष साधक व संन्यासी तीन बार,व गृहस्थ साधक दो बार।

२. बांये हाथ से पवित्र अंगों जैसे सिर आदि,नाभि से ऊपर के अंगों का स्पर्श न करें।

३. दायें हाथ से भोजनादि खाएं पियें। बायें से शौच शुद्धि का काम करते हैं।अत: इससे भोजनादि न करें।#क्योंकि जिस हाथ से मलादि धोते हैं उससे भोजन नहीं कर सकते।(यह भी बहुतों को नहीं मालूम)

४.प्रतिष्ठित अंगूठी भी बांये हाथ में न पहनें।इन्हें दांये में ही पहनें

(शेष आगे...........)डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २१.९.१८

४५ वेद

को समझना सबके बस की बात नहीं है।कभी कभी कोई कोई सदियों में एकाध तत्त्वद्रष्टा पैदा होता है ,जो तह तक पहुंच पाता है।बाकि तो बाहर बाहर चोंच घिसाते हैं और कोई पूछता है --कैसे लगे वेद?

तो झट से कह देते हैं--बहुत अच्छे हैं π π π ।जैसे सारा सार पा लिया हो। पर मन में सब पता ही है।

उदाहरण ----वेद समझे थे पूज्यपाद् शंकराचार्य पुरी पीठाधीश्वर भारतीकृष्णतीर्थ जी ने।समझकर तुरंत कम्प्यूटर बनाने के सूत्र दिये। जिनके आधार पर सुपर कम्प्यूटर बना।

#और विश्व को दिया #वैदिक गणित।जो घंटों का काम सैंकिंडों में करता है ,वह भी बिना कापी पैन के।

#जैसे --103×105=???

उत्तर देखिए चुटकियों में-----

दोनों संख्याओं में कोमन अंक हैं-100

पहले में सौ से 3 ज्यादा है ,दूसरे में 5

3+5 को सौ में जोड़िए=108

इसमें 3×5 का गुणनफल (15)

आगे लिखिए।जैसे--

10815 यही उत्तर है।

अत: समान्य कुतर्कियों को वेद का अलौकिक अर्थ दिखाई नहीं देगा। वे मनमाना अर्थ निकालने की कोशिश न करें और यदि निकाल लें तो ये दम्भ बिल्कुल न भरें कि मेरा अर्थ है ठीक है।#अन्यथा बेमौत मारे जाओगे।

वेदपाठी यज्ञोपविती उसका सस्वर उच्चारण करें।उच्चारण में ही महान् कल्याण निहित है।

अन्य लोग घर में अवश्य रखें और सुबह-शाम धूप-दीप पूर्वक प्रार्थना करें कि कदाचित् हमारे कुल में भी वेदविद् पैदा हो।

#अब सामान्य जन वेद का ज्ञान कैसे प्राप्त करें तो इसका सीधा सा रास्ता है कि श्रुति(वेद) में असमर्थ जन स्मृति ग्रंथों का अध्ययन करें।स्मृतियों को भी सरलता से समझना है तो पुराणों का अध्ययन करें।

क्योंकि वेद=स्मृति=पुराण यह श्रुति =उक्ति=अनुभव का मार्ग है।

वेद की शिक्षाओं को सरलता पूर्वक सोदाहरण समझना है तो पुराणाध्ययन सर्वाधिक उपयोगी है।क्योंकि यह जनमानस के अत्यन्त नजदीक है।

#अतः पुराण से स्मृति व स्मृति से श्रुति ,यही मार्ग है।और दूसरा है ही नहीं।जो इस मार्ग से नहीं पहुंचता वह कभी नहीं पहुंच सकता।

#क्योंकि यह पुरातन चरित्रों (पौराणिक अनुकरणीय जनों)को स्मृति (स्मृतिग्रंथ) में रखकर व आचरण में लाकर शब्दब्रह्म(वेद) के तात्विक अर्थ की ओर गमन करने का विज्ञान है।   जयन्तु वेदा:

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १५.१० १८

४६ !!कीमती सूत्र!!

ध्यान दें निष्काम यज्ञानुष्ठान तो लगभग बंद ही हो चुके हैं।केवल काम्यानुष्ठान ही बचे हैं ।लोग काम्य अनुष्ठान भी मजबूरी या बिना श्रद्धा के करवाते हैं।जो अनुचित है। मेरे पास समस्या ग्रस्त लोग आते हैं तो मैं सीधे पूछता हूं----

१. घर में यज्ञ करवाए कितने दिन हो गए?

२. कुलदेव/देवी का यज्ञ/वस्त्रादिदान करवाए कितने दिन हो गए?

३. पितृ पिंडदान/वस्त्रदान/ब्राह्मणभोजन करवाए कितने दिन हो गए?

४. कुलगुरू को घर पर आमंत्रित/दानादि करवाए कितने दिन हो गए?

#ये प्रश्न पूछने पर लोग मौन हो जाते हैं।

#ध्यान दें --बिमारी/मुकदमेबाजी/लड़ाई आदि में लाखों खर्च हो रहे हैं। संतान/घर/व्यवसाय/स्वास्थ्य में बांधा का यही कारण है कि हम अपने धर्म को भूल गए हैं।

#और जो थोड़ा बहुत करते भी हैं तो ये कमियां रह जाती हैं---

१. हम ब्राह्मण को दान देते हैं तो वे कपड़े देते हैं जो घटिया हैं।#सावधान चाहे एक साल कि बजाय दो साल में दें पर ऐसा दें जो पहनने लायक हो।

२.हवन में भी दक्षिणादि खुले मन से दें।हवन चाहे हर महिने की बजाय तीन/छः महीने में करवाएं।साल में कम से कम दो बार घर पर हवन अवश्य कराएं।

३.,साल में कम से कम दो बार पितृपिंडदान/वस्त्रदान अवश्य करें।

४.ब्राह्मण योग्य नियुक्त करें। नियुक्ति के बाद उस पर शंका न करें।

५. घर की लड़कियों को तो हर बार दान देते हैं कभी किसी गरीब की कन्या को भी #अपनी कन्या के समान उत्तम वस्त्राभूषण दान करें।कम से साल में एक बार...।यही सुखी जीवन का आधार है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १४.१०.१८

४७ #प्रश्न--दूसरे का अन्न क्यों न खाएं?

तर्क की सुनें--"न तर्केणैषा मतिरापनेया" तर्क के द्वारा सत्य को नहीं पाया जा सकता।

परान्न धीरे धीरे आध्यात्मिक पतन का उदाहरण है।

ब्रह्मसूत्रकार कहते हैं कि अन्न के तीन परिणाम हैं ।

१.एक भाग का मल बनता है।

२.दूसरे भाग का रक्तादि बनता है।

३. और तीसरे अतीव सूक्ष्म भाग से #मन बनता है।

और मन ही कारण है बंधन व मोक्ष का।

अतः दूसरे का अन्न खाने से बचिए।दूसरे का व्यवसाय/रहन-सहन/सोच/शिक्षा/भाव ये सब अन्न को प्रभावित करते हैं।

यहां की शिक्षा भावी जीवन निर्माण के महत्त्वपूर्ण सूत्र की ओर संकेत करती है, अन्य भेदभाव की और नहीं।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली। १२.१०.१८

४८ #ज्ञानसूत्र

चौरासी लाख योनियों में पशु पक्षी आदि देह में क्रमिक विकास के बाद ही परम दुर्लभ मानुष तन मिलता है।कीट पतंगों को मृत्यु के बाद कोई गति नहीं मिलती।उनका मात्र भ्रमण ही रहता है। इसलिए उपनिषद कहता है-#जायस्व म्रियस्व।

जो मनुष्य देहपात के साथ परामुक्ति को प्राप्त करते हैं उनकी भी कोई गति नहीं होती।वे ब्रह्मभाव को प्राप्त हो जाते हैं।जो निषिद्ध कर्म छोड़ कर वैध सकाम कर्म करते हैं मृत्यु के बाद उनको पितृलोक में स्थान मिलता है।शुभ फल भोगकर वे पुनः मृत्यु लोक में अच्छे घर में जन्म लेते हैं।पापी लोग मलिन मार्ग से नरक में गिरते हैं।क्योंकि मनुष्य शरीर से इतने ज्यादा कष्ट भोगे नहीं जा सकते।अतः उन्हें यातनादेह मिलता है।वहां लम्बी पीड़ा भोगकर फिर पशु पक्षी का शरीर मिलता है।अंत में मनुष्य शरीर मिलता है,पर नरक के चिन्ह फिर भी रहते हैं। जैसे कठिन रोगादि रहना।

स्वर्ग भी शुभ कर्मों से मिलता है।सकाम पुण्य से निम्न स्तर का स्वर्ग मिलेगा।जिसका राजा इंद्र है।उससे ऊपर उर्ध्व कोटि का स्वर्ग है जो मह,जन,तप,सत्यलोक आदि हैं।ज्ञान से यह मिलता है।

गत जून में पहली बार मां नर्मदा जी के दर्शनों को गये थे। जाने से पहले ही मन में था कि मां नर्मदा का प्रत्येक कंकर शंकर है,तो एक अच्छा सा शिवलिंग मां नर्मदा से अपने हाथों से लेकर आएंगे। वहां जाकर मां नर्मदा और ओंकारेश्वर जी के दर्शन कर आनन्दातिरेक की अनुभूति हुई।जब स्नान के लिए मां नर्मदा जी में गये तो मां से प्रार्थना की कि मां एक नर्मदेश्वर मुझे प्रदान करने की कृपा करें।पहली डुबकी लगाकर हाथ से तलाशा तो एक सुंदर सा नर्मदेश्वर हाथ में आया। मन में आया कि यह उत्तम

तो है पर गोलाकार नहीं है।इसी आशय को लेकर खूब प्रयास किया पर सफल नहीं हुए।उसी नर्मदेश्वर को मां की कृपा मानकर ले आए। तीन दिन तक मां नर्मदा के पवित्र सानिध्य में रहने का कई बार स्नान करने का सौभाग्य मिला।हर बार प्रयास किया। बच्चों ने भी चुन चुनकर अनेक नर्मदेश्वर एकत्र कर लिए।यात्रा उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुई।घर आकर सब नर्मदेश्वर पूजा गृह में स्थापित कर दिये।

#परन्तु मुझे यह जानकर महान् आश्चर्य हुआ कि जो नर्मदेश्वर मां नर्मदा जी के कृपा प्रसाद से सर्वप्रथम प्राप्त हुआ था वह अलौकिक ही है। उसमें एक विशेष प्रकार की चमक, चिकनाई तथा दिव्यता स्पष्ट आलोकित होती दिखाई देती है।स्नान के समय जल उसपर ठहरता नहीं।

सत्य ही है हमारे चयन और देवों के चयन में महद् अन्तर हैं। सच्ची प्रार्थना वे अवश्य पूर्ण करते हैं। उनके पास किसी वस्तु का अभाव भला कैसे हो सकता है।

#आप सबके दर्शनार्थ वह दिव्य नर्मदेश्वर व अन्य नर्मदेश्वर हैं। दर्शन करें।व जिन्हें चाहिए वे ले सकते हैं। दुकानों की अपेक्षा अपने हाथ से लाए गए नर्मदेश्वर सर्वोत्तम हैं।क्योंकि--अपना हाथ जगन्नाथ।

#साधना सूत्र

आज्ञा चक्र में बिंदु का ध्यानाभ्यास करने से अन्तर्प्रज्ञाज्योति विकसित होती है।इसे ही शास्त्रानुसार दिव्य चक्षु या तृतीय नेत्र कहा गया है।इस दिव्य नेत्र के उदय होने पर इन दोनों चर्मचक्षुओं के विषयों का आकर्षण समाप्त हो जाता है।जो इन्ही चर्मचक्षुओं के विषयों के रस में डूबे हैं उनके लिए इस दिव्य नेत्र का उदय असम्भव है।

इस नेत्र से ही आत्मानुसंधान की प्रक्रिया पूर्ण हो पाती है।

फिर पूर्णता के पथिक के तीनों नेत्र खुले रहते हैं।

तीसरा नेत्र खुलने पर जिसके दोनों चर्मचक्षु बंद हो वे देवता कहलाते हैं।देवों में शिव व शिव परिवार को छोड़कर बाकी देवों का मात्र दिव्य नेत्र ही काम करता है।दो नेत्ररोग केवल शोभा के लिए ही हैं।

साधकगण भी दिव्यनेत्र प्राप्ति के बाद एक नेत्र पर ही आश्रित रहते हैं।लौकिक विषयों से वे पार हो जाते हैं।पूर्णयोगी के तीनों नेत्ररोग विकसित हो जाते हैं।दो चर्मचक्षु तो वर्तमान काल को ही देख पाते हैं।पर तीसरे नेत्र से तो तीनों काल अखंड रूप में दिखाई देते हैं।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ५.१०.१९

#साधना सूत्र

अधिकांश मानवों की साधना सिद्धि प्राप्ति हेतू ही होती है। इसमें यदि हम आत्मज्ञान प्राप्ति को लक्ष्य रखें तो यह साधना की सर्वोच्च अवस्था होगी।

साधनावस्था में भ्रूमध्य में ज्योति के चिन्तन का अतीव महत्त्व है। प्रतिदिन यहां बिंदू चिन्तन का अभ्यास फलदायक है। आरंभ में कल्पित बिंदु होने पर भी यह सूर्य ज्योति का परिचायक है।साधक इसका अभ्यास करते हुए एकाग्रभूमि में आरूढ़ हो जाता है।संयम से साधक की प्रभा केन्द्रीभूत होने लगती है।

#प्रथमावस्था के समय वह उपास्यदेव के ज्योतिदर्शन में निमग्न रहता है।

#द्वितीयावस्था में वह देवता का रूपदर्शन करता है।

#तृतीयावस्था में वह स्वयं देवस्वरूप हो जाता है।

तब जो होता है वह #रहस्य यह है कि साधना काल में साधक देवता में स्थित होता है।और अन्यकाल में देवता साधक में स्थित रहता है। .... क्रमश: डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली। ३.१०.१९

साधना सूत्र

ध्यानादि के समय उर्जा की गति सिर की ओर होती है।नीचे का शरीर शववत् हो जाता है।इस अवस्था में यदि कोई स्पर्श कर दे तो प्राणगति तत्क्षण ब्रह्मरन्ध से नीचे उतरती है।इससे साधक को अचानक आघात लग सकता है। अतः ध्यान में कोई ऐसा न करे ऐसी एकांत जगह को ही ध्यानकेंद्र बनाएं।

#सामान्य दशा में तो वह तेज सिर से पैरों की ओर बहता है।इसी कारण गुरु जी को प्रणाम करना श्रेयस्कर है ताकि उसका तेज हमें प्राप्त हो सके।

४९ #प्रणाम का रहस्य---

प्रणाम प्रक्रिया में प्रणामकर्ता की उर्जा सिर की ओर प्रवाहित होती है व प्रणम्य का तेज चरणों की ओर प्रवाहित होता है।

यह लोकोपकारक तो है लेकिन इस प्रणाम को स्वीकार करने से साधक(प्रणम्य) की उर्जा की क्षति होती है।क्योंकि जो अभी साधक है वह परिपक्व नहीं हुआ है(परिपक्व सदगुरुदेव तो बहुत दुर्लभ ही हैं)।

#इस समस्या से बचने के लिए साधक किसी को चरण स्पर्श ही न करने दें।

जो योगयुक्त नहीं है।(माता पिता गुरु)को छोड़कर उसे प्रणाम न करें।क्योंकि तेज का विनिमय भी संक्रमित होकर हानि ही देता है।

यदि उत्कट साधक को सामान्य जन प्रणाम करें और साधक का तेज उर्ध्वगामी है तो सामान्य जन तुरंत समाधि में प्रवेश कर सकता है।यदि उसका आधारबल कम है तो प्रणामकारक को हानि भी हो सकती है।(इसका प्रत्यक्ष उदाहरण गत शिवरात्रि को सपरिवार शिवमन्दिर में भावविभोर होकर शिवतांडव गाने के बाद जब मैंने अपनी छोटी बेटी को तिलक लगाया तो वह लगभग अचेत ही हो गयी, फिर तुरंत उसे घर लाकर पूजाघर के आगे बैठाया तब १५ मिनट बाद व्यवस्थित हो सकी)

अत: गुरुजन यदि पूजा ,ध्यान में लगे हों तो उनके चरण न छूएं।

यदि कोई प्रणाम करे तो अपने इष्टदेवता का चरण अपने सिर पर धारण करके ही गुरु जी को प्रणाम करें।इससे अपना तेज इष्टदेव की ओर प्रवाहित हो जाएगा। यह गुरू शिष्य का गुप्त रहस्य है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १.१०.१८

५० #दुर्लभ सूत्र

दोनों नेत्रों को बंद करने के बाद जो अंधकार दिखाई देता है वह चित्त का मल है। वास्तव में चित्त स्फटिक के समान स्वच्छ

है।ऊपर सहस्रार चक्र से परमात्मा की अनुकम्पा रूपी ज्योति चित्त पर सदा पड़ती रहती है।पर जब तक चित्त का मैल नहीं कटता तब तक उत्थान होना सम्भव नहीं।इस मैल रूपी अवरोध के कटते ही चित्त आलोकित हो ऊठता है। हमें केवल चेष्टा करनी है तो मैल को हटाने की।फिर देखना इस आलोक में सबकुछ साफ साफ दृष्टिगोचर हो जाएगा।

जप,तप,नियम ,ध्यानादि सब उपक्रम इस मैल को काटने के लिए ही हैं। कितना सफल हुए उसके लिए तरीका बता दिया है ,चैक करते रहिए।

५१. नर्मदेश्वर

गत जून में पहली बार मां नर्मदा जी के दर्शनों को गये थे। जाने से पहले ही मन में था कि मां नर्मदा का प्रत्येक कंकर शंकर है,तो एक अच्छा सा शिवलिंग मां नर्मदा से अपने हाथों से लेकर आएंगे। वहां जाकर मां नर्मदा और ओंकारेश्वर जी के दर्शन कर आनन्दातिरेक की अनुभूति हुई।जब स्नान के लिए मां नर्मदा जी में गये तो मां से प्रार्थना की कि मां एक नर्मदेश्वर मुझे प्रदान करने की कृपा करें।पहली डुबकी लगाकर हाथ से तलाशा तो एक सुंदर सा नर्मदेश्वर हाथ में आया। मन में आया कि यह उत्तम तो है पर गोलाकार नहीं है।इसी आशय को लेकर खूब प्रयास किया पर सफल नहीं हुए।उसी नर्मदेश्वर को मां की कृपा मानकर ले आए। तीन दिन तक मां नर्मदा के पवित्र सानिध्य में रहने का कई बार स्नान करने का सौभाग्य मिला।हर बार प्रयास किया। बच्चों ने भी चुन चुनकर अनेक नर्मदेश्वर एकत्र कर लिए।यात्रा उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुई।घर आकर सब नर्मदेश्वर पूजा गृह में स्थापित कर दिये।

#परन्तु मुझे यह जानकर महान् आश्चर्य हुआ कि जो नर्मदेश्वर मां नर्मदा जी के कृपा प्रसाद से सर्वप्रथम प्राप्त हुआ था वह अलौकिक ही है। उसमें एक विशेष प्रकार की चमक, चिकनाई तथा दिव्यता स्पष्ट आलोकित होती दिखाई देती है।स्नान के समय जल उसपर ठहरता नहीं।

सत्य ही है हमारे चयन और देवों के चयन में महद् अन्तर हैं। सच्ची प्रार्थना वे अवश्य पूर्ण करते हैं। उनके पास किसी वस्तु का अभाव भला कैसे हो सकता है।

#आप सबके दर्शनार्थ वह दिव्य नर्मदेश्वर व अन्य नर्मदेश्वर हैं। दर्शन करें।व जिन्हें चाहिए वे ले सकते हैं। दुकानों की अपेक्षा अपने हाथ से लाए गए नर्मदेश्वर सर्वोत्तम हैं।क्योंकि--अपना हाथ जगन्नाथ।

५२ श्रीमद् भागवद् कथा बनाम डिस्को #डांस

श्रीमद्भागवत कथा अकालमृत्यु के कारण प्रेतयोनि में गये पूर्वजों की मुक्ति का सर्वोच्च साधन है।

पितृपूजा में देव पूजा से भी अधिक सावधानी की आवश्यकता है।देवता भाव के भूखे होते हैं ,पूजनकर्म में स्वल्प त्रुटि को देवता क्षमा कर देते हैं।परन्तु #सावधान!......पितृदेव भाव के साथ साथ कर्मशुद्धि भी चाहते हैं।अत : पितृ पूजन में देवपूजा से भी अधिक सावधानी जरूरी है।

एक मित्र ने बताया कि एक सेठ प्रतिवर्ष #श्रीमद्भागवद्कथा का आयोजन कर रहे हैं पर दिन प्रतिदिन कारोबार ठप्प हो रहा है।

कारण स्पष्ट है ,कथा में नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

#नियम क्या हैं इन्हें समझ लें यदि पितरों को वास्तव में ही प्रसन्न करना चाहते हो तो।

१. ब्राह्मण विद्वान व आचारवान हों।

२.श्रीमद् भागवत का मूल पाठ दोपहर तक हो ,बाद में कथा का सार श्रोताओं को सुनाएं।

३.पितृपूजा में घर की औरतें सिर पर घूंघट रखें,नाच गाना व निर्लज्जता का प्रर्दशन बिल्कुल न करें।

४. आचार्य नियमों का पूर्ण पालन करें।कथा संस्कृतनिष्ठ हो।

#हरे राम हरे हरे कृष्ण ...आदि कीर्तन ही करें। फिल्मी धुन व गीतों की कथा के बीच में कोई आवश्यकता नहीं,यह सब अशास्त्रीय है।जो कथा का अंग नहीं है।ये सब करना है तो अन्य किसी दिन करें पर पितृपूजा में सर्वथा वर्जित है।

५. पितृपूजा में स्पष्ट निर्देश है कि इसका विस्तार न करें क्योंकि विस्तार से अशुद्धता आ जाती है।

६. इस दौरान विजातीय मित्रों को अपने घर आमंत्रित न करें क्योंकि यह कुलदेव पूजा है कोई उत्सव नही ।रसोई में बने प्रसाद को ब्राह्मण व सजातीय ही खाएं। संगीत मंडली की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसमें विजातीय हो सकते हैं।

६. घर के सब लोग प्रतिदिन साफ वस्त्र पहनें।ब्रह्मचर्य में रहें।नीला,काला परिधान निषेध है।

७. घर में बांस की झाड़ू न लगाएं।

८. दूध न बिलोंएं। व्यापार भी इन दिनों स्थगित रखें।

९. ब्राह्मण भोजन के झूठे बर्तन पुरुष ही उठाएं, औरतें नहीं।

९.ब्राह्मण भी सफेद वस्त्र पहनें ,लाल ,नीले नहीं।ब्राह्मणों का परिधान सफेद वस्त्र ही है।

बहुरंगा परिधान तो नौटंकीबाज का है, जो नाटकादि करते हैं। वैदिक विद्वानों का नहीं।

इस कथा का आयोजन परीक्षित ने मृत्यु से पहले दत्तचित होकर सुना था ।इसको सुनने देवता भी आते हैं अतः मर्यादा में रहें।डिस्को डांस न बनाएं। शालीनता बरतें व मन लगाकर पूजा करें बिना किसी दिखावे के।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १५.९.१८

५३. राधे राधे ....या.... राधे कृष्ण

सृष्टि आरंभ से ही "#राम राम" या "जय सियाराम" कहने का प्रचलन था ।जो शास्त्रोक्त ही था ।क्योंकि "राम" शब्द में उसकी शक्ति भी "म" बिंदु रूप में विराजमान है। हमारे पूर्वज केवल राम पर ही आश्रित थे।

बारिश नहीं होती थी तो कहते थे -"रामजी नहीं बरसा"

फसल अच्छी हो जाती थी तो कहते थे-"रामजी ने मौज करदी"

सब लोग आपस में मिलते तो कहते थे "राम राम,राम राम"।

रिश्तेदार मिलते ही कहते थे "जय राम जी की"। ऊपर की ओर इशारा करके कहते थे #रामजी सब देख रहा है।

वास्तव में राम शब्द अपने में अपनी शक्ति को भी समाहित किये हुए परिपूर्ण शब्द था। जिसका उपदेश ऋषियों ने वाल्मिकी जी को दिया।तथा जिसके बल पर त्रिपुरारी शिव काशी में अन्त समय में जीव को मुक्ति प्रदान करते हैं।

सीताराम (सियाराम) के समकक्ष शब्द था "राधेश्याम"या राधे कृष्ण(राधाकिशन)। यह भी अपने आप में परिपूर्ण शब्द है।

अब गत वर्षों से वृंदावन में जब से केवल #नौटंकी करने वालों ने व्यासपीठ हथिया लिया है तब से लहर चली है -"राधे राधे"।

जबकि वैकुंठ तक अपने योगबल से प्रतिदिन भ्रमण करने वाले स्पष्टया कहते हैं कि श्रीराधा जी भगवान श्रीकृष्ण की ही अर्द्धांगिनी स्वरूपा हैं।अत: पूर्ण परमात्मा को स्मरण करना है तो #राधेश्याम या #राधेकृष्ण कहें ,तभी पूर्ण फल मिलेगा।

भगवती कृष्ण के रूप में तथा भगवान राधा के रूप में अवतरित हुए हैं।

महायोगी एवं सर्वसम्मत तत्वज्ञानी म० म० गोपीनाथ कविराज जी ने अनुभूत तत्व बताते हुए कहा है कि--

#राधा" कहने से आधा समझना होगा"(आधाकृष्ण आधी राधा)

अत: शक्तिसमपन्न पूर्णब्रह्म को याद करना है तो राधेकृष्ण या राधेश्याम कहिए।

जब राधाजी भी कृष्ण कृष्ण जपती हैं तो हम क्यों न उन्हें रसना का विषय बनाएं।

इस राधाष्टमी पर इसी रहस्योद्घाटन के साथ ,प्रेम से कहिए----- #राधेश्याम

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १७.९.१८ (#नोट:-- कापी पेस्ट न करें,शेयर कर सकते हैं)

५४ मातृ महिमा...१

जो भी अनुष्ठान,साधना करें गायत्री जप अवश्य करें..तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जपेत्।

जिस देवता की साधना कर रहे हैं उसमें सफलता के लिए पंचांग उपासना करें।पंचांग में पटल,पद्धति,कवच,सहस्रनाम और स्तोत्र का पाठ ये होते हैं..पटलं पद्धतिवर्म तथा नाम सहस्रकम्।

स्तोत्राणि चेति पंचांगं देवतोपासने स्मृतम्।।

पंचांग देवता के पांच अंग कहे हैं।कलियुग में स्तोत्र मंत्र सब भगवान परशुराम द्वारा शापित हैं केवल भगवद्गीता,विष्णुसहस्रनाम,सप्तशती आदि स्तोत्र ही शापमुक्त हैं,तंत्रांतरों में शिवादि शापित का भी उल्लेख है....

भगवान् शिव ने परिहास में भगवती को 'काली' कह दिया भगवती रुष्ट होकर तपस्या से गौर वर्ण की हो गयी। सत्य ही है तपस्या किसको उज्ज्वल नही बना सकती? ....नर्मोक्त्या शिवेन कालीत्युक्ते तपसा गौरवर्णस्य सम्पादित्वात्......सावधान!

सात्विक साधक माँ को काली न कहे।

ब्राह्मण देवी आदि को शराब न प्रदान करे ,अन्यथा वह पतित हो जाता है ।वह शराब के स्थान पर कांस्यपात्र में नारियल का

जल या ताम्रपात्र में शहद प्रदान करें....ब्राह्मणो मदिरां दत्त्वा ब्राह्मण्यादेव हीयते। ......नारिकेलजलं कांस्ये ताम्रे वा विसृजेन्मधुम्.....जय मातेश्वरि...

शेष फिर कभी। डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १९.९.१८

आप विज्ञ हैं, आपको भी पता है कि वसुदेव एवं देवकी जी पूरा दिन निराहार रहे तब अष्टमी में रात चंद्र उदय के समय भगवान का प्राकट्य हुआ ,उन्हीं के तादात्म्य में गृहस्थी लोग चंद्रोदययुता अष्टमी में व्रत रखते हैं व चंद्रोदय के बाद पारायण करते हैं ।जब बालकृष्ण रात को गोकुलधाम पहुंचे तब तक गोकुलवासी अनभिज्ञ थे। उन्होंने अगली सुबह बालक को देखा तो उत्सव मनाया गया।उत्सव अगले दिन ही मनेगा ।पर व्रत तो स्मार्तों का दो को ही होगा।

यह इस वर्ष नहीं हर वर्ष होता है। #अगले दिन व्रत नहीं उत्सव होता है।हां अगले दिन व्रत संन्यासियों व सत्समकक्ष विधवाओं के लिए शास्त्र सम्मत है। ऐसा ही एकादशी व्रत में भी होता है।

बाकि आप जैसा उचित लगे करें।

५५#ज्यौतिष तत्त्व।।

।।१।।

ज्यौतिष मेरा सबसे प्यारा विषय है। लगभग 1994 से लगातार इस विषय पर मेरा अनवरत अध्ययन चल रहा है।यहां ज्यौतिष में रुचि रखने वालों के लिए व सामान्य जन के लिए कुछ दिग्दर्शन कराया जा रहा है।ज्यौतिष में मैंने जो अध्ययन किया उसमें मात्र मेरे स्वाध्याय व मेरी विशुद्ध मातृस्वरूपिणी चित्तवृत्तियों ने ही मेरा मार्ग प्रशस्त किया है।

मैने इस दिव्य ज्ञानप्राप्ति के लिए चहुं और देखा पर कोई विद्वान मुझे नहीं मिला।इस क्षेत्र में पाखंडी लोग डेरा जमाए हुए हैं जो "ऊंची दुकान फीका पकवान"इस कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं।सच्चे ज्यौतिषी गिने चुने ही हैं जो ज्यौतिष के सैद्धांतिक पक्ष को जानते हैं।बाकि तो केवल अंधेरे में तीर चलाते हैं। आजकल चैनलों पर भी नकली ज्यौतिषियों की बाढ़ सी आई हुई है।ध्यान दें #जो जानकार हैं वे भीड़ इकट्ठी करना ही नहीं चाहते।

मैंने अपनी प्रबल इच्छाशक्ति व स्वाध्याय से गणित ज्यौतिष की बारिकियों को समझा व जन्मकुंडली के प्रत्येक घटक(लग्नस्पष्ट/ग्रहस्पष्ट/वर्ग/दशा)को जितने प्रकार से साधित किया जा सकता था, किया।ज्यौतिष की समस्त शाखाओं (प्रश्न/कुंडली/मुहूर्त/हस्तरेखा/सामुद्रिक/रमल/शकुन/स्वर) का गहन अध्ययन किया।और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि ज्यौतिष अपने आप में महाविज्ञान है।इसको शोधने वाले में त्रुटि हो सकती है ज्यौतिष में त्रुटि नही है। मैंने इसके समस्त ग्रंथों का अध्ययन समस्त टीकाकारों के विचारों सहित गहनता से किया।और आज इस स्थिति में हूं कि जो प्रबुद्ध जिज्ञासु (विशेष योग्यता रखता हो) सीखना चाहे तो उसे ऐसी जगह स्थापित कर सकता हूं जहां से वह अकाट्य ज्योतिष की सीढ़ियां आसानी से चढ़ सकता है।

मैंने ज्योतिष के गूढ़ रहस्य प्रकाशन के उद्देश्य से एकत्रित किये पर उन्हें ग्रंथाकार में प्रकाशित करने का विचार त्याग दिया।क्योंकि इससे अनधिकृत भी बेवजह दम्भ भरेंगे। यह ज्ञान आजकल बिखरा है तो बिखरा ही रहे।सच्चा साधक तो इन्हें एकत्रित कर ही लेगा।

हां ! प्रतिवर्ष मैं ज्योतिष शिविर आयोजित करता हूं ताकि जिज्ञासु लाभान्वित हो सकें।

जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तभी से सहपाठी मुझे "शास्त्री जी" कहने लग गये थे।

इसके योग कुंडली में कैसे अचूक होकर छिपे हुए थे , इसका खुलासा क्रमशः पोस्ट में बताया जाएगा। .... क्रमशः

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली १७.१०.१८

।।#ज्यौतिष तत्त्व।।

।।२।।

ज्यौतिष शास्त्र भविष्य का दर्पण है।कलि के प्रभाव को देखते हुए ऋषियों ने समस्त विद्याओं के सूत्र एक जगह न रखकर अलग अलग ग्रंथों में बिखेर दिए हैं ताकि अनधिकृत उन तक न पहुंचे।विज्ञ पिपासु तो उस स्रोत को खोज ही लेगा।

और विद्वान के सामने तो ज्ञानदेवी अपने अर्थ को प्रकट कर ही देती है---

उत त्वः पश्यन्नददर्शवाचमुतत्वः श्रृण्वन्नश्रृणोत्येनाम् ।

उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासा ।। ऋग्वेद

अत: सच्चा साधक अपनी स्वाध्याय तपस्या से उन सूत्रों को एकत्रित कर ही लेता है।

ज्यौतिष के फलित नियम----

१. किसी का शत-प्रतिशत भविष्य देख पाना ईश्वर की अनुमति से ही हो पाता है।वह जो दिखाना चाहते हैं वही ज्यौतिषी देख पाता है।जो समस्या लाईलाज है उसकी चिकित्सा कौन कर सकता है??

२. तथापि ज्यौतिष के योग काफी हद तक कुंडली के मजबूत व कमजोर पक्ष को दर्शा देते हैं।

३. ज्यौतिषी योग यदि पूर्ण घटित न हों तो उन्हें मामूली फेरबदल के साथ विचार कर फल कहें तो वह भी काफी हद तक सटीक रहता है।

४. योग सारी शर्तें पूरी करे तो वह प्रबल प्रारब्ध को दिखाता है जो घटकर ही रहेगा।

५. मंद प्रारब्ध को उपाय/संत कृपा से परिवर्तित/स्थान्तरित किया जा सकता है ,जैसे पौधे को विस्थापित/कांट-छांट से फल में परिवर्तन करना।।

#मेरी कुंडली कई साथियों को जानने की इच्छा थी।उसको यहां दे रहा हूं।तथा जो मेरे से अपरिचित हैं उनके लिए बता रहा हूं कि कैसे एक योग जो सारी शर्तें पूरी करता हो ,तीव्र प्रारब्ध के रूप में अकाट्य फल देगा।उसे कोई नहीं रोक सकता।वह योग पूरे जीवन को ही परिवर्तित कर देगा।

मैं बिल्कुल अनपढ़ परिवार से हूं पर मेरी कुंडली में #सरस्वती योग है ।यह कैसे बनता है देखें---

१.बुध/गुरु/शुक्र लग्न से केंद्र या त्रिकोण या द्वितीय स्थान में हों।

२. गुरू मित्रराशि/स्वराशि/या उच्च राशि में हो।

(गुरू की तीनों स्थितियों के अनुसार सामान्य/मध्यम/श्रेष्ठ फल मिलेगा)

इस योग का फल स्पष्ट लिखा है---

जातक धर्मविद्या में पारंगत, ग्रंथों का लेखक, यशस्वि तथा कीर्ति मान् होता है।

यह योग स्वनामधन्य पूज्य धर्म सम्राट स्वामी श्री #करपात्री जी महाराज की कुंडली में भी था।

इस योग का ही फल है जो मेरी रूचि प्राचीन विद्याओं में हुई तथा मां सरस्वती ने सदैव मुझ पर कृपा की है। छः सात ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं तथा भविष्य में भी होते रहेंगे।

इस योग ने मेरे जीवन को पूर्णतः बदल दिया इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। संतों की कृपा व सानिध्य मुझे सतत मिल रहा है।

अतः जिज्ञासु ज्यौतिष योगों को कुंडली पर लागू करके फल का विश्लेषण करें तो अवश्य लाभ होगा।

#नोट-- आजकल फोन/मैसेज से लोग भविष्य/मुहूर्त/फल पूछते हैं यह शास्त्र मर्यादा का अतिक्रमण है। अतः आप नजदीकी ज्यौतिषी से प्रत्यक्ष जाकर प्रश्न करें। सामर्थ्यानुसार दक्षिणा दें तभी भविष्यवाणी सफल होती है।यही विधि है।

फलित सिद्धांतों पर चर्चा व मार्गदर्शन के लिए मेरे दरवाजे हमेशा खुले हैं।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १९.१०.१८

५६. संत दर्शन

गुरुदेव स्वामी सर्वज्ञ शङ्करेन्द्र जी के दिव्य दर्शन करके मन आनंदित हो गया।स्वामी जी के दिव्य उपदेश अपने आप में एक उच्च कोटि का चिन्तन है जो सर्वोच्च तपस्या का ही मूर्तिमान स्वरूप है।

धर्म के तत्वों पर हृदय की व्यथा व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि ब्राह्मण जो ९६ सूत्रों वाला यज्ञोपवीत पहनता है तो उसका दायित्व है कि वेद के ९६%मंत्र जो कर्मकांड परक हैं उनमें पारंगत हो कर वैदिक कर्मकाण्ड में निपुण बने।हम संन्यासियों के लिए तो ४% प्रतिशत मंत्र ही उपास्य हैं पर वेदपाठी के लिए तो समस्त वेद जिज्ञास्य हैं।

लेकिन आजकल ब्राह्मण ही संध्या वंदन नहीं करते।यदि खुद की बैटरी चार्ज नहीं है तो दूसरे को आलोकित कैसे करोगे?

उन्होंने कहा कि ब्राह्मण यजमान का मुकदमा भगवान के सामने रखने वाला वकील हैं।उसे तो उर्जावान होना ही चाहिए। उनके पावन विचारों से मेरी दो दिन की यात्रा धन्य ही हो गई।

साधना के गुप्त सूत्र एवं उनके निर्देश से मेरा मन आनन्दविह्वल हो गया। अपनी संत परम्परा के रहस्य, गुरू भक्ति के रहस्य तथा जीवनदर्शन के गहन रहस्य पर उन्होंने अद्भुत मार्गदर्शन किया।

योग्य ब्राह्मण ब्रह्मचारी मिलना आज कितना कठिन हो गया है और वृद्ध ब्राह्मण ज्ञान उपासना को छोड़कर ताश खेलने में व्यस्त रहते हैं ये दो चिन्ताएं गुरुदेव ने व्यक्त की।

दो दिन उसके आश्रम में रहकर उनकी दिनचर्या से सुखद एवं दिव्य आन्तरिक प्रेरणा की अनुभूति हुई।ऐसे उच्च कोटि के संतों के चरणों में दण्डवत प्रणाम।

५७.#दो ही पक्ष सृष्टि में हैं दैवी और आसुरी।

धर्म और अधर्म।

राम और रावण पक्ष।

अपने आपको देखने के लिए बड़ा सीधा सा पैरामीटर है।

शांतभाव से देखें कि मेरा झुकाव किस तरफ है।

राम की ओर अथवा रावण की ओर।

#जब निर्णय हो जाए तब जोर जोर से अपने इष्टदेव की जय-जयकार करें।

#इसका फल---

दैवी समपद्विमोक्षाय   निबंधायासुरि मता।।

अर्थात् धार्मिक ईश्वर के पास जाएगा और अधार्मिक नरक की ओर.....

५८.#अहिंसा साधना

(शेर आदि को वश में करने की साधना)

अहिंसा परमो धर्म अर्थात् मन,कर्म,वचन से दूसरे की हिंसा का भाव त्याग दें तो साधक निर्वैर हो जाता है।

इसी दिव्य गुण की सिद्धि हो जाने पर महात्मा शेर जैसे हिंसक पशु को भी अपने वश में कर लेते थे क्योंकि साधु किसी से बैर नहीं रखते थे अतः सब प्राणी भी उनकी भावना को समझ कर उन से वैर भाव भूल जाते थे ।

वैर भाव भूलने का सीधा सा अर्थ है कि हम किसी से भी वैर नहीं रखेंगे।

प्रकृति जितना व्यक्ति के अंदर आध्यात्मिक विकास होता है उसी के अनुरूप परिणाम प्रदान करती है ।

और उसे उसी सिद्धि के रूप में वापस लौटा देती है।

योग सूत्रों में स्पष्ट लिखा है कि जो व्यक्ति निर्वैर हो जाता है सब प्राणी भी उसके प्रति हिंसा भाव त्याग देते हैं अतः हमें वैर को छोड़ कर के निर्वैर की स्थिति प्राप्त करनी चाहिए ।

अब प्रश्न यह उठता है कि जो हमारे दुश्मन हैं हम उनसे कैसे व्यवहार करें ? ध्यान दें ऋषियों ने दुश्मनों की उस दुष्ट बुद्धि को समाप्त करने के लिए उनके सुधरने की प्रार्थना की है।

वेदों में स्पष्ट लिखा है कि सब प्राणी हमारे प्रति बुरी भावना को दूर कर दें।

यदि दुष्टों की बुरी बुद्धि हमारे प्रति ठीक हो गई तो वह हमसे मित्र भाव रखने लगेंगे। अतः हमें यही प्रार्थना करनी चाहिए कि दुष्टों की दुष्ट बुद्धि समाप्त हो जाए ।

दुश्मनों के विनाश की कामना हमें नहीं करनी है क्योंकि वैदिक धर्म में किसी का भी बुरा नहीं सोचा गया है ।

हम यदि प्रार्थना करें तो यह करें कि जो दुश्मन हमसे दुष्ट बुद्धि रखते हैं हमसे वैरभाव रखते हैं उनका वह मानसिक वैर समाप्त हो जाए।

10 महाविद्याओं की साधना में बगलामुखी मां का प्रमुख स्थान है और उनके दिव्य मंत्र में भी दुष्टों की वाणी और गति अर्थात् बुरी वाणी, बुरे कार्यों में गति ,बुरी बुद्धि को समाप्त करने की कामना की गई है उनके विनाश की बात कहीं नहीं कही गई।

यदि हम दुश्मन के मारे जाने कि प्रार्थना करेंगे तो हमें उन से क्या फायदा होगा इससे तो हमारा आध्यात्मिक मार्ग रुक जाएगा ।

यदि हमें प्रार्थना करनी है तो हम प्रार्थना करें कि हमारे सब दुश्मनों की जो बुरी बुद्धि है वह हमारे प्रति अच्छी बन जाए इस प्रकार भावना करने से हमारा आध्यात्मिक विकास भी होगा और सारा संसार हमारा मित्र हो जाएगा और फिर हमें निर्वैरता की सिद्धि प्राप्त हो जाएगी।

#यदि हम उक्त गुण को अपना लेते हैं तो हमें समष्टि निर्वैर साधना का फल मिलेगा।और हमें मक्खि,मच्छर,सर्प,शेर,दुश्मन सबसे प्रेम की सिद्धि हो जाएगी। इनसे कोई नुक्सा न नहीं होगा।यदि हम इन सबके प्रति सद्भावना रखें।

तभी #धियो यो न: प्रचोदयात्" की सार्थकता हो सकेगी।   डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २१.१०.१८

५९ .#जबर्दस्त परीक्षण

रामसेतु था पर नास्तिकों ने नहीं माना। जब नासा ने इसे सत्य घोषित किया तब सब विधर्मी दुम दबाकर भाग गये।

#अब देखिए दशहरे के बाद श्रीरामसैनिक पैदल बीस दिन में अयोध्या पहुंचे।तब दीवाली मनाई गई।इसे गूगल मैप में कोई भी चैक कर सकता है।

#ध्यान दें,जैसे फेरे होते ही कुछ बाराती तुरंत घर की और चल पड़ते हैं। वैसे ही रावण पर फतह होते ही सूचनावाहक दूत व जौशीले वानर पैदल ही अयोध्या की ओर भाग लिए। ρ π π ।

श्रीराम जी तो प्रमुख योद्धाओं के साथ रावण का क्रियाकर्म करके आराम से पुष्पकविमान से भारद्वाजादि आश्रमों के दर्शन करते हुए ही आए थे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली। २१.१०.१९

६०.।।ब्राह्मी शरीर और शून्य गमन।।

तात्विक रूप में कोयले और हीरे में कोई अंतर नहीं होता परंतु उनके गुण दोषों में बहुत अंतर होता है इसी प्रकार सब मनुष्य एक समान है लेकिन पूर्व जन्मों में अर्जित पुण्य के बल से उन्हें तद् तद् अनुरूप नया शरीर प्राप्त होता है।

भगवान ने स्पष्ट कहा है की योग से भ्रष्ट हुआ व्यक्ति अगले जन्म में पवित्र आत्माओं के घर में जन्म लेता है। इसलिए क्रमशः शूद्र वैश्य क्षत्रिय ब्राह्मण आदि शरीरों की महत्ता है।

साधक के सामने किसी जाति में उत्पन्न होने की भी कोई बाधा नहीं होती वह अपने दिव्य कर्मों से शूद्र,वैश्य, क्षत्रिय आदि होता हुआ भी ब्राह्मण आदि से भी उन्नत अवस्था में अपने शरीर को योग साधना से ले जा सकता है।

और अधिक प्रबल साधना करें तो वह देवताओं के शरीरों का भी अतिक्रमण करके साक्षात ब्रह्म स्वरूप हो सकता है ।

इन सभी क्रियाओं के द्वारा इस शरीर का ही परिमार्जन होता है।

यदि यह शरीर कोयले के रूप में हमें मिला है कोई हमारा दायित्व है कि हम इसे हीरे की व्यवस्था तक लेकर जाएं ।

इस प्रक्रिया तमोगुण से रजोगुण में आने की और रजोगुण सतोगुण में आने की प्रक्रिया है ।इसके बाद हमें तीनों गुणों से पार हो जाना है ।

लगातार साधना से व्यक्ति के शरीर में अनेकानेक परिवर्तन होते हैं योगियों के चरित्र को जब हम पढ़ते हैं तो पता चलता है कि उन्होंने अपने शरीर को साधना से आमूलचूड़ परिवर्तित कर लिया।

जितना स्वच्छ साधक होता जाएगा उतना उसके शरीर में सत्वगुण बढ़ता जाएगा ,तो उसका शरीर हल्का होता जाएगा।

किन्ही योगियों का शरीर स्फटिक का हो गया है। किन्हीं किन्हीं योगियों के शरीर से दिव्य सुगंध उत्पन्न होती है।

शरीर इतना हल्का जाता है कि वह पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण से रहित हो जाता है।

 कुछ साधक साधना करते हुए अपने आसन से थोड़ा ऊपर उठ जाते हैं तो इसका स्पष्ट सा कारण होता है कि तमोगुण का आवरण जो शरीर को आच्छादित कर रहा है वह दूर हो जाता है और देह में हल्कापन आ जाता है।

इस दशा की चरम अवस्था में देह वजन से रहित हो जाता है ।क्योंकि लघुता आना ही सतोगुण का लक्षण है- #सत्वं लघु प्रकाशकम्।

प्राणायाम की कुंभक प्रक्रिया से भी किसी किसी का आसन से ऊपर उठना संभव हो जाता है।

 चारो दिशा में जो वायु का मंडल है उस वायु से जब शरीर की वायु हल्की हो जाती है तब देह स्वाभाविक रूप से वायुमंडल में उत्थित हो जाता है।

लेकिन योग से आकाश मार्ग से जाने की प्रक्रिया में और गहन साधना की आवश्यकता होती है।

 यह सिद्धि मणि मंत्र और औषधि के बल पर भी प्राप्त की जा सकती है।

यह जरूरी नहीं है कि आकाश से गमन करने वाले समस्त व्यक्ति आत्मज्ञान संपन्न हों।

वह मणि मंत्र और औषधि के बल से भी आकाश गमन कर सकते हैं ।

पातंजल योग के अनुसार आकाश गमन के लिए देह और आकाश के बीच में पारस्परिक संबंध में धारणा ध्यान समाधि आवश्यक है।

 जहां कहीं भी कोई देह रहती है तो वहां आकाश तत्व उसके विलास के लिए आवश्यक है।

 अतः देह में जो आकाश है उसका चिंतन करके अपनी इच्छा के अधीन करके भी व्यक्ति आकाश गमन कर सकता है।

 अत्यंत लघु मकड़ी के जाले के तार पर भी व्यक्ति उस अवस्था में बैठ सकता है ।

सूर्य की किरणों के माध्यम से भी वह लोकों में आ जा सकता है यह एक पूर्ण योगी का ही कार्य है।

लेकिन हम भी दुर्गुणों को त्यागकर ईमानदारी से प्रभुचिन्तन में लगें तो हम भी अपने शरीर को #ब्राह्मशरीर बना सकते हैं--

स्वाध्यायेन व्रतैहोमैस्त्रैविधेनेज्यया सुतैः । महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनु: ।।

  डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २३.१०.१८

६१.#धर्म क्या है? #नास्तिक कौन?

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्। साधूनामात्मन स्तुतिष्टिरेव च॥

सम्पूर्ण वेद और वेदों के जानने वालों (मनु आदि को) स्मृति-शील और आचार तथा धार्मिकों की मनस्तुष्टि, यह सभी धर्म के मूल (धर्म में प्रमाण) हैं।

यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः। स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

धर्म के सम्बन्ध में जो कुछ भी को मनु जी ने कहा है वह (पहले से ही) वेद में कहा हुआ है, क्योंकि वे सर्वज्ञ है।

सर्वं तु समवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा। श्रुति प्रामाण्यतो विद्वान्स्वधमर्मे निविशेत वै॥

दिव्य दृष्टि से इन सबको अच्छी तरह देखकर (सोच-विचार कर) वेद को प्रमाण मानते हुए विद्वान् अपने धर्म में निरत रहें।

श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन्हि मानवः। इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्॥

क्योंकि श्रुति (वेद), स्मृति (धर्म शास्त्र) में विहित धर्मादि को करने वाला मनुष्य इस लोक में कीर्ति को पाकर परलोक में सुख पाता है।

श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः। ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ॥

श्रुति को वेद और स्मृति को धर्म शास्त्र जानना चाहिये क्योंकि ये दोनों सभी विषयों में अतर्क्य हैं और इन्हीं दोनों से सभी धर्म प्रकट हुए हैं।

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः। स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः॥

जो द्विजातक शास्त्र द्वारा धर्म के मूल दोनों (वेद और स्मृति) का अपमान करता है उसे सज्जनों को तिरष्कृत करना चाहिये क्योंकि वह वेद निन्दक होने से नास्तिक है।

वेदः स्मृति: सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन:। एतच्चतुर्विधं प्राहु: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥

वेद:, स्मृति:, सदाचार और अपने-अपने आत्मा को प्रिय संतोष ये चार साक्षात् धर्म के लक्षण हैं।

अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते। धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति:।।

अर्थ और काम में आसक्त पुरुषों के लिये ही धर्म ज्ञान का उपदेश है। धर्म का ज्ञान प्राप्त करने वालों को वेद ही श्रेष्ठ प्रमाण है।

निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः।

तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिञ्ज्ञेयो नान्यस्य कस्यचित्॥

जिनको मंत्रों द्वारा गर्भाधान से श्मशान तक सब संस्कार की विधि कही गई है; उन्हीं लोगों को इस शास्त्र के अध्ययन का अधिकार है, अन्य किसी को नहीं।

६२ #विशेष प्रयोग

आज से ही शुरू करें।आज यदि न हो सके तो कल से करें।रात आठ बजे एक तिल के तेल का दीपक जलाएं उसे अपने हाथों से पकड़ कर सिर से ऊपर आकाश की ओर उठाकर #विष्णुदेव की प्रसन्नता के लिए प्रार्थना करें कि हे देव! आप प्रसन्न हों और मेरी मनोकामना पूरी करें। फिर दीपक को खुले आसमान में /छत या गमले के पास रख दें ।ऐसा पूरे कार्तिक मास करें।

इससे मनोकामना/व्यापार/स्वास्थ्य लाभ होगा।

यह आकाशदीप दान है। डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली २४.१०.१८

६३ ।।#दिव्य भारत।।

भारत भूमि वैदिक काल से ही दिव्य भूमि रही है भारत एक देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक संदेश हैं। पहले पूरे विश्व में वैदिक संस्कृति ही प्रगति पर थी क्योंकि वेद भगवान का श्वास भूत है । यह विशुद्ध ऑक्सीजन है और यह ऑक्सीजन जहां तक रही वहां तक के लोग भगवान की शरण में बढ़ते चले गए।और यह श्वास जहां तक फैला वहां तक वैदिक संस्कृति की दिव्य सुगन्ध फैलती चली गई ।

इस बात को सभी स्वस्थ मन से स्वीकार करते हैं कि वैदिक भाषा ही विश्व की प्राचीन भाषा थी और वैदिक धर्म ही विश्व का मूल धर्म है।

बाद के जितने भी धर्म हैं उन सब धर्मों में वैदिक धर्म का ही स्वरूप झलकता है।

किसी में 10% किसी में 20% किसी में 30%।

लेकिन यदि हमें 100% धर्म को जानना है तो वैदिक धर्म की ओर लौटना ही पड़ेगा।

दुनिया के समस्त धर्म स्वर्ग लोक तक ले जाते हैं ।लेकिन यह वैदिक धर्म ही है जो स्वर्ग लोक से आगे मह ,जन ,तप और सत्यलोक परम वैकुंठ तक व्यक्ति को ले जाता है ।

क्योंकि जब पांचो पांडव हिमालय की ओर बढ़े तो यह स्पष्ट हो गया कि स्वर्ग आदि उर्ध्व लोकों का स्थान भारत से ही होकर गुजरता है ।

विश्व के समस्त देशों में जितने भी धार्मिक संत रहे हो वह जब भारतीय धर्म के दया आदि गुणों को पूर्ण रूप से अपना लेते हैं तभी वह वैकुंठ लोक की ओर गमन करने के अधिकारी हो पाते हैं।

उनकी भी स्वल्प कामना स्वर्ग लोक तक जाने की ही रहती है।

यदि स्वर्ग लोक से ऊपर के लोकों में हमें मुक्त होकर परमात्मा की शरण में जाना है तो वैदिक धर्म की ओर आना ही पड़ेगा और कोई मार्ग है ही नहीं।

विश्व के समस्त धर्मों के सद्गुरु मृत्यु को प्राप्त करके भारतवर्ष में पुनः पैदा होते हैं और यहीं से परम मुक्ति का मार्ग प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

भारतीय संस्कृति, धर्म,और ज्ञान का पूरा संसार ऋणि है और रहेगा ।

भारत विश्व गुरु है तो किसकी बदौलत है ???

#दयानंद जी कल आए हैं। #ब्रह्मकुमारि के ब्रह्माजी कल उत्पन्न हुए हैं।

समस्त संप्रदाय कल की ही उपज हैं ।

लेकिन ध्यान दें वैदिक संस्कृति के कारण भारत का विश्व में प्रतिनिधित्व सदा सर्वदा आदिकाल से ही रहा है।

आदिकाल से ही मनु की संस्कृति ने विश्व का मार्गदर्शन किया है वे दिव्य ऋषि मुनि अपना जीवन मनुजी की व्यवस्था के अनुसार ही व्यतीत करते थे और उन्हें किसी प्रकार का कोई लोभ- लालच- ईर्ष्या- द्वेष -नहीं थे ।

वे सब दिव्यात्माएं रोग, दोष से दूर थे।तथा वेद के दम पर रोगी दुखियों का दुख दूर करने का भी सामर्थ्य रखते थे।

ऐसा तभी था जब वह विशुद्ध वैदिक धर्म के ऊपर टिके हुए थे।

ये संप्रदाय बाद में बने तो लोग वैदिक धर्म से दूर होते चले गए और इसी कारण अनेकों दुख , ऋण ,रोग ,शत्रु ,द्वेष आदि की उत्पत्ति होती चली गई।

क्योंकि भगवान के श्वास रूपी वैदिक ऑक्सीजन से यदि व्यक्ति दूर होगा तो उसका गला घुटता चला जाएगा ।वहीं आज हो रहा है।

इसलिए मनु जी ने कहा है कि इस देश के विद्वान ब्राह्मणों से विश्व के समस्त बुद्धिजीवी शिक्षा प्राप्त करें और अपनी आगामी मार्ग को प्रशस्त करें।और कोई रास्ता ही नहीं है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २५.१०.१८

६४. वानर

कहते हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति वानर से हुई है लेकिन हमारे धर्म ग्रंथ कहते हैं कि हम ऋषियों की संतान हैं। आज यह सत्य ही प्रतीत   हो रहा है। क्योंकि जो ऋषि मार्ग पर चल पड़े हैं वो ऋषियों की संतान है और जो अन्याय अत्याचार के मार्ग पर उछल कूद और तांडव मचा रहे हैं वह सब वानरों की ही संतति है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ३०.१०.१८

६५ #कार्तिकमास_तंत्र_और_स्वास्थ्य_का_ज्योतिषीय_विश्लेषण

कार्तिक मास ज्योतिषीय दृष्टिकोण से काफी संवेदनशील होता है क्योंकि इस महीने में सूर्य नीच राशि में रहता है। अतः जिनकी कुण्डली में सूर्य प्रभावित हो तो उन्हें सरकारी काम/पितृसुख/हड्डी एवं आत्मविश्वास से जुड़ी परेशानी हो सकती है।#इस पर भी कार्तिक मास का कृष्ण पक्ष और भी ज्यादा संवेदनशील होता है। जिनकी कुण्डली में चंद्रमा भी पाप पीड़ित हो तो व्यक्ती गहरी मुसीबत में पड़ सकता है।यह मुसीबत स्वास्थ्य/मातृसुख/मनोरोग से जुड़ी हो सकती है जो घातक भी हो सकती है।और अधिक सूक्ष्मता से अध्ययन करें तो अमावस्या को चंद्रमा सबसे ज्यादा कमजोर होता है।अत: अमावस्या को संवेदनशील जातक पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। अतः सूर्य व चंद्रमा कमजोर होने से दैवी सहायता बाधित रहती है और तामसिक ताकतों का प्रभाव अधिक होने से अमावस्या तंत्र के लिए महत्वपूर्ण होती है। इसीलिए इस दिन मारण प्रयोग सफल रहते हैं। जिनकी कुंडली में सूर्य, चंद्र कमजोर हों तो उन्हें ज्यादा दिक्कत रह सकती है।

#इसीलिए इस मास में रात को दीपदान का महत्व हमारे शास्त्र बताते हैं।और दीपावली से दो दिन पहले से लेकर दो दिन बाद तक #पांचों दिन दीपोत्सव व यमराज सहित विविध देवों की पूजा का विधान है।पांचों दिनों के मध्य दिन यानी अमावस्या को तो सैंकड़ों दीप अपने घर में जलाकर घर को ऊर्जावान् बनाने को कहा गया है।

#कार्तिक में जो बच्चे पैदा होते हैं उनका भी सूर्य कमजोर रहता है । उन्हें विविध परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसीलिए शास्त्र ने कार्तिक मास में पैदा होने वालों के लिए #कार्तिकप्रसूताशांति करवाने का विधान बताया है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ३१.१०.१८

६६ #साधकों_के_दिव्यलोक

साधक को फल स्वरूप दिव्य लोकों की प्राप्ति होती है।सकाम साधक ऐश्वर्य युक्त लोक में जाते हैं और निष्काम साधक योगियों के लोक में जाते हैं। वहां पर वे योगियों के निर्देशन में अपनी साधना पूर्ण करते हैं। इन लोकों में हजारों वर्ष की आयु वाले योगी रहते हैं। वहां काल का अल्प प्रभाव रहता है।आज भी साधक इन लोकों में जाते हैं पर ये सबके लिए सुलभ नहीं हैं। #ज्ञानगंज #सिद्धाश्रम जैसे इन आश्रमों के बारे में इंटरनेट पर भी पढ़ सकते हैं।मुचुकुंद की कन्या चंद्रभागा के पति शोभन ने एकादशी के व्रत में भूख से अपने प्राण त्याग दिए। मृत्यु के बाद व्रत के प्रभाव से वह एक दिव्य लोक का राजा बन गया।मुचुकुंद का पुरोहित सोमशर्मा भ्रमण करते हुए उधर गया तो आपस में पहचान गए।शोभन ने बताया कि व्रत के प्रभाव से मुझे यह अधिकार मिला है पर यह अस्थाई है।इसे स्थाई करने का यत्न करो। सोमशर्मा सब सुनकर वापिस आया और राजा मुचुकुंद की पुत्री को सब बताया। चंद्रभागा बड़ी खुश हुई और ब्राह्मण से कहा कि मुझे भी वहां ले चलो।सोमशर्मा चंद्रभागा को पति के पास पहुंचाने गया ,पर इस शरीर से वहां नहीं जा सकती थी। क्योंकि उसका शरीर दिव्य नहीं था।तब वामदेव ऋषि ने मंत्रों से उसे दीक्षित किया। उसके बाद वह सशरीर पति के पास गयी। वहां जाकर चंद्रभागा ने कहा कि मैं आठ साल की उम्र से यह व्रत कर रही हूं। इसके पुण्य से मेरे पतिदेव का यह अधिकार स्थाई हो जाए।तब वह स्थाई हुआ।

यह होता है #पतिव्रता की ताकत,#व्रत का फल,#दीक्षा की महत्ता और #योग की शक्ति ।

आज रमा एकादशी की शुभकामनाएं।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २.११.१८

६७ .#संध्याकाल_महत्त्व_एवं_सावधानी।।

संध्याकाल के समय में पशुपतिनाथ महादेव नृत्य करते हुए श्मशान से चिता भस्म उड़ाते नगर की परिक्रमा करते हैं। उनके परिकर भूत-प्रेत गलियों में भ्रमण करते हैं उनके आगे - आगे नगरलक्ष्मी भयभीत होकर दौड़ती हुई गृहस्थियों के घर में प्रवेश करती है ।उस समय महालक्ष्मी के प्रवेश के लिए घर का दरवाजा खुला रखें व दरवाजे पर स्वागतार्थ दीप जलाकर रखें। अत: संध्याकाल में बालक व स्त्रियां केशादि खोलकर घर से बाहर न निकलें। घर में रहकर प्रभु की दीप आरती करनी चाहिए ।इस समय घर का दरबाजा बन्द रहने से या कोई अन्य कार्य करने से महालक्ष्मी रुष्ट हो आगे की और प्रस्थान कर जाती है ।
संध्याकाल में सबकुछ छोड़कर परमात्मा का भजन करना चाहिए।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली ०४.११.१८

६८. गुरुपरम्परा

समारम्भां श्रीशंकराचार्य मध्यमाम्।

अस्मदाचार्यपर्यन्तां वंदे सद्गुरूपरम्पराम्।।

आज इस प्रकशोत्सव की पूर्व संध्या पर भगवान् भाष्यकार आद्यशंकराचार्य की प्रतिमूर्ति पूज्य सद्गुरुदेव स्वामी मृगेंद्र सरस्वती ,कांची कामकोटि पीठ, पुरी पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती एवं श्रीविद्योपासक कर्मयोगी आचार्य जयराम जी महाराज के चरण कमलों में सादर दंडवत प्रणाम करता हूं।और फेसबुक पर ज्ञाताज्ञात वरिष्ठ संत,विप्रवृंद को प्रणाम करता हूं। सभी अपना शुभाशीर्वाद प्रदान करें। सभी कनिष्ठ तत्त्वजिज्ञासुओं और शिष्य मंडली को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

आज से अंतरात्मा की इच्छा शक्ति से प्रेरित होकर #सनातनधर्म_के_तत्त्व_एवं_आत्मसाक्षात्कार विषय पर लेखन प्रारंभ कर रहा हूं। मैं देख रहा हूं कि सनातनी हिन्दू....

१. कर्म करते हुए भी असफल हैं।

२. लोक परलोक हैं या नहीं शंकाग्रस्त हैं।

३. भगवान् कैसे मिलेगा? या आत्मज्ञान कैसे हो ?

४. कर्मकांड/पूजा/ज्यौतिष से भी पूर्ण फल क्यों नहीं मिलता।

५.क्या अन्यधर्म अपनाने से सद्गति हो जाएगी?

६.क्या करें जिससे कल्याण हो?

इत्यादि अनेक प्रश्नों से घिरे हुए हैं।

यद्यपि शास्त्र कहते हैं कि " #नायमात्मा प्रवचननेन लभ्य:"

कि यह आत्मज्ञान प्रवचनों से प्राप्त नहीं होता तथापि पूर्वाचार्यों ने शास्त्रों में प्रवचन करके आत्मज्ञान का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके उपदेश आत्मज्ञान के दरवाज़े पर पहुंचा देते हैं।पर दरवाजे की दहलीज लांघकर अंदर कदम आपने ही रखना पड़ेगा।

#और एक विशेष बात ,जो इस मार्ग पर जितना चलेगा उसकी आध्यात्मिक उन्नति उतनी ही बढ़ती जाएगी।जो पूर्ण मार्ग पार कर लेगा उसको आत्मसाक्षात्कार हो ही जाएगा।

इस ज्ञान को आप सद्ग्रंथों से भी प्राप्त कर सकते हैं।पर ग्रंथ अनन्त है।उनको विषयानुसार समायोजित करके समझना भी बड़ा मुश्किल है।

सदगुरु का यही फायदा स्पष्ट है कि वह चिरसंरक्षित ज्ञान शिष्य को सहज ही दे देते हैं।

जैसे एक ग्रंथ पढ़ते ही उसके लेखक की विचारधारा/मानसिक स्तर समझ में आ जाता है वैसे ही व्यक्ति के विचारों को पढ़ सुनकर उसके अनुभव का पता लग ही जाता है। लेकिन इतने में ही सन्तुष्ट मत हो जाना।यह खतरनाक हो सकता है। क्योंकि आजकल वाकपटु #ठग बहुत हैं।फिर उसके विचारों को उसके पास रहकर परख लें कि उसका व्यवहार भी उसके विचारों से मेल खाता है या नहीं।

कथनी व करनी में एकरूपता मिले तो ही ठीक समझें।

बाकि हमारे-आपके हाथ में भी कुछ नहीं है क्योंकि-- #व्यतिषजति_पदार्थान्तर_कोऽपि_हेतुः जिसकी जो गति होनी होती है वह वहीं जाता है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०६.११.१८

६९.।।सनातनधर्म तत्त्व ।।

।।१।।

विश्व रचना में शिवशक्ति ही कार्यरत है। इसी शृंखला में प्रत्येक ब्रह्मांड में त्रिदेवों का खेल ही प्रमुख है। हमारे ब्रह्मांड में सृष्टि रचना में वैदिक भाषा ही सर्वप्रथम भाषा थी । वेदानुकूल आचरण करने वाले ऋषि थे और वेद प्रतिकूल आचरण करने वाले राक्षस थे। दैवी शक्ति और आसुरी शक्ति सृष्टि के आरम्भ से ही है।आज भी दोनों के प्रतिनिधि सब लोकों में विराजमान हैं। अधिक पापियों के लिए नरक व अधिक पुण्यशालियों के लिए स्वर्गादि अनेक लोक हैं।सुख दु:ख से तटस्थ भजनान्दियों के लिए तपादि लोक हैं।और ब्रह्मैक्य प्राप्त योगी ब्रह्मस्वरूप हैं ही।

इनमें कीट पतंग वृक्षादि सब भोग योनियां हैं। मनुष्य योनि कर्म व भोग दोनों होने से उभयात्मक है।देवयोनियां भोगात्मक हैं।

पाप/पुण्यार्जन की केवल मानव योनि ही है।इस योनि में भारत से बाहर कलियुग में आचार विचार मलिन होने से सब #म्लेच्छ कहे गये हैं। क्योंकि बाहर के देशों में माता/पिता/पत्नी आदि का कोई शिष्टाचार न होने से स्वार्थ से भरे लोग हैं।

और उनमें शारीरिक शुद्धता भी नहीं है। मलत्याग करके टिशू पेपर से ही काम चला लेते हैं।

अन्न का मल #शराब है वे उसका सेवन करते हैं।

हाथियों के मल से कोफी तैयार होती है उसे पीते है।और पैसे को रिश्तों से ज्यादा अहमियत देते हैं।यही मलेच्छों की निशानी है।#मलमिच्छन्ति_इति_म्लेच्छा:

जो मल चाहते हैं वे म्लेच्छ।

इसीलिए भारत एक देवभाषी श्रेष्ठ देश है।और यहां जीवन जीने वालों में आध्यात्मिक ऊर्जा सर्वाधिक होती है। इसलिए ऋषियों ने बाहर के देशों की यात्रा का आध्यात्मिक उन्नति चाहने वालों के लिए निषेध किया है। ..... क्रमशः......

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली। ०७.११.१८

#सनातनधर्म_तत्त्व

** ।।२।।**

विदेशी शारीरिक मानसिक शुद्धता का ध्यान नहीं रखते इसीलिए म्लेच्छ कहे गये हैं।अथवा जो इन जैसे हैं वे भी म्लेच्छ ही हैं।

परमात्मा एक ही है ।सब उसकी संतान हैं। उसके उपदेश अनुसार जो आचरण करते हैं वे पार हो जाते हैं।पार वही हो सकते हैं जो वैदिक धर्म का पालन करते हैं।

पार का अर्थ है दु:ख से,जीवत्व से पार होकर आत्म साक्षात्कार करना।

चाहे किसी भी धर्म को मानने वाले लोग हों।वे यदि वैदिक धर्म में अपने जीवन को जिएंगे तभी इस चक्कर से निकल सकते हैं।

वेद सूर्य है । अतः उसे समझना सभी के बस का नहीं है। क्योंकि सूर्य से आंख मिलाना आसान नहीं है। इसीलिए वेद के व्याख्यानभूत मनुस्मृति में धर्म का जो लक्षण है वह सार्वभौमिक है। क्योंकि मनु हमारे सबके पिता हैं। उनके #नियमों का पालन किए बिना क्या मजाल कोई इस आवागमन से निकल सके। बिल्कुल असंभव??

और उन्होंने जो कहा उसको मानकर चाहे राक्षस भी हों वे भी सरलता से पार हो सकते हैं।उनका धर्म का लक्षण सबसे पहला, सबसे मौलिक व परवर्ती सब धर्म लक्षणों का आधार है।बाकि धर्म के लक्षण एकांगी हैं श्री मनु जी का लक्षण सर्वांगीण है जो सब रिएक्शनों की काट है।

इस लक्षण का पालन करते हुए,इस पर चलते हुए #प्रह्लाद,#बलि, #विभीषण जैसे राक्षस भी पार हो गए,हमारा पार होना तो बांएं हाथ का खेल है।

तो आइये देशी हों या विदेशी,आस्तिक हों या नास्तिक ,क्यों न इस पर चलें और पार हो जाएं।

७२.

मनु का अमृत #सूत्र---

मनु ने मानव धर्म के दस लक्षण बताये हैं:

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो,

दशकं धर्मलक्षणम् ॥

धृति (धैर्य), क्षमा (दूसरों के द्वारा किये गये अपराध को माफ कर देना, क्षमाशील होना), दम (अपनी वासनाओं पर नियन्त्रण करना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (अन्तरंग और बाह्य शुचिता), इन्द्रिय निग्रहः (इन्द्रियों को वश मे रखना), धी (बुद्धिमत्ता का प्रयोग), विद्या (अधिक से अधिक ज्ञान की पिपासा), सत्य (मन वचन कर्म से सत्य का पालन) और अक्रोध (क्रोध न करना) ; ये दस मानव धर्म के लक्षण हैं।

#ध्यान दें , इन्ही लक्षणों पर चलकर ही अन्य मुस्लिम,सिख, ईसाई संत भी पार हो जाते हैं ।इसके अलावा और कोई रास्ता ही नहीं है।

इसलिए वैदिक धर्म सार्वमौलिक और सार्वभौमिक है।... क्रमशः....

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली ०८.११.१८

।।#सनातनधर्म_तत्त्व।।

।।३।।

यह स्पष्ट हो गया है कि चाहे किसी भी देश,जाति व धर्म में पैदा हुआ मनुष्य/राक्षस या कोई भी योनिस्थ जीव हो ,यदि वह मनुजी के धर्म के लक्षणों को अपना लेता है तो उसको अपने इष्ट देव का दर्शन अवश्य हो जाता है और उसकी ऊपर के दिव्य लोकों में गति निश्चित ही हो जाती है। लेकिन ध्यान दें #इतना होने पर भी जब तक वह #सद्गुरु से दीक्षित नहीं होता तब तक #आत्मसाक्षात्कार अथवा परमपुरुषार्थ नहीं होता और वह जीव द्वैत में ही स्थित रहता है। चाहे वैकुण्ठलोक में भी गमन क्यों न हो जाए फिर भी #ऋते_ज्ञानान्न_मुक्ति: ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती ।और वह ज्ञान चारों और दिख रहे #तथाकथित धर्मगुरुओं के बस से बाहर ही है।ये बाहरी ढ़ोगी गुरु तो तुम्हारे धन/स्त्री पर हाथ साफ कर जाएंगे।

जानना ही है तो उस सद्गुरू की पहचान गीताजी में स्थितप्रज्ञ के रूप में बताई है पढ़ लेना । संक्षेप में कहें तो वह सद्गुरू

वैदिक विद्वान्, आचारवान्,लोभ रहित , कामनाओं से रहित होगा।उसकी कथनी करनी में अंतर नहीं होगा।बाह्याडम्बरों से वह कोसों दूर व स्पष्टवादी होगा।

यदि कोई व्यक्ति किसी देवता का प्रबल भक्त हो,देवता भी उसे प्रत्यक्ष हो तब भी वह तब तक मुक्त नही है जब तक सद्गुरू से दीक्षित नहीं होता।

श्री सिद्धमाता अपने बचपन की घटना बताती हैं कि उनका कोई सम्बंधि व्यक्ति महाकाली जी का भक्त था ।जब उसका अंतिम समय आया तब वह चारपाई पर बेचैन था और एक काली औरत चारपाई के चारों और चिंतित सी होकर चक्कर लगा रही थी और कह रही थी।(सम्भवत: वह उनकी इष्टदेव थी) #मैं_भी_विवश_हूं ,#मैं_कुछ_कर_नहीं_सकती।

अर्थात् बिना वैदिकीय विद्वान् की शरण लाए कितना ही तंत्र/मंत्र में भटकों परममोक्ष असम्भव है।

.... क्रमशः.........

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०९.११.१८

#सनातन_धर्म_तत्त्व।।

।।४।।

सनातन वैदिक धर्म का कर्म/यज्ञ/उपासना का विवेचन वेद के व्याख्यानभूत ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों में विशद विवेचन हुआ है। वेद के अर्थ तक तो पहुंच तत्समकक्ष ऋषियों की ही है।लेकिन ब्राह्मण,आरण्यक और उपनिषदों का अर्थ समझने के लिए भी उच्च आध्यात्मिक साधना सम्पन्न व्यक्ति ही सक्षम है ऐरा,गैरा नहीं। इसमें परम्परागत तपस्वी ही समर्थ हैं जो दो चार प्रतिशत ही है।

#अब समस्या यह है कि आम आदमी का काम सरल तरीके से कैसे बने?

वेद विनियोग की कठिनता को समझते हुए श्री वेदव्यास जी ने वेदों का विभाग किया और महाभारत व पुराणों की रचना की।

इनमें वेद का ही प्रयोग/शिक्षा/ एवं गुप्तामृत आम लोगों के लिए अनावृत कर दिया है ताकि कलियुग के अल्प बुद्धि वाले भी भवसागर से पार हो सकें।

#क्योकिं पुराण, महाभारत, रामायण रचना ही कलियुगी जीवों के उद्धार के लिए होती है।क्योंकि वैदिक साहित्य में तो इनकी गति नहीं है।और पुराणादि न हों तो ये जीव अंधकार में भटकते।

इसी करुणा के वशीभूत होकर भगवान वेदव्यास जी ने यह कृपा की है।

#पुराणादि में धर्म का मर्म विधि और निषेध रीति से बताया है। जैसे धर्म पर जो राजादि रहे उनको कैसे सुख मिला,यह विधि है।और जो पापी थे उनकी कैसी दुर्गति हुई,ऐसा मत करना ,यह निषेध है।

शुद्ध घी(वेद) से आजकल के मानव का पाचन खराब हो गया, इनमें सहन करने की ताकत नहीं रही तभी पुराण रूपी दूध को ही पीना ही श्रेयस्कर है।

#सूर्य से आंख मिलाने का सामर्थ्य जब खत्म हो चुका तब चंद्र रूपी चादनी हितकर लगी।

पुराणों में ही चंद्र तिथियों पर आधारित अनेक दिव्य व्रत, दिव्य मंत्र,स्तोत्र हैं जो जनमानस से लेकर विरक्त संन्यासियों तक के मन को हर्षित करते हैं।

#ध्यान दें यदि पुराणों के कार्यकलापों को समाज से निकाल दें तो आम आदमी के लिए करने को ही कुछ नहीं बचता।

#मूर्ख हैं वे जो कहते हैं पुराण छोड़ो और वेदों की और देखो।उनकी स्थिति वैसी ही जो गंगा जी को वापिस गंगोत्री में ही लौटाना चाहते हैं। यह तो सतत प्रवाह है जो सत्ययुग से इस युग तक बहता ही है।

वे बताएं कि सूर्य के प्रकाश से चन्द्र प्रकाशित हो गया तो क्या चंद्र महत्वहीन हो गया?

उनके पिछलगुओं को वेद कुछ पल्ले पड़ना नहीं और पुराण का परहेज कर बैठे ,ये वही दो गुण उनमें हो गये कि खुद की बुद्धि नहीं दूसरों की मानें नहीं।

#वेद के बारे में स्पष्ट निर्देश है कि ---

इतिहासपुराणाभ्यां

वेदं समुपबृंहयेत्।

बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो

मामऽयं प्रहरिष्यति।।

अर्थात् विशेषतः इस युग में पुराणादि के द्वारा वेदों का अनुपालन करें।

जो महाभारत, पुराण नहीं जानता उससे तो वेद भी डरता है कि मूर्ख गलत बहकाएगा लोगों को।

अतः सचेत रहें व धर्म को सही समझना है तो पुराण/महाभारत/रामायण भी अवश्य पढ़ते रहें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १०.११.१८

#सनातन_धर्म_तत्त्व।।

।।५।।

सनातन धर्म का आधार वेद है।वेद मूलतः एक ही है।कल्पादि से ऋषियों द्वारा वैदिक मंत्रों का दर्शन समाधिष्ठ होकर किया जाता है। कलियुग में वेद की

अनेक शाखाएं लुप्त हो गई है ।यह लोगों के अनैतिक होने के कारण हुआ है। क्योंकि कलियुग में अधिकांश आत्माएं नरकादि से भोग निपटाकर यहां आती हैं और वैसे ही हीन कर्म अपनी प्रवृत्ति के अनुसार करती हैं। बौद्धिक क्षमता कम होने से वेदव्यास जी वेद का चार संहिताओं में विभाजन कर देते हैं।

त्रिवर्णों को यज्ञोपवीत संस्कार के बाद वेदाध्ययन का अधिकार है। वैदिक मंत्रों में विशेष ताकत छिपी हुई है।और वैदिक मंत्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये परलोक और इहलोक दोनों में जीव के सहायक बनते हैं तथा निष्काम भाव से उपासना करने पर आत्मसाक्षात्कार का माध्यम भी बनते हैं।

८०% मंत्र कर्मपरक,१६% उपासना परक तथा ४% ज्ञानपरक हैं।

वेद का नियमपूर्वक स्वाध्याय व्यक्ति को स्वर्ण के समान देदीप्यमान बना देता है।

#वैदिक मंत्रों का सस्वर उच्चारण ही अपने आप में सर्वांगीण है।इसके अर्थ के वाद-विवाद में नहीं पड़ना चाहिए।क्योंकि वेद के अनन्त अर्थ है। इन तक पहुंचना सबके बस की बात नहीं। शुद्ध

उच्चारण ही अपने आप में परिपूर्ण है, उसी का अभ्यास करें।#क्योंकि #इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व में उच्चारण दोष से ही अनर्थ की प्राप्ति हुई थी।

#अर्थविचार से कहीं अनर्थ हुआ हो ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है।और वैदिक मंत्र आयुर्वैदिक ईलाज के समान कारगर हैं।अन्य तांत्रिक मंत्र #ऐलोपैथी की तरह हैं जिनका साईड इफेक्ट कर्ता व लाभार्थी दोनों को भुगतना पड़ता है।

अभी काशी में लगभग अस्सी वर्ष पहले ही एक वैदिक विद्वान हुए । उनके मित्रों ने जंगल से गुजरते हुए उनसे कहा कि तांत्रिक मंत्र तुरंत चमत्कारी हैं, वैदिक मंत्र उतने चमत्कारी नहीं।उस विद्वान ने कहा कि वेद सर्वोपरि है। मित्रों के आग्रह पर उन्होंने एक कौतुक दिखाया। मित्रों ने जंगल में एक सर्प देखा और बोले कि इसका बंधन करो।उस वेदविद् ने वैदिक मंत्रों को पढ़ कर उस सांप के चारों ओर एक रेखा खींची। सांप रेखा से बाहर नहीं निकल पाया।

वे सब चार दिन बाद उसी रास्ते से जब लौट रहे थे तब उसी स्थान पर उन्होंने देखा कि वह सांप अब भी उसी रेखा के भीतर घूम रहा था।मित्रों के कहने पर पुनः वेदमन्त्र से उस घेरे को तोड़ा तब वह सांप बाहर निकल सका।

ऐसे होते हैं वैदिक मंत्रों के चमत्कार।

#सनातन_धर्म_तत्त्व।।

।।६।।

वेद के मंत्रों का सही उच्चारण ही कल्याणकारी है। वैदिक मंत्रों का प्रयोग कहां किया जाए?

धन, संतान, रोगनिवारण,षटकर्म, देवदर्शन ,आत्मज्ञानादि विविध विषयों की प्राप्ति हेतु वेदमन्त्रों का प्रयोग व विधियां ब्राह्मणग्रंथों,सूत्रों, स्मृतियों वह पुराणों में दी गयी हैं।

#दयानंदानुयायी केवल संहिताओं को मान्यता देते हैं। उनसे कोई पूछे कि वेद मंत्रों की उपयोगिता व प्रयोगविधि बताएं तो वे बगलें झांकने लगेंगे।

अत: वेदों के मंत्रों के मनोनुकूल प्रयोग के लिए ब्राह्मणादि परवर्ती साहित्य का अध्ययन अत्यावश्यक है।(मंत्रों के विविध प्रयोग व लौकिक समस्याओं के लिए अनुभूत प्रयोग विषय पर अलग से एक ग्रंथ लिखेंगे)

याज्ञिक विवेचन चाहिए तो #ब्राह्मणग्रंथ,

तप और ज्ञान चाहिए तो आरण्यक व उपनिषदों का स्वाध्याय करें।इसके लिए सभी ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य एवं रथकारादि शूद्र समय से यज्ञोपवीत करवाएं।अन्यथा महान् ज्ञान से वंचित रह जाएंगे।

#और विशेष --

ऋग्वेद की २१ शाखा, यजुर्वेद की १०१ शाखा, सामवेद की १००० शाखा और अथर्ववेद की ९ शाखा- इस प्रकार कुल १,१३१ शाखाएँ हैं। इस संख्या का उल्लेख महर्षि पतंजलि ने अपने महाभाष्य में भी किया है। उपर्युक्त १,१३१ शाखाओं में से वर्तमान में केवल १२ शाखाएँ ही मूल ग्रन्थों में उपलब्ध है:-

ऋग्वेद की २१ शाखाओं में से केवल २ शाखाओं के ही ग्रन्थ प्राप्त हैं- शाकल-शाखा और शांखायन शाखा।

यजुर्वेद में कृष्णयजुर्वेद की ८६ शाखाओं में से केवल ४ शाखाओं के ग्रन्थ ही प्राप्त है- तैत्तिरीय-शाखा, मैत्रायणीय शाखा, कठ-शाखा और कपिष्ठल-शाखा

शुक्लयजुर्वेद की १५ शाखाओं में से केवल २ शाखाओं के ग्रन्थ ही प्राप्त है- माध्यन्दिनीय-शाखा और काण्व-शाखा।

सामवेद की १,००० शाखाओं में से केवल २ शाखाओं के ही ग्रन्थ प्राप्त है- कौथुम-शाखा और जैमिनीय-शाखा।

अथर्ववेद की ९ शाखाओं में से केवल २ शाखाओं के ही ग्रन्थ प्राप्त हैं- शौनक-शाखा और पैप्पलाद-शाखा। .. क्रमश:......

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली

#आत्मज्ञान

प्रकृति और पुरुष यह द्वैत परमात्मा के अद्वैत का ही स्वरूप है।इसे ही अर्द्धनारीश्वर कहा गया है। यह शक्ति शिव में ही समाहित है ।इसी का नाम अद्वैत है।यहां जो कुछ भी सृष्टिमय है वह परमात्मा ही है।इसे ही #एकमेवाद्वितीयम् कहा गया है।

यह प्रकृति अपने जाल से जीव को इतनी आसानी से निकलने नहीं देती। भगवान् कहते हैं #मम माया दुरत्यया।

मेरी माया का पार पाना असम्भव है जब तक मैं न चाहूं--जानहि तेहीं जिन देहीं जनाई।

यमादि पांच बहिरंग साधन हैं और धारणा ध्यान समाधि अंतरंग साधन। इन अंतरंग साधनों को ही योगदर्शन में संयम कहा गया है।बिना संयम आत्मज्ञान असम्भव है। इंद्रियां,मन, बुद्धि त्रिगुणात्मक है और यह पूरी सृष्टि भी त्रिगुणात्मक ही है। यही कारण है कि जीव इस सृष्टि की और ही आकर्षित हो जाता है।वह अंतरंग आत्मा की ओर जा ही नहीं पाता।मुक्ति के लिए कहीं जाना नहीं पड़ता।जीव यहीं रहते-रहते जब प्रकृति के मोह से मुक्त हो जाता है उसे ही मुक्ति कहा है।स्वर्गादि से लेकर वैकुण्ठादि लोक में भी द्वैत ही है।सालोक्य,सामीप्यादि मुक्ति भी द्वैतवाद ही है।

परम मुक्ति में कहीं जाना नहीं होता। कहां जाओगे?

सब ही तो परमात्मा है , उसके सिवा और कुछ भी नहीं है।तुम वही हो बस हनुमान जी की तरह अपने को भूल गए हो। अपने परमानन्द स्वरूप को पहचानने के बाद तुम सर्वदा के लिए मुक्त हो जाते हो। फिर कहां आना और कहां जाना?

बस अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाना ही मुक्ति है-#स्वस्वरूपेऽवस्थानात्।

जब इस स्थिति में आओगे तब समष्टि से जुड़ जाओगे।तब पूर्ण निरुपाधिक परमात्मा के रूप में स्वयं को स्थापित पाओगे।

स्वयं को समष्टि से जोड़कर साधक सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमय हो जाता है।#यत्पिण्डे तद्ब्रह्माण्डे यह तभी सार्थक हो पाता है।

तब समष्टिमय साधक यदि अपनी श्वास बंद कर लें तो समस्त ब्रह्माण्ड की सांस घुटने लगती है(जैसा ध्रुव ने किया था)।

तब जहां से चाहें वहां से अपने आत्मभूत परमात्मा को प्रकट कर सकता है (जैसे प्रह्लाद ने किया था)

तब साधक सब लोकों को निज में वह निज को लोकों के रूप में देखता है (जैसे मां आनन्दमयी ने किया था)

तब साधक सब जगह उपस्थित रहता है जैसे अनेक योगी रहते हैं।तब साधक शरीर रहने तक जीवन-मुक्त रहता है। उसके कर्मों में दिव्यता आ जाती है।कर्मों में दिव्यता के तीन लक्षण हैं--१.फल की इच्छा न होना।

२. कर्म की भी इच्छा न होना

३. कर्त्तृत्व का अभिमान न होना

कर्म की इच्छा न होने का अर्थ है --आत्मज्ञ स्वयं के लिए कुछ नहीं करता।वह प्रतिकर्म मात्र करता है। जैसे कोई दु:खी उसके पास आया तो करुणावश कृपा कर देता है।यह प्रतिकर्म ही है कर्म नहीं ।

पूरी प्रकृति को सुधारने का ठेका नहीं लेता ।स्वभाववश जो होना है उसे होने देता है।

यह अद्वैतवाद है। इसमें कोई बड़ा, छोटा,ब्राह्मणादि,संन्यासी आदि शैव-शाक्तादि नहीं है।

अत: इस अद्वैतवाद को धारण करो।इसका ही अभ्यास करो और विषयों के प्रति वैराग्य धारण करो।

फिर किससे द्वेष? किससे धोखा ?

सब एक परमात्मवस्तु ही तो है।#नेह नानास्ति किंचन्।

यही समस्त उपासना/साधना का सार है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली। १८.११.१८

।। #सनातनधर्म_तत्त्व ।।

।।७।।

चारों वेदों का प्रचार प्रसार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में था।भारत के अस्सी प्रतिशत जनमानस का सम्बंध यजुर्वेद से था ।उत्तरी भारत के समस्त लोगों का वेद यजुर्वेद ही है। अपने वेद का पता सबको होना चाहिए ।इसका सरल सा उपाय है कि अपने कुल गोत्र का मूल खोजें कि हमारे पूर्वज किस स्थान के मूल निवासी हैं। तथा अपने कुल में पैदा हुए विद्वान पूर्वज के ग्रंथ यदि उपलब्ध है तो उनका अध्ययन करें।अपने कुल के संस्कार जिस तीर्थ पर सम्पन्न होते हैं उस तीर्थ के पुरोहित से रिकार्ड संग्रह करें।पूर्ण प्रयास करें अपने गोत्र प्रवर शाखा खोजने की।क्षत्रियादि अपने कुल के पुरोहित की शाखा से ही बंधे होते हैं ।जब तक कर्म में अधिकार है तब तक अपनी वैदिक शाखानुसार ही कर्म सम्पन्न करें।

सभी त्रिवर्णिक अपने बच्चों का तत्तद् शाखानुसार यज्ञोपवीत संस्कार समय पर ही करवाएंऔर उन्हें वैदिक कर्मों की शिक्षा अवश्य दिलाएं।#ध्यान दें --अपने बच्चों को चाहे शिक्षा किसी भी विषय की दिलाएं पर उनको अपने वेद ,गोत्रादि के महत्व को जानने एवं आचरित करने के लिए ब्राह्मणादि अपनी निश्चित उम्र के बीच ही किसी विद्वान से संपर्क करें।अच्छा तो यह है कि दस वर्ष का बालक होते ही सभी उसे अपने धर्म के विद्वान से परामर्श करके धर्म ,आचार, नित्य पूजा में प्रवृत्त करें ।बालक तीव्रबुद्धि है तो पहले भी यह किया जा सकता है।धर्म आचार विचार तथा पौराणिक कर्म में सभी वर्णों के बालकों को लगाएं।

जब तक जनेऊ संस्कार न हो तब भी लगाकर रखें। इससे बालक उद्दंड नहीं होंगे वे आजीवन धर्म के महत्व को समझकर मां-बाप वह गुरुजनों के सेवक बन जायेंगे।

#और ध्यान दें-- बालकों को अपने धर्म से दूर रखकर कितनी ही ऊंची शिक्षा दिलवा दो या तो वे भ्रष्ट होकर जेल जाएंगे या अंत में वे आपको वृद्धावस्था में वृद्धाश्रम में छोड़ने में कसर नहीं छोड़ेंगे ,या आपके साथ घर में ही कैदी जैसा व्यवहार करेंगे।

अत: छोटी उम्र से ही लड़के लड़कियों को अपने घर में सुबह शाम की पूजा में शामिल अवश्य करें।रोज उन्हें रामायण की चौपाई अर्थ सहित समझाएं।व धर्म से जोड़ें। टीवी मोबाइल से दूर रखें।छह वर्ष से पच्चीस वर्ष तक ऐसा प्रबन्ध व प्रयत्न करें कि बालक में धर्म संस्कृति आचार विचार, संध्या पूजन में लगाव हो।इस दौरान उसे अच्छे संस्कारित परिवारों की यात्राएं कराएं। उसमें उच्च आदर्श स्थापित करना ही मां बाप का सबसे जरूरी दायित्व है।

#अत: सभी यह पोस्ट पढ़ते ही अभी विचारें कि---

१. क्या मेरे बालक जो भी छह साल से बड़े हैं वे नित्यपूजा/वैदिक शिक्षा/पौराणिक शिक्षा में लग गए हैं?

२. मेरे/भाई/बहन/नजदीकी के बालकों का समय पर यज्ञोपवीत संस्कार हुआ है?नहीं तो आप सचेत होकर सहयोग करें।

३. क्या मेरे/भाई/बहन/नजदीकी के घर पर रोज सुबह शाम दीप/आरती/हनुमान चालीसा होती है? नहीं तो उसे प्रवृत्त करें।

४.क्या मेरे नजदीकी/मित्रों/शादीसुदा बहनों के घर पर उनके मां-बाप का आदर है। वहां जाएं उनके मां-बाप से मिलें।दुर्व्यवहार की आंशका है तो कई साथी मिलकर उनके घर का दौरा (विजिट) करें तथा उनको समझाएं।

४. नजदीकी मंदिर धर्मशाला में साप्ताहिक/पाक्षिक धर्मकथा/उपदेश/उत्सव/कीर्तन का प्रवर्तन करें/कराएं।

।।#सनातनधर्म_तत्त्व।।

।। ८ ।।

सनातन धर्म का मूल आधार है वेद और जिन्होंने अपनी वेद की मूल शाखा का पता है वे अपना यज्ञोपवीत संस्कार करवा कर वेद अध्ययन में प्रवृत्त हों ।

जिन्हें अपने मूल शाखा का नहीं पता है वे पता करें अथवा आपात् स्थिति में उनके लिए शुक्ल यजुर्वेद का प्रावधान है।व शुक्ल यजुर्वेद के अनुसार ही यज्ञोपवीत करवाकर वेदाध्ययन में प्रवृत्त हों ।

और जिन का यज्ञोपवीत भी नहीं हुआ है उन लोगों को भी वैदिक मंत्रों के जप से विशेष फल मिलता है पर उनको वेदपाठ उच्चारण और दूसरों को पढ़ाने का अधिकार नहीं है।

किंतु वेद के उन मंत्रों के जप का अधिकार उनको अवश्य प्राप्त है विशेष रूप से जो मंत्र #पुराणों में उल्लिखित हैं।

वह वैदिक होते हुए भी पुराणोक्त होने के कारण सबके लिए जपादि में प्रयुक्त हो सकते हैं। क्योंकि उनका वेदों की ओर लगाव यही दर्शाता है कि उन्होंने अवश्य ही पूर्वजन्म में वेदाध्ययन किया है। वेदान्त में अधिकार के विषय में भी ऋषियों ने पूर्वजन्म कृत वेदाध्ययन को अधिकारी के रूप में स्वीकृत किया है।

#यथोक्तं--

येनाधीतं वेदवेदांगमिह जन्मनि जन्मान्तरे वा सैवाधिकारी।

अतः #प्रत्येक व्यक्ति प्रात:/सांय अधिकारी है तो गायत्री मंत्र से अथवा #इष्टमंत्र से प्राणायाम सूर्य को जल एवं गायत्री मंत्र/इष्टदेव के मंत्र का कम से कम एक सौ आठ बार जप अवश्य करे।

यह अत्यावश्यक कार्य यदि गृहस्थी नियमित रूप से करता रहे तो उसका भाग्य भी खुल जाता है और उसके दैनिक कार्यों में कोई रुकावट नहीं होती ।

उसे संतान सुख पूर्ण रूप से प्राप्त होता है और घर में शांति का वातावरण स्थापित हो जाता है अतः प्रत्येक व्यक्ति को उपरोक्त संध्या विधि पालन करना अनिवार्य है यदि वह सुख चाहता है तो।

प्रत्येक श्रद्धावान् अधिकारी पुरुष वेदों का स्वाध्याय अवश्य करे। विशेष अध्ययन के लिए वेदों के व्याख्या ग्रंथ "ब्राह्मणग्रंथों" का अध्ययन करें ।

यदि ज्ञान चाहिए तो उपनिषदों का विभिन्न भाष्यों समेत स्वाध्याय करें लेकिन #ध्यान रहे वैदिक यज्ञ अनुष्ठान विशुद्ध ब्राह्मण से ही करवाएं।

विशुद्ध ब्राह्मण के द्वारा ही अन्य क्षत्रियादि लोग अपने यज्ञ आदि संपन्न करें ।

पूर्व काल से यही परंपरा रही है। अतः वैदिक कार्यों हेतु एवं गृहस्थ के संस्कारों हेतु अपना कुलगुरु अवश्य निश्चित करें तथा इह लोक और परलोक में स्थाई सुख का आधार स्थापित करें।

दान वैदिक विधि से किया जाए तो ब्राह्मण को ही दें ।

अन्य को दान सहयोग की भावना से दे सकते हैं उसमें किसी प्रकार की मनाही नहीं है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ३०.११.१८

।।#सनातन_धर्म_तत्त्व।।

।।९।।

समस्त धर्मों की मूल जड़ वैदिक संहिताएं ही हैं। सृष्टि आरंभ से ही वैदिक आचार संहिता लागू है।जो वेदानुकूल आचरण करते हैं वे देव हैं जो प्रतिकूल आचरण करने लगे वे राक्षस कहलाए।परन्तु जिसने भी किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की ठानी उसने बिना ईश्वर कोटि के देवों की सहायता के सफलता नहीं मिली।

वैदिक व्यवस्था के अनुसार पांच देव ईश्वर कोटि में परिणित हैं जिनका मूल एकमात्र परब्रह्म ही है। पांच देवों से पांच सम्प्रदाय विश्व में चले -#शिव से शैव,

#शक्ति से शाक्त,

#गणपति से गाणपत,

#सूर्य से सौर,

#विष्णु से वैष्णव सम्प्रदाय प्रचलित हुआ।

शिव की शिवरात्रि,प्रदोषव्रतादि,

शक्ति के नवरात्र, गणपति की चतुर्थी पूजा, सूर्य की छटपूजा एवं विष्णु जी की एकादशी व्रत प्रसिद्ध हैं।

अनर्थ अवतार भी इनकी की विभूतियां हैं। इनकी व इनके अवतारों की मूर्तियां ही मंदिर में पूज्य हैं ।अन्य कर्मदेवों की मूर्तियां इनसे अलग ही स्थापित करें।इनके साथ नहीं।

इन पांचों को ही सृष्टि का विशेष दायित्व सौंपा गया है।

इनके अपने लोक हैं ।ये प्रमुख देव हैं । दो प्रकार के देवता हैं १.आजानदेव

२.कर्मदेव।

#आजानदेव --जो सृष्टि आरंभ से ही देवपद को पर्याप्त हैं यह शिवादि ही हैं।

#कर्मदेव --जो अपने शास्त्रोचित अग्निहोत्रादि कर्मों से, तपस्या से देवपद को प्राप्त हुए हैं जैसे इन्द्रादि --"कर्मदेवा ये वैदिकेनाग्निहोत्रादिना केवलेन देवानपि यन्ति, देवा इति त्रयस्त्रिंशद्धविर्भुजः । इन्द्र- स्तेषां स्वामी तस्याचार्य्यो बृहस्पतिः ।

ईश्वरकोटि देवों का शासन कर्मदेवों के माध्यम से समस्त सृष्टि पर चलता है।इन देवताओं का एक शरीर मंत्र स्वरूप है दूसरा मूर्तिस्वरूप।

अत: समस्त वैदिक, पौराणिक, तांत्रिक देव ही अपने अपने मंत्र रूपी शरीर में निवास करते हैं। मंत्रों को जपादि से चैतन्ययुक्त करके ही तत्तद्देवता सक्रिय होते हैं।बिना चेतन किये मंत्र तिनके को भी हिलाने में समर्थ नहीं होते। क्रमशः.....

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०२.१२.१८

७०.

#रामहृद_स्यमन्तपंचकतीर्थ_कुरूक्षेत्रमहत्त्व।।

(भगवान् परशुराम तपस्थली रामराय)

भगवान् की पांच पवित्र वेदियां जहां भगवान शिव ने यज्ञ किया, इस प्रकार हैं--प्रयाग बीच की वेदी,गयाजी पूर्ववेदी,विरजा दक्षिणवेदी,पश्चिमवेदी पुष्करराज और स्यमन्तपंचक उत्तर की वेदी है। वर्तमान में हरियाणा के कुरुक्षेत्र कैथल जींद पानीपत इन चार जनपदों की भूमि स्यमन्तपंचक है इसको धर्मक्षेत्र भी कहा जाता है।--

#समन्तपञ्चकं नाम धर्मस्थानमनुत्तमम् ।

आसमन्ताद् योजनानि पञ्च पञ्च च सर्वतः ।।

राजा कुरू ने स्वयं हल जोतकर इस क्षेत्र में दिव्यगुणों का आधान किया। देवराज इंद्र ने पूछा हे राजन! तुम इस जमीन में क्या बो रहे हो? राजा कुरू ने उत्तर दिया हे देवराज !मैं इस जमीन में पवित्रता ब्रह्मचर्य दया तप सत्य क्षमा दान और योग का बीज बो रहा हूं।--

#तं कर्षन्तं नरवरं समभ्येत्य शतक्रतुः ।

प्रोवाच राजन् किमिदं भवान् कर्तुमिहोद्यतः ।।

राजाब्रवीत् सुरवरं तपः सत्यं क्षमां दयाम् ।

कृषामि शौचं दानं च योगं च ब्रह्मचारिताम् ।।

तब इंद्र ने उपहास करते हुए कहां इन गुणों का बीज कहां से लाओगे? और ऐसा कहकर के इंद्र अंतर्ध्यान हो गए।

राजा कुरु के इस परिश्रम को देख कर भगवान नारायण प्रकट हुए और कुरू से बोले हे राजन! इन आठ दिव्य गुणों का बीज तुम कहां से लाकर के यहां वपन करोगे? तब राजा कुरू ने भगवान नारायण को प्रणाम करके कहा हे भगवन !आप इस हल को चलाएं और मैं अपने शरीर में स्थित इन 8 गुणों का क्रमशः वपन करूंगा(बीजाई करूंगा)। ऐसा करने पर कुरु ने अपनी दाईं भुजा फैलाई। भगवान विष्णु ने चक्र से उसके टुकड़े किए और उसे जमीन में बो दिया ।इसके बाद बांई भुजा फिर दोनों जंघा और अंत में, राजा कुरु ने अपनी गर्दन को नारायण के सामने प्रस्तुत किया। भगवान नारायण प्रसन्न हो गए और वर मांगने को कहा--

#स चाह मम देहस्थं बीजं तमहमब्रुवम्

देह्यहं वापयिष्यामि सीरं कृषतु वै भवान् २९

ततो नृपतिना बाहुर्दक्षिणः प्रसृतः कृतः

प्रसृतं तं भुजं दृष्ट्वा मया चक्रेण वेगतः ३०

सहस्रधा ततश्छिद्य दत्तो युष्माकमेव हि

ततः सव्यो भुजो राज्ञा दत्तश्छिन्नोऽप्यसौ मया ३१

तथैवोरुयुगं प्रादान्मया छिन्नौ च तावुभौ ।

ततः स मे शिरः प्रादात् तेन प्रीतोऽस्मि तस्य च ।।

वरदोऽस्मीत्यथेत्युक्ते कुरुर्वरमयाचत ।।

तब राजा कुरु ने कहा -भगवन्! मैंने इस क्षेत्र को धर्म के रूप में माना है अतः यहां स्नान करने वाले और प्राण त्याग करने वाले को महान पुण्य प्राप्त हो।

#यावदेतन्मया कृष्टं धर्मक्षेत्रं तदस्तु च ।

स्नातानां च मृतानां च महापुण्यफलं त्विह ।।

यहां किए जाने वाले नाम दान तप जप यज्ञ आदि का भी महान पुण्य साधकों को मिले।

भगवान नारायण ने प्रसन्न होकर यह सब वरदान राजा कुरू को दिए और इस क्षेत्र की रक्षा के लिए वासुकी नाम का नाग ,चंद्र नाम का यक्ष, शंकुकर्ण नाम का विद्याधर और सुकेशी नाम का राक्षस इस क्षेत्र की रक्षा के लिए नियुक्त किए। यह सब मिलकर आज भी इस क्षेत्र की रक्षा करते हैं।

#उपवासं च दानं च स्नानं जप्यं च माधव ।

होमयज्ञादिकं चान्यच्छुभं वाप्यशुभं विभो ।।

त्वत्प्रसादाद्धृषीकेश शङ्खचक्रगदाधर ।

अक्षयं प्रवरे क्षेत्रे भवत्वत्र महाफलम् ।।

तथा भवान् सुरैः सार्धं समं देवेन शूलिना ।

वस त्वं पुण्डरीकाक्ष मन्नामव्यञ्जकेऽच्युत ।

इत्येवमुक्तस्तेनाहं राज्ञा बाढमुवाच तम् ।।

तथा च त्वं दिव्यवपुर्भव भूयो महीपते ।

तथान्तकाले मामेव लयमेष्यसि सुव्रत ।।

कीर्तिश्च शाश्वती तुभ्यं भविष्यति न संशयः ।

तत्रैव याजका यज्ञान् यजिष्यन्ति सहस्रशः ।।

तस्य क्षेत्रस्य रक्षार्थं ददौ स पुरुषोत्तमः ।

यक्षं च चन्द्र नामानं वासुकिं चापि पन्नगम् ।।

विद्याधरं शङ्कुकर्णं सुकेशिं राक्षसेश्वरम् ।

इसी क्षेत्र में सरस्वती नदी और पृथु तक तीर्थ विराजमान है।

#तस्यैव मध्ये बहुपुण्य उक्तः पृथूदकः पापहरः शिवश्च ।

पुण्या नदी प्राङ्मुखतां प्रयाता यत्रौघयुक्तस्य शुभा जताढ्या ।।

यहीं पर जींद जनपद से थोड़ी दूर रामराय गांव में स्यमंतपंचक सन्निहित तीर्थ और रामहृदतीर्थ सहित अनेक तीर्थ स्थल है जहां पर यादवों सहित भगवान श्री कृष्ण सूर्यग्रहण के अवसर पर स्नान के लिए आए थे।

अत: जो भी विद्वान साथी मेरे साथ कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान के इच्छुक है और इस तीर्थ पर चलना चाहते हैं उनका स्वागत है। कल वीरवार शाम 6:00 बजे से पूर्णिमा सुबह 8:00 बजे तक हमारा तीर्थ पर प्रवास रहेगा। वीरवार शाम को रामहृद तीर्थ पर सनातन धर्म संगोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा अतः जिज्ञासुओं का हार्दिक स्वागत है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २१.११.१८

७१.

लक्ष्मी पूजन की सामान्य विधि ।सबके लिए।

।दरवाजे पर दोनों ओर स्वस्तिक बनाएं/शुभ लाभ लिखें।व गणेशाय नमः कहकर चावल चढ़ाएं।ग्यारह या ज्यादा दीप प्रज्जवलित करके ,किसी थाली में गहने(महालक्ष्मी के रूप में)

कलम (महाकाली के रूप में)

पुस्तक (महासरस्वती के रूप में)

रखें।चावल चढ़ाते हुए

महालक्ष्म्यै नम:।

महाकाल्यै नमः।

महासरस्वत्यै नम: बोलें।

दीपकों पर दीपावल्यै नम: कहते हुए चावल चढ़ाएं।

कुबेर की पूजा के लिए जहां गहने/पैसा रखते हैं वहां (कुबेराय नमः) कहकर चावल चढ़ाएं,तिलक करें। मूर्तियों को व

सबको तिलक करें व धागा बांधे।

गोवर्धन पर (गोवर्धनाय नमः) कहकर चावल चढ़ाएं।(गोपालाय नमः) कहकर चावल चढ़ाएं।

सबको प्रसाद दें।

पूजन अभी से शुरू करें आठ बजे तक।रात बारह से दो बजे तक भी ठीक है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली

७२ ।। गायत्री रहस्य।।

(गायत्री के प्रसन्न होने पर गङ्गा के भी प्रसन्न होने का कथन),

गायत्री जाह्नवी चोभे सर्वपापहरे स्मृते।

एतयोर्भक्तिहीनो यस्तं विद्यात्पतितं द्विज ।।

गायत्री छन्दसां माता माता लोकस्य जाह्नवी।

उभे ते सर्वपापानां नाशकारणतां गते।।

यस्य प्रसन्ना गायत्री तस्य गंगा प्रसीदति।

विष्णुशक्तियुते ते द्वे समकामप्रसिद्धिदे।।

गंगा और गायत्री दोनों ही पापविनाशिनी हैं।

गंगा वह गायत्री की विशेषता यह प्रतीत होती है कि गायत्री के तीन पद क्रमशः भू, भुवः, स्वः लोक हैं।गंगा जी भी त्रिपथगा होने से यह ऊर्ध्व दिशा में प्रगति का मार्ग है, चतुर्दिक् फैलने का नहीं। अतः गायत्री जप उर्ध्वलोकों में तुरंत सहायक होता है। अर्थात् श्रेय मार्ग का दायक है।तंत्रादि इस लोक में ही हितकर हैं परलोक में नहीं।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्रीक्षदिल्ली। ०५.१२.१८

#संध्या गायत्री सर्वोपरि है

उसके बिना नामकीर्तन भी आधार हीन है।

आत्मानं वैष्णवं मत्वा अधमा भारते कलौ।

कर्णे कण्ठे तथा हस्ते हृदये नगनन्दिनि॥

विधृत्य तुलसीमालां तिलकं हरिमंदिरम्।

गृह्णीषुर्हरिनामानि सुस्वराणि गृहे गृहे।

अन्नस्य सञ्चयं कुर्यु: पाखण्डा मानवाधमा:॥

तेषां पापं महेशानि वर्णितुं नैव शक्यते।

विहाय संध्यां गायत्रीं हरेर्नाम स्मरेद्यदि॥

यान्यक्षराणि नाम्न्येव वसन्ति च शुचिष्मिते।

तावत् संख्यान्यनेकानि पापानि च पदे पदे॥

(महिषमर्दिनी तंत्र)

कलियुग में भारत के अधम व्यक्ति स्वयं को वैष्णव मानकर कान, कण्ठ, हाथ तथा हृदय में तुलसीमाला, श्रीतिलक आदि चिह्न धारण करके घर घर मात्र उदरपूर्ति के लिए भगवान का नाम गाते हुए घूमेंगे। हे महेशानि ! मैं उन लोगों के पापों का वर्णन करने में समर्थ नहीं हूँ। सन्ध्या तथा गायत्री का (अवहेलना पूर्वक) परित्याग करके जो कोई हरिनाम का स्मरण करता है, उस नाम में जितने अक्षर होते हैं उतने जन्मों तक उसे उतनी संख्या तक बहुत पाप भोगना पड़ता है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली। ०७.१२.१८

#घर_में_गायत्री_आदि_अनुष्ठान_से_कुलदेवताओं_की_कृपा_एवं_संकट_से_मुक्ति

जब मैं भगवान परशुराम संस्कृत पाठशाला नारनौंद में प्राचार्य पद पर था तब एक संन्यासी के आग्रह पर मैंने पांच विद्यार्थी गायत्री अनुष्ठान हेतु सिरसा से आगे राजस्थान बार्डर के किसी गांव में भेजे।

वहां जिनके घर गये थे उनको किसी तांत्रिक की मृतात्मा पिछले दस वर्षों से परेशान कर रही थी।(#तात्रिंक अधिकांशतः पथभ्रष्ट होकर अंधकार में ही भटकते हैं।)

उस तांत्रिक ने दो साल पहले भी उस परिवार की एक लड़की को चैलेंज करके निश्चित दिन को मार दिया था तथा इस बार भी दिनांक बताकर एक और लड़की को मारने का चैलेंज किया हुआ था।पूरा परिवार घबराया हुआ था। गायत्री अनुष्ठान शुरू होने के तीन दिन बाद भी वह तांत्रिक परिवार के एक सदस्य में निश्चित समय पर प्रविष्ट होकर सब ब्राह्मणों को कहता कि तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगे?

मैंने अपना काम करना ही है।तुम मुझे आने से रोक नहीं पा रहे हो।

ब्राह्मण विद्यार्थी हताश हो गये। तांत्रिक अगले दिन दस बजे आने की कहकर चला गया।

अगले दिन एक चमत्कार घटित हुआ। ठीक दस बजे जैसे ही वह तांत्रिक परिवार के व्यक्ति में प्रविष्ट हुआ तभी #बाबा_रामदेव (राजस्थान का प्रसिद्ध देवता) भी परिवार के ही अन्य व्यक्ति में आवेशित हुआ और उस तांत्रिक की चोटी पकड़ कर चार पांच जोरदार तमाचे रसीद दिए,और तब तक तांत्रिक को नहीं छोड़ा जब तक उसने नाक रगड़ कर पुनः वहां न आने की कसम नहीं उठा ली।

फिर तांत्रिक को फटकारते हुए कहा--हरामखोर! बिल्कुल अखाड़ा बना दिया।क्या समझा कोई कहने वाला ही नहीं है।

फिर कठोर चेतावनी देकर बाबा रामदेव जी ने उसे भगा दिया।

फिर बाबा ने परिवार के वृद्धों को लताड़ लगाई कि कर्म ,धर्म कुछ करते नहीं हो।

घर में न दिया न बाती। पहले तांत्रिकों को चढ़ावा चढ़ाते फिरते हो फिर रोग लाईलाज हो जाता है तब दर दर भटकते हो।

यह तो घर में पूजा चल रही थी जो मैं चला आया, अन्यथा तुम्हारे कर्म तो इस लायक नहीं हैं।

सब परिवार ने बाबा जी से माफी मांगी तथा भविष्य में अपने कुलधर्म पालन करने की कसम खाई। आज तक पुनः परेशानी नहीं हुई।

ऐसा होता है #कुलदेव एवं #वैदिक अनुष्ठानों का महत्व।

(मेरे ग्रंथ #अनुभूत_यंत्र_मंत्र_तंत्र_प्रयोग से)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १५.१२ .१८

७३ #सबसे_सहज_साधना

!!१!!

स्वयं को इष्ट देव का पुत्र मान कर समस्त कार्य शास्त्रोक्त विधि से करना ही सबसे सरल साधना का प्रबल सूत्र है।

क्योंकि हमारे इष्ट देव जिस प्रकार सृष्टि के कार्य में लगे हुए हैं , ठीक वैसे ही हम भी समाज और सृष्टि के प्रतिकूल कोई कार्य न करें और यह सतत स्मरण रखें कि हम अपने इष्ट देव के ही पुत्र हैं ।

और एक पिता/माता जैसे अपने पुत्र का हर प्रकार से ख्याल रखता है वैसे ही वह परमात्मा भी हमारा हर क्षण हर पल ख्याल रख रहा है।

हम भी उसे हर पल हर क्षण अपने साथ मान कर के ही दैनिक कार्य कलापों में व्यवहार करें ।

इससे हमारी अपने इष्ट देव के साथ घनिष्ठता हो जाएगी ।

हमारा यह समर्पण ही हमें हमारे इष्ट देव के अंतरंग परिवार में शामिल कर देगा और फिर हम उनकी कृपा से सराबोर हो जाएंगे।

क्योंकि सर्वदा चिंतन एवं भाव में इष्ट देव को अपने साथ देखना ही अद्वैतता है।

अपने सहस्रार चक्र पर अपने इष्ट देव को स्थापित करके नित्य कार्यों में संलग्न हो जाएं, फिर आप देखेंगे कि हर क्षण ,हर पल ईश कृपा से आपका आनंद उत्तरोत्तर बलवान हो रहा है, आपका धैर्य बढ़ रहा है और आपकी समस्त परेशानियां धीरे-धीरे दूर हो रही हैं।

इसके इसके साथ ही प्रत्येक साधक को कम से कम 1 घंटा संध्योपासना के उपरांत एक घंटा अपने इष्ट देव के मंत्र का जप करना, स्तोत्र पाठ अवश्य करना चाहिए ।

इससे इष्ट देव की कृपा में अत्यधिक वृद्धि होती है और विशेष पर्व #पूर्णिमा अमावस्या अथवा इष्ट देव की तिथि, जयंती आदि पर कई घंटों की उपासना से भी विशेष फल प्राप्त की होती है ।

इसलिए विशेष अवसरों पर अपने इष्ट देव का भावपूर्वक अधिकाधिक समय लगाकर पूजन हवन करें तो और भी अलौकिक परिणाम सामने आ सकते हैं।

लेकिन #सावधान! इष्टदेव को सर्वदा अपने सहस्रार पर स्थापित मान लेने पर हमें दैनिक काम/क्रोध/मद/लोभ/मोह/अहं

के कार्यों से अपने को दूर रखना चाहिए।क्योंकि जब परमात्मा की गोद में बैठकर आप चल रहे हैं तो इन घृणित कार्यों में आप कैसे रूचि ले सकते हैं?

किसी #औरत को घूरना/किसी को #व्यापारादि से लूटना/#धोखा देना,।

यह साधक का काम नहीं है। ये दोनों काम साथ साथ हो ही नहीं सकते।

साधक परमात्मा की रज़ा में ही मज़ा लेता है।उसके योगक्षेम का ध्यान परमात्मा ही रखते हैं फिर कैसी चिंता?

फिर क्यों हम तुच्छ कलंक पंक में उतरें ?

अतः साधक दुर्गुणों को त्यागकर और इष्टदेव के गुणों को अपने अन्दर धारण करके उन गुणों को व्यवहार में बरतना ही इस साधना की पूर्णता का आधार है।

आपकी किस #स्तर के साधक हैं?

इसकी पहचान का सरल सा #तरीका-----

परस्त्रियों के दो ही रूप एक साधक के लिए हैं-- एक माता का दूसरा बहन का।

#यदि आपकी स्थिति इस व्यवहार पर खरी उतरती है तो आप साधक होकर सिद्ध हो सकते हैं।

यदि आप ऐसा नहीं करते तो आप कथावाचक/वेदपाठी/यज्ञसम्राट/मंडलेश्वर कुछ भी रहें आप निकृष्ट एवं पतित हैं।कोई परमात्मा इनका उद्धार नहीं कर सकता । क्रमशः........

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १७.१२.१८

७४।।ज्यौतिष तत्त्व।।

#एक्सीडेंट योग

लग्न कुंडली में यदि आठवें भाव में मंगल हो तो दुर्घटना से पीड़ा/मृत्यु के योग बनते हैं।यदि यहां शनि/केतु/राहू/सूर्य में भी कोई है या दृष्टि है तो गारंटी है अपमृत्यु/बुरी मौत होने की।

अतः यदि ऐसा है तो सावधानी बरतें व इन ग्रहों का जप , दान हवन कराते रहें। विशेष रूप से इनकी दशाओं में।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली। ७.१२.१८

७५#आज_का_रहस्योद्घाटन

वह परमात्मा सर्वव्यापक एवं निराकार ही है ।पर जैसे सर्वव्यापक परमाणु प्रकाश पड़ते ही चमक उठते हैं वैसे ही भक्त के भावमय प्रकाश में निराकार परमात्मा भी तत्तद्देश में साकार सा हो उठता है।(पर इससे उसकी व्यापकता व निराकरता में कोई फर्क नहीं पड़ता)

प्रभामूर्तिर्यथा भाति परमाणुघने तमे ।

तथाव्यक्तविभुर्भातिभक्तभावप्रभावशाद्।। कृ०शा०

(उपदेश मणिमाला) यह मेरे ही ग्रंथ से उद्धृत है।

डा०कृष्णचंद्रशास्त्री दिल्ली २६.१२.१८

७६#कबीरदासादि_की_भक्त_परम्परा_वैदिकधारा_का_अंश

।। #भाग_एक।।

कल ट्रेन में एक कबीर का अंधभक्त मिला ,उसने तो गजब ही कर दिया। वह उपदेश कर रहा था और 10/20 लोग उसे बड़े चाव से सुन रहे थे ।

उसने कहा कि कबीर के गुरु जी को कबीर ने ही अंत में भवसागर पार उतारा और कबीर ही सच्चा मालिक है।

मुझे यह नहीं समझ में आता कि दिनों दिन भारत शिक्षित होता जा रहा है लेकिन धर्म के मामले में कितना अंधविश्वासी और धर्म भीरु क्यों है?

कारण स्पष्ट है हम अपने स्वाध्याय व वैदिक पंथ से अलग हो गए हैं।

ध्यान दें कबीर जी एक सच्चे साधक थे और कबीर जी की श्रेणी के अनेकों साधु इस धरा पर हैं, हुए हैं और होते रहेंगे ।

इन्हें सूफी संतों में गिना जाता है लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि यह सब भी प्रत्यक्ष रूप से वैदिक धारा से जुड़े हुए हैं ।

जितने भी संत द्विजेतर जातियों से हुए हैं उन सब ने अपने नाम के आगे दास लगाया है।

और वे स्वयं को हरी का दास ही मानते हैं।

उनके नाम के अंत में दास लिखना वैदिक परिपाटी का ही अंग है ।

उन्होंने स्वयं कभी नहीं कहा कि वे परमात्मा हैं।

उनके शिष्य निष्ठावान् होकर अपने गुरु को भगवान कह सकते हैं ।

लेकिन इससे यह साबित नहीं हो जाती कि वे परमात्मा ही हो गए हैं ।

जो सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान परब्रह्म है उसको तो कबीर दास आदि भक्तों ने परमात्मा ही माना है।

और स्वयं को उसका दास बताया है।

उनके किसी भी ग्रंथ में आप यह नहीं दिखा सकते जहां उन्होंने स्वयं को परमात्मा कहा हो।

वे सब संत निरभिमान पूर्वक यही कहते हैं कि वे हरि के दास हैं।

मैंने उस सज्जन से पूछा कि क्या कबीर दास जी से पहले परमात्मा थे ही नहीं?

क्या कबीर के जन्म के बाद ही परमात्मा उत्पन्न हुए?

और आप कबीर, नानक ,तुलसी और अन्य अन्य संतों के साहित्य में कहीं भी यह दिखाएं जहां उन्होंने यह कहा हो कि मैं ही परमात्मा हूं?

सर्वसाधारण #ध्यान दें

केवल #शिव_शक्ति_गणपति_सूर्य_विष्णुजी व इनके अवतारों ने ही स्वयं को परमात्मा कहा है और उन्होंने बिल्कुल छाती ठोक कर यह है कहा है ।

उन्होंने इसे अपने कर्मों से साबित भी करके दिखाया है कि वह इस संसार के मालिक हैं।

संतों ने कभी अपने मुंह से नहीं कहा कि वे परमात्मा हैं। उन्होंने तो दास दास कह कर के ही अपनी अतिविनम्रता का परिचय दिया।

जो उन संतों को भगवान् बतलाकर अपनी दुकानदारी चला रहे हैं धिक्कार है उन निकम्मे मूर्खों को।

कबीर दास आदि नामधारी संत है और नामोपदेश किन के लिए सार्थक है यह अगले अंक में बताएंगे।

डॉ कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २१.१२.१८

#कबीरदासादि_की_परम्परा_वैदिकधारा_का_अंश ।।२।।

#नामजप_किनके_लिए

जितने भी नाम दानी संत हुए हैं उन सब का संबंध ऋषि परंपरा से दीक्षित किसी ने किसी ब्राह्मण गुरु से ही है।

#कलयुग केवल नाम अधारा सुमिर सुमिर नर उतरीं #पारा

तुलसीदास जी ने यहां पर नाम जप का जो महत्व बताया है उसका अभिप्राय यह कतई नहीं है कि हम वैदिक विचारधारा को त्याग दें ।हम यज्ञ, सत्य, अहिंसा , दान, तीर्थयात्रा, देवपूजन, व्रत, 16 संस्कार इत्यादि को पूर्णतया त्याग करके केवल नाम जप के भरोसे ही पार नहीं उतर सकते।

इस सूक्ति का अभिप्राय इस बात में निहित है कि कलयुग में लोगों के पास इतना समय नहीं रह पाएगा कि वह लंबी समाधि और 12 -12 वर्षों तक चलने वाले लंबे यज्ञों का आयोजन कर सकें।

कलयुग में कलयुगी जीव की व्यस्तता को देखते हुए उनके लिए ईमानदारी पूर्वक नित्य कर्म करना और अपने सामर्थ्य के अनुसार दान जप तप व्रत करते हुए अधिकांश समय में दैनिक व्यवहारिक कार्य में भी मानसिक स्तर पर नाम जप करना उनके

लिए विशेष रूप से तारणहार होगा।

ध्यान दें सन्यासी के लिए तो सब प्रकार के कार्यव्यवहार (कर्मकाण्ड)का त्याग लिखा है परंतु भगवान संन्यासियों के लिए भी स्पष्टतया निर्देश करते हैं कि---

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।

यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥१८- ५॥

अर्थात् यज्ञ दान और तप यह कार्य चाहे संन्यासी भी क्यों न हो सबके लिए यथोचित रूप से कर्तव्य हैं।

छल कपट झूठ और आतंकवाद में गले तक डूब कर हम केवल नाम स्मरण के आधार पर पार नहीं उतर सकते ।

नाम स्मरण तो सतत चलते रहना चाहिए और ईश्वर के द्वारा शास्त्रोक्त कर्म करते हुए यह नाम सुमिरन चलते रहना चाहिए ।

तभी यह हमारा आधार होगा और हमें भवसागर से पार ले जाएगा अन्यथा नहीं।

इसीलिए धार्मिक लोगों का कार्य है कि वे #नित्यकर्म प्रतिदिन करें। #काम्यकर्म विशुद्ध कामना को लेकर ही करें ।#निषिद्ध कर्म त्याग दें और #नैमित्तिक कर्म सद्भावना पूर्वक करें।

यह #चार प्रकार के कर्म और उनका स्वरूप जानना बहुत ही महत्वपूर्ण है ।इन चारों प्रकार के कर्मों को यथारूप ज्ञान लेकर व्यक्ति इन्हें आचरण लाए और साथ में गुरु प्रदत्त नाम का स्मरण करता रहे तब जाकर जीव की इस कलयुग में गति लिखी है।

अत: नाम जप तो करें लेकिन जो नाम जप के साथ हमारे सनातन मान बिंदुओं जैसे यज्ञ दान जप तप व्रत आदि को त्यागने की बात करें तो उसे कोरा ढोंगी समझें ।

और इस बात का भी पता लगाएं कि वह जिस परंपरा से है उसका प्रवर्तक कौन है?

आप देखेंगे कि जो प्रवर्तक है वह बिल्कुल भी शुद्ध सात्विक और निष्कामी तपस्वी रहा है लेकिन उसकी परंपरा का सहारा लेकर के #ढोंगी लम्पट आजकल समाज में फैल गए हैं।

जो अपना डेरा जमा कर भोली भाली जनता को भ्रमित करते हैं।

उनके गुरु को भी आज उन पर पछतावा हो रहा होगा कि उनका नाम लेकर के कितना #अन्यायपूर्ण आचरण आज उनके नाम पर किया जा रहा है।

वे नामधारी संत तो नाम गुणगान में मस्त रह कर के अपने नित्य कार्य करते थे और अपने आसपास आने वालों को भक्ति एवं इमानदारी पूर्वक अपने दैनिक कार्य करने का उपदेश देते थे।

पर आज तो मामला ही दूसरा हो गया है ।#ऐश-आराम #भोग #संपत्ति #चटनी चूर्ण बेचकर पैसा एकत्रित करना।

AC ,बड़ी-बड़ी गाड़ियों,

वायुयानों में चलना यह आजकल के तथाकथित संतों का फैशन हो गया है।

अतः इनसे दूर रहिए अपनी जमीन को पहचानिए सुबह शाम परमात्मा का नाम लीजिए और सत्कर्म करिए ।इससे बढ़कर और कोई पुण्य और ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भी नहीं है।

(नामदान नारद ने बालक ध्रुव को दिया था, नामदान ऋषियों ने वाल्मीकि को दिया था --दोनों ही उदाहरणों में उस नाम दान के

साथ साथ नित्य और शास्त्रोक्त कर्म करते हुए ही उस नाम जप की विधि बताई थी

और उसी का यह परिणाम रहा कि दोनों ने परम पद को पा लिया)

अत: मर्म को समझें और आचरण में उतारें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २७.१२.१८

७७#गृञ्जनम्_भक्षण_निषेध_मीमांसा

बार बार स्मृतियों/पुराणों में गृंजन खाने का निषेध द्विजातियों के लिए किया है। #गृंजन का अर्थ #गाजर या #शलगम है ऐसा अनेक टीकाकारों ने कहा है।किन्तु यह सर्वथा गलत व्याख्या है।

क्योंकि गाजर या शलगम में ऐसा कोई उत्तेजक तत्त्व मौजूद नहीं है जिससे द्विजत्व की हानि हो ।

और तो और देखिए मूली खाने का भी कहीं शास्त्रों में निषेध नहीं है।

गाजर की अपेक्षा तो मूली थोड़ी तीखी और तामसिक गुणों से युक्त है लेकिन उसका कहीं भी शास्त्रों में उल्लेख नहीं, कहीं मनाही नहीं है तो फिर मीठी गाजर या शलगम खाने का शास्त्रों में निषेध कैसे हो सकता है ?

अतः #गृंजन शब्द का अर्थ गाजर लेना कदापि उचित नहीं है।

अर्थकारों की यह बड़ी भारी भूल है कि उन्होंने गृंजन को गाजर का पर्याय मान लिया है।

जबकि इसका अर्थ है लहसुन की एक रक्त वर्ण की प्रजाति है। शब्दकोष के अनुसार देखिए--#गृञ्जनम्, क्ली, (गृञ्ज्यते अभक्ष्यत्वेन कथ्यते प्राण- नाशकत्वादिति । गृजि ध्वनौ + कर्म्मणि ल्युट् ।) विषदिग्धपशोर्म्मांसम् । इति मेदिनी । ने । ५८ ॥ (गृञ्ज्यते रोगनाशकतया भक्ष्यत्वेन कथ्यते इति ।) मूलविशेषः ।

इसका इसका प्रयोग मांस भक्षण के समान है द्विजातियों के लिए निषिद्ध है।

यह गाजर क्यों नहीं हो सकता क्योंकि इसके गुणों के बारे में लिखा है कि यह कड़वा और गर्म प्रकृति का होता है और इसमें तीखी गंध भी निकलती है। यह हृदय के लिए हितकारी है। आयुर्वेद के ग्रंथों में इसके यही गुण लिखे हैं। यह सब गुण केवल और केवल लहसुन में ही दृष्टिगोचर होते हैं

#अस्य गुणाः । कटुत्वम् । उष्णत्वम् । कफवातरोगगुल्मनाशित्वम् । रुच्यत्वम् । दीपनत्वम् । हृद्यत्वम् । दुर्गन्धत्वञ्च । इति राजनिर्घण्टुः ॥

अतः सिद्ध होता है कि इसका अर्थ रक्त वर्ण का लहसुन ही है

#गृञ्जनः, पुं, (गृञ्ज्यते अभक्ष्यत्वेन कथ्यते इति । गृजि + ल्युट् ।) रसोनकः । रसुन् इति भाषा । इति मेदिनी । ने । ५८ ॥ रक्तलशुनः । इति राजनिर्घण्टः ॥

रसोनक अर्थात् रसुन् (लहसुन)लाल रंग का लहसुन।

शास्त्रों में तीन पदार्थ विशेष है जिनके खाने से मनुष्य की धर्महानि होती है और उनके खाने पर उसे प्रायश्चित स्वरूप चंद्रायण व्रत/सान्तापन व्रत का पालन करना चाहिए हैं---

१. लशुन(लहसुन)

२.पलांडु(प्याज)

३.गृंजन(रक्त लहसुन)

अत: सिद्ध है कि गाजर /शलगम का कहीं निषेध द्विजातियों के लिए नहीं है।

#तीव्रगंधत्व_उष्णत्व_दीपनत्व_हृद्य ये सब गुण k में न होकर

लहसुन में ही साबित होते हैं।

गृंजन को गाजर/शलगम कहना मात्र व्याख्याकारों का मिथ्या अर्थ प्रलाप ही है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली। २८.१२.१८

७८ #ब्राह्मण_के_विराटप्रेमी(Great Lover) #हैं_भगवान

आज के लोग घोर आश्चर्य मानते हैं कि कदम कदम पर भगवान ब्राह्मणों को अपने सिर पर बैठाते हैं।

कोई भी शास्त्र उठा कर देख लें सब में ब्राह्मणों की भगवान ने अपने मुख से पूरी पूरी प्रशंसा की है।

उन्होंने अपने श्रीमुख से विमर्श बातें कही हैं---

१. अविद्यो सविद्यो वा ब्राह्मणों मामकी तनु:(विद्वान् हो या अनपढ़, ब्राह्मण मेरा ही शरीर है)

काला/गौरा/रोगी/निरोग/लम्बा/ठिगना/अपंग कैसा भी क्यों न हो अपना शरीर किसे प्रिय नहीं होता। वैसे ही ब्राह्मण कैसा भी हो भगवान उसे अपना शरीर कहते हैं।

२. मैं अग्नि में हवन सामग्री डालने से भी वैसा प्रसन्न नही होता जैसा घी में तर करके ब्राह्मणों को भोजन खिलाने से होता हूं।

३.यज्ञादि में जो कमी रह जाती है वह ब्राह्मणों के आशीर्वाद से पूर्ण हो जाती है।

४. ब्राह्मण धरती के प्रत्यक्ष देवता हैं।

५. ब्राह्मणा: यानि भाषन्ते मन्यन्ते तानि देवता:(ब्राह्मण जो कहते हैं देवता उसकी बात मानते हैं)

६. ब्राह्मण की आज्ञा से बिना मुहूर्त के भी कार्य किया जा सकता है।

#एसे अनेकों वचन भगवान ने ब्राह्मणों की प्रसंशा में कहे है।

इन वचनों को सुनकर पहले के जमाने में लोग आश्चर्य नहीं करते थे। क्योंकि पहले के लोग धार्मिक थे और धर्म का आधार ब्राह्मणों के वचन ही थे।इस लोक को पार करके परलोक में परमगति में जाने का रास्ता ज्ञानवान ब्राह्मण ही दिखा सकते हैं,यह बात पहले के विज्ञ जन बेखूबी समझते थे।

आजकल के कलियुगी लोगों को परलोक में गति चाहिए ही नहीं।

ताउम्र पैसे/सर्वार्थ/कामवासना के चक्कर में मार काट मचा के रखते हैं।बाद में मौत के बाद यहीं प्रेत बनकर भटकते हैं।

अब जिज्ञासुओं को बता दें कि ब्राह्मण क्या हैं।

१. पूर्वजन्म में तपस्या के फलस्वरूप ही ब्राह्मण के घर पर जन्म मिलता है।

२. ब्राह्मण यदि तपस्यारत है तो साक्षात् प्रज्ज्वलित अग्नि है।

उससे तर्क/वितर्क न करें। दूर रहें।#जैसे दुर्वासा/परशुराम जी से सब लोग डरते थे कि क्यों आफत मोल ली।

अन्य ऋषि भी तेजस्वि थे पर शान्त थे।

३. आज भी जो विद्यावान है उसका पूर्ण मान सम्मान है।

पर #सावधान जो विद्यावान् नहीं है वह भी ब्राह्मण तो है ही।उसकी भी आधारभूत योग्यता तो है ही।

न जाने कब वह भक्तिमार्गी हो जाए।या उसकी संतति परम्परा में कोई जगद्गुरु/तपस्वी हो जाए जो पूरी पूर्वजों की परम्परा को पार लगा दे।

अतः ब्राह्मण होना ही उसका पूर्वजन्म की योग्यता को सिद्ध करता है,वह ढ़की हुई आग के समान है।

अत: किसी ब्राह्मण का अपमान न करें ,गो,ब्राह्मण,साधु को देखते ही प्रमाण करें।

#ठीक यही आज्ञा शास्त्र गर्भवती स्त्री के विषय में कहता है।

शास्त्राज्ञा है कि गर्भवती स्त्री को देखते ही प्रणाम करें। क्योंकि उसके गर्भ में कोई विद्यावान्/तपस्वी या अवतारी पुरुष भी हो सकता है। फिर मौका मिले न मिले ,अभी प्रणाम कर लें।

ऐसा ही ब्राह्मण के बारे में समझें।

(इस लेख से तथाकथित स्वार्थी धन, कामलोलुप दूर रहें। धर्म कर्म की वैदिक मर्यादा वाले ही समझें)

#नवसर्वकारिकवर्ष_की_मंगलकामना

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   ०१.०१.२०१९

विशुद्धाकन्यावज्जगति बहुपूज्या: क्षितिसुरा:

जनित्रीवद्क्षत्रा: निखिलजनरक्षासुकुशला:।

स्वसृवद्वैश्या: वावनिविपुलसंयोजनपरा:

सदा शूद्रा: दारामिव बहुगुणै: कर्मसुयुता:।।

(उपदेश मणिमाला) यह मेरे ही ग्रंथ से उद्धृत है।(कृष्ण चंद्र शास्त्री)

सनातन वैदिक परंपरा में ब्राह्मण ज्ञान के धनी व्यक्ति ब्रह्मज्ञान के अधिकारी होने के कारण #कन्या के समान पूज्य हैं।

क्षत्रिय सब को सुरक्षा देने के कारण माता के समान सम्मान्य हैं।

वैश्य संसार को व्यापार तंत्र से जोड़ने के कारण बहन के समान मान्य हैं।

शूद्र अनेक शिल्पादि कलाओं में निपुण होने के कारण पत्नी के समान प्रशंसित हैं।

यह वैदिक व्यवस्था का स्वरूप है । उक्त चारों वर्ण अपनी-अपनी महत्ता रखते हैं इनमें कोई वैमनस्यता नहीं है।

इनके अतिरिक्त एक पंचम वर्ण भी वेद ने स्वीकृत किया है ।वह है निषाद (निषादो हि नाम पंचमो वर्ण:)

जो हिंसक है वह घृणित कार्य करता है वह निषाद है , चांडाल है।वह उक्त चारों वर्णों से बहिष्कृत एवं कल्याण चाहने वालों के लिए अस्पृश्य है।

यदि मर्यादा में रहकर निषाद भी भक्ति करें तो उसका भी उद्धार हो सकता है।

चांडाल के भी कार्य ही घृणित हैं ,यह कृत्यघृणा है जीवघृणा नहीं है।

कुकर्म छोड़ने के कारण ही भगवान राम जी ने निषाद को गले लगा लिया था।

यह है वैदिक व्यवस्था।

सब स्त्री एक होते हुए भी कार्यों के कारण कन्या,माता,बहन,पत्नी का भेद शास्त्र सिद्ध है।यही वर्णव्यवस्था का रहस्य है।

यह वर्णव्यवस्था जन्म से है।कर्म से नहीं।गीता आदि ग्रंथों में चारों वर्णों के कार्य बताए गए हैं जिनसे सभी वर्णस्थ जीव ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं (स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विंदते नर:)।

#आजकल के कुछ मूर्ख लोग यह कहते हैं #जो ऐसा करता है वह ब्राह्मण है।

ऐसा करता है वह क्षत्रिय है।यानि कर्म से वर्ण मानते हैं।

जबकि शास्त्र का सिद्धांत है कि यदि ब्राह्मण का जन्म है तो ऐसा-ऐसा करें।

क्षत्रिय का जन्म है तो ऐसा-ऐसा करें।

इसे उदाहरण से समझिए---

#पत्नी_एवं_कुर्यात्_माता_एवं_कुर्यात्_पुत्र:एवं कुर्यात् ।

शास्त्र कहता है कि पत्नी का यह कर्तव्य है,माता का यह फर्ज है,पिता का यह फर्ज है और पुत्र का यह कर्तव्य है।

जबकि आजकल के तथाकथित #मूर्ख(जो कर्माधारित वर्णव्यवस्था मानते हैं) कहते हैं कि जो संतान उत्पन्न करें वह पत्नी है ।

और शास्त्र कहते हैं पत्नी से ही संतान उत्पन्न करें। अर्थात् पत्नी पहले है और संतानोत्पत्ति उसका कर्म है।

ऐसे ही ब्राह्मणादि पहले हैं और वेद,यज्ञादि उसका कर्म है।

इस रहस्यमय को बुद्धिमान व्यक्ति वैदिक निष्ठावान् ही समझेगा ,मूर्ख के वश का नहीं है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली ०२.१.१९

७९#ब्रह्माण्ड_की_शक्तियां।।

इस समस्त ब्रह्मांड में अनेकानेक शक्तियां कार्य कर रही हैं ।

कुछ आधिभौतिक शक्तियां हैं, कुछ आधिदैविक शक्तियां हैं और कुछ आध्यात्मिक शक्तियां।

हम सब इन शक्तियों के पराधीन होकर ही जी रहे हैं और यह महसूस भी करते हैं कि इस ब्रह्मांड में केवल मानवों के द्वारा भी अनेकों प्रकार की तरंगे प्रवाहित की जा रही है हम इन सब से प्रभावित भी होते हैं यह अलग बात है कि हमें इनका पता नहीं चलता ।

इनसे हम जब नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं तो हम बीमार हो जाते हैं ।

आध्यात्मिक और आधिदैविक शक्तियां भी इसी प्रकार कार्य करती हैं।

यदि हम सूक्ष्म रूप से विचार करें तो हमें पता लगता है कि केवल 33% रोग ही डॉक्टरों की समझ में आ पाते हैं।

#तापत्रय =तीन प्रकार के ताप(पीड़ा) का उल्लेख हमारे धर्म ग्रंथों में प्राप्त होता है।

जब हम किसी नगर में निवास करते हैं तो उस भूखंड के स्वामी को वास्तु देव के रूप में पूजा जाता है। और उस नगर के स्वामी को नगराधीश (क्षेत्रपाल) के रूप में पूजा जाता है। जिस कुल में हम पैदा हुए हैं उसमें पूर्व में उत्पन्न पूर्वजों को पितृ रूप में पूजा जाता है। और अपने कुल की अधिष्ठात्री देवी और देवता को भी हम विविध नामों से पूजते हैं।

यदि हमें अपने व अपने परिवार की सुख शांति चाहिए अथवा यूं कहें कि आधिभौतिक अध्यात्मिक और आधिदैविक पीड़ा से मुक्ति चाहिए तो हमें अपने कुलदेव स्थानदेव ग्रामदेव और पितृ देवों की अवश्य पूजा करनी चाहिए।

कुछ व्यक्ति है सोचते हैं कि प्रत्येक रोग का समाधान डॉक्टर के पास है।

लेकिन डॉक्टरों को भी पता है कि प्रत्येक समस्या का समाधान उनके पास नहीं है।

लंबे समय तक दवाइयां खाने के बाद भी रोग में कोई सुधार नहीं होता । क्योंकि समस्या भौतिक स्तर पर न हो कर दैवी और आध्यात्मिक स्तर पर होती है।

यदि हमें गृहस्थी होते हुए सुख शांति पूर्वक रहना है तो हमें उपरोक्त देवों की पूजा करनी ही होगी।

या तो हम संन्यासी हो जाए और इस कर्मकांड से पार हो जाए। फिर हमें इन सामान्य छोटे देवों की पूजन की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी ।

फिर हम सर्वोपरि परमात्मा का ही पूजन करने के अधिकारी रह जाएंगे और इस कर्मकांड से हम पार हो जाएंगे।

ऐसा नहीं कर सकते अर्थात संन्यासी नहीं हो सकते तो जिस जमीन पर हम रह रहे हैं उस से जुड़े समस्त देवों की उपासना हमें अवश्य करनी चाहिए तभी हम शांति से रह सकते।

जिस जमीन पर आप रहते हैं उसे खरीद लेने पर भी आपकी कागज की रजिस्ट्रियों देवों की अदालत में मान्य नहीं है।

उस जमीन से बंधे हुए

ऋण आपको सतत प्रताड़ित करते रहेंगे ।

और वैदिक मार्ग से ही आप उनसे निदान पा सकते हैं।

यदि कोई यह दावा करता है कि उसने आज तक किन्हीं देवताओं की पूजा नहीं की और फिर भी वह स्वस्थ है तो यह समझ ले कि यह उसका प्रारब्ध है अथवा उसे पूर्वजन्म में उपार्जित देवों की कृपा प्राप्त है अथवा उसकी किसी इष्ट देव की कृपा से ही सामान्य देवों की पूजा संपन्न हो रही है।अथवा उसके कुल में पूर्वोत्पन्न किसी महापुरुष के प्रताप से उसकी कुशलता बरकरार है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली। ०७.०१.१९

आकाश लिंग है और धरती पीठिका है।प्रलयांत में समस्त देवता इसमें लीन हो जाते हैं इसलिए यह शिवलिंग कहा गया है---

आकाशं लिंगमित्याहु: पृथिवी तस्य पीठिका।

प्रलये सर्वदेवानां लयाल्लिंगमुच्यते।।

इस संसार में चार ही चीजें अनूठी हैं--

काशी में निवास

सज्जनों का संग

गंगा का जल और

शंकर की पूजा।

असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम्।

काश्यां वास: सतां संगो गंगाम्भ: शंभूसेवनम्।।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली

८० दयानंद

एक #अधपके दयानंदी ने कुंभ पर सवाल उठाए।सच्चे आर्यसमाजी ध्यान से दयानंद सरस्वती जी को पढ़ें। दयानंद जी अंतिम वक्ता नहीं थे । उनसे पहले आत्मज्ञ ऋषियों ने जो कहा है,वही प्रामाणिक है। दयानंद जी ने जो कहा उसमें से भी काम की चीजें मूर्खों ने हटा दी।और द्वेषपूर्ण बातें डाल दी।

सुनिए---

१. पवित्र नदियों का महत्व

२. महापुरुष महत्त्व

३.संत महत्त्व

४. पर्वत,नदी, नक्षत्र का प्रभाव

५.शुभ काल

६. दान महत्व

७. चौराहे का डर

८ भूत का डर

९. तंत्र टोटका

१०. गुरु शिष्य परम्परा

११. संत,संन्यास परम्परा

१२. स्नान महत्व

यह सब दयानंद सरस्वती ने भी माना है ,ध्यान से सभी आर्यसमाजी पढ़ लें।

कुंभ हिंदुओं का महापर्व है। इसमें हिंदुओं की धार्मिक सशस्त्र सेना की सभी टुकड़ियां भाग लेती हैं।

यह भारत के ऐतिहासिक, धार्मिक गौरव का प्रतीक है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली १४.०१.१९

८१ ।।#गायत्री_साधना_और_सिद्धि।।

।।१।।

गायत्री प्रब्रह्म का मातृ स्वरूप है। समस्त पापों के शमन के लिए गायत्री जप अत्यंत महत्वपूर्ण है। गायत्री मंत्र में 3 विभाग हैं--

प्रणव,महाव्याहृति और मंत्र।

इनको त्रिपदा भी कहा जाता है। यह जप करने वालों कि पाप से रक्षा करती हैं अतएव गायत्री कहलाती हैं। गायत्री को वेदों का सार कहा गया है--#सर्ववेदानां_गायत्रीसार_उच्यते।

गायत्री के तीनों भाग तीन वेदों से संग्रहित किए गए हैं--

#त्रिभ्यएव_वेदेभ्य_पादं_पादमुदाहृतम्।

गायत्री की उपासना वैदिक उपासना है और यह समस्त देवताओं को प्रसन्न करने वाली और परब्रह्म की विशुद्ध उपासना है।

इससे ज्ञात अज्ञात समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। वेदों का सार होने के कारण यह वेदों से भी श्रेष्ठ है।--
#चतुर्वेदात्परा_गुर्वी_गायत्री_मोक्षदा_स्मृता।

3 वर्णों के लिए गायत्री अमृत के समान है और ब्राह्मणों के लिए तो कामधेनु कहीं गई है।

गायत्री जप के बिना ब्राह्मण ब्राह्मण कहलाने के लायक नहीं है। वेद का अध्ययन जो करता है लेकिन गायत्री को जो नहीं भजता वह ब्राह्मण भी यथार्थ ब्राह्मण नहीं है।--

#किं_वेदै: पठितै: सर्वै: सेतिहासपुराणकै:।

सांगै: सावित्रीहीनो यो न स विप्रत्वमवाप्नुयात्।।

ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण ही गायत्री के अधिकारी हैं।

स्त्री एवं शूद्रों के लिए त्रिपदा गायत्री का निषेध किया है। ब्राह्मण के लिए #त्रिपदागायत्री, क्षत्रियों के लिए #त्रिष्टुपब्गायत्री और वैश्यों के लिए #जगतीगायत्री अथवा तीनों के लिए त्रिपदागायत्री प्रशस्त मानी गई है।---

#गायत्र्या_छंदसा_ब्राह्मणमसृजद्,#त्रिष्टुभा_राजन्यं,#जगत्या_वैश्यं,#न_केनचिच्छंदसा_शूद्रम्।

स्त्री और शूद्र #गायत्री_प्रणव_ओंकार और #वेदमंत्र #लक्ष्मीमंत्र में अधिकार नहीं रखते यदि कोई ऐसा करता है तो वह मृत्यु के बाद नर्कगामी होता है ।और जो आचार्य उनको इनका अध्ययन करवाता है वह भी मृत्यु के बाद आधोलोक में जाता है।---

#सावित्रीं_प्रणवं_यजुर्लक्ष्मीं_स्त्रीशूद्राय_नेच्छन्ति।#यदि_जानीयात्_स्त्रीशूद्र: #स_मृतोऽधोगच्छति।..नृ०उप०

ऐसा किसी द्वेष के कारण नहीं कहा गया है बल्कि परमविशुद्धि की मर्यादा के कारण कहा गया है।

जो स्त्रियां और शूद्र गायत्री मंत्र के ग्रहण करने और जप करने में #अनधिकारी हैं वे गायत्री की महिमा सुने और अपने मुख से #गायत्री #गायत्री इस शब्द को भी यदि उच्चारण करें तो भी वे सब पापों से मुक्त होकर ब्रह्म लोक को प्राप्त होंगे---

#गायत्रीति_पदावृत्या_तत्फलं_प्रानुवन्नर:।

#सर्वपापविनिर्मुक्तो_ब्रह्मलोकं_स_गच्छति।।

अतः गायत्री की #कथाश्रवण #स्मरण और #ध्यान में सब लोग अधिकारी हैं।..... .. (क्रमश:)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली। ०३.०१ .१९

#गायत्री_साधना_एवं_सिद्धि

।।२।।

जिनका वेदों और गायत्री मंत्र में अधिकार नहीं है । जो यज्ञोपवीत पहने हुए नहीं है।वह निम्न मंत्र का जप करके गायत्री मां का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं--

#ह्रीं_यो देव: सविताऽस्माकं मनः प्राणेन्द्रियक्रिया:।

प्रचोदयति तद् भर्गं वरेण्यं समुपास्महे।।

वेदों के अध्ययन की अपेक्षा गायत्री मंत्र के जप को अधिक फलप्रद माना गया है।

गायत्री को ही ब्रह्मा विष्णु और शिव माना गया है--

#गायत्र्येव परोविष्णुर्गायत्र्येव   पर: शिव:।

गायत्र्येव परो ब्रह्मा गायत्र्येव त्रयी तत:।।

समस्त पापों के शमन के लिए और प्रायश्चित के लिए गायत्री जप प्रशस्त माना गया है--

#गायत्र्यास्तु_परं_नास्ति_शोधनं_पापकर्यणाम्।

चारों वेदों ब्राह्मण ग्रंथों आरण्यक उपनिषद ग्रंथों में और स्मृतियों तथा पुराणों में गायत्री की महिमा विविध स्थानों पर गाई गई है।

गायत्री का नियमित जप करने वाला ही दानादि प्रतिग्रह को पचा सकता है।

पद्मपुराण में मां गायत्री स्वयं को वेदों की जननी कहा है--

#माताहं_सर्ववेदानाम्।

गायत्री जप से रहित ब्राह्मण से वैदिक कर्म नहीं करवाने चाहिएं--

#गायत्र्या_जपहीनस्तु_वेदकार्ये_न_योजयेत्।

ब्राह्मण को प्रतिदिन एक हजार जप करना उत्तम, शत जप करना मध्यम और कम से कम 10 बार जप करना सामान्य विधान है यदि में ऐसा करता है तो पाप से लिप्त नहीं होता --

#सहस्र_परमां_देवीं शतमध्यां दशावराम्।

गायत्रीं च जपन् विप्रो न स स पापेन लिप्यते।।

गायत्री का जाप सुबह, शाम कभी भी सर्व काल में किया जा सकता है कुछ है यह कहते हैं कि शाम को या रात को जप प्रशस्त नहीं है किंतु ऐसी धारणा बिल्कुल मिथ्या है।

क्योंकि जो लोग त्रिकाल या तुरीय संध्या करते हैं वह भी निसंदेह गायत्री जप में संलग्न है।

#गायत्रीं जपते यस्तु द्वौ कालौ ब्राह्मण: सदा।

तया राजन् स विज्ञेय   पंक्तिपावनपावन:।।

#संध्यायां च प्रभाते   मध्याह्ने च तत: पुनः।

गायत्री जप से समस्त सूर्यशनि आदि ग्रह व्यक्ति के लिए मंगलकारी हो जाते हैं--

#ये चास्या दारुणा: केचिद् ग्रहा: सूर्यादयो दिवि।

ते चास्य सौम्या जायन्ते शिवा: शिवतरा: सदा।

(क्रमशः)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली।   १२.०१.१९

।#गायत्रीसाधना_और_सिद्धि।

।। ३।।

मां गायत्री के जप के बिना द्विज को अन्य मंत्रों की सिद्धि नहीं हो सकती । अतः यदि किसी भी देवता की उपासना में सफलता चाहते हैं तो वे नित्य गायत्रीजप संध्या अवश्य करें----

#गायत्रीं_य: परित्यज्य चान्यमंत्रमुपासते

न साफल्यमवाप्नोति कल्पकोटिशतैरपि।

गायत्री उपासना से ही वैदिक महावाक्यों का अर्थज्ञान एवं परम तत्व का साक्षात्कार हो पाता है। गायत्री की समर्थ उपासना से ही आत्म शक्ति प्राप्त होती है--

#गायत्र्युपासनाकरणादात्मशक्तिस्तु_लभ्यते

जो गायत्री मंत्र का 12 लाख जप कर लेता है वहीं पूर्ण ब्राह्मण कहलाने योग्य है। अतः ब्राह्मणों को तो गायत्री की उपासना विशेष रूप से करनी चाहिए---

#लक्षद्वादशयुक्तस्तु_पूर्णब्राह्मण_इंङ्गितः।

तीन व्याहृतियों से युक्त गायत्री मंत्र अपने आप में परिपूर्ण है। गायत्री मंत्र में #सातव्याहृतियां #प्रणव आदि विनियोग और अन्य मंत्रों के संयोग से विविध शस्त्रास्त्र मंत्रों का निर्माण होता है। लेकिन उनका प्रयोग सर्वसाधारण के लिए उपयुक्त नहीं है।

क्योंकि मंत्र व्यक्तिगत आध्यात्मिक स्तर के अनुसार ही गुरु मुख से प्राप्त करके जप करना प्रशस्त माना गया है।

#देवीभागवत के अनुसार विभिन्न रोगों को दूर करने के लिए और विविध कामनाओं के लिए अलग-अलग सामग्री से हवन करके गायत्री मां की कृपा प्राप्त की जा सकती है।

शनिवार के दिन पीपल वृक्ष के नीचे बाएं हाथ से पीपल का स्पर्श करते हुए गायत्री का निष्ठा पूर्वक जप करता हुआ व्यक्ति समस्त भौतिक रोग और अभिचार जनित रोग से मुक्त हो जाता है---

#जपेदश्वत्थालभ्य मंदवारे शतं द्विज:।

भूतरोगाभिचारेभ्यो मुच्यते महतां भयात्।

गायत्री आदि समस्त मंत्रों के ऋषि देवता और छंद का ध्यान/स्मरण रखना चाहिए अन्यथा पाप लगता है--

#अविदित्वा ऋषिं छंदो   दैवतं योगमेव च।

योऽध्यापयेज्जपेद्वापि पापीयाञ्जायते तु स:।

#परम_रहस्य---

गायत्री मंत्र के 24 वर्णों में 24 देवता, 24 ऋषि ,24 छंद ,24 शक्तियां ,24 वर्ण,और 24 तत्व माने गए हैं अतः इनका ज्ञान गुरुमुख और सद्ग्रंथों से प्राप्त करें।

जप के पूर्व की 24 मुद्राएं और जप के बाद की आठ मुद्राएं देवी को प्रसन्नता देने वाली कहीं गई हैं। मुद्राओं के ज्ञान के बिना भी जप निष्फल माना गया है।

#एता_मुद्रा: न जानाति गायत्री निष्फला भवेत्।

अतः विशेष फल चाहिए तो इन तत्वों का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करें।

गायत्री के 24 वर्ण के द्वारा शरीर का न्यास संपन्न करके ही जप में सफलता का आधान करें।

क्योंकि न्यास के बिना भी आधा फल राक्षस ग्रहण कर लेते हैं--

#न्यासहीनं तु यत्कर्म अर्धं गृह्णन्ति राक्षसा:।

(क्रमश:)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १३.०१.१९

#गायत्री_साधना_और_सिद्धि

।।४।।

गायत्री जप से पहले गायत्री शाप विमोचन करना अत्यावश्यक है। वास्तव में तो गायत्री दुर्गा आदि शक्तियां परब्रह्म स्वरूपा है अतः इन्हें शापित करना सर्वथा असंभव है ।

फिर भी ऋषियों ने इन महाशक्तियों को कीलित या शापित किया है तो वह कीलन इन महाशक्तियों का न होकर सामान्य साधकों का है ।

अर्थात् उन्होंने साधकों को कीलित किया है ताकि अनाधिकारी व्यक्ति उस मार्ग पर जा सके।

ब्रह्मा वशिष्ठ विश्वामित्र और शुक्र यह चारों ऋषि अपने आप में अद्वितीय हैं। अतः इन्होंने सामान्य साधकों के प्रवेश को रोकने के लिए गायत्री के मार्ग को कीलित किया है, गायत्री को नहीं। जैसे मेघ का टुकड़ा हमारे नेत्रों को ही आच्छादित करता है सूर्य को नहीं। ठीक ऐसे ही गायत्री आदि महाशक्तियों का कीलन साधकों का ही कीलन है महाशक्ति का नहीं।

अतः साधक साधना से पहले गायत्री साधना के मार्ग को शाप विमुक्त करके ही इस मार्ग में प्रवृत्त हो। तब सफलता प्राप्ति में सुगमता हो जाएगी।

८२.#जप_यज्ञ_श्रेष्ठ_क्यों?

ज्ञानयज्ञ, जपयज्ञ तथा अग्निहोत्र आदि से जपयज्ञ को श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में यह

स्वीकार किया है कि यज्ञों में मैं जपयज्ञ हूं। जपयज्ञ श्रेष्ठ होने के अनेक कारण हैं--

१. ज्यादा सामग्री की आवश्यकता नहीं रहती।

२. इसमें जीव जंतुओं के भी आहत होने का डर नहीं है।

३. इसमें किसी विधि विधान में त्रुटि होने का भी डर नहीं है।

४. इसे गरीब से गरीब व्यक्ति भी कर सकता है।

५. इसमें पुरोहित आदि की भी आवश्यकता नहीं है।

इसीलिए निम्न सूक्तियां जप की महत्ता को ही प्रतिपादित करते हैं--

#जपतो_नास्ति_पातकम्

(जप करने वाले को पाप नहीं लगता)

#यज्ञानां_जपयज्ञोऽस्मि(यज्ञों में मैं जप यज्ञ हूं)

#यावन्त: कर्मयज्ञा: स्यु:   प्रदिष्टानि तपांसि च।

सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।

सब तप जप की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं है।

जप को #स्वाध्याय भी कहा गया है--#स्वाध्याय_स्यान्मंत्रजाप:।

#जपलक्षण

मन के मध्य मंत्र स्थित हो और मंत्र के मध्य में मन स्थित हो।

इस प्रकार मन और मंत्र के सम्मेलन की अवस्था ही जप है।

#मनो मध्ये स्थितं मंत्रो   मंत्रमध्ये स्थितं मन:।

मनोमंत्रसमायुक्तं   एतच्च जपलक्षणम्।।

#जप_के_शत्रु

नासिका ध्वनि, थूकना ,जम्हाई लेना, क्रोध ,निद्रा ,आलस्य , हिचकी, मद, पतित मनुष्य को देखना, कुत्ते और पापी व्यक्ति को देखना, यह सब जप में बाधा माने गए हैं। इनसे बचें।

अतः शांत चित्त से ही जप करें। आसन पर बैठकर और उचित दिशा में मुंह करके ही जप करें और जप के बाद आसन के नीचे की मिट्टी मस्तक पर लगाकर #ओम् शक्राय नमः ऐसा कहकर ही आसन छोड़ें।

माला जप के दौरान वस्त्र से ढकी रहे और सुमेरू उल्लंघन न हो । गुरु के मार्गदर्शन से ही जप के रहस्य को समझें।

जप से पूर्व माला का संस्कार अवश्य करें। संस्कारविधि ग्रंथों से या गुरु मुख से समझें।

#अन्य मंत्र सिद्ध किए जा सकते हैं किंतु गायत्री और वेद के समस्त मंत्र स्वयं सिद्ध हैं।

गायत्री मंत्र #चारों आश्रमों में स्थित व्यक्तियों के लिए उपयुक्त माना गया है। गृहस्थी और ब्रह्मचारी नित्य 108 बार अवश्य जपें। वानप्रस्थ और संन्यासी 1008 जप नित्य करें--

#गृहस्थो ब्रह्मचारी वा   शतमष्टोत्तरं जपेत्।

वानप्रस्थे यतिश्चैव   जपेदष्टसहस्रकम्।।

(जय मां वेदमाता) डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १५.०१.१९

८३#साधना_सिद्धि_रहस्य

।।१।।

आज अध्यात्म के क्षेत्र में साधना, यंत्र, मंत्र, तंत्र के नाम पर एक बहुत बड़ा व्यवसाय चल रहा है ।जितने भी आध्यात्मिक व्यक्तित्व स्वयं को वैश्विक स्तर पर घोषित करते हैं ,वे सब अपनी माला, चित्र, सिद्धयंत्र और सैकड़ों प्रकार की सामग्री के व्यापारी बने हुए हैं।

#निष्पक्ष रूप से भी विचार किया जाए तो हम देखते हैं कि जितने भी सिद्ध महात्मा हुए हैं उन्होंने कभी किसी पूजा की वस्तु का व्यवसायीकरण नहीं किया।

उन्होंने निस्वार्थ और इमानदारी पूर्वक केवल करुणावश होकर के किसी जरूरतमंद की सहायता की है ।और उनके पास कोई विपुल धन सामग्री भी नहीं थी ।वे प्रभु भक्ति में मस्त रहते हैं।

वास्तव में सच्ची भक्ति व परमात्मा से मिलन चाहिए तो दो ही चीजों की आवश्यकता होती है #सच्चा मन और #सच्चा मंत्र। मन सच्चा बनाना आपके अपने हाथ में हैं और सच्चे मंत्र के लिए आप किसी वैदिक विद्वान या बहुमुखी प्रतिभा के ईमानदार व्यक्ति से संपर्क करें।

यदि आपको साधना में सफलता चाहिए तो आपको एक योग्य गुरु की आवश्यकता रहती है।

योग्य गुरु का लक्षण मैं पूर्व की पोस्ट में बहुत बार बता चुका हूं ।

संक्षेप में जो व्यक्ति संस्कृत का विद्वान् हो, वैदिक ज्ञान संपन्न हो, जन्म और कर्म से ब्राह्मण हो, कामनाओं से परे और सच्चे मन का हो , जो शिष्य का हित कर सके और तत्वों का ज्ञान भी रखता हो वही गुरु बनाने योग्य है।

#मंत्र कैसा चाहिए ?

जिस देवता में आपकी रुचि हो और आपकी मानसिक शारीरिक व आध्यात्मिक कामनाओं की पूर्ति जिनसे पूर्ण हो सके, जिनके प्रति आपका झुकाव हो, उस देवता का मंत्र आप अपने गुरु से प्राप्त करें और उसका नियमित जप करें।

एक #विशेष बात ध्यान रखिए--

विभिन्न प्रकार की पुस्तकें, पत्रिकाएं आज बाजार में उपलब्ध हैं ।जिनके कवर पेज पर बहुत सुंदर फोटो यंत्र मंत्र तंत्र के लुभावने प्रयोग दिए रहते हैं। लेकिन मैंने गहन अध्ययन करके अनुभव किया है कि लगभग लगभग 95% पुस्तकें एक दूसरे की नकल है और उनमें मात्र छल कपट के अलावा और कुछ भी नहीं है।

मंत्र किसी देवता का है अशुद्ध है, प्रयोग किसी अन्य देवता के लिए किया गया है।

यक्षिणी के मंत्र को लक्ष्मी का मंत्र बताया किया गया है ।भूत प्रेतों के मंत्र को देवताओं के मंत्र लिख दिया गया है। कोई भी प्रयोग पूर्ण नहीं है और न ही मंत्र शुद्ध है।

और पत्रिका या पुस्तक के शुरू में ही लिख दिया गया है कि किसी भी साधना के लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है।

अतः मैं साधकों से अनुरोध करूंगा कि वह इधर उधर से उठाकर के किसी भी मंत्र की साधना प्रारंभ बिल्कुल न करें।

ऐसा उनके लिए घातक हो सकता है अथवा वर्षों के बाद भी कोई परिणाम न रहे ।समय व्यर्थ बर्बाद हो सकता है।

इसलिए देवता के मंत्र चयन में बहुत सावधानी बरतें और उस विद्वान से ही मंत्र प्राप्त करें जो उस मंत्र का साधक रहा हो।

ज्यादातर पुस्तकों में एक दूसरे की नकल है अशुद्धता है,अपूर्णता है और फल प्राप्ति की कोई गारंटी नहीं है। अतः इनसे बचें।

वर्षों पहले कौल कल्पतरू मान्य #रमादत्त शुक्ल जी ने #प्रयाग से प्रकाशित अपनी पत्रिका में डॉ नारायण दत्त श्रीमाली के पुस्तकों में दिए गए प्रयोगों को 100% मिथ्या सिद्ध किया था क्योंकि यंत्र मंत्र के लिए #सामग्री मंगवाए, #संपर्क करें, #साधना संपन्न करें ऐसे अनेकों लुभावने ऑफर श्रीमाली जी की पत्रिका में रहते हैं । श्री शुक्ल जी ने उनकी विधियों, मंत्रों में अनेकों प्रकार की अपूर्णता

मंत्रों में अनेकों त्रुटियां साबित की थी । अतः इस प्रकार की मनमानी विधियों और प्रयोगों से बचें ।

आसपास के किसी भी साधक से संपर्क करें ।

और साधना आप #क्यों करना चाहते हैं और #कौन सी साधना से आपको लाभ रहेगा इसके विषय में आगे बात करेंगे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली १६.०१.१९

#साधना_सिद्धि_रहस्य

।।२।।

रावण श्रीविद्या से दीक्षित था और मेघनाद भी अग्नि विद्या से दीक्षित था।

किंतु आचरण से हीन होने पर समस्त विद्याएं व्यक्ति को वैसे ही छोड़ देती हैं, जैसे आग लगने पर पेड़ को पक्षी त्याग देते हैं। अतः साधक यदि साधना में सफलता और आत्मकल्याण चाहता है तो अपना आचरण अवश्य ही स्वच्छ रखें।(जय भवानीशंकर)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २०.०१.१९

#साधना_और_सिद्धिरहस्य

।।३।।

किसी भी देवता की आराधना जब हम आरंभ करते हैं तो तीन स्तर के अनुभव हमें होते हैं-

प्रथम शारीरिक अथवा मानसिक संताप।

यह साधना की प्रारंभिक अवस्था है।

इस अवस्था में हमारे शरीर में ज्वर, रोग, संताप, मानसिक विचलन आदि लक्षण हो सकते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि हमारे पाप दग्ध हो करके हमारी साधना में बाधा डालते हैं।

यदि हम किसी देव की साधना करें तो सबसे पहले उस देवता के मंत्र को नित्यकर्म के रूप में नित्य प्रति 5 या 10 माला जाप करें। तब धीरे-धीरे हम मंत्र के प्रभाव को, आवेग को सहन करने में सक्षम हो जाएंगे।

तीन चार महीने करने के बाद ही आप किसी शुभ मुहूर्त में उसे मंत्र की सर्वांगीण साधना करें।

साधना की सफलता का दूसरा चरण किस देवता का दृष्टांत देना। अथवा स्वप्न आदि के रूप में आशीर्वाद देना।

और साधना की सफलता का तीसरा चरण है लक्ष्य प्राप्त हो जाना ।देव दर्शन ।

आत्मिक संतोष और चिरंतन आनंद प्राप्त होना।

एक बात तो स्पष्ट है कि जब भी हम साधना प्रारंभ करते हैं तो मंत्र के प्रभाव के रूप में कुछ ना कुछ परिवर्तन, स्वप्न, संकेत हमें प्राप्त हो जाता है ।

यदि ऐसा नहीं होता है तो संभव है कि साधना सही दिशा में नहीं जा रही। अथवा कोई त्रुटि रह गई है।

#अत्युत्कटसाधनाफलं_तत्क्षणं_भवति।

मैंने ऐसा अनेक बार स्वयं अनुभूत किया है।

जब मैं अघोर मंत्र साधना में लग्न था और साधना में अंतिम दौर में थी।

एक रात मैंने स्वप्न देखा कि मैं अपने घर से निकला मेरे हाथ में दो रुद्राक्ष की मालाएं थी। घर से लगभग 1 किलोमीटर दूर गांव का मंदिर और तीर्थ है। मैं यह मालाएं उस तीर्थ पर बैठे दिव्य अवधूत साधू को देना चाहता था।

ऐसा उद्देश्य करके मैं तुरंत घर से निकला। और तीर्थ की ओर चलने लगा। रस्ते के दोनों ओर अनेक साधु यह कहकर चिल्ला रहे थे कि ये मालाएं हमें दे दो। मैंने तीर्थ की ओर दौड़ना शुरू कर दिया । मैंने देखा कि नागा साधुओं का बड़ा झुंड मालाओं को छीनने के लिए मेरे पीछे पीछे दौड़ने लगा। मैं समझ गया था कि ये मुझे तीर्थ तक नहीं पहुंचने देंगे। मैं इष्टदेव का मानसिक जप करता हुआ और तेज दौड़ने लगा।बड़ी कठिनाई से मैं तीर्थ पर पहुंच सका।और वे मालाएं तीर्थ पर बैठे अवधूत के गले में पहना दी। अवधूत ने एक माला मेरे गले में पहनाई। मैंने उनके चरणों में अपना सिर रख दिया । अवधूत ने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा और कहा-- जितना जो चाहते हो वह हो

जाएगा।स्वप्न समाप्त हो गया सुबह के चार बजे थे।

#अत: समझ लें कि यदि साधना सही दिशा में चल रही है तो गुप्त/प्रकट संकेत प्राप्त होते हैं।देवता गुप्त/प्रकट दर्शन देते हैं ,ऐसा अनुभूत है।

इसमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि साधक सन्ध्यावंदन के अलावा अपने इष्ट देव का कम से कम एक घंटा तो जप अवश्य करे।यही सफलता का आधार है।

पिछले सप्ताह मेरे एक शिष्य ने रुद्रमंत्र का जप किया तो दीवार पर चंद्रमौलीश्वर शिव की आकृति उभर गयी।ऐसा अवश्य होगा, बशर्ते हम समझें।(चित्र देखें)।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २१.०१.१९

#साधना_और_सिद्धिरहस्य

।।४।।

दो प्रकार की साधना विश्व में प्रचलित है प्रथम ईश्वर कोटि के देवों की साधना दूसरी तामसिक भूत प्रेत आदि की साधना।

ईश्वर कोटि के देवों की साधना साधना माता पिता की प्रसन्नता के समान है। और भूत प्रेत आदि की साधना दुकानदारी के समान है।

ईश्वर कोटि में भगवान त्रिदेव उनके अवतार और पंच वैदिक देव आते हैं। इनको अपने शील,स्वभाव,कार्यों और सद्गुणों से पूजा मंत्र जप तप यज्ञ आदि से प्रसन्न किया जा सकता है । अर्थात् इनकी कृपा प्राप्त की जा सकती है ।

इन को वश में नहीं किया जा सकता यह वशीभूत होते हैं तो केवल और केवल प्रेम से।

हम इनकी पूजा जप तप करके यदि किसी गलत चीज की इच्छा प्रकट करेंगे तो यह हमारे कान पर प्यारा सा तमाचा भी लगा सकते हैं। जो देखने में तो हमें बुरा लगेगा लेकिन उसका परिणाम हमारे लिए ही हितकारक रहेगा।

यह ईश्वर कोटि के देव लोकान्तर में हमें सद्गति और मोक्ष प्रदान करते हैं।

दूसरे जो तामसिक देव है वह व्यापारी वर्ग है उनको हम पूजा आदि सामग्री चढ़ाएंगे तो वह हमारी कामना पूरी करेंगे।

कामना चाहे अच्छी हो या बुरी, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं। उसका परिणाम अच्छा हो या बुरा।#पैसा दो और सौदा लो ,यह उनका व्यापार है।वे मात्र व्यापारी हैं। इसमें साधक को दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ सकता है।

अतः इस भूत-प्रेत की साधना से दूर ही रहें तो अच्छा है। क्योंकि भगवान गीता में कहते हैं कि भूतों को पूजने वाले भूतों में ही मिल जायेंगे। बदमाशों का ग्रुप ज्वाइन करने के बाद भला कोई सुख शांति पूर्वक कैसे जी सकता है?

अतः सात्त्विक देवों की उपासना करें। इसमें सामान भी कम लगता है।

दो चीजें मात्र चाहिएंगी-#सच्चा_मन_और_सच्चा_मंत्र।

क्रमशः डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २४.१.१९

#साधना_सिद्धि_रहस्य

तात्त्विक निर्णय

।।५।।

#ऋग्वेद सर्वप्राचीन ,सर्वमान्य ग्रंथ है।#ऋगर्चनी_भवति इसकी ऋचाओं से देवताओं की स्तुति की जाती है।

लेकिन कर्मकांड और संस्कारों के महत्व को लेकर #यजुर्वेद का नाम सर्वोपरि है। जो साक्षात् सूर्य नारायण से प्राप्त हुआ है। देवाधिदेव महादेव की स्तुति इसी में है ।और जन्म से मृत्यु के बाद तक सद्गति विषयक कर्मकांड का यही आधार है।

#पर यह क्या ?

भगवान ने वेदों में सर्वश्रेष्ठ स्वयं को सामवेद स्वीकार किया--

#वेदानां_सामवेदोऽस्मि।

और भी स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि सब वेद मंत्रों से जो कमी रह जाती है उसका उद्धार सामवेद ही करता है।

थोड़ा और आगे चलिए। तीनों वेदों का अतिक्रमण करते हुए अथर्ववेद के बारे में लिखा है कि तीनों अग्नियां तीनों लोक और तीनों वेद अथर्ववेद की आधी मात्रा में ही विलीन हो जाते अर्थात् अथर्ववेद की आधी मात्रा भी तीनों वेदों से बढ़कर है--

#त्रयो_लोकास्त्रयो_देवास्त्रयो वेदास्त्रयोऽग्नय:।।

#मात्रार्धे_विलयं यान्ति वेदश्चाथर्वण: स्मृत:।।

१. #इस प्रकार हम देखते हैं कि सब वेदों की क्रमशः बड़ाई हुई है तो कौन सा वेद श्रेष्ठ है ?

आगे फिर आश्चर्यजनक तथ्य उद्घाटित हुआ है तंत्र ग्रंथों में--

#निष्फला: वेदा: कलौ युगे

अर्थात कलयुग में केवल तंत्र के ग्रंथ और तांत्रिक पूजा ही सार्थक है वैदिक पूजा निष्फल है।

२.#तो क्या वेद भी निष्फल हैं ??

आगे फिर तंत्र ग्रंथों को भी केवल मोहित करने वाले साबित किया गया है--

#करालभैरवं_चापि यामलञ्चापि यत्कृतम्।

एवं विधानि चान्यानि मोहनार्थानि यानि वै ।।

३. #तो_क्या तांत्रिक पूजा भी व्यर्थ है?

ठीक यही स्थिति देवताओं के विषय में भी है। कहीं #शिव को श्रेष्ठ लिखा गया है तो कहीं शक्ति को ,कहीं सूर्य को, तो कहीं गणेश को ।

४.#तो कौन देव श्रेष्ठ है?

तीर्थ स्थलों, पवित्र नदियों और पवित्र मठों के बारे में भी यही विरोधाभास है ।

सब तीर्थों को एक दूसरे से बढ़कर बताया गया है ।

५.#तो इनमें सर्वश्रेष्ठ तीर्थ, सर्वश्रेष्ठ, मठ व सर्वश्रेष्ठ नदी कौन सी है?

यही परिस्थिति हमें मंत्रों के बारे में देखने को मिलती है ।

कहीं पर द्वादश अक्षर मंत्र ,कहीं सुरक्षा मंत्र, कहीं बीज ,कहीं साबर ,कहीं डामर, इत्यादि मंत्रों को अपनी अपनी जगह सर्वोच्च घोषित किया गया है।

६.#तो सर्वश्रेष्ठ मंत्र कौनसा है?

इस कलयुग में कहीं चंडी और गणेश (#कलौ_चंडीविनायकौ)

कहीं केशव कीर्तन(#कलौ_केशवकीर्तनात्) कहीं नाम को आधार बनाया गया है।

७.#तो श्रेष्ठ मार्ग कौन सा है?

कहीं दान ,कहीं यज्ञ ,कहीं तप, कहीं जप,कहीं पूजा ,कहीं ध्यान, कहीं योग को सर्वोत्तम कहा गया है।

८.#तो सर्वश्रेष्ठ साधन कौन सा है?

तो क्या इन सब को छोड़कर प्रकृति पुरुष विवेक अथवा अद्वैतादि तत्त्वयुक्त #दर्शनशास्त्र श्रेष्ठ है?

अरे यह क्या?

दर्शन की विचारधारा पर चलने वाले व्यक्तियों को भी कुएं में गिरे हुए #पशु हैं ऐसा #शिव ने बताया गया है--

#षड्दर्शनमहाकूपे_ पतिता: पशव: प्रिये।

परमार्थं न जानन्ति दर्वी पाकरसं यथा।।

९. #तो क्या तत्व के दार्शनिक पशु मात्र है?

मित्रो! उपरोक्त तथा इन जैसे अनेकों विरोधाभासी प्रश्नों का तात्विक उत्तर यह है कि सब मंत्र , देवता , ग्रंथ ,पद्धतियां, तीर्थ,दर्शन सर्वमान्य हैं।

किसी #एक के भी निष्ठा पूर्वक सेवन से परम तत्व को प्राप्त किया जा सकता है।

अथवा यूं कहें कि सब मार्ग उस एक ईश्वर की ओर ही हमें ले जाते हैं।

जैसे सब नदियां सागर में मिलती है वैसे ही वह परमपिता परमात्मा सब पंथों, तत्वों, पद्धतियों का आधार है---

#नृणामेको_गम्यस्त्वमसि_पयसामर्णव_इव।।

प्रश्न यह उठता है मन में कि ऊपर यह इतनी एक दूसरे की निंदा क्यों की गई है।

इसका समाधान शास्त्र में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि यहां विवेचित पद्धति की प्रशंसा करना ही मुख्य लक्ष्य है।

दूसरे की निंदा यहां निंदा रूप में स्वीकार नहीं की गई है।

शास्त्र जब शिव की बात करता है तो शिव को ही पूर्णतया समर्पित हो जाता है।

जब शक्ति की बात करता है तो शक्ति को ही पूर्णतया समर्पित हो जाता है।

जब दान की बात करता है तो दान को ही पूर्णतया समर्पित हो जाता है ।

जब योग की बात करता है तो योग को पूर्णतया समर्पित हो जाता है।

वहांअन्य तत्वों की निंदा होते हुए भी निंदा नहीं मानी गई है बल्कि अपने विषय को सर्वश्रेष्ठ कहकर उसकी प्रशंसा करना ही उद्देश्य है---"#न_हि_निन्दा_निन्द्यं निन्दितुं प्रवर्त्तते अपि तु विधेयं स्तोतुम्" इति न्याय०।

अतः आप भ्रमित न हों।

यहां सभी मार्ग सर्वोत्तम और सर्वथा फलदाई हैं। आप अपनी सुविधा अनुसार उस पर चलेंगे तो वही आप को #पूर्णता प्रदान कर देगा। डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली   २७.१.१९

#साधना_सिद्धि_रहस्य।

स्वप्नदीक्षाचैतन्य

।।६।।

एक रात्रि स्वप्न में मंदिर में बैठे हुए एक ब्राह्मण को देखा और गौर किया कि उसका सिर का ऊपरी भाग अर्थात सहस्रार चक्र बहुत पिलपिला(अत्यधिक नरम) था।

मैंने उनसे पूछा हे!विप्रदेव आपके सिर का उपरि भाग इतना ढ़ीला क्यों है?

उन्होंने कोई कारण नहीं बताया और कहा यह मंत्र लो और इसका नियमित जप करो।

इसके जपने से भी तुम्हारा भी सिर ऐसे ही हो जाएगा।

स्वप्न सुबह के समय देखा गया था ।मैं तुरंत बिस्तर से उठ गया ।उस दिन से नियमित उस मंत्र का आचरण करने लगा। आज देखता हूं तो यह महसूस करता हूं कि वास्तव में काम क्रोध आदि जो कठोर ग्रंथियां थी। वह धीरे धीरे विलुप्त सी हो गई हैं, और एक अमृतमयानंद रस सहस्रार से सतत प्रवाहमान है जो सतत शरीर और अंतःकरण को आनंदातिरेक से आप्लावित करता रहता है।

मैं साधकों का ध्यान यहां इस तथ्य के लिए आकृष्ट करना चाहूंगा कि आपके पूर्व जन्म में उपार्जित #विद्या या आपके #इष्ट देव समय और संस्कार अनुकूल होने पर आपको #स्वप्न में #दीक्षा दे सकते हैं ।कोई गुप्त मंत्र बता सकते हैं।

यह मंत्र आपके #पूर्वजों द्वारा उपासित किसी विशेष विद्या से संबंधित भी हो सकता है। क्योंकि कई विद्याएं तीन या 7 पीढ़ी तक आगामी होनहार संस्कारवान् साधकों को कुल परंपरा से बंधी होने के कारण मार्गदर्शन करती हैं।

उस मंत्र को गुरु प्रदत्त मंत्र के समान ही मान कर उसे चैतन्य युक्त करें।

#चैतन्यविधि:-

स्वप्न में यदि मंत्र प्राप्त हो तो तुरंत उसे किसी साफ कागज पर लिख लें। और उस मंत्र प्राप्ति के बाद दोबारा मत सोएं।

स्नानादि करके तुरंत अपने पूजा कक्ष में ईश्वर की उपासना करें।

एक कलश के ऊपर वटपत्र पर इस मंत्र को गोरोचन, अष्टगंधादि से लिखकर स्थापित करें और उस कलश में भगवान दक्षिणामूर्ति का सन्निवेश आवाहन एवं पूजा करें।

फिर उस मंत्र का तीन बार उच्चारण करते हुए यह भावना करें कि साक्षात् भगवान् दक्षिणामूर्ति आपको यह मंत्र प्रदान कर रहे हैं।

तत्पश्चात मंत्र का 108 या 1008 बार उसका जप करें और गाय को गोग्रासादि प्रदान करें।

यदि योग्य सदाचार संपन्न सद्गुरु हैं तो उनसे भी इस स्वप्न में प्राप्त मंत्र को पुनः प्राप्त किया जा सकता है ।

ऐसा मंत्र अत्यंत प्रभावी होता है।

#स्वप्नलब्धे च कलशे गुरो:प्रणान् निवेशयेत्।

वटपत्रे कुंकुमेण लिखित्वा ग्रहणं शुभम्।

तत: सिद्धिमवाप्नोति चान्यथा विफलं भवेत्।।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २९.०१.१९

#साधना_सिद्धि_रहस्य

।।७।।

भारतीय धार्मिक साहित्य की दो ही धाराएं समस्त साहित्य को अंतर्भूत करती हैं- #निगम और #आगम।

निगम के अंदर क्रियात्मक रूप से आगम ही विलास करता है। निगम का अर्थ है वेद और आगम का अर्थ है तंत्र।

परमात्मा और देवताओं को प्रसन्न करने की तीन ही विधियां मुख्य रूप से हैं- #वैदिक #तांत्रिक और #मिश्रपद्धति।

आज वैदिक पद्धति के अनुसार बहुत ही कम क्रियाकलापों का आयोजन किया जाता है। तांत्रिक पूजा में हम मात्र तामसिक पूजा को ही ग्रहण करते हैं।

अधिकांशतः आज हमारे कर्मकांड में जो पद्धति हमें दिखाई देती है वह मिश्र पद्धति है।

अर्थात् उसमें शुद्ध सात्विक वेद सम्मत तंत्र पद्धति का मिश्रण है।

वास्तव में देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद सब विद्याओं का आधार है ।

उसमें समस्त पद्धतियों का मूलांश दिखाई देता है। पुराणसम्मत और स्मृति आधारित जो मिश्रित पूजा पद्धति आज प्रचलित है वह निगम और आगम का समन्वित स्वरूप ही है।

वेद में जो #षटकर्म बताए गए हैं उन्हीं का विकसित रूप तंत्र ग्रंथों में हमें दिखाई देता है।

तंत्र को मात्र जादू टोना समझ लेना मूर्खता है।

तंत्र में मुख्य देवता और उनके अनुचरों की उपासना की प्रक्रिया विस्तृत रूप से दिखाई देती है।

जहां निगम(वेद) में त्रिवर्णों का अधिकार है ।वहीं आगम(तंत्र) में स्त्री शूद्रादि समस्त साधकों का अधिकार निगम ग्रंथों में है।

तंत्र में वर्णित मारण मोहनादि क्रियाएं दुराचारी व्यक्तियों को संयमित करने के लिए ही हैं।

निजी स्वार्थ के लिए उनका प्रयोग करना घोर नरक के द्वार खोलना है।

वास्तव में तो एक साधक जब निश्चित होकर के सर्वतोभावेन अपने इष्ट के चरणों में स्वयं को समर्पित कर देता है तो उसके #योगक्षेम का वहन सर्वथा इष्टदेव करते हैं ।

फिर उन्हें किसी मुसीबत से घबराने की आवश्यकता नहीं है।

महर्षि दुर्वासा जैसा देवी का परम उपासक स्वयं #रुद्रांश , शास्त्रों में जिनको #क्रोधभट्टारक कहा है। इन्होंने जब क्रोधित होकर की अपनी ज्वलनशील #कृत्या राजा अम्बरीष के ऊपर छोड़ी तो आप जानते ही हैं कि अम्बरीष किसी तंत्र मंत्र विद्या में निपुण नहीं था।

केवल इष्टदेव की कृपा से वही कृत्या वापिस लौट कर के दुर्वासा को दर-दर भटकने के लिए मजबूर कर देती है।

अतः साधक अपने इष्टदेव के प्रति निष्ठा रखें ।फिर आप देखेंगे कि आपकी समस्त बाधाएं कैसे दूर हो जाती हैं आपको पता भी नहीं लगेगा। और एक विशेष घटना मैं उल्लिखित करना चाहूंगा--

मेरे वरिष्ठ साथी जब गुरुकुल में मेरी पहली पोस्टिंग हुई तो संस्कृत प्रवक्ता बी बी शर्मा जी उत्तर प्रदेश से उद्भट्ट विद्वान वहां पहले से ही कार्यरत थे। प्रवाहभरे संस्कृतभाषण में निपुण क्र्यादि धातुओं को दसों लकारों में आज भी एक श्वास में बोलने का #सामर्थ्य, ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी उन्होंने हर प्रकार से मेरी परीक्षा ली और स्वीकार किया कि मैं तो #हरियाणा वालों को वैसे ही समझता था आपको देखकर लगा कि आप सामर्थ्यवान् विद्वान् हैं।

बाद में हमारी घनिष्ठ मित्रता हो गई और उन्होंने मुझसे ज्योतिष भी विधिवत् सीखा।

शर्मा जी भगवती #दुर्गा के परम उपासक थे। रुद्री, सप्तशती और संहिताओं के अंश पूर्णतया कंठस्थ थे। दैनिक पूजा में दोनों ग्रंथों का सस्वर पाठ करते थे। उन्होंने अपनी आपबीती बताई कि किसी से वैर विरोध के चलते उनके ऊपर तंत्र प्रयोग किसी तांत्रिक ने कर दिया।

जब वह घर में अपनी पूजा शुरु करते तो तांत्रिक प्रत्यक्ष रूप से आकर के पूजा में विघ्न उपस्थित करने लगता। और चैलेंज करके कहता कि मेरे किये की काट बनारस तक कहीं नहीं है।

शर्मा जी ने ललकारते हुए कहा कि दुष्ट! यह #शिवनिर्माल्य का जल है। यदि तेरे ऊपर गिरा दिया तो तेरा वही हाल होगा जो गंधर्वराज पुष्पदंत का हुआ था।

तांत्रिक तुरंत अंतर्भूत हो गया।

पर शर्मा जी ने उसी दिन एक बड़ी भारी गलती कर दी। उन्होंने #चंडीपाठ ......#मारणे_विनियोग: ।

ऐसा कहकर अपने शत्रु को पराभूत करने के लिए प्रयोग किया।

शर्मा जी को रात में स्वप्न में भगवती आदेश हुआ कि तुमने ऐसा क्यों किया ?

क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं था ? स्वयं अपने हाथ से ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए था ? इस घटना के बाद शर्मा जी 1 साल तक विक्षिप्त अवस्था में रहे।

शर्मा जी इस घटना को बताते बताते मायूस हो जाते हैं ।और पूजा का प्रसंग चलने पर इसी घटना को बार-बार दोहराते हुए कहते हैं कि भगवती मुझसे रुष्ट हो गई हैं। वह बार-बार इस श्लोक को दोहराते हैं--
#रोगानशेषानपहंसि_तुष्टा_रुष्टा_तु_कामान्सकलानभिष्टान् ।

मैं उनसे बस यही कहता हूं कि ऐसा नहीं है शर्मा जी मां कभी अपने भक्त से रुष्ट नहीं हो सकती। आप जो कहते हो ऐसा नहीं है बल्कि ऐसा कहा है -#रोगानशेषानपहंसितुष्टा_ददासि_कामान्सकलानभिष्टान् ।

और भी--#कुपुत्रो_जायेत_क्वचिदपि_कुमाता_न_भवति ॥

मैं सुधी पाठकों से यही कहूंगा इष्ट देव की साधना निष्ठा पूर्वक करें और बाकी समस्याओं को उन्हीं पर छोड़ दें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली   ०१.०१ .१९

#साधना_और_सिद्धि

।।८।।

सनातन धर्म में और विश्व भर में 3 देव और तीन देवियों का ही विलास विभिन्न देवों के रूपों में परिलक्षित होता है।

#त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु शिव हैं और देवियां इन की शक्ति। इनका समष्टि रूप ही परमात्मा कहा गया है।

वही समस्त जड़ चेतन को व्याप्त करके स्थित है।

अलग अलग ब्रह्मण्ड के यही त्रिदेव हैं और यही शक्तियां हैं। आओ

इसी ब्रह्मांड को परिलक्षित कर के हम किंचित् विवेचना करें।

ब्रह्माजी दहाई के स्थान पर हैं, तो विष्णु जी सैंकडे के स्थान पर है और शिव #सहस्र के स्थान पर हैं। इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि 10 और 100 के मध्य में कितना अंतर है और सौ और हजार के मध्य में कितना।

सृष्टि प्रलय होता है तो ब्रह्माजी पहले चपेट में आते हैं फिर विष्णु तदनन्तर शिव। पर इन सबका साक्षी #सदाशिव हमेशा प्रवाहमान और विद्यमान रहता है। उन्हें ही महाकाल अथवा कामेश्वर कहा गया है। कामेश्वरी उनकी ही शक्ति है। सृष्टि प्रक्रिया जब तक रहती है तब तक सृष्टि प्रधान है और सृष्टि से निवृत्त होने पर शक्ति को अंदर समेटे हुए सदाशिव ही प्रधान है।

ठीक इसी अनुपात से संसार में ब्रह्मा जी की पूजा है और उनसे 10 गुणा विष्णु जी की पूजा है। और उनसे 10 गुना शिव की पूजा है।

अर्थात शिव की पूजा में समस्त प्राणी वर्ग की पूजा आ जाती कोई अधिकारी, कोई छोटे से छोटा देवता ऐसा नहीं बचता जो शिव का अनुचर न हो ।

यदि हम ब्रह्मा और विष्णु को पूज कर संतुष्ट हो जाते हैं तो समझ ले यह हमारी हजार में से 100 अंक तक की ही पूजा है। अर्थात मात्र 10% पूजा ही हमने की है।

अतः है यदि हमने संपूर्ण पूजा करने की इच्छा है तो शिव की पूजा बिना उसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

नगर के समस्त छोटे बड़े देवी देवता, जंगल के समस्त छोटे बड़े देवी देवता ,चौराहे आदि के समस्त छोटे बड़े देवी देवता, पर्वत, नदी ,नाला ,आकाश, पाताल आदि के समस्त छोटे-बड़े देवी देवता शिव और शक्ति का ही स्वरुप है। यदि हमें पूर्णतया उपद्रवों से मुक्ति चाहिए तो इन सब की पूजा का दायित्व भी हमारा बनता है।

तो हमारे मन में प्रश्न उठता है कि समस्त शिव में सृष्टि को हम कैसे प्रसन्न करें। उसका सीधा सा उत्तर है #शुक्लयजुर्वेदीय_रुद्राष्टाध्यायी।

रुद्राष्टाध्यायी को अमृत कहा गया है ।

और उसमें समस्त #शिवमय सृष्टि के स्वरूपों को नमस्कार किया गया है। कोई ऐसा स्वरुप जड़ चेतन नहीं बचता जिसको शिवस्वरूप मान करके रुद्री में नमन न किया गया हो।

रुद्री पाठ शिवमय ब्रह्मांड को प्रसन्न करने का अनोखा और छोटा सा साधन है।

इसलिए प्रत्येक द्विज को यज्ञोपवित संस्कार संपन्न हो करके नित्य प्रति रुद्री#पाठ अवश्य करना चाहिए। (जो यज्ञोपवीत पहने नहीं है वे समस्त व्यक्ति और स्त्रियां शिव सहस्रनाम का पाठ कर के समकक्ष फल प्राप्त कर सकते हैं।)

इसी प्रकार सरस्वती जी की पूजा से 10 गुना अधिक लक्ष्मी जी की पूजा है ।और लक्ष्मी जी की पूजा से 10 गुना अधिक आदिशक्ति की पूजा है। और आदिशक्ति के भी समस्त स्वरूपों की पूजा बिना व्यक्ति अपने घर परिवार में निर्विघ्नता को प्राप्त नहीं हो सकता।

अतः आदि शक्ति के समस्त रूपों की पूजा का छोटा और सरल सा साधन #दुर्गासप्तशती का पाठ है।

दुर्गा सप्तशती के पाठ में सबका अधिकार है ।इसमें चातुर्वणिक, स्त्री, चांडाल आदि समस्त भक्त इस पाठ को कर सकते हैं।

स्वयं समर्थ न होने पर ब्राह्मण आदि से इसकी व्यवस्था करवाएं।

एक और विशेष बात यह है कि ऐसा कोई देव नहीं बचता जिस की स्तुति रूद्रपाठ में न हो और ऐसी कोई देवी नहीं बचती जिनकी स्तुति दुर्गा सप्तशती में न हो आता है ।

इसलिए रुद्री और दुर्गासप्तशती की महत्ता को देखते हुए भारतवर्ष के प्रत्येक घर में सदियों से इनके पाठ की परंपरा रही है।

और जहां इन दोनों का पाठ प्रतिवर्ष जिस घर में होता है वहां कोई उपद्रव या विघ्न उपस्थित नहीं हो सकता ।

वह घर हमेशा फलता फूलता है अतः इनके पाठ की व्यवस्था प्रत्येक ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थ, संन्यासी को अपने निवास में करनी चाहिए।

यद्यपि सनातन हिंदू धर्म के प्रचार प्रसार में आदि गुरु #शंकराचार्य जी का महत्व सर्वाधिक है तथापि रुद्रीपाठ और सप्तशती पाठ की इस परंपरा को सुदूर गांव गांव में प्रसारित करने का सर्वाधिक सहयोग उन #अनपढ़ ब्राह्मणों को ही है जो आज भी शंकराचार्य जी के नाम से परिचित नहीं है, लेकिन रुद्री और दुर्गा सप्तशती जैसे दिव्य ग्रंथ उन्हें #कंठस्थ है ।

और उन्होंने शंकराचार्य जी से पूर्व और बाद तक भी इस परंपरा को जीवित रखा। मेरा उन ब्राह्मणों को भी सादर #नमन है।

और उनकी #परंपरा को भी।

इन दोनों ग्रंथों की महत्ता क्यों है? यह मैंने इस लेख में स्पष्ट किया है।

सबसे #गहनतम रहस्य और #लघुतम उपाय यहां बताया है जिससे यह लोक और परलोक दोनों सुधर जाते हैं।

भगवती पराचिति की प्रेरणा से जो पूजाकाल में अंतर्मन में उद्भूत होता है उसे योग्य साधकों के समक्ष रख देता हूं।।इति शम्।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०५.०२.१९

#साधना_और_सिद्धि।।

।।९।।

(#शहीदों को समर्पित)

लगभग दो सौ साल पुरानी बात है। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पावन भूमि पर #बारवा गांव में रात दस बजे के लगभग अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित सेना की एक टुकड़ी ने आकर गांव के पास मैदान में अपने तम्बू गाड़ दिए।

पूरा मैदान छावनी में तब्दील हो गया।सेना के राजा ने गांव वालों से किसी #वैदिक ब्राह्मण को अपनी पूजा के निमित्त भेजने का निर्देश दिया।

गांव वालों ने गांवके एक वैदिक ब्राह्मण को उनकी पूजा के लिए भेज दिया। ब्राह्मण उस सेना के राजा के पास पहुंचा।

राजा ने सत्कारपूर्वक ब्राह्मण को ५१ चांदी के सिक्के भेंट किये। और अनुरोध किया कि आज से आप पर हमारे निमित्त पूजा की जिम्मेदारी रहेगी।ब्राह्मण विदा होकर घर आ गया।अगले दिन गांव वालों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। क्योंकि जहां लाव-लश्कर और राजा की सेना रूकी हुई थी वह मैदान बिल्कुल खाली था।सेना रात में आई और सुबह गायब हो गई।इसका कोई सुबूत भी मैदान में नहीं था।राजा #कौन था ? कहां का था? कहां से आया? कहां गया?इतनी बड़ी सेना अपने तम्बू उखाड़ कर बिना भनक लगे कहां गायब हो गई?? पड़ोसी गांवों से पूछा तो सबने कहा कि उन्होंने किसी ऐसी सेना को आते जाते नहीं देखा। इस घटना से गांव वाले अचम्भित रह गये।

बात आई गई हो गई।

कुछ दिन बाद वह ब्राह्मण अपने खेत में हल चला रहा था कि अचानक एक सांप ने उसको काट लिया।

झाड़ फूंक वाले को बुलाया गया तो उसे दुत्कारते हुए #आवेशित सा होकर ब्राह्मण के माध्यम से उसी सेना के राजा ने कहा--

हम ऐतिहासिक #योद्धा हैं जो देशसेवा में आजीवन समर्पित रहे हैं, हमें और इन वीर #सैनिकों को देवपद प्राप्त हो गया है।

#इस ब्राह्मण को हमारी पूजा के लिए दक्षिणा दी थी।

तो हमारी पूजा के लिए गांववाले मंदिर बनाएं तथा इसको पूजा का दायित्व सौंपें।

गांव वाले पहली घटना से ही हैरान थे। उन्होंने तुरंत स्वीकार कर लिया।

आज सात पीढ़ी के करीब हो गया ।उन योद्धा राजाओं का मंदिर गांव में आज भी पूजित है।और उसी ब्राह्मण कुल के पुजारी पूजा का दायित्व संभाले हुए हैं।

इस ऐतिहासिक तथ्य को कोई भी #बारवा (कुरुक्षेत्र, हरियाणा)गांव में जाकर परख सकता है।

एक शिष्य के पूछने पर कि शहीदों की मृत्यूपरांत क्या गति होती है तो मैंने उपर्युक्त आख्यान सुनाते हुए कहा कि वे वीर योद्धा देवसेना के उच्च पद प्राप्त करके #देवस्वरूप हो जाते हैं।

वराह पुराण में कहा गया है---

#ब्राह्मणार्थे_गवार्थे_वा_राष्ट्रार्थे_निधनङ्गतः ।।

#शक्रस्य_ह्यमरावत्यां_निवेदयत_मा_चिरम् ।।

जो गौ, ब्राह्मण व राष्ट्र के लिए प्राणत्याग करते हैं वे इंद्रराज की सेना में #देवपद प्राप्त कर लेते हैं।

(समस्त शहीदों को समर्पण एवं प्रणामांजलि)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली

१८.२.१९

#साधना_और_सिद्धि।।

।।१०।।

चार आश्रम प्रसिद्ध ही हैं। जिनका क्रमिक आचरण सर्वसुलभ मुक्ति का आस्पद् है।

अतः अपने बच्चों को इसमें अवश्य प्रवृत्त करें।

#ब्रह्मचर्य:- #वेदादय_एव_ब्रह्म।#तत्र_चरणमेव_ब्रह्मचर्यम्।

वेदादि ही ब्रह्म है। उसमें विचरण ही ब्रह्मचर्यत्व है।

अतः सन्तान को यथासमय यज्ञोपवीत संस्कार करवाकर वेदाध्ययन में लगाएं।

#गृहस्थ- कुलदेव , गृहदेव, ग्रामदेवादि की वंदना एवं मर्यादित आचरण ही गृहस्थ है। यह समान कुल,जाति आधारित ही शास्त्रोक्त है।

#वानप्रस्थ:-

गृह भार को पुत्र-रत्न पर सौंपकर गृहदेवता, ग्रामदेवता के अतिरिक्त वनदेवतादि की उपासना एवं तपश्चर्या वानप्रस्थ है।घर के झगड़ो से दूर हो जाना।

#संन्यास:- कामनाओं का त्याग करके निष्काम कर्म तपादि करना ही संन्यास है। इसमें गृह,स्थान,वन,व्यक्तिविशेष,देश विशेष का कोई मोह नहीं रहना चाहिए।

सर्वकालिक,सर्वदेश,सर्ववस्तु में परमात्मा को समदृष्टि से अनुभव करना ही संन्यास है।(निवृत्ति मार्गी ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास में भी आ सकते हैं)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २३.२.१९

८४#सारतत्त्व

शास्त्रोक्त विधि के बिना मनमाना कर्म करने से उसके फल को निर्ऋति देवता(दुर्भाग्य की देवता,अलक्ष्मी #नैर्ऋत्यकोण की स्वामिनी) हर लेती हैं और शिव की आज्ञा से वह फल राक्षसों को मिलता है । इससे राक्षसों की पुष्टि होती है।

#निर्ऋतिर्विधिविहीनानां

फलं हरति कर्मणाम्।

निशाचराधिपत्यं च

कुरुते शिवाज्ञया ।।

इसलिए प्रत्येक कर्म को शास्त्रोक्त विधि से ही संपन्न करें विधि ज्ञात न हो तो किसी सदाचारी विद्वान से परामर्श लें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २.३.१९

८५#कुंभ_महापर्व_यात्रा

कुंभ महापर्व के लिए समय की व्यस्तता के कारण काफी कम समय ही प्रयागराज की पावन धरा पर बीता। बसंत पंचमी से पहली दोपहर वहां पहुंचे । गंगा स्नान के बाद पुरी पीठाधीश्वर पूज्यपाद् शंकराचार्य #निश्चलानंद सरस्वती जी के सदुपदेश से लाभान्वित हुए।

उनकी व्यथा स्पष्ट थी कि सभी राजनेता वोटों के लिए जब जालीदार टोपी पहन सकते हैं तब यदि आप संगठित हों तो क्या वे हिंदुधर्म को संरक्षित करने में अपना योगदान क्यों नहीं दे सकते।

दूसरी व्यथा थी कि आद्य जगद्गुरू शंकराचार्य जी ने पहली सेना हिंदू धर्म के संरक्षण हेतू नागा साधुओं की तैयार की , लेकिन आज उनकी दुर्दशा देखिए।वे हमारे सैनिक होकर भी हम सेनापतियों की ही अवहेलना करते हैं।

दूसरी सेना गुरु गोविंद सिंह जी ने हिंदुओं के संरक्षण के लिए सिक्खों को सैनिकों के रूप में उद्घोषित किया। वे भी आज मूल लक्ष्य से दूर हैं।

तीसरी सेना RSS हिंदुओं के लिए ही तैयार हुई। पर आज वे भी कहां लक्ष्य पर खड़े हैं?

शाम को यतिचक्रचूड़ामणि पूज्य स्वामी करपात्री जी महाराज जी के द्वारा स्थापित धर्मसंघ फाऊंडेशन द्वारा आयोजित #ब्रह्मास्त्र_महाविद्या_महायज्ञ का दर्शन किया और वर्तमान अध्यक्ष और संचालक #समर्थश्री_स्वामी_त्र्यम्बकेश्वर_चैतन्य_जी_महाराज जी से भेंट करके उन्हें अपने ग्रंथ भेंट किये। महाराज श्री ने #ललिताम्बाशतकं को बडी़ गहनता के साथ लयबद्ध रूप में पढ़ा, और कई श्लोंकों पर व्याकरणादि विषय में परिचर्चा की।महाराजश्री का व्याकरणादि ज्ञान अद्वितीय था।उन्होनें वहीं बैठे बैठे मे मेरी रचना की प्रशंसा में कई श्लोक तुरंत बनाकर सुनाए और कहा -- भैया, आपका नाम कई छंदों में श्लोकरचना हेतू अनुकूल है।

महाराजश्री का #सद्यकवित्व अद्भुत था।

#महाराजश्री अद्वितीय संस्कृत विद्वान्,विद्वानों के सत्कारक,वीतराग तथा विशिष्ट दार्शनिक हैं।

अब पता लगा कि संगम में सरस्वती जी लुप्त नहीं हैं अपितु ऐसे #दिव्य_संन्यासियों के उपदेश व आशीर्वाद वाणी रूप में सतत प्रवाहित है।

महाराजश्री का सारस्वतिक आशीर्वाद पाकर मैंने संगमस्नान की पूर्णता को प्राप्त कर लिया।

कई और संतों , महापुरुषों के दर्शन की इच्छा समयाभाव की भेंट चढ़ गई।

#महाराजश्री के आशीर्वाद से स्वंय को गौरवान्वित महसूस करता हूं कि अभी पारखी वसुंधरा पर विराजमान हैं।

कुल मिलाकर यात्रा शानदार रही।

संलग्न:-

(महाराजश्री द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद प्रशस्ति)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली ११.२.१९

८६

श्री महा त्रिपुरसुन्दरी ललिता माँ #जयन्ती पर सबको शुभकामनाएं

भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की श्रीयन्त्र के रूप में आराधना करने की परम्परा पुरातन काल से ही चली आ रही है। मान्यता है कि जगज्जननी माँ ललिता का प्रादुर्भाव माघमास की पूर्णिमा को हुआ था।

आद्याशक्ति भगवती ललिताम्बा की जयंती तिथि को इन भगवती की विशेष आराधना की जाती है। श्रीयंत्र-निवासिनी भगवती षोडशी महाविद्या ही त्रिपुराम्बा, श्रीविद्या, ललिता, महात्रिपुरसुन्दरी, श्रीमाता, त्रिपुरा आदि नामों से सुविख्यात हैं। 'ललिता' नाम की व्युत्पत्ति पद्मपुराण में कही गयी है- 'लोकानतीत्य ललते ललिता तेन चोच्यते।' जो संसार से अधिक शोभाशाली हैं, वही भगवती ललिता हैं।

कमल के आसन पर विराजमान, प्रसन्न मुखमण्डल वाली, कमल-दल के सदृश विशाल नेत्रों वाली, स्वर्ण के समान आभा वाली, पीतवर्ण के वस्त्र धारण करने वाली, अपने कोमल हाथ में स्वर्णिम कमल धारण करने वाली, सुन्दर शरीरावायव से सुशोभित, सभी प्रकार के आभूषणों से अलङ्कृत, निरन्तर अभय प्रदान करने वाली, भक्तों के प्रति कोमल स्वभाव वाली, शान्त मूर्ति, सभी देवताओं से नमस्कृत तथा सम्पूर्ण सम्पदा प्रदान करने वाली भवानी श्रीविद्या का ध्यान करना चाहिये।

श्रीविद्याके लीलाविग्रह तो अनन्त हैं। श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ललिता महाविद्या के विषय में कुछ भी लिखना सूर्यदेव को दीप दिखाने जैसा है क्योंकि अनंत का जितना भी वर्णन करें कम ही है। परंतु ऐसा होने पर भी ललिताम्बा की जो महिमा वर्णित हुई है ब्रह्माण्डपुराण, त्रिपुरारहस्य आदि पुराणेतिहासों में, उसके माध्यम से इन महात्रिपुरसुन्दरी मां की भक्ति में हम लग जाएं तो निश्चय ही जीवन सफल है। ललिता मां के प्रादुर्भाव के सन्दर्भ में ब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखण्ड में जो मुख्य कथा वर्णित की गई है यहां प्रस्तुत है-

पूर्वकाल में शिवजी की क्रोधाग्नि द्वारा दग्ध काम की उस भस्म से गणेशजी के साथ खेलने के लिये भगवती पार्वती जी ने एक पुतला बनाया और उसको प्राणयुक्त कर दिया। तब उस तमोगुणी पिण्ड में भगवती रमा के द्वारा शापित माणिक्यशेखर के जीवन का प्रवेश होने से पिण्ड ने भयंकर रूप धारण कर लिया। यही भण्डासुर की उत्पत्ति का निमित्त बना।

उस भण्ड नाम के असुर ने श्रीशिवशंकरजी की आराधना की और उनसे अभय वर प्राप्त कर त्रिलोकाधिपत्य करते हुए देवताओं के हविर्भाग का भी स्वयमेव भोग करना आरम्भ किया। दुष्ट भण्डासुर जब इन्द्राणी का हरण करने की सोचने लगा तो इन्द्राणी उस असुर के डर से गौरी के निकट आश्रयार्थ गयीं। इधर भण्ड ने विशुक्र को पृथिवी का और विषङ्ग को पाताल का आधिपत्य दिया। उस दुष्ट ने स्वयं इन्द्रासन पर आरूढ़ होकर इन्द्रादि देवताओं को अपनी पालकी ढोने पर नियुक्त किया। दैत्यगुरु शुक्राचार्यजी ने दयावश होकर इन्द्रादिकों को इस दुर्गति से मुक्त किया।

असुरों की मूल राजधानी शोणितपुर को ही मयासुर के द्वारा स्वर्ग से भी सुन्दर बनवाकर उसका नया नाम शून्यकपुर रखकर वहीं पर भण्ड दैत्य राज्य करने लगा। स्वर्ग को उसने नष्ट कर डाला। दिक्पालों के स्थान में अपने बनाये हुए दैत्यों को ही उसने बैठाया। इस प्रकार एक सौ पाँच ब्रह्माण्डों पर उसने आक्रमण किया और उनको अपने अधिकार में कर लिया।

अनन्तर भण्ड दैत्य ने फिर घोर तपस्या कर शिवजी से अमरत्व का वरदान पाया। इन्द्राणी ने गौरी का आश्रय पाया है, यह सुनकर दुष्ट भण्डासुर दैत्यसेना के साथ कैलास गया और गणेशजी की भर्त्सना कर उनसे इन्द्राणी को अपने लिये माँगने लगा। भण्डासुर की ऐसी दुष्टता देखकर गणेशजी क्रुद्ध होकर प्रमथादि गणों को साथ लेते हुए उससे युद्ध करने लगे। अपने पुत्र गणेश को युद्धप्रवृत्त देखकर गणेशजी की सहायता करने के लिये भगवती गौरी अपनी कोटि-कोटि शक्तियों के साथ युद्धस्थल में आकर दैत्यों से युद्ध करने लगीं। इधर गणेशजी की गदा के प्रहार से मूर्च्छित होकर पुन: प्रकृतिस्थ होते ही भण्डासुर ने उनको अङ्कुशाघात से गिराया। माता गौरी यह देखकर बहुत क्रुद्ध हुईं और हुङ्कार से भण्डासुर को बाँधकर ज्यों ही मारने के लिये उद्यत हुईं त्यों ही ब्रह्माजी ने गौरी को शङ्करजी के दिये हुए अमरत्व-वर-प्रदान का स्मरण दिलाया। शिवजी के वरदान का मान रखने के लिये विवश होकर गौरी ने भण्डासुर को छोड़ दिया।

इस प्रकार भण्ड दैत्य से त्रस्त होकर इन्द्रादि देवों ने देवगुरु वृहस्पतिजी की आज्ञानुसार हिमाचल में त्रिपुरादेवी के उद्देश्य से

'तान्त्रिक महायाग' करना आरम्भ किया। अन्तिम दिन याग समाप्त कर जब देवगण श्रीमाता की स्तुति कर रहे थे, इतने ही में ज्वाला के बीच से महाशब्दपूर्वक अत्यन्त तेजस्विनी त्रिपुराम्बा प्रादुर्भूत हुईं। उस महाशब्द को सुनकर तथा उस लोकोत्तर प्रकाशपुञ्ज को देखकर देवगुरु वृहस्पति के सिवा सब देवतागण बधिर तथा अन्ध होते हुए मूर्च्छित हो गये।

श्रीमाता ललिताम्बा ने देवों की प्रार्थना के अनुसार श्री यंत्र के समान बने श्रीचक्रात्मक रथ पर आरुढ़ होकर भण्ड दैत्य को मारने के लिये प्रस्थान किया। श्रीमाता के कुमार श्रीमहागणपति तथा कुमारी बालाम्बा ने भी युद्ध में बहुत पराक्रम दिखाया। श्रीमाता की मुख्य दो शक्तियों- १- मन्त्रिणी - 'राजमातङ्गीश्वरी', २- दण्डिनी - 'वाराही' और अन्य अनेक शक्तियों ने अपने प्रबल पराक्रम के द्वारा दैत्य-सैन्य में खलबली मचा दी। जब श्रीमाता ने महाकामेश्वरास्त्र चलाया, तब सपरिवार भण्ड दैत्य मारा गया।

साक्षात् ललिताम्बा को समक्ष देख देवगुरु तथा ब्रह्माजी ने हर्षगद्गद स्वर से श्रीमाता की स्तुति की। श्रीमाता ने प्रसन्न होकर उनका अभीष्ट पूछा। उन्होंने भी भण्डासुर की कथा सुनाकर उसके नाश की प्रार्थना की। माता ने भी उस दुष्ट असुर को मारना स्वीकार किया और मूर्च्छित इन्द्रादि देवों को अपनी अमृतमय कृपादृष्टि से चैतन्य करते हुए अपने दर्शन की योग्यता प्रदान करने के लिये उनको विशेष रूप से तपस्या करने की आवश्यकता बतलायी। देवता लोग भी माता की आज्ञानुसार तपस्या करने लगे। इधर भण्डासुर ने देवों पर धावा बोल दिया।

कोटि-कोटि सैनिकों के साथ आते हुए भण्ड दैत्य को देखकर देवों ने त्रिपुराम्बा की प्रार्थना करते हुए अपने शरीर अग्निकुण्ड में अर्पित कर दिये। भगवती त्रिपुराम्बा की आज्ञानुसार 'ज्वालामालिनी' शक्ति ने देवगणों के आसमन्तात्(चारों ओर) एक ज्वालामण्डल प्रकट किया। देवों को ज्वाला में भस्मीभूत समझकर भण्ड दैत्य सैन्य के साथ वापस चला गया। दैत्य के जाने के बाद देवतागण जब अपने अवशिष्टाङ्गों की पूर्णाहुति करने के लिये ज्यों ही उद्यत हुए त्यों ही ज्वाला के मध्य से तडित्पुञ्जनिभा 'त्रिपुराम्बा' आविर्भूत हुईं। देव लोगों ने जयघोषपूर्वक पूजनादिद्वारा भगवती ललिता की स्तुति की। देवों को अपना दर्शन सुलभ हो इसलिये श्रीमाता ने विश्वकर्मा के द्वारा सुमेरु शिखर पर निर्मित श्रीनगर में सर्वदा निवास करना स्वीकार किया।

आद्याशक्ति भगवती ललिताम्बा की जयंती तिथि को इन भगवती की विशेष आराधना की जाती है। श्रीयंत्र-निवासिनी भगवती षोडशी महाविद्या ही त्रिपुराम्बा, श्रीविद्या, ललिता, महात्रिपुरसुन्दरी, श्रीमाता, त्रिपुरा आदि नामों से सुविख्यात हैं।

उसके बाद श्रीमाता ललिताम्बा ने देवों की प्रार्थना के अनुसार श्रीचक्रात्मक रथ पर आरुढ़ होकर भण्ड दैत्य को मारने के लिये प्रस्थान किया। महाभयानक युद्ध प्रारम्भ हुआ। श्रीमाता के कुमार श्रीमहागणपति तथा कुमारी बालाम्बा ने भी युद्ध में बहुत पराक्रम दिखाया। श्रीमाता की मुख्य दो शक्तियों- १- मन्त्रिणी - 'राजमातङ्गीश्वरी', २- दण्डिनी - 'वाराही' और अन्य अनेक शक्तियों ने अपने प्रबल पराक्रम के द्वारा दैत्य-सैन्य में खलबली मचा दी।

अन्त में बड़ी कठिनता उपस्थित होने पर जब श्रीमाता ने महाकामेश्वरास्त्र चलाया, तब सपरिवार भण्ड दैत्य मारा गया। देवों का भय दूर हुआ और वे पूर्ववत् स्वर्ग में अपने-अपने पदों पर अधिष्ठित हो गये। दैत्य द्वारा आक्रान्त एक सौ पाँच ब्रह्माण्डों में भी पुनः चैन की वंशी बजने लगी।

इस प्रकार संक्षेप में यहाँ ये कथा बतलाई गई है। विस्तृत विवरण के लिये विशेष जिज्ञासुओं को त्रिपुरारहस्य का माहात्म्यखण्ड देखना चाहिये। तन्त्र ग्रन्थों में ललिता भगवती के प्रातः स्मरण, अष्टक, कवच, हृदय, खड्गमाला शतनाम, सहस्रनाम, मानसपूजन आदि बहुत से उत्तम स्तोत्र मिलते हैं जिनके माध्यम से भगवती त्रिपुरसुन्दरी की स्तोत्रात्मक स्तुति उत्तम प्रकार से की जाती है। आद्य शंकराचार्य जी द्वारा रचित 'सौंदर्य लहरी' नामक स्तोत्र तो सौ श्लोकों का है।

ध्यान

पराम्बिका भगवती ललिताम्बा के दो प्रकार के ध्यान यहां प्रस्तुत हैं-

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्

तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।

पाणिभ्यामलिपूर्णत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं

सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।।

अर्थात् सिन्दूर के समान अरुण विग्रह वाली, तीन नेत्रों से सम्पन्न, माणिक्यजटित प्रकाशमान मुकुट तथा चन्द्रमा से सुशोभित मस्तकवाली, मुसकानयुक्त मुखमण्डल एवं स्थूल वक्षःस्थलवाली, अपने दोनों हाथों में से एक हाथ में मधु से परिपूर्ण रत्ननिर्मित मधूकलश तथा दूसरे हाथ में लाल कमल धारण करने वाली ओर रत्नमय घट पर अपना रक्त चरण रखकर सुशोभित होने वाली शान्तस्वभाव भगवती पराम्बिका का ध्यान करना चाहिये।

ध्यायेत्पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम्। सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीं श्रीविद्यां शान्तमूर्तिं सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम्॥ 'ललिता' नाम की व्युत्पत्ति पद्मपुराण में कही गयी है- 'लोकानतीत्य ललते ललिता तेन चोच्यते।' जो संसार से अधिक शोभाशाली हैं, वही भगवती ललिता हैं।

ध्यायेत्पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं

हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम्।

सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीं

श्रीविद्यां शान्तमूर्तिं सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम्॥

अर्थात् कमल के आसन पर विराजमान, प्रसन्न मुखमण्डल वाली, कमल-दल के

सदृश विशाल नेत्रों वाली, स्वर्ण के समान आभा वाली, पीतवर्ण के वस्त्र धारण करने वाली, अपने कोमल हाथ में स्वर्णिम कमल धारण करने वाली, सुन्दर शरीरावायव से सुशोभित, सभी प्रकार के आभूषणों से अलङ्कृत, निरन्तर अभय प्रदान करने वाली, भक्तों के प्रति कोमल स्वभाव वाली, शान्त मूर्ति, सभी देवताओं से नमस्कृत तथा सम्पूर्ण सम्पदा प्रदान करने वाली भवानी श्रीविद्या का ध्यान करना चाहिये।

वेद भी इन महात्रिपुरसुन्दरी मां का वर्णन कर सकने में असमर्थ हैं। भक्तों को ललिता महाविद्या प्रसन्न होकर सब कुछ दे देती हैं।

श्रीललिता जयंती पर 'श्रीमाता ललिताम्बा प्रीयताम्' कहते हुए भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी के श्री चरणों में हमारा बारम्बार प्रणाम है....

८७#दीक्षित_अदीक्षित_सबके_महाकल्याण_का_मंत्र।।

किस मंत्र को जपें ? किसको गुरु बनाएं?

क्या बिना गुरु कल्याण नहीं है? इत्यादि इत्यादि प्रश्न इस कलिकाल में साधकों को परेशान किए हुए हैं। अच्छा गुरु विद्यमान है तो अच्छे शिष्य नहीं मिलते। अच्छा शिष्य विद्यमान है तो अच्छे गुरु नहीं मिल रहे।

इसी कशमकश में जीवन मुट्ठी में आए रेत की तरह की खिसकता जा रहा है।

तो आइए आज आप सब साधकों के सामने उस दिव्य मंत्र का उपदेश कर रहे हैं।

जिसको दीक्षित अदीक्षित कोई भी अधिकार पूर्वक जप सकता है ।

जिसके जपने मात्र से ही समस्त मंत्र के जप का फल प्राप्त हो जाता है।

इसका यदि आप निष्ठा पूर्वक जप करते हैं तो परमात्मा की कृपा आप पर पूर्ण रूप से हो जाएगी।

इस मंत्र के उस परम रहस्य को जो आज तक छुपा हुआ था, आपके सामने समस्त साधकों की भलाई के लिए उद्घाटित कर रहा हूं।

मंत्र है देवाधिदेव महादेव का पंचाक्षर मंत्र--

स्त्रियां और जिनका जनेऊ संस्कार नहीं हुआ है वे समस्त (जाति का कोई बंधन नहीं) साधक

#शिवाय_नम:।

इस पंचाक्षर मंत्र का जप करें।

#शिकार_वदना_देवी

वायकारभुजद्वयी।

विसर्गदेहमध्या च

नमकारपदद्वयी।।

पंचाक्षरी पराविद्या

वितारालिंगरूपिणी।

तारेऽधिकाररहितै:

ध्येया सेयं भवेद्द्विजै:।।

तारेऽधिकारयुक्तस्तु

तारयुक्तं मनुं जपेत्।।

जो गुरू से दीक्षित नहीं है वह व्यक्ति भी सदा

शिव को अपना गुरु मानकर के इस विद्या में पूर्ण अधिकार रखता है।

पापी से पापी व्यक्ति भी शुद्ध अशुद्ध किसी अवस्था में हो वह भी इसका नि:संकोच जप कर सकता है-

#अनाचारवतां_पुंसामविशुद्ध षडाध्वनाम्।

अनादिष्टेऽपि गुरूणां मंत्रोऽयं न च निष्फल:।।

#अन्त्यज #मूर्ख #पापी का भी यह मंत्र सफल बताया गया है।

#अन्त्यजस्यापि_मूढस्य

मूर्खस्य पतितस्य च।

निर्मयादस्य नीचस्य

मंत्रोऽयं न च निष्फल:।।

इस महामंत्र का #अरि,मित्र #सिद्ध #साध्य आदि भी देखने की आवश्यकता नहीं है।

#न_कदाचन कस्यापि

रिपुरेष: महामनु: ।

सिद्धो वा सुसिद्धो वा

साध्यो वा भविष्यति।।

यह मंत्र सबको सिद्धिप्रद है--

#असाधित: बाधितों वा

सिद्ध्यत्येष: न संशय:।।

ध्यान देने की बात यह है कि वैदिक विद्वान यज्ञोपवीती (#ऊं_नम: शिवाय) जपे ।

अन्य #शिवाय_नमः इसका जप करें।

जपोपरान्त गुरुदेव को दक्षिणा दें। जो गुरू से दीक्षित नहीं हैं वे विद्वान ब्राह्मण/संन्यासी को दक्षिणा दें।

इस मंत्र को दिन-रात मानसिक रूप से जपते रहें।

#विशेष -- इतना सीधा रस्ता सबके हितार्थ बता दिया गया है। अतः कोई बहाना न करें ।जो साधक हैं वे शिवरात्रि पर अवश्य साधना करें।

परिचित न्यासादिपूर्वक साधना करें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०३.०३ .१९

८८. ।।#देवमंदिर_रहस्य।।

(#जगह जगह मंदिर ठीक नहीं)

मंदिर को प्रासाद कहा गया है जिसका अर्थ होता है कि मन की प्रसन्नता। अर्थात जहां जाने से मन प्रसन्न हो उसे प्रासाद(मंदिर) कहते हैं--#मनांसि_च_प्रसीदन्ति_प्रासदास्तेन_प्रकीर्तिता:।

अतः मंदिर भव्य और नियमानुसार बने होने चाहिएं।

मंदिरों का निर्माता तथा मूर्त्ति स्थापन करने वाला अपने पूर्वजों सहित देवलोकों में स्थान पाता है । किन्तु मंदिर निर्माण के बाद उसकी नियमित पूजा की और जब तक मंदिर रहे तब तक व्यवस्थित रखने की पूर्ण जिम्मेदारी मंदिर निर्माता व नगरवासियों का दायित्व है अन्यथा महान संकट नगरवासियों के लिए उपस्थित हो सकता है।

#कुछ दिग्दर्शन -----

१. मंदिर भव्य तथा ऊंचा हो ,उसके आसपास के मकान मंदिर से नीचे होने चाहिएं। अन्यथा मकानवासियों के लिए अशुभ होगा।

#न_मनुष्यालयं_कुर्याद्_देवागाराधिकोन्नतम्।

देवालय में साफ सफाई ,लिपाई,सजावट आदि का नगरवासी पूर्ण ख्याल रखें।

अपना मकान सजा कर बैठें तथा मंदिर की तरफ कोई ध्यान नहीं तो परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें--

#प्रासादेसु_वैरूप्यं_हीनाधिक्यं_च_निंदितम्।

बात लगभग पंद्रह साल पुरानी है। कुरुक्षेत्र के पास के गांव की पंचायत #जयराम_विद्यापीठ में आई ,और अपनी व्यथा बताई कि गांव में बहुत नवयुवकों की अकालमृत्यु हो रही है।

पूरा गांव दुखी है। समाधान बताएं। मैं उस दौरान वहां संस्कृत प्राध्यापक के पद पर कार्यरत था। समस्या निदान के लिए हम विद्यार्थियों की मंडली और तीन साथियों के साथ गांव में शान्ति यज्ञ के लिए पहुंचे।

पहले दिन देखा कि ग्रामदेव के मंदिर का #बुरा हाल है। मंदिर पर ध्वजा नहीं थी बल्कि किसी शरारती तत्व ने कलश के ऊपर मटका उल्टा करके रखा हुआ था।(#स्तूपिकाकुंभवैरूप्यं_तद्राष्ट्रजननाशनम्)

मैंने तुरंत इसे उतरवाकर साफ सफाई करवाई।और गांव वालों को सफाई आदि की हिदायत दी।

सप्ताह के बाद यज्ञ की पूर्णाहुति पर एक व्यक्ति में ग्रामदेवता आवेशित होकर गांव वालों को फटकारते हुए बोले की मंदिर की कोई व्यवस्था नहीं है।

ऊपर #मटका उल्टा रखा है और गांव में शान्ति चाहते हो।

गांव मुखिया तथा अन्य लोगों ने गलती स्वीकार की।

आश्चर्य देखिए कि वह आदमी पहले दिन के प्रकरण में उपस्थित भी नहीं था।

अतः मंदिर की भव्यता का ध्यान रखें।

मंदिर के फर्श , दीवार में गड्ढे होने,नीचा होने से महान विनाश होगा--

#छिद्रं_व्रणं_दरी_निम्नं

अन्यच्चाप्यशुभावहम्।

देशदेशाधिपस्थान

कर्तृभर्तृविनाशनम्।।

मंदिर में नियमित पूजा-अर्चना की व्यवस्था न होने से गांव वालों को विपत्ति का सामना करना पड़ सकता है--

#पूजोपचारविच्छेदो

बलिच्छेदोप्यवृष्टिकृत्।

देवमंदिर,घर,आदि में दीमक,गुहेरी आदि लगने पर दोष है , शांति करवाएं।

#देवमानुषगेहेषु

मठगोष्ठसभादिषु।

#वाल्मिकाद्युद्भूतानां

दोषशांतिस्तु कथ्यते।।

आन्तरिक व्यवस्था पर आगे लिखेंगे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली ०९.३.१९

#देव_मंदिर_रहस्य_2

देव मंदिर आध्यात्मिक ऊर्जा का उच्चस्तरीय केंद्र होता है । यदि हमें पूर्ण लाभ चाहिए तो देव मंदिर के नियमों का पालन करके ही हम अभीष्ट फल प्राप्त कर सकते हैं।

जैसे गाय के समस्त अंगों में विद्यमान दूध थनों के माध्यम से ही स्रवित होता है वैसे ही प्रतिमा के माध्यम से ही देवता प्रकाशित होते हैं---

#गवां_सर्वांगजं_क्षीरं

स्रवेत् स्तनमुखाद् यथा।

तथा सर्वगतो देव:

प्रतिमादिषु राजते ।।

जब साधक श्रद्धापूर्वक पूज्यदेव की पूजा करता है तो श्रद्धा के वशीभूत होकर देवता एक दृष्टि प्रतिमा के नेत्रों के माध्यम से भक्त पर डालकर उसकी मनोकामना यथानुरूप पूर्ण कर देते हैं--

#साधकस्य_च_विश्वासात्

सन्निधौ देवता भवेत्।

देव पूजन का विज्ञान सूक्ष्म है ,इसे गीता में #पूज्यपूजक का भाव विनिमय बताया है।

#देवान्भावयतानेन

ते देवा: भावयन्तु न:।

जैसे गायों के शरीर में स्थित घी उनको पुष्टि प्रदान नहीं करता किंतु उन्हीं का घी उन्हीं को खिला दिया जाए तो वह उनको पुष्टि

प्रदान करके प्रसन्न कर देता है। इसे कहते हैं

#तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।

देवता हमारी भावना को देख कर फल प्रदान कर देते हैं।

इसमें अत्यंत श्रद्धा की आवश्यकता रहती है।

पूर्ण फल चाहिए तो शास्त्र के अनुसार मंदिर बनाएं ,उनकी मूर्ति प्रतिष्ठा भी पूर्ण विधि-विधान के अनुसार ही कराएं। और उस मंदिर में योग्य पुजारी की नियुक्ति करें जो सही समय पर देवताओं की आरती,भोग ,पूजन विधि व शयन करवा सके।

मंदिर की #कमेटी पुजारी को आजकल अपना दास समझती है जो बिल्कुल अनुचित है।

#योग्य_ब्राह्मण यदि पुजारी है तो ध्यान रखिए वह धधकती हुई आग है ,उससे गलत व्यवहार बिल्कुल न करें।तथा उसके परिवार के खर्च के अनुरूप दक्षिणा का प्रबंध नगरवासी अवश्य करें।

क्योंकि वह मात्र पुजारी नहीं अपितु भगवान का प्रतिनिधि है।

उसे #रामकृष्णपरमहंस जैसा समझें।

पूजक के कर्त्तव्य क्या हैं जिससे पूर्ण फल प्राप्त हो इसे आगे स्पष्ट करेंगे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली १२.३.१९

#देव_मंदिर_रहस्य

।।३।।

देवताओं के मंदिर में ग्रामवासियों का यह कर्तव्य है कि नित्य षोडशोपचार पूजा का प्रबंध करें। द्विकाल या त्रिकाल आरती का प्रबंध किया जाए।

देव पूजा में गंध न होने से दरिद्रता ,फूलों की कमी होने से संपत्ति हानि ,धूप दीप से रहित होने पर अर्चन रोग, दुख दायक होता है--

#गंधहानौ_तु_दारिद्र्यं

पुष्पहानौ श्रियश्च्युतिः।

धूपदीपविहीनं

यदर्चनं रोगदुःखदम्।।

नैवेद्य हीन होने पर दुर्भिक्ष की स्थिति होती है ।

इसी प्रकार अन्य उपचारों की कमी यदि मंदिर पूजा में रहे तो विशेष हानि के योग हैं।

#नैवेद्यहीनं दुर्भिक्षं......

तस्मान्न हापयेत् कञ्चिद्

उपकारं विचक्षण:।।

मंदिर के पुजारी का भी दायित्व है कि देवता के नैवेद्य का प्रबन्ध स्वयं करें ।स्वयंपाकी हो तो उत्तम है अन्यथा किसी विशुद्ध ब्राह्मण के घर से जो बलिवैश्वदेव आदि विधिपूर्वक करता हो ,नैवेद्य का प्रबंध करें ।

देवनिर्माल्य को संध्या से पहले अवश्य उतार दें।

यदि संध्याकाल तक पुष्पादि शिवलिंग पर रह जाते हैं तो देवता उस मूर्ति को त्याग देते हैं। अतः इससे पहले ही देवनिर्माल्य को हटाएं।

#संध्यासु_यदि_निर्माल्यं

देवमूर्ध्नि तिष्ठति।

सान्निध्यं हन्ति देवस्य

राज्ञ: शक्तिं च हापयेत्

यदि 12 दिन तक पूजा का मंदिर में विच्छेद हो जाता है तो महान अनिष्ट माना गया है ।

तथा देवता उस मूर्ति को त्याग देते हैं ।

यदि वह मूर्ति मनुष्यों द्वारा स्थापित हो तो पुनः प्रतिष्ठा करवानी चाहिए तथा शांति कर्म करें।

#आ_द्वादशाहात्_पूजाया:

विच्छेदे निष्कृति: स्मृता।

लिंगे तु मानुषे पश्चात्

प्रतिष्ठामेव कारयेत्।।

आर्षस्वयंभूलिंगानां

कृत्वा संप्रोक्षणं पुनः।

ऋषि द्वारा स्थापित मूर्ति, शिवलिंग आदि हो अथवा स्वयंभू मूर्ति ,शिवलिंग आदि हो तो पुनः प्रोक्षण करके शांति कर्म करें।

अन्यथा देवता उस मूर्ति को त्याग देते हैं--

#त्यजन्तिमंत्रास्तल्लिंगं

देवश्चापि मत: स्फुटम्।

त्याग देने पर मानव द्वारा स्थापित वह मूर्ति मात्र पाषाण रह जाती है --

#त्यक्तं_मंत्रैश्च तद्देवं

त्याज्यं पाषाणवद्भवेत्।

फिर उस लिंग या मूर्ति में पिशाच और ब्रह्मराक्षस निवास करने लग जाते हैं।

#तल्लिंगमाश्रयन्तीह

पिशाचा: ब्रह्मराक्षसा:।।

अतः इन महान दोषों से बचने के लिए समस्त नगरवासी गांव के मंदिर में नित्य पूजा का प्रबंध अवश्य करें।

केवल अपने घर को चलाना ही जीवन नहीं है अपितु भारतीय संस्कृति और #ऊर्जा के केंद्र, #कामधेनु के समान हमारी इच्छाओं को पूरी करने वाले देवस्थानों की व्यवस्था अनंत पुण्य देने वाली है।

यदि आप सच्चे सनातनधर्मी हैं तो अपने आसपास के देव मंदिरों की स्थिति सुधारने के लिए अपने समान विचारधारा के लोगों को एकत्रित करें ।

संस्था का निर्माण करें और देवताओं की नित्यपूजा ,उत्सवपूजा के प्रतिवर्ष की व्यवस्था मिल बैठकर सुनियोजित करें।

ताकि प्रत्येक पर्व सही समय पर मनाया जा सके ।प्रत्येक घर में प्रसाद पहुंचे और देव मंदिर में पूजा आरती समय पर होती रहे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली १५.३.१९

८९#श्रीविद्या_की_धारा

जगद्गुरु श्री नरसिंह भारती (1798-1879) जिन्होंने 1817 से श्रृंगेरी पीठ की अध्यक्षता की। उनके शिष्य के रूप में स्वामी #कृष्णानंद सरस्वती जी को #कुछ लोग मानते हैं।

स्वामी कृष्णानंद सरस्वती जी के शिष्य ही ज्योतिर्मठ शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी हुए।

स्वामी कृष्णानंद सरस्वती जी परम तपस्वी तथा हिमालय के साधुओं की परिषद् के प्रमुख सदस्य थे।

शास्त्रों के अध्ययन को पूरा करने और अपने परमात्मा को महसूस करने के बाद, पच्चीस वर्षीय ब्रह्मानंद अपने गुरु कृष्णानंद के साथ गए।

लगभग एक महीने तक वे ऋषिकेश के पास कजलीवन के अच्छे छोटे गाँव में रहे। उनका जोरदार स्वागत किया गया।

जो उनके दर्शनार्थ आता था वह ब्राह्मण दूधवाले था।

वह जगह-जगह जाने वाले पवित्र मेहमानों को दूध चढ़ाता था।

ब्रह्मानंद ने उसे हर दिन आधा लीटर दूध लाने की व्यवस्था की, और वह हर रात अपने गुरुदेव को उबाल कर परोसता।

लेकिन एक दिन ब्राह्मण की पत्नी ने अपने पति से कहा, "गाय ने आज बहुत कम दूध दिया है। यह बच्चों के लिए भी पर्याप्त नहीं होगा।" हालाँकि, पति ने उसे कोई ध्यान नहीं दिया और सम्मानित अतिथियों को हमेशा की तरह आधा लीटर की आपूर्ति की।

जब ब्रह्मानंद ने दूध को गर्म किया और अपने गुरु को परोसा, तो उत्तर में कहा, "आज दूध में शोक है। मैं इसे नहीं पीऊंगा।

कृपया इसे दूधवाले को लौटा दें और उसे आगे से देने से रोकें।"

ब्रह्मानंद ने ऐसा किया। लगभग पंद्रह दिन बाद दूधवाले के बेटे की मौत हो गई।

पूरे स्थान को डर था कि कृष्णानंद ब्राह्मण दूधवाले से नाराज थे, इसलिए उन्होंने अपना बेटा खो दिया था।

यह सुनकर, कृष्णानंद ने ब्रह्मानंद से कहा, "जब लोग लड़के की लाश को श्मशान घाट ले जाते हैं, तो अंतिम संस्कार की चिता बनाने से पहले उन्हें मेरे लिए भेजने के लिए कहें।"

ऐसा हुआ। लाश को जमीन पर रख दिया गया और कृष्णानंद वहां आ गए। उसने निर्जीव सिर को धीरे से अपने पैर से मारते हुए कहा, "तुम इतना क्यों सोते हो?" और फिर लड़का अपने पैरों पर खड़ा था।

बाद में, अपनी कुटिया पर पहुंचने के बाद, कृष्णानंद ने ब्रह्मानंद से कहा, "इस जगह को अभी छोड़ देना बेहतर है, इससे पहले कि यहाँ सभी मृत लोग हमें जीवन के लिए परेशान करना शुरू कर दें!

यह ब्रह्मानंद जी ही ज्योतिर्पीठ के शंकराचार्य जी नियुक्त हुए । इनसे ही पूरे भारत में पुनः #श्रीविद्या प्रतिष्ठित हुई।

(क्रमशः)

सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

(संलग्न:-स्वामी कृष्णानंदजी का दुर्लभ चित्र)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली १९.३.१९

#श्रीविद्या_की_धारा

।।२।।

महान संत, ज्योतिर्मठ के स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती, बदरिकाश्रम को सभी पीढ़ियों द्वारा हिंदू धर्म के गूढ़ वैदिक सिद्धांतों को बनाए रखने और आध्यात्मिक जीवन के सबसे महत्वपूर्ण क्षण में पवित्र मातृभूमि भारत की रक्षा करने के लिए प्रदान की गई अपनी निस्वार्थ सेवा के लिए आने वाली सभी पीढ़ियों द्वारा याद किया जाएगा। नैतिक मूल्यों विशुद्ध और उदात्त व्यक्तित्व का एक प्रतीक स्वामीजी धार्मिक पतन की स्थिति में खोए हुए दलित समाज के लिए आनंद और एकांत की अपनी अदृश्य आभा की वर्षा करते थे। वह मानव रूप में दिव्य अवतार थे, आत्म-साक्षात्कार का ज्ञान अर्थात BRAHMAVIDYA को योग्य पात्र में प्रेषित किए जाने के लिए उनमें गहरी भावना थी। तपस्वि (सच्चे आध्यात्मिक आकांक्षी) ने उन्हें अपने सच्चे गुरु और तपस्या के सच्चे गुरु की कल्पना की, ज्ञान के मार्ग के अनुयायी उनके ज्ञान के सागर में गहराई तक उतरने में सफल रहे और योगी (सच्चे सन्यासी) ने उन पर योगिक उपलब्धियों की परिणति को देखा। उच्चतम स्तर का प्रदर्शन।

जगदगुरु का जन्म वर्ष 1868 को उच्च कुलीन परिवार में हुआ था। उन्होंने नौ वर्ष की उम्र में अपनी पूर्ण त्याग की स्थिति प्राप्त की, जिसने उन्हें घर छोड़ने और उत्तराखंड की दुर्गम ऊंचाइयों पर जाने के लिए प्रेरित किया, हिमालय की अपनी पंक्ति को आगे बढ़ाने के लिए। किसी भी कीमत पर आध्यात्मिकता के मार्ग को आगे बढ़ाने के लिए अदम्य इच्छा-शक्ति के साथ उनका दृढ़ निश्चय था। स्वामी ब्रह्मानंद के लिए एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु की तलाश में पांच साल की अवधि बीत गई। उन्होंने सदगुरु के रूप में एक व्यक्ति को स्वीकार करने का संकल्प लिया था जो शास्त्रों के निर्देशों के अनुसार सभी आवश्यक विशेषताओं को

पूरा करेगा। समय की एक लंबी चूक के बाद वह सफलता के साथ मिले; उनके गुरु उत्तरकाशी के दंडीस्वामी कृष्णानंद महाराज एक (बाल ब्राह्मचारी) थे। उन्होंने अपने सबसे बड़े त्यागी

से प्रारंभिक ब्रम्हचारित्व को स्वीकार कर लिया और बारह वर्षों तक अपने तप में रहना शुरू कर दिया और पूरी तरह से योगिक तपस्या और शास्त्रों की शिक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। स्वामी जी दूर अकेले रहते थे और सामाजिक जीवन की हलचल कभी भी सच्चिदानंद चेतना के आनंद में विलीन हो जाती थी।

वह पूर्ण अलगाव में रहते थे, कभी भी किसी के लिए सुप्रीम के ज्ञान की अपनी अथाह गहराई के बारे में खुलासा नहीं किया। वह दुनिया और इसके मामलों के प्रति पूरी तरह से उदासीन थे।

लेकिन समाज को महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संकट से बचाने के लिए इस तरह के एक अनुभवी संत की तलाश करना था। हालाँकि वह ज्यादातर समय गुफा में रहते थे, बाहर की गतिविधियों से पूरी तरह बेखबर होने के कारण बड़ी संख्या में भक्त उसे अपनी आज्ञा का पालन करने और अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन पाने के लिए देखने आते थे। उन्होंने अनगिनत भक्तों को शांति और एकांत का संदेश देना शुरू किया और उन्हें सांसारिक कष्टों से राहत दिलाने में मदद की। आज्ञा उनके पूज्य गुरु से मिली और वे छत्तीस वर्ष की आयु में प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती की पवित्र नदियों के संगम पर उतर आए और SANNYAS DEEKSHA (के रूप में) की शुरुआत की

। उन्होंने तुरंत गुरू के आदेश के अनुसार आगे के लिए हिमालय के लिए फिर से हिमालय के लिए प्रस्थान किया और प्रकृति की गोद में एक दंडी संन्यसी के जीवन का नेतृत्व करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने गुरु की कृपा से ईश्वर-प्राप्ति के उच्चतम स्तर को प्राप्त किया और फिर से तपस्या (तपोभूमि) की भूमि पर आ गए अर्थात मध्य प्रदेश, अमरकंटक की घने विंध्य पहाड़ियों और अपने गुरु के निर्देशानुसार पूर्ण अलगाव और तपस्या में रहना शुरू कर दिया। नर्मदा तट के दुर्गम क्षेत्रों में जहां सूर्य के प्रकाश को भेदना और भी मुश्किल है। यह क्षेत्र जंगली जानवरों जैसे शेर, बाघ, जंगली सूअर, हाथी, सबसे घातक साँप आदि के लिए एक सुरक्षित आश्रय था, लेकिन स्वामी ब्रह्मानंद का ध्यान इन साधनों से कभी विचलित नहीं हुआ। वह कभी नर्मदा नदी द्वारा पवित्र पहाड़ियों के दिव्य एकांत में गहरी ध्यान की स्थिति में स्वर्गीय आनंद का अमृत पी रहे थे। अब बदलाव का समय आ गया।

यह वर्ष 1908 में अमरकंटक और जबलपुर के बीच स्थित क्षेत्र के घने जंगलों में था, जो कि विंध्य पर्वत की पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जब स्वामी ब्रह्मानंद एक दैवीय चमत्कार के चिंतन में विलीन हो जाते थे।

इस अवधि के दौरान अमरकंटक के क्षेत्र के लोग दो साल के भीतर सौ मानव जीवन की हत्या करने वाले एक आदमखोर बाघ के अभूतपूर्व घातक हमले से बहुत भयभीत थे। पहाड़ी क्षेत्र के लोग काफी दहशत में थे क्योंकि "क्षेत्र के बाघ" कहे जाने वाले आदमखोर ने सामान्य जीवन जीने के लिए ऐसी अनिश्चित स्थिति पैदा कर दी थी। नेपाल के श्री समशेरजंग बहादुर राणा, जो बाद में देश के प्रधान मंत्री बने, को आदमखोर को मारने का कठोर कार्य करने के लिए आमंत्रित किया गया। वह बाघ पर कुछ शॉट फायर करके आंशिक रूप से सफल रहा; लेकिन आदमखोर को दुर्भाग्य से शॉट्स की चपेट में आने के बाद नहीं मारा गया। यह जल्द ही अमरकंटक के घने जंगलों में पहुंच गया।

बहादुर राणा अपने अनुयायियों के साथ घायल आदमखोर की तलाश में जंगल में घुस गए। यह बाघ एक संत के चरणों में लगभग स्थिर था और उसी समय में बाघ के ताजे घाव के ऊपर अपने कमंडलु से जंगली जानवर के लिए सांत्वना के निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए पानी डाल रहे थे ।और कह रहे थे कि हिंसा छोड़ दो बच्चा। शांत हो जा।

मेरे बच्चे! शांति से रहो और आनंद में रहो) इसके तुरंत बाद क्रूर बाघ खड़ा हो गया, एक आध्यात्मिक गठबंधन से घिरा प्रबुद्ध ऋषि को देखा, लोगों द्वारा खड़े होने के लिए एक नज़र डाली। यानी राणा और अन्य लोग इस अप्रत्याशित मुठभेड़ में चिंता की

स्थिति में थे और बाघ जल्द ही घने जंगल में भाग गया। राणा और उसके सहयोगी ऋषि की ओर अत्यंत विस्मय और महान प्रशंसा के साथ आगे बढ़े; वे उच्च श्रद्धा के साथ अपनी दिव्य उपस्थिति से पहले वंदना करते हैं। उन्होंने संन्यासी की पहचान मांगी, लेकिन संन्यासी ने कोई शब्द नहीं कहा

निराश होकर राणा वापस नेपाल चला गया। एक महीने के अंतराल के बाद फिर से वह हेमराज के साथ घेरोया के जंगलों के उसी स्थान पर वापस आ गया, साथ में रॉयल कोर्ट के विद्वान अग्निहोत्री पंडित थे। इस बार वे ऋषि स्वामी ब्रह्मानंद के साथ बातचीत करने के लिए भाग्यशाली थे। पंडित हेमराज ने "नेपाल समाचर" पत्रिका में वास्तविक संत के साथ अपनी बैठक का एक विस्तृत विवरण वर्षों बाद दिया था क्योंकि "मेरे जीवन में हल करने के लिए चालीस दार्शनिक पहेलियां थीं। मैंने जीवन का एक बड़ा हिस्सा प्रसिद्ध दार्शनिकों के साथ विचार-विमर्श में बिताया और उस समय के पुरुषों को सीखा लेकिन कोई भी मेरी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाया। अब राणा के उदार साहचर्य के साथ मैं उस समय के उच्चतम क्रम के ऋषि से मिलने के लिए भाग्यशाली था और जैसा कि मैंने उससे पहले किया था, मेरी सभी अनसुलझी पहेलियों ने मौखिक संचार के किसी भी आदान-प्रदान के बिना भी खुद से उनका समाधान पाया। ऋषि उत्तराखंड के प्रसिद्ध दंडीस्वामी कृष्णानंद सरस्वती के शिष्य हैं जिन्हें जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के नाम से जाना जाता है।

अमरकंटक के घने जंगलों में संत की शुभ यात्रा के बाद खौफनाक राणा और हेमराज नेपाल लौट आए। उन्होंने चमत्कारिक घटित होने का विस्तृत विवरण दिया, जो मुख्य रूप से उच्चतम आदेश के प्रबुद्ध साधु की आध्यात्मिक उपलब्धियों के कारण था, जो स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के अलावा कोई नहीं था। इस खाते से युक्त पत्र को काशी के भारत धर्म महामंडल की सोसायटी में सुरक्षित और सुरक्षित रखा जा रहा है। उन्होंने भारत धर्म महामंडल के संस्थापक स्वामी ज्ञानानंद महाराज को भी एक पत्र लिखा, जिन्होंने ईमानदारी से सनातन संस्कृति के विकास के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। पंडित हेमराज के शब्दों में:

मन, शरीर और आत्मा की अहिंसा के शाश्वत सिद्धांत पर पूरी तरह से स्थापित आदमी कभी भी जंगली जानवरों द्वारा किसी भी तरह की चोट का शिकार नहीं होगा, भले ही वे चारों ओर से घिरे हों। क्रूर जानवर मानव जाति के लिए दुश्मनी की अपनी अंतर्निहित प्रकृति को छोड़ देंगे। महात्मा स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती, पतंजलि के मंत्र के जीवंत प्रतीक हैं,

जो इस प्रतीति की स्थिति को प्राप्त कर लेता है, वह अस्तित्व के तीनों अवस्थाओं में चेतना के प्रबुद्ध स्तर पर हमेशा के लिए रहता है (1) जागृत अवस्था-जागृति, (2) स्वप्न-अवस्था-स्वप्न और (3) गहरी नींद की अवस्था -सुषुप्ति

इस प्रकार वास्तविक आचार्य (ज्योतिर्मठ के प्रमुख) की तलाश शुरू हुई। काशी के भारत धर्म महामंडल के गणमान्य व्यक्ति इस संबंध में स्वामी ब्रह्मानंद से मिलने आए। हेमराज की ओर से भारत धर्म महामंडल को पत्र लिखने के पीछे का कारण काफी स्पष्ट था क्योंकि बदरीकश्रम के ज्योतिर्मठ के आचार्य का पद एक सौ पैंसठ साल की लंबी अवधि के बाद एक सच्चे गुरु की अनुपस्थिति में खाली हो गया था ।

इन्हीं आचार्यों में ज्योर्तिमठ के शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती का अग्रणी स्थान रहा है।

उनके विरक्त जीवन, तेजस्वी व्यक्तित्व तथा प्रभावशाली प्रवचनों ने कुछ ही समय में उन्हें देश व्यापी ख्याति दिला दी। काशी, हरिद्वार, प्रयाग, पुरी व रामेश्र्वरम् आदि स्थानों की यात्रा कर जब वे उपस्थित जनसमूह को सनातन धर्म के सिद्धांतों से अवगत कराते तो श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो उठते।

यह बताया जाता है कि जब गुरु देव को शुरू में शंकराचार्य के पद की पेशकश की गई थी, तो वह सम्मान को स्वीकार करने के

लिए बहुत अनिच्छुक थे और काफी अनुनय के बाद ही उन्होंने कैपिटेट किया। ऐसा कहा जाता है कि स्वामी करपात्री (1905-1980), 1927 से उनके लंबे समय के शिष्य, उन्हें मनाने में कामयाब रहे और गुरु देव ने तब घोषणा की: -

'आप एक शेर को जंजीरों में बांधना चाहते हैं जो जंगल में आज़ादी से घूमता है। लेकिन अगर आप ऐसा चाहते हैं, तो मैं आपके शब्दों का सम्मान करता हूं और (मठ) प्रबंधन की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए तैयार हूं । इस जिम्मेदारी को निभाते हुए, मैं उस कारण की सेवा करूंगा, जिसके लिए आदि शंकराचार्य खड़े हुए थे। मैं खुद को मिशन के लिए पूरी तरह से समर्पित करता हूं। '

शंकराचार्य द्वारा स्थापित ज्योर्तिमठ बद्रीनाथ पर १६५ वर्षों से कोई शंकराचार्य पद पर आरूढ़ नहीं थे। पर तीनों पीठ के शंकराचार्यों के विचार-विमर्श के बाद १ अप्रैल १९४१ को उनका अभिषेक कर वहां के शंकराचार्य पद पर अधिष्ठित किया गया।

70 साल की आयु में इस महत्वपूर्ण पद को संभालने की हिम्मत करना ही इनकी दैवी सम्पदा को व्यक्त करता है।

इलाहाबाद में कुंभ मेले में एक मौका बैठक में 1930 में, उनके गुरु, स्वामी कृष्णानंद सरस्वती, ने स्वामी ब्रह्मानंद को बताया: - 'आप जंगलों और पहाड़ों में लंबे समय तक रहे हैं। अभी कस्बों के पास रहें, ताकि कुछ लोगों को फायदा हो सके। ”

तो यह था कि स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती अपने आध्यात्मिक तेज और ज्ञान के लिए जाने जाते थे।

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने जोशी मठ में ज्योतिर्मठ आश्रम की स्थापना कराई। सन् १९५३ में राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने प्रयाग पहुंचकर शंकराचार्यजी से आर्शीवाद लिया तथा धर्म प्रचार की योजना के प्रति सहमति व्यक्त की। राष्ट्रपति ने कहा था- श्री शंकराचार्य भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की त्रिवेणी हैं।।

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी उन शंकराचार्यों में हैं, जिनसे दीक्षा ग्रहण कर स्वामी करपात्री जी महाराज, स्वामी अखंडानंद सरस्वती, शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती, स्वामी परमानंद सरस्वती जैसी विभूतियां अपने को गौरवान्वित अनुभव करती थीं। संसार में योग का परचम फैलाने वाले महर्षि महेश योगी भी स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज के ही शिष्य थे।

९०

#हिंदूधर्म_कठोरता_लचीलापन_बनाम_श्रद्धा

बहुत से सद्ग्रंथ और उनके पक्षधर हिंदू धर्म के विधि-विधानों को कठोरता से पालन करने के पक्षधर हैं और उनके पालन करने में जरा सी चूक होने पर पूरे अनुष्ठान को विफल मान लेते हैं।

#आपको क्या लगता है?

#क्या वह अनुष्ठान जो शास्त्रविधि पर खरा नहीं उतरा वह बिल्कुल व्यर्थ हो गया?

#अथवा उसका कुछ फल मिलेगा?

भगवती के #कृपाकटाक्ष से #समुपजातविवेकिनी मेरी प्रज्ञा सामान्य धरातल से ऊपर उठकर जो सोचती है ,वह जनसामान्य के हितार्थ प्रकाशित कर रहा हूं।

इस तथ्य की सच्चाई को मैं दो दृष्टियों से देखता हूं।

#प्रथम शास्त्र दृष्टि

#दूसरा प्रभुदृष्टि

शास्त्रविद् और उनके साथ लगकर प्रभु भी कह उठते हैं --#य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य.....

अर्थात् शास्त्रानुसार किया गया कार्य ही सफल होता है।मैं भी इसका समर्थक हूं।

पर गहराई से विचार करें तो मुझे और मेरे प्रभु को यह पता है कि

जो श्रद्धामय होकर के मेरा भजन/पूजन/तप करता है उसको ही मैं ग्रहण करता हूं विधि चाहे न्यूनातिरिक्त हो ही गई हो।

#ध्यान से समझें--

मामला बारीक किन्तु उपयोगी है।

*शास्त्र कहता है-#प्याज/लहसुन मत खाओ।प्रभु कहते हैं-यह वस्तु सात्त्विक/राजसिक/तामसिक है ,जैसा खाओगे वैसा पाओगे।

*शास्त्र कहता है--चान्द्रायणादि व्रत करो ।प्रभु कहते हैं-- मन को पीड़ित करके अपने अंदर बैठे मुझ को पीड़ित मत करो। ठीक समय पर खाओ।

*शास्त्र कहता है--जागरण करो ।प्रभु कहते हैं --ठीक ठीक जागो, ठीक ठीक सोओ।

* शास्त्र कहता है विधिपूर्वक करो।प्रभु कहते हैं--जो श्रद्धामय होकर जैसा कर रहा है , शास्त्रज्ञ उसकी न हंसी उड़ाऐ और न उसे करने से हटाए। ऐसा भी नहीं कहे कि तूने ठीक ठीक नहीं किया तुझे कुछ फल नहीं मिलेगा।

बल्कि शास्त्रज्ञ के पास समय और प्रज्ञा है तो उसे विधि समझाए।

केवल गलत #बताकर उस श्रद्धालु को मात्र कर्म से विचलित मत करे-

#न बुद्धिभेदं जनयेत्

अज्ञानाम् कर्मसङ्गिनाम् । जोषयेत् सर्व-कर्माणि

विद्वान् युक्तः समाचरन् ॥

प्रभु का स्पष्ट आदेश है #कर्मयोग।

श्रद्धावान व्यक्ति विधिहीन करते करते विधि भी कभी न कभी सीख जाएगा।प्रभु उसे किसी के माध्यम से विधि भी प्रेषित कर ही देंगे।

क्योंकि जो कुछ करता ही नहीं, उससे तो यथामति करने वाला ही श्रेष्ठ है--+

#कर्म_ज्यायो_ह्यकर्मण:।।

उदाहरणार्थ--स्वशाखा का ज्ञान न होने पर भी दैनिक संध्या में प्राणायाम, सूर्यार्घ्य, गायत्री जप तो कर ही सकता है।

अपनी शाखा की खोज में भी प्रयासरत रहे और उक्त काम भी करता रहे।

अतः स्पष्ट है कि शास्त्र और श्रद्धा में श्रद्धा बड़ी है। यदि दोनों मिल जाए तो १००% फल।

श्रद्धा है और विधि की न्यूनता है तो थोड़ा न्यून फल ।

किया हुआ शुभकर्म बिल्कुल व्यर्थ नहीं जाता।

पूर्ण फल चाहिए तो पूर्णविधि अपनाएं।

वेदांत शास्त्र भी पूर्वजन्म के वेदपाठी को इस जन्म में अधिकारी मान लेता है।

अतः हम शास्त्र की तरफ से बोलेंगे तो कट्टर हो ही जाएंगे और होना भी चाहिए।

(शास्त्र रक्षा करनी है तो विधि को खोजें सीखें ,जब तक न मिले तब तक कर्म भी करते रहें)

बड़ा तो #प्रभु वचन और श्रद्धा के वशीभूत होकर मिलने वाला उनका कृपालव ही है।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं

विधिहीनं च यद्भवेत्।

तत्सर्वं क्षम्यतां देव!

प्रसीद परमेश्वर।।

प्रभु भक्ति में श्रद्धा सर्वोपरि है।और प्रभु की ओर बढ़ाया गया एक कदम भी सर्वोपरि है--

#स्वल्पमप्यस्य_धर्मस्य

त्रायते महतो भयात्।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २४.३.१९

९१।।#उद्बोधनम्।।

नवद्वारेपुरेऽस्मिन्

आयुस्स्रवति सन्ततम्।

तिष्ठतीत्यद्भुतं तत्र

गच्छतीति किमद्भुतम्।।

किसी ने कहा कि फलां व्यक्ति का जीव उसके शरीर को छोड़कर निकल गया। इस बात को सुनकर किसी को अचरज नहीं होना चाहिए। क्योंकि इस शरीर में 9 दरवाजे हैं और यह जीव इतने दिनों तक इतने दरवाजे खुले होने के बाद भी कैसे इसमें बना रहा यही बहुत बड़ा आश्चर्य है ।

वह इस शरीर को छोड़कर निकल गया इसमें कौन सा अचम्भा है ।

सब द्वार खुले ही तो हैं।

अतः जीवन की क्षणभंगुरता को देख कर तुरंत आत्मज्ञान प्राप्ति में लग जाना चाहिए ।

इस जीवन को व्यर्थ के लोभ लालच में फंसा कर इस सुनहरे मौके को मत गंवाएं।

उपनिषद् तो कहते हैं

#इह चेत् अवेदीत् अथ सत्यम् अस्ति, न चेत् अवेदीत् महती विनष्टि ।

अर्थात् समय रहते इस सत्य को जान लिया तो ठीक है।

नहीं जाना तो बहुत #बड़ा नुकसान कर लिया। महान् अनर्थ हो गया जिसने मानव तन प्राप्त करके भी परमात्मा को नहीं जाना।

तीन गुण होने पर ही परमात्मा का ज्ञान मिलता है।

जिनमें एक गुण जो बेहद जरूरी है वह परमात्मा ने आपको प्रदान किया है ।इसीलिए परमात्मा को दयालु कहा गया है।

और जो 2 गुण जो बचते हैं वह आपको अपनी मेहनत और विवेक से प्राप्त करने हैं* * यदि ये दो मिल जाएंगे तो समझो आप इस सृष्टि के रहस्य और परमात्मा के स्वरूप को जान जाएंगे।ये तीन गुण हैं---

#मनुष्यत्वं मुमुक्षत्वं महापुरुष संश्रय :||

#मनुष्यहोना

#मुमुक्षुत्व(मोक्ष की इच्छा होना)

#महापुरुषसंश्रयत्व(वैदिक महापुरुष का आश्रय)

अतः आत्मज्ञान की ओर बढ़े केवल पेटपालन को ही जीवन न समझें।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली।

९२.नगरदेवी पूजा

और आज नगरदेवियों का पूजन मुहल्ले के गली चौराहों पर देखकर मन प्रसन्न हो गया।

बच्चों के अनिष्ट की आशंका (प्रह्लाद(होली) देखकर जन मानस भी घर परिवार की शांति के लिए नगर देवियों, योगिनियों ,शिव गणों,क्षेत्रपालादि की पूजा में जुट गया।

पूजा होनी भी चाहिए।

क्योंकि नगर देवियों की पूजा न करने पर वे दुष्टों का रक्तपान करने में देर नहीं करती।#तृणमाताएं #जलमाताएं #स्थलमाताएं , #घृत माताएं

चौंसठ करोड़ योगिनियां आदि आदि की कृपा से ही हमारी सलामती कायम है।

#आज कुत्ते,गाय,पक्षी, और छोटी छोटी चिटीयों तक के मुंह मीठे भात से भरे देखकर मन कह उठा #धन्य है भारतीय संस्कृति।

#केवलाघो_भवति_केवलादी

और #तेन_त्यक्तेन_भुंजीथा आज सार्थक होते से लगे।

इनकी पूजा के बाद कुलदेवी की पूजा नवरात्र में और गणों में प्रमुख हनुमानजी की पूजा चैत्रांत में कर लेने से पूरे नवसंवत्सर की बाधाएं शान्त हो जाती हैं।

मातृदेवियां हमारा कल्याण करें

#यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातर: ॥

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २७.३.१९

९३. शांत

आप शान्त नहीं हैं तो समझिए आपमें उपरति का अभाव है।

उपरति नहीं है तो समझिए राग है।राग है तो समझिए वैराग्य का अभाव है।

वैराग्य न होने का कारण विवेक की कमी है।और विवेक की कमी क्यों है क्योंकि सत्संग का अभाव है।

सत्संग जगराते को नहीं बल्कि ज्ञानवान लोगों के पास बैठकर कुछ सीखने को कहते हैं।

अतः आप्त पुरुषों का संग करिए। अन्यथा अशांत ही रह जाओगे ।और अशांत को सुख कहां?(अशांतस्य कुत: सुखम्)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली।

९४#रत्नों_के_नाम_पर_मची_लूट

ज्योतिष में बुरे ग्रहों के प्रभाव को दूर करने के लिए ज्यादातर ज्योतिषी रत्न पहनने की हिदायत देते हैं।

लेकिन हम आपको बता दें कि रत्न आपको कितना फायदा पहुंचाते हैं।

रत्न आपको फायदा पहुंचाते हैं जब आप इन्हें विधि पूर्वक धारण करते हैं।

रत्न खरीदते समय मुख्य सावधानी यह रखें कि ज्यादा महंगे रत्न न खरीदें

क्योंकि महंगे रत्नों में अत्यधिक पारदर्शिता लाने के लिए उनके साथ सांयंत्रिक छेड़खानी की जाती है ।उन्हें गर्म किया जाता है।

जिससे उनकी प्राकृतिकता नष्ट हो जाती है ।

और वह मात्र सुंदर बन जाते हैं स्वाभाविक गुण के कम हो जाते हैं।

अतः मात्र कटिंग किए हुए रत्न ही खरीदें ।

जिनकी कीमत भी ज्यादा नहीं होती ।

इन्हें विधिपूर्वक प्राण प्रतिष्ठित करवा कर ही धारण करें तभी आपको फायदा मिलेगा।

मैं मुख्य रत्न और उनकी कीमत को बता रहा हूं जिनको धारण करके आप उनका पूर्ण फल प्राप्त कर सकते हैं।

ज्यादा स्वच्छ दिखने वाले रत्न या तो नकली हो सकते हैं या उनमें मशीनों द्वारा शुद्धता लाई जाती है जो अप्राकृतिक है।

प्राकृतिक रत्नों में जाला या फर होता है। वह इतने ज्यादा पारदर्शी नहीं होते ।

यदि प्राकृतिक रत्न पारदर्शी हो तो उसकी कीमत लाखों रुपए में होती है ।

और वह रत्न बहुत तीव्र प्रभाव डालते हैं अतः आप उन्हें मत पहनें आप सामान्य रूप से साधारण मध्यम श्रेणी के ही रत्न धारण करें।

रत्नों पर ज्यादा पैसा खर्च करना बुद्धिमत्ता नहीं है ।

इससे अच्छा है कि आप उस ग्रह का मंत्र जप तक दान हवन कराएं और यंत्र पहनें।

#सूर्य_रत्न

सूर्य ग्रह की कृपा प्राप्त करने के लिए माणिक्य धारण किया जाता है माणिक्य सामान्य रूप से 2000 से 6000 रुपए के बीच में ही लें जो प्राकृतिक हो जिसको गर्म न किया गया हो ।

जिसमें कोई मिलावट न की गई हो।

#चंद्र_रत्न

चंद्रमा के लिए मोती पहना जाता है मोती ₹20 से लेकर ₹200 तक का अच्छी क्वालिटी का आ जाता है।

#मंगल_रत्न

मंगल के लिए मूंगा पहना जाता है इसकी कीमत ₹2000 से ₹6000 के बीच में ही है।

#बुध_रत्न

बुध के लिए पन्ना पहना जाता है इसकी कीमत ₹2000 से₹6000 के बीच में ही है।

#गुरु_रत्न

गुरु के लिए पुखराज पहना जाता है इसकी कीमत 3000 से 9000 के बीच में है।

#शुक्र_रत्न

शुक्र के लिए हीरा पहना जाता है। हीरा महंगा होता है।इसे किसी विश्वसनीय से ही प्राप्त करें। अच्छा होगा कि इसके लिए शुक्र यंत्र अभिमंत्रित करके धारण करें।

#शनि_रत्न

शनि के लिए नीलम पहना जाता है इसकी कीमत 3000 से ₹9000 तक है।

#राहु

राहु के लिए गोमेद पहना जाता है इसकी कीमत 2 से ₹4000 के बीच में है।

#केतु_रत्न

केतु के लिए लहसुनिया पहना जाता है इसकी कीमत दो से₹4000 के बीच में है।

उपरोक्त कीमत 5 से 8 रत्ती तक के वजन की दी है।

और जरूरी भी नहीं है कि इतना पैसा खर्च करना ।

रत्नों से भी अच्छा तरीका है उन ग्रहों के वृक्षों की जड़ और उस ग्रह के यंत्र को किसी वैदिक विद्वान से अभिमंत्रित/हवन करवा करके चांदी या तांबे की ताबीज में डालकर उन ग्रहों के रंग में रंगे हुए धागे या चांदी की चैन में गले में धारण करें ।

पुरुष दाएं बाजू पर और औरतें बाएं बाजू पर पहने। ध्यान दें पांव में कोई धागा /यंत्र नहीं पहना जाता।

कुछ लोग पहनते हैं तो यह समझ लें उसका कोई लाभ उन्हें नहीं मिलता।

सूर्य (आक)

चंद्र (ढाक/पलाश)

मंगल (खैर)

बुध (ऊंगा/अपामार्ग)

गुरू(पीपल)

शुक्र (गूलर)

शनि(शमी/खेजड़ी)

राहू (दूर्वा)

केतु (कुशा)

इनको इनको ताबीज में अभिमंत्रित करवाकर इन ग्रहों के यंत्रों के साथ धारण करना रत्नों से भी अधिक प्रभावशाली है। अतः रत्नों के नाम पर मची लूट से बचें। क्योंकि रत्नों के मामले में दो हजार का रत्न 6000 ₹8000 में भी लोग बेच देते हैं इतनी भारी लूट इस क्षेत्र में है।

कुछ लोग रत्नों के साथ प्रमाण पत्र भी देते हैं ।

यह मात्र छलावा है क्योंकि हमें पता है कि हर व्हीकल के साथ दिया जाने वाला प्रदूषणमुक्त प्रमाणपत्र कितने सस्ते में हमें प्राप्त हो जाता है।

अतः प्रमाण पत्र को रत्न शुद्धता की गारंटी मत समझें।

क्योंकि कोयले और हीरे में भी एक ही तत्व होता है और मशीन उसमें कार्बन ही घोषित करती है, कम है या ज्यादा, इसका साधारण ग्राहक को पता नहीं चलता।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली ०१.४.१९

९५।#रुद्राक्ष_महत्व।

रूद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से उत्पन्न आंसुओं से पैदा हुआ वृक्ष है ।

भगवान शिव जब त्रिपुरासुर के वध के लिए उसके तीन पुरों के एक सीध में आने के लिए इंतजार कर रहे थे तो उनकी एकटक दृष्टि होने के कारण उनके नेत्रों से आंसू गिरे और उनसे रुद्राक्ष वृक्ष की उत्पत्ति

हुई।

अतः रुद्राक्ष लक्ष्य को साधने और बाधाओं को जीतने ऊर्जा शक्ति बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। रत्नों की अपेक्षा रुद्राक्ष धारण करने का अनंत गुना फल है ।

रूद्राक्ष 1 से लेकर के 16 मुखी होते हैं ।

इससे अधिकमुखी के रुद्राक्ष मिलने का भी दावा किया जाता है।पर इसमें सच्चाई न के बराबर है।

एक रुद्राक्ष को धारण करने का फल भी हजारों गोदान के समान बताया गया है।

रुद्राक्ष को सभी वर्ग और सभी जातियों के लोग नि:संकोच धारण कर सकते हैं।

ब्राह्मण आदि को क्रमशः श्वेत रक्त पीत और कृष्ण रंग के रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

कितने मुख का रुद्राक्ष श्रेष्ठ होता है ?

इसके बारे में आज आपके सामने परम रहस्य उद्घाटित करने जा रहे हैं ।

इस रहस्य को बहुत दुर्लभ ग्रंथों से एकत्रित किया गया है और यह आपके लिए सर्वदा नूतन जानकारी होगी।

(#हजारों ग्रंथों और वर्षों के स्वाध्याय के बाद भी जिस तथ्य पर पाठक कम ही पहुंच पाते हैं उन सब तथ्यों को आप सबके ज्ञान वर्धन के लिए एकत्रित करके हम प्रकाशित करते हैं।)

पशुओं के गले में भी यदि रुद्राक्ष पड़ा हो तो वह पशु भी भगवान शिव के तुल्य समझा जाता है फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या है।

#पशवोऽपि_हि_रूद्राक्षै:

संयुक्ता:शिवतां गता:।

1 से 16 मुखी रुद्राक्ष शास्त्रोक्त स्वीकृत है।

जो क्रमशः है #उत्तमोत्तम #उत्तम #मध्यम और #सामान्य चार भागों में बांटे गए हैं।

#यावत् षोडशवक्त्रांतमेक-

वक्त्रादिभेदत:।

लोके प्रभवन्तीह

श्रेष्ठमध्याधमाश्च ते।।

इनमें एक मुखी रुद्राक्ष उत्तमोत्तम अर्थात सर्वश्रेष्ठ माना गया है ।

और यह दुर्लभ ही होता है इसका मिलना ईश्वर की कृपा से ही संभव है।

अर्थात जब ईश्वर चाहेंगे तभी यह आपको प्राप्त होगा ।

माध्यम चाहे कोई भी हो।

बाजार में मिलने वाले और एक दूसरे से मिलने वाले एकमुखी रुद्राक्ष 99% नकली हैं।

ज्यादातर पंचमुखी रुद्राक्ष के छिद्रों को बंद करके एक मुखी रुद्राक्ष को घोषित किया जाता है।

या जो काजू के आकार के दाने प्राप्त होते हैं वह वास्तव में रुद्राक्ष के न हो करके किसी हाइब्रिड वृक्ष के ही बीज हैं।

अतः इन पर पैसे बर्बाद करना मूर्खता है ।

वैसे भी एक मुखी रुद्राक्ष #एकमुखी व्यक्ति के लिए ही बना है।

यदि हम विभिन्न मुखोटे धारण करके समाज में जी रहे हैं तो एक मुखी रुद्राक्ष हमें कैसे प्राप्त हो सकता है ??

और वह मिल भी गया तो वह हमें #माफिक नहीं रहेगा।

इसलिए व्यर्थ की दौड़ धूप से बचें।

अपने को जब आप #एकमुखी(परमात्मोन्मुखी) बना लेंगे तो सब संपत्ति और दिव्य रत्न ,सब सिद्धियां आपके हस्तामलकवत् करगत हो जाएंगी।।

और तब आप देखेंगे कि उनका उपयोग में भी आपकी रुचि नहीं रहेगी।

एक ग्रंथ में #हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है कि उन्होंने एक मुखी रुद्राक्ष का चमत्कार देखा था।

एक बकरे के गले में एक मुखी रुद्राक्ष डालकर तेज तलवार से उसकी गर्दन पर प्रहार किया गया तो जैसे चमत्कार हो गया।

तेजधार तलवार उसकी गर्दन को नहीं काट सकी और वह जीवित सकुशल वहीं खड़ा था।

यह होता है एक मुखी रुद्राक्ष का चमत्कार।

व्यर्थ के चक्कर में न पड़ें।

दो मुखी से 16 मुखी तक जो अन्य रूद्राक्ष हैं उनकी भी तीन श्रेणियां हैं ।

उत्तम मध्यम और सामान्य।

उनको ही आप धारण करें उनमें कौन से उत्तम है कौन से मध्यम है और कौन से सामान्य है ?

यह यदि किन्ही को ज्ञात है तो कृपया कमेन्ट में लिखें।।

अन्य विशेषताएं अगली पोस्ट में बताएंगे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री।

दिल्ली ०३.०४.१९

।।#रुद्राक्ष_महिमा।।

।।२।।

एक मुखी रुद्राक्ष को उत्तमोत्तम कहा गया है। उसकी उपयोगिता पूर्व की पोस्ट में बताने के बाद अब तीन प्रकार के और रुद्राक्षों का विभाजन है।

#उत्तम, #मध्यम और #सामान्य रुद्राक्ष।

इनमें 8 मुखी 11 मुखी और 16 मुखी रुद्राक्ष उत्तम माने गए हैं--

#अष्टैकादशवक्त्रौ_च_षोडशास्तथोत्तमा:।

तीन ,चार ,और पांचमुखी रुद्राक्ष सर्व सुलभ है और वह सामान्य माने गए हैं।

#त्रिचतुस्पंचवक्त्राश्च

कनिष्ठा: सुलभाश्च ते।

और अन्य रूद्राक्ष मध्यम माने गए हैं।

#शेषास्तु_मध्यमा_प्रोक्ता:

सर्वे चोक्तफलप्रदा:।

यह रुद्राक्ष तीन प्रकार के आज बाजार में मिलते हैं सबसे पहले #काजू दाना ।

वह वास्तव में रुद्राक्ष न होकर किसी हाइब्रिड वृक्ष का बीज मात्र है। अतः इससे बचें।

दूसरे प्रकार के रुद्राक्ष इंडोनेशिया से प्राप्त होते हैं। यह रुद्राक्ष असली होते हैं क्योंकि इनमें छेड़खानी की संभावना बहुत कम होती है। क्योंकि इनमें बहुत बारीक जाली होती है अर्थात्

इसके कांटे ज्यादा गहरे नहीं होते इसकी छाप सतह से बिल्कुल मिली होती है ।अतः इस पर काट पीट करना अलग ही पकड़ में आ जाता है।

इनकी कीमत भी कम होती है।

तीसरे प्रकार के रुद्राक्ष नेपाल और भारत से प्राप्त होते हैं यह बिल्कुल गोल होते हैं और इनके साथ सबसे ज्यादा छेड़खानी की जाती है।

नेपाली रुद्राक्ष को ही काट पीट कर के एक मुखी या 8,11, 16 मुखी आदि बना देते हैं।

नेपाली रुद्राक्ष यदि खरीदें तो ध्यान दें इसके शुद्धता के प्रमाण पत्र पर न जाए ।

यह प्रमाण पत्र बहुत सस्ते में बन जाते हैं ।

इसकी मुख्य पहचान यह है कि नेपाली रुद्राक्ष चाहे कितने भी मुखी हो वह गोल होगा थोड़ा सा भी चपटा नहीं होगा।

अच्छा होगा कि इसे आप खुद लैब में टेस्ट करवाएं और इसका एक्स-रे टेस्ट भी प्रमाणित है।

किसी दुकान से टेस्ट किया हुआ हम खरीदते हैं तो उस दुकानदार से आप यह कहे कि यदि नकली निकला तो ₹50000 का दंड आपको लगेगा।

तब देखें दुकानदार की क्या प्रतिक्रिया होगी।

मालाओं में 5 मुखी रुद्राक्ष ही प्रयुक्त किए जाते हैं क्योंकि पांच मुखी रुद्राक्ष ही सबसे ज्यादा पेड़ पर लगते हैं।

अतः विश्वसनीय व्यक्ति से खरीदें और अच्छा रहे तो टेस्ट भी करवा ले।

फिर इनको सोने,चांदी में जुड़वाएं या धागे में डालकर पहनें और पहनने से पहले किसी ब्राह्मण से इनकी प्राण प्रतिष्ठा और सवा लाख शिव मंत्र का जप अवश्य करवाएं तो असीम शक्ति हमें प्राप्त होगी। नीचे नेपाली/इंडोनेशियन रुद्राक्ष की छवि दी गई। इंडोनेशियन रुद्राक्ष सफेद या पीले रंग के ही अधिक होते हैं।(जय मातेश्वरि)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली ०७.४.१९

९६ मातृसत्ता

,रुद्राणी,इंद्राणी,चंडी,काली,चामुंडा,भैरवी आदि असंख्य माताओं ने युद्ध में जब अनेक राक्षसों को खेल ही खेल में धराशयी कर दिया ।तो शुम्भ असुर घबरा गया और बोला --#यह तो घोर अन्याय है ।तुम दूसरों का सहारा लेकर युद्ध कर रही हो।

तब देवी ने हंसकर कहा--

#एकैवाहं जगत्यत्र

द्वितीया का ममापरा ।

पश्यैता दुष्ट मय्येव

विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥

रे! दुष्ट! ये असंख्य देवियां मेरी ही विभूतियां हैं।वास्तव में मैं एक ही हूं।

मां ने उस राक्षस को दिए अपने उत्तर से सबके मन के #संशय को दूर कर दिया।

सब शक्तियां जो समस्त भूमंडल पर विभिन्न नाम-रूपों में पूजी जाती हैं वे एक #आदिशक्ति का ही रूप है।

यहां दूसरा कोई है ही नहीं।सब शक्ति है।

जय मातेश्वरि!

ब्राह्मण का महत्व -----विप्रः, पुं, (वप + "ऋज्रेन्द्राग्रवज्रेति ।" उणा० २ । २८ । निपातनात् रप्रत्ययेन साधुः ।) ब्राह्मणः । इत्य-मरः । विशेषेण प्राति पूरयति षट् कर्म्माणि विप्रः । प्रा ल पूर्त्तौ इत्यस्मात् डप्रत्ययः । किंवा । उप्यते धर्म्मबीजमत्र इति वपेर्नाम्नीति रे निपातनादत इत्वम् । इति भरतः ॥ तस्य लक्षणं यथा, -- "जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते । विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रियलक्षणम् ॥" इति प्रायश्चित्तविवेकः ॥ (यथाच मनौ । १ । ९४ । "उत्पत्तिरेव विप्रस्य मूर्त्तिर्धर्म्मस्य शाश्वती । स हि धर्म्मार्थमुत्पन्नो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥" अस्य पादोदकमाहात्म्ये यथा, ब्रह्मवैवर्त्ते । १ । ११ । २६ -- ३३ । "पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि सागरे । सागरे यानि तीर्थानि विप्रपादेषु तानि च ॥ विप्रपादोदकक्लिन्ना यावत्तिष्ठति मेदिनी । तावत् पुष्करपात्रेषु पिबन्ति पितरो जलम् । विप्रपादोदकं पुण्यं भक्तियुक्तश्च यः पिबेत् ॥ स स्नातः सर्व्वतीर्थेषु सर्व्वयज्ञेषु दीक्षितः । महारोगी यदि पिबेत् विप्रपादोदकं द्विज । मुच्यते सर्व्वरोगेभ्यो मासमेकन्तु भक्तितः ॥ अविद्यो वा सविद्यो वा सन्ध्यापूतो हि यो द्विजः । स एव विष्णुसदृशो मा हरी विमुखो यदि ॥ घ्नन्तं विप्र शपन्तं वा न हन्यान्नच तं शपेत् । गोभ्यः शतगुणं पूज्यो हरिभक्तश्च ब्राह्मणः ॥ पादोदकञ्च नैवेद्यं भुङ्क्ते विप्रस्य यो द्विज । नित्यं नैवेद्यभोजी यो राजसूयफलं लभेत् ॥ एकादश्यां न भुङ्क्ते यो नित्यं विष्णुं समर्च्चयेत् । तस्य पादोदकं प्राप्य स्थलं तीर्थं भवेद्ध्रुवम्।।

#दातुन_नियम

व्रत उद्यापन जन्म नक्षत्र के दिन पर्व के दिन ,पूर्णिमा ,अमावस्या को ,अष्टमी और घर में श्राद्ध के दिन दांतों को अंगुली , नाखून दातुन आदि से भी साफ न करें अन्यथा व्रतभंग हो जाता है -

#नोपोषित:पारणपूर्वकालं

न जन्मभे पर्वणि नासिताहे।

नाप्यष्टमी श्राद्धदिनेषु दंतान्

प्रधावयेदंगुलिभिर्नखैर्वा।।

प्रतिपदा षष्ठी और नवमी को भी दातुन करने से महान दोष माना गया है---

प्रतिपत्पर्वषष्ठीषु

नवम्यामपि वा गुह!

दन्तानां काष्ठसंयोगे

महान् दोषोऽभिजायते।।

अत: आत्मकल्याण के इच्छुक साधकों को विशेष ध्यान रखना चाहिए।

डा०कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २०.४.१९

९७

#भक्तिजागरण_बनाम_डिस्को_जगराता

आजकल जगराते के नाम पर #डिस्कोडांस #धूधमाल #ध्वनिबलास्ट करके वृद्धों/रोगियों/पशु-पक्षियों और सभ्यजनों की अमूल्य निद्रा की बलि दी जा रही है। यह तथाकथित #जगराता बिल्कुल सिद्धांतहीन और गैर जिम्मेदाराना है।

इससे देवता प्रसन्न होते हैं ऐसा कतई नहीं है।

क्योंकि सनातन धर्म में जगराता के नियमों को पहले समझ लेना चाहिए।

#नियम

१.जागरण किसी देवता की जयंती/उत्सव को लक्ष्य बनाकर करें। तथा पूरी रात उसी देवता का जप/यज्ञ/कीर्तन चले। इसमें अन्य देवताओं को #मिश्रित करने का कोई विधान नहीं है।ऐसा पौराणिक कथाओं में स्पष्ट उल्लेख किया है।कि एक मंडल में अन्य देवता का #यजन तथा एक नदी/तीर्थ पर अन्य का गुणगान भी नामापराध की श्रेणी में आता है। अतः ऐसा न करें।

२. इसमें भाग लेने वाले भावपूर्ण होकर बैठें। इसमें आवाज इतनी अधिक न हो कि पूरा वातावरण #कोलाहलपूर्ण हो जाए।

३. इसमें भाग लेने वाले कलाकार/साजिंदे नशा आदि करने वाले न हों।

४. यह जगराता यदि मंदिर में है तो तीव्रध्वनि/माईक का प्रयोग बिल्कुल सही नहीं है। मीठे स्वर में बिना किसी दिखावे के देवस्थान की मर्यादा बनाए रखते हुए समपन्न करें।

५. इसमें विद्वान् ब्राह्मण से अभीष्ट देव की पूजा जप यज्ञ व प्रसाद वितरण अवश्य होना चाहिए।

वहां बैठे व्यक्ति ही सुनें इतनी ही आवाज रखें।अन्य प्रकृतिस्थ वातावरण को अशांत करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है।

और सबसे अच्छा तो यह है कि #ऊटपटांग गाने वाले, #सर्वभक्षी #पाखंडी #दिखावापरक #नचनियों_के_रसिक गायक की बजाय किसी #वेद वेदान्तविद् विद्वान् को बुलाकर उसके द्वारा इष्टदेव की कथा को भक्तिपूर्वक श्रवण करें तो धन्य हो जाएं।

बेकार के #डिस्कोडांसर से शुभ की बजाय अशुभ फल ही मिलता है। इसे अवश्य परख लेंना।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २३.४.१९

९८.संख्याशास्त्र।।

#शून्य_विमर्श

।।0।।

संख्यायतेऽत्र संख्या सम्यग्ज्ञानं साऽस्त्यत्र अण् ।

जिससे सम्यक् ज्ञान का आकलन किया जाता है वह #संख्याशास्त्र है।संख्या में ईश्वर से लेकर मूल प्रकृति के समस्त तत्वों को समाहित किया गया है।#सङ्ख्या मूलप्रकृत्यादिपदार्थानां गणनात्र ।

इसी के एक प्रभाग को #सांख्यशास्त्र भी कहते क्योंकि इसमें भी सम्यक ज्ञान के मार्ग को ही प्रशस्त किया गया है।

#एका च मे तिस्रश्च मे.... इस मतानुसार समस्त संख्याएं ईश्वर का स्वरूप है।

संख्याएं एक से प्रार्द्धपर्यन्त मानी गई हैं। यह ईश्वर का ही विलास है और इसका कोई अंत नहीं है । इसलिए ईश्वर को अनंत कहा गया है। इसी प्रकार संख्याओं का भी अंत नहीं है गीता में भी कहा गया है--#प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे।।

अतः संख्याओं में 0 परमात्मा का साक्षात् स्वरूप है।

शून्य को ही ब्रह्म कहा गया है--

#खं ब्रह्म खं पुराणं वायुर् खमिति ह स्माह कौरव्यायणीपुत्रो वेदो ये ब्राह्मण विदुर्वेदैरनेन यद्वेदितव्यम्।

यह ब्रह्म ही ऐसा है कि इसमें से पूरी प्रकृति पूरी सृष्टि विकसित होती है और इसी में समाहित हो जाती है फिर भी यह पूर्ण का पूर्ण बना रहता है इसके अतिरिक्त और कोई पूर्ण नहीं है।

संख्याओं में शून्य की संख्या ही पूर्ण संख्या है। बाकि संख्याएं घटती बढ़ती है और अंत में इसी में मिल जाती हैं। लेकिन शून्य अपरिवर्तनीय रहता है।

इसमें से कितना ही निकाले फिर भी यह अखंड बना रहता है। जैसे सोने का अंश भी सोना ही है

इसी तरह इसमें से निकलने वाला अंश भी पूर्ण ही है ।

जो इससे जुड़ेगा उसके योगक्षेम की सुरक्षा हो जाएगी।यथा--0+5=5

जो इससे हटेगा वह रसातल में चला जाएगा यथा 0-5= -5

इसके बिना जो अपना #अस्तित्व मानता है वह मूर्ख है। क्योंकि सबका आधार वही परमात्मा ही है।यथा 5÷0={ऐसा असंभव है}

इसका दूसरा रूप है प्रबल शत्रुतापूर्वक परमात्मा को सतत स्मरण रखना, इससे भी शिशुपाल की तरह परमात्मा की प्राप्ति होती है यथा-0÷5=0

इसको किसी भी संख्या से गुणा करें तो भी परिणाम शून्य ही हो जाता है । गुणा का अर्थ है इसमें स्वयं को समर्पित कर देना ।जो परमात्मा को समर्पित हो जाते हैं परमात्मा उनके प्रति समर्पित हो जाते हैं। उन्होंने स्वयं कहा है कि -

#ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

#जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ।

अतः परमात्मा से गुणात्मक सम्बंध ही सर्वश्रेष्ठ है ।इससे परमात्मा भक्त को स्वयं जैसा ही बना देते हैं #ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति।यथा 0×5=0

× इस चिन्ह में परस्पर समर्पण का दिव्य भाव समाहित है जिससे एक दूसरे की ओर झुकाव स्पष्ट दिख रहा है।

अतः स्पष्ट हो चुका है कि शून्य ही ब्रह्म है।

#असदेवाग्रमासीद यहीसृष्टिरचना से पहले था ।

और रचना के बाद भी यह पूर्ण ही है।अनन्त ब्रह्माण्ड की रचना करने पर भी यह पूर्ण ही है। शून्य में से कितना ही निकलो यह और वह सब पूर्ण ही रहते हैं।

#पूर्णमदः पूर्णमिदं

पूर्णाद् पूर्णमुदच्युते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावसशिष्यते।।

आज शून्य का विवेचन हुआ ।इस विषय पर क्रमशः अग्रिम संख्याओं पर भी विचार करेंगे।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २५.४.१९

।।#संख्याशास्त्रम्।।

।।१।।

#एक

#एकमेवाद्धितीयम् यहां दूसरा कोई है ही नहीं। यह सब कुछ जो दिखाई दे रहा है एकमात्र ब्रह्म ही है।#सर्वं_खल्विदं_ब्रह्म

भिन्न-भिन्न पदार्थ जो उद्घाटित हो रहे हैं वह परमात्मा की माया के कारण है।

वास्तव में देखा जाए तो एक वही सर्वत्र गोचर हो रहा है।

#नेह_नानास्ति_किंचन्।

यहां विविधता के अभाव को ही अद्वैत कहा गया है।

साधक को जब यह समझ में आता है कि यहां सब कुछ वही है, तभी वह इस प्रपंच से मुक्त हो पाता है।

इसलिए इस एक तत्व के ज्ञान को ही तत्त्वज्ञान कहा गया है और तत्व ज्ञानी व्यक्ति यहां केवल और केवल ईश्वर को ही देखता है ।

इस एकत्व के ज्ञान को ही मुक्तिप्रद माना गया है। इसमें रम जाने के बाद साधक ब्रह्म के समान स्वतंत्र सर्वनियंता हो जाता है।

फिर उसे कोई मोह, कोई शोक व्याप्त नहीं कर सकता --#तत्र_कोमोहः_कः_शोक_एकत्वमनुपश्यतः

एक से एक आकार होने वाला ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त होता है।

एषा ब्राह्मी स्थितिः

पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।।

यह ब्रह्मको प्राप्त हुए पुरुषकी स्थिति है, इसको प्राप्त होकर वह कभी मोहित नहीं होता और अंतकालमें भी इस ब्राह्मी स्थितिमें स्थित होकर वह ब्रह्मानन्दको प्राप्त हो जाता है ।

अनेक को जानने के चक्कर से बाहर निकल कर इस एक आत्मा तत्व हो ही जान लें।

उदाहरण के तौर पर समझें----

कितने नाम रटोगे?

इससे अच्छा है कि नाम का जो आधार एक #वर्णमाला है उसका ही ज्ञान प्राप्त करें, फिर अनेक नामों को रटने की आवश्यकता नहीं है। सब नामों के अधिकारी हो जाओगे।

ठीक इसी प्रकार उस एक को ही जाने ।

एक दिन आरुणी ने श्वेतकेतु से कहा- बेटा, किसी आश्रम में जाकर तुम ब्रह्मचर्य की साधना करो और वेदों का वहां पर गहरा अध्ययन करो। हमारे कुल की परंपरा यही रही है। कोई भी हमारे वंश में केवल 'ब्रह्मबंधु' होकर नहीं रहा। 'ब्रह्मबंधु' यानी ब्राह्मणों का केवल संबंधी, स्वयं वेदों को न जानने वाला।

कुमार श्वेतकेतु एक आचार्य के गुरुकुल में गया। 12 वर्ष तक वह वहां रहा। वेद-पारंगत होकर लौटा। अपनी वेद-विद्या का उसे बड़ा गर्व हो गया।

पिता आरुणी ने एक दिन उसे बुलाकर पूछा- बेटा, तेरे गुरु ने क्या वह रहस्य भी बताया कि जिस #एक के जानने मात्र से ही सब #अज्ञात ज्ञात हो जाता है।

#अविज्ञातं_ज्ञातं_भवति_अश्रुतं_श्रुतं_भवति।

श्वेतकेतू ने स्वयं को असमर्थ बताया।तब पिता ने समझाया कि

यह एकमात्र आत्मज्ञान ही है।

यहां केवल एक परमात्मा ही समस्त रूपों में विलसित हो रहा है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली २९.४.१९

।। #संख्याशास्त्र।।

।।2।।

।। दो ।।

समष्ट्यात्मक दृष्टि से होने पर भी व्यष्टि दृष्टि से द्वैत आते ही सृष्टि शुरू हो जाती है। आत्मा(जीवत्व) और परमात्मा यही दो हैं। सृष्टि सम्पादनार्थ परमात्मा ही द्वन्द्वात्मक रूपों से दो को अभिव्यक्त करते हैं।

सुख -दुःख,लाभ- हानि,जय- पराजय,धर्म-अधर्म,दिन-रात,शुक्ल-कृष्ण ,आसुरि -दैवी आदि आदि अनेक द्वैधीभाव से घिरा यह जगत विलसित हो रहा है।

हमें यदि द्वैत से ऊपर जाकर इस रहस्य को जानने की इच्छा है तो अंधकार से प्रकाश की ओर गति करनी होगी। अंधकार #आसुरि भाव को कहते हैं और प्रकाश #दैवी भाव को कहते हैं। आप देखें कि आप किस भाव में हो।

पहचान के लिए गीताकार का मत समझें---

#दैवी सम्पदा से युक्त आत्मा की पहचान----

अभयनिर्भयता, सत्त्वसंशुद्धि -- अन्तःकरणकी शुद्धि व्यवहारमें दूसरेके साथ ठगाई, कपट और झूठ आदि अवगुणोंको छोड़कर

शुद्ध भावसे आचरण करना।

ज्ञान और योगमें निरन्तर स्थिति -- शास्त्र और आचार्यसे आत्मादि पदार्थोंको जानना ज्ञान है और उन जाने हुए पदार्थोंका इन्द्रियादिके निग्रहसे (प्राप्त) एकाग्रताद्वारा अपने आत्मामें प्रत्यक्ष अनुभव कर लेना योग है। उन ज्ञान और योग दोनोंमें स्थिति अर्थात् स्थिर हो जाना -- तन्मय हो जाना। यही प्रधान सात्त्विकी -- दैवी संपद् है। और भी जिन अधिकारियोंकी जिस विषयमें जो सात्त्विकी प्रकृति हो सकती है वह कही जाती है -- दान -- अपनी शक्तिके अनुसार अन्नादि वस्तुओंका विभाग करना। दम -- बाह्य इन्द्रियोंका संयम। अन्तःकरणकी उपरामता तो शान्ति है।

यज्ञ -- अग्निहोत्रादि श्रौतयज्ञ और देवपूजनादि स्मार्तयज्ञ। स्वाध्याय -- अदृष्टलाभके लिये ऋक् आदि वेदोंका अध्ययन करना। तप -- शारीरिक आदि तप और आर्जव अर्थात् सदा सरलता सीधापन।

अहिंसा -- किसी भी प्राणीको कष्ट न देना? सत्यप्रियता , असत्यसे रहित यथार्थ वचन। अक्रोध -- दूसरोंके द्वारा गाली दी जाने या ताड़ना दी जानेपर उत्पन्न हुए क्रोधको शान्त कर लेना। त्याग -- संन्यास, शान्ति -- अन्तःकरणका संकल्परहित होना।

अपैशुन -- अपिशुनता किसी दूसरेके सामने पराये छिद्रोंको प्रकट करना पिशुनता (चुगली) है। उसका न होना अपिशुनता है। भूतोंपर दया -- दुखी प्राणियोंपर कृपा करना। अलोलुपता -- विषयोंके साथ संयोग होनेपर भी इन्द्रियोंमें विकार न होना। मार्दवकोमलता अर्थात् अक्रूरता। ह्री -- लज्जा और अचपलता -- बिना प्रयोजन वाणी, हाथ, पैर आदिकी व्यर्थ क्रियाओंका न करना।तेज प्रागल्भ्य (तेजस्विता), चमड़ीकी चमक नहीं। क्षमा -- गाली दी जाने या ताड़ना दी जानेपर भी अन्तःकरणमें विकार उत्पन्न न होना। उत्पन्न हुए विकारको शान्ति कर देना तो पहले अक्रोधके नामसे कह चुके हैं। क्षमा और अक्रोधका इतना ही भेद है। धृति शरीर और इन्द्रियादिमें थकावट उत्पन्न होनेपर, उस थकावटको हटानेवाली जो अन्तःकरणकी वृत्ति है। उसका नाम धृति है। जिसके द्वारा उत्साहित की हुई इन्द्रियाँ और शरीर कार्यमें नहीं थकते।

शौच दो प्रकारकी शुद्धि। अर्थात् मिट्टी और जल आदिसे बाहरकी शुद्धि।एवं कपट और रागादिकी कालिमाका अभाव होकर मनबुद्धिकी निर्मलतारूप भीतरकी शुद्धि।इस प्रकार दो तरह की शुद्धि। अद्रोह -- दूसरेका घात करनेकी इच्छाका अभाव, यानी हिंसा न करना। अतिमानिताका अभाव अत्यन्त मानका नाम अतिमान है। वह जिसमें हो वह अतिमानी है। उसका भाव अतिमानिता है। उसका जो अभाव है वह नातिमानिता है, अर्थात् अपनेमें अतिशय पूज्य भावनाका न होना, हे भारत अभय से लेकर यहाँतकके ये सब लक्षण, सम्पत्तियुक्त उत्पन्न हुए पुरुषमें होते हैं। कैसी सम्पत्तिसे युक्त पुरुषमें होते हैं जो दैवी सम्पत्तिको साथ लेकर उत्पन्न हुआ है। अर्थात् जो देवताओंकी विभूतिका योग्य पात्र है और भविष्यमें जिसका कल्याण होना निश्चित है। उस पुरुषके ये लक्षण होते हैं।

#अभयं सत्त्वसंशुद्धिः ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।

दानं दमश्च यज्ञश्च

स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।

तेजः क्षमा धृतिः

शौचमद्रोहो नातिमानिता।

भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत!

#आसुरि आत्मा के लक्षण----

दम्भ -- धर्मध्वजीपन, दर्प -- धनपरिवार आदिके निमित्तसे होनेवाला गर्व, अतिमान -- पहले कही हुई अपनेमें अतिशय पूज्य भावना तथा क्रोध और पारुष्य यानी कठोर वचन जैसे (आक्षेपसे) कानेको अच्छे नेत्रोंवाला, कुरूपको रूपवान् और हीन जातिवालेको उत्तम जातिवाला बतलाना इत्यादि। अज्ञान अर्थात् अविवेक -- कर्तव्य और अकर्तव्यादिके विषयमें उलटा निश्चय करना। हे पार्थ ये सब लक्षण, आसुरी सम्पत्तिको ग्रहण करके उत्पन्न हुए मनुष्यके हैं। अर्थात् जो असुरोंकी सम्पत्ति है उससे युक्त होकर उत्पन्न हुए मनुष्यके चिह्न हैं।

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।।

इन दोनों में दैवी गुण मोक्ष(सुख-दुखों से मुक्त) के लिए हैं।और आसुरी गुण बंधन के लिए हैं।

#दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।

अतः आप #दो को समझें और अपनी प्रकृति के अनुसार एक का आश्रय लें ।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली ०१.०५.१९

९९।।#लाग_लगने_का_भय।।

परसों किन्हीं से मिलने हस्पताल में गया तो लिफ्ट में साथ चलने वाले शिष्य ने बताया कि गुरूजी ऊपर एक पेसैंट आपसे कुछ पूछना चाहता है। उसे छुट्टी तो मिल चुकी है बस आपके इंतजार में बैठे हैं। मैं पेसैंट रूम में गया तो प्रतीक्षारत महिला तुरंत मेरे पास आ गई और अपनी समस्या (पति शराबी/अधूरा मकान/घर में रोगबाधा) बताई।

पूछने पर उन्होंने कहा कि हम पिछली पांच छह पीढ़ियों से जैन धर्म में हैं।

मैंने #प्रश्नकुंडली पर निगाह डालकर पूछा कि-- किसी भगवा संन्यासी कि पूजा आप करते हैं?

उसके पुत्र ने कहा कि हम केवल सफेद वस्त्र वाले जैन मुनियों को ही पूजते हैं।

मैंने कहा ध्यान से सोचें।

उसकी मां (लड़के से) बोल उठी -- हां! बेटा! हम प्रत्येक दीवाली को पानीपत जाकर बाबाजी के दो लड्डू चढ़ाते हैं।

मैंने कहा -- अबकी बार बाबाजी को सवा पांच मीटर गेरूआ वस्त्र चढ़ा कर अच्छे से पूजा करना।वस्त्र वहां बाबाजी को दे देना।

महिला तुरंत #बोली-- कपड़े की तो हमारे परिवार में #लाग नही है। कभी चढ़ाया नही।

मैंने कहा--तुम्हारे परिवार में बाबाजी की पूजा काफी पुराने समय से हो रही है।पहले पूर्वज गरीब थे ।तो दो लड्डू भी काफी थे। अब आप करोड़पति हैं।खुद शान से रहते हैं तो कपड़े से कैसी आनाकानी?

महिला #बोली- मेरा मतलब शास्त्री जी ,कि मेरे बेटे पोतों को यह कपड़ा चढ़ाने की नई #लाग लग तो नहीं जाएगी।

मैंने कहा नई #लाग तो तुमने कई लगा ली हैं।

महिला चौंककर बोली --क्या??

मैंने कहा--

१. AC की लागत

२. घर में शराब की लाग

३. सिनेमा/होटल की लाग आदि आदि।

और महिला को सचेत करते हुए बोला कि --कुलदेव/पितृदेव आदि की #लाग नई नहीं बल्कि पुरानी हैं और हमारे हित में हैं।

तुम्हें अभी १०००० का इंजेक्शन लगा है और भी कई समस्या हैं। यह सनातन परम्परा को भूलने के परिणाम है।उसी का ऋण हमें सुख शांति से दूर ले जाता है।

आप जैन/ बौद्ध/राधास्वामी/ आदि आदि कुछ भी हो जाओ।

मगर ध्यान रखना आपके पूर्वज हिन्दू थे। उनके रक्त/जीन के वाहक आप हैं। आपके धर्म बदलने से यह परम्परा नहीं बदलती। उस परम्परा को विशुद्ध रखें ।#संकरता से बचें।

बहकावे में न आएं।मौलिक सनातन परम्परा का सम्मान करें।

लौहे को पेंच/छुरी/सुई/चूर्ण किसी भी रूप में रखिए।

चुंबक का आकर्षण उसे प्रभावित कर ही देगा।

अतः अपने सनातनतत्त्व(चिरंतनमूल) को सनातन परम्परा से जोड़ें और आचरण में लाएं।

#देव ऋण,#ऋषि ऋण और   #पितृ ऋण से मुक्त हुए बिना सद्गति असंभव है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली ५.५.१९

१०० #समष्टि_पूजा

।।१।।

व्यष्टि(कण) से ही समष्टि(परमात्मा) की पूजा है। कोई यह समझे कि मैं व्यष्टि से घृणा करके परमात्मा को साध लूं गा तो समझिए यह उसका व्यर्थ परिश्रम होगा।

बताएं कि वृक्ष को स्पर्श किए बिना वन को कैसे स्पर्श कर सकोगे??

वृक्षों से गुजरे बिना वन का आस्वादन कैसे ले पाओगे??

पर घोर आश्चर्य है कि आज का व्यक्ति यही चाहता है कि वह वृक्ष से नफरत करे और वन की #कृपा हो जाए।

कितना विरोध है।

इस विरोध में डालने का कार्य किया है तथाकथित ढ़ोंगी #गुरुओं ने।

उन्हें न तो सिद्धांत मालूम है और न ही शास्त्रज्ञान।

उनके चक्र में फंसकर साधारण प्राणी पथभ्रष्ट हो रहे हैं।

भारतीय वैदिक संस्कृति तो पशु,वृक्ष,यक्ष,राक्षस,भूत,पर्वत,देव,पितृ, ऋषि,वेद, अधिक क्या कहूं #समस्त सृष्टि को तृप्त करके ही #सर्वभूतपरमात्मा की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। (#तर्पण प्रकरण देखें)

पर इस संस्कृति से हमें दूर किया है अज्ञानी #गुरूओं ने।

इसका दुष्परिणाम क्या हुआ देखें---

।।१।।

हिसार से परिचित का फोन आया शास्त्री जी, मेरा बारह वर्षीय लड़का कल किडनैप हो गया और आधे घंटे बाद उसे छोड़ दिया। बच्चे को एक बुजुर्ग घर तक छोड़ कर गया।

बच्चे ने बताया कि बाहर सड़क पर मेरे मुंह पर रूमाल रखकर मुझे किसी ने गाड़ी में डाल लिया। उसके जूते पुलिसमैन जैसे थे। फिर बाजार की तरफ जाकर उन्होंने मुझे बाहर फेंक दिया। मैं डर गया और रास्ता भटक गया। एक अंकलजी से पूछा वे मुझे घर छोड़कर गया।)

परिचित ने कहा शास्त्री जी, बताएं कि वे कौन थे? आदि आदि।

मैंने ज्यौतिषीय आधार पर बताया कि ऐसी कोई घटना भौतिकीय रूप से नहीं हुई, पर बच्चे के साथ यह सब अलौकिक स्तर पर घटित हुआ है।

वे नहीं माने, पुलिस रिपोर्ट हुई CCTV फुटेज से छानबीन हुई तो पता चला कि लड़का किडनैप नहीं हुआ, बाहर गली में ही भयभीत हो गया। अंकल की मदद से घर लौट आया।

तब मैंने बताया कि आपके घर में #कोई फोजी अपमृत्यु में गुजरा था यह उसकी ही करामात थी। उसकी शांति कराएं तभी सुरक्षा होगी।

।। २।।

एक साथी का फोन आया कि शास्त्री जी गजब हो गया। मैं दो घंटे रेलवे लाइन पर मरने के लिए बैठा रहा ,बाद में मुझे होश आया कि मैं यहां कैसे आ गया।???

थोड़ा होश आने पर मैं वापिस आ गया। ऐसा क्यों हुआ??

मैंने कहा -- तुम शुक्र मनाओ की बच्च गये। अन्यथा मारे जाते।

मित्रों ऐसी अनेक घटनाएं घटती हैं। मनुष्य अकारण दु:खी है। सही कारण उसे पता नहीं ।

इसका विस्तृत विवेचन अगली पोस्ट में....

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री २१.५.१९

समष्टि_पूजा।।

।।२।।

भारतीय संस्कृति सर्वप्राचीन है , सबके पूर्वज भारतीय थे। वैदिक भाषा सर्वप्राचीन होने से सर्वमान्य थी । यहां वर्णाश्रम धर्म को मानने वाले सब लोग पहले थे। बाद में व्यवसायिक कारणों से दूर दूर फैल गये , जिससे वर्णाश्रम धर्म शिथिल होता चला गया और वे लोग वैदिक मार्ग छोड़ कर म्लेच्छ हो गये। कालांतर में अन्य सम्प्रदायों का जन्म हुआ और वैदिक धर्म से दूर हुए लोग उसमें शामिल होते चले गए। यहीं से पतन शुरू हुआ जो आज तक चल रहा है।

#मनुजी ने कहा है कि--

#एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन्

पृथिव्यां सर्व मानवाः”

अर्थात् यह आर्यावर्त्त देश संसार में विद्वानों, ज्ञानियों, विचारकों, चिन्तकों का देश है।

यदि अपना #कल्याण चाहते हैं तो यहां विश्व भर के लोग आकर ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मणों से अपने-अपने अनुकुल चरित्र आदि की शिक्षा ग्रहण करें हैं।

वैदिक विद्वान ही अपनी पूजा से समष्टि को तृप्त करने की विधि आपको बताएगा। जिससे व्यक्ति समस्त बाधाओं से पार होकर अन्त में परम पद प्राप्त करेगा।

पर #आश्चर्य की बात है कि भारत से बाहर ही नहीं बल्कि अंदर भी विधर्मियों ने पांव पसार लिए हैं और यहां का आलसी व्यक्ति इनके चंगुल में फंसे जा रहा है।

#ब्रह्मकुमारी को समझें---

नाम ब्रह्माजी का ले लिया।

ब्रह्माजी तो यज्ञ, पूजा,दान,पितृ पूजन,तर्पण ,व्रत सब मानते हैं।

फिर क्यों विधवाओं की तरह सफ़ेद कपड़े डालकर वैदिक धर्म को #कलंकित कर रहे हैं वे लोग जो आंख मींचकर वहां नाक रगड़ रहे हैं???

#राधास्वामी राधा के स्वामी #श्रीकृष्ण हैं । भगवान श्री कृष्ण ने तो कुलदेव पितृदेव यज्ञ,व्रत सबका समर्थन किया है और यादवों से भी करवाया।

युद्धोपरांत मृतकों का पिंडदान किया।

कोई इनसे पूछे कि ये नये #राधा-स्वामी कौन हैं???

और पुराने #राधास्वामीश्रीकृष्ण से ज्यादा पावरफुल हैं क्या??

फिर क्यों दुकानदारी शुरू कर दी??

#निरंकारी भगवान का ही नाम है जिसका अर्थ है निराकार।

पर आज #निरंकारी आकार जल्दी जल्दी बदल रहा है।

कभी बुजुर्ग तो कभी युवा, कभी पुल्लिंग तो कभी #स्त्रीलिंग हो रहा है।

सब भाई-भतीजावाद के पोषक होकर मोटी रकम खैंच रहे हैं।

#शाशाराम भी #निराशाराम ही हो गये। चटनी/चूर्ण बेचकर बैंक बैलेंस बढ़ा रहे हैं। और रिश्तेदारों तक को सुख पहुंचा रहे हैं।

तो अब प्रश्न उठता है कि वैदिक धर्म का #स्वरूप क्या है??

वैदिक धर्म पंचतत्व सहित समस्त समष्टि का पोषक है।

वह सभी प्राणियों/लौकिक/अलौकिक/भौतिक/अभौतिक तत्वों का पोषक है।

कुलदेव/पितृदेव/तीर्थ/व्रत/यज्ञ/दान/और शिखा(चोटी) सूत्र(जनेऊ) तिलकादि से जो सुशोभित हो वह वैदिक धर्म है।

#शिखा_चोटी में तेजस्विता की देवी, तिलक में #विजय की देवी

#सूत्र_ जनेऊ में #रक्षाकवच रहता है । जिससे व्यक्ति समस्त समस्या/रोग/दोष से बचा रहता है। #वैदिकहिंदूधर्म पूरे ब्रह्मांड का पोषक है।

जो सच्चे जिज्ञासु हैं इसे धीरे धीरे समझेंगे।

डा० कृष्ण चन्द शास्त्री

दिल्ली

#समष्टि_पूजा

।।३।।

वैदिक परंपरा में हम इस शरीर को धारण कर रहे हैं तो यह समझे कि हम आधिभौतिक आधिदैविक और आध्यात्मिक स्तर पर ब्रह्मांड से जुड़े हुए हैं और ब्रह्मांड के प्रति हमारा दायित्व रहता है कि हम उससे जुड़े समस्त पदाधिकारियों को संतुष्ट रखें।

जैसे हम एक वाहन का चालन यदि कर रहे हैं तो हमें रोड टैक्स तथा सीमा शुल्क और सरकार के समस्त मानकों को पूरा करना पड़ता है ।

ठीक उसी प्रकार हम जब इस शरीर का वहन कर रहे हैं तो हमें #इष्टदेव #स्थानदेव #ग्रामदेव #कुलदेव #पितृदेव इन पांच स्तरों पर नित्य पूजा आवश्यक हो जाती है ।

इसके अलावा पृथ्वी जल तेज वायु और आकाश इन देवताओं की पूजा भी हम नियमित करें तभी हम इनके ऋण से उऋण हो सकते हैं।

यदि हम इनकी पूजा नहीं करते हैं तो हम इनके ऋण के नीचे दब जाते हैं ।

और विभिन्न प्रकार की भौतिक दैविक आध्यात्मिक समस्याओं से हम ग्रस्त हो सकते हैं ।

हर क्षेत्र में हर स्थान पर विभिन्न प्रकार के भूत प्रेत पिशाच योगिनी यक्ष राक्षस गंधर्व देवपुत्र आदि का पहरा रहता है ।

और हम उनकी अवहेलना करके उन्मत्त से यदि आगे बढ़ते हैं तो किसी भी घटना दुर्घटना के लिए हम स्वयं जिम्मेदार होते हैं।

अतःव्यक्ति यात्रा आदि पर जाए तो उसका यह दायित्व बनता है कि जहां से गुजरे जिस स्थान से गुजरे तो उनके #स्थानदेव #ग्रामदेव को मानसिक रूप से नमन अवश्य करें ।

देव स्थानों के आगे से गुजरे तो उनको नमन अवश्य करें तभी हमारी यात्रा और दैनिक कार्य सफल हो पाते हैं।

हम तेजस्वि बनें हो और आध्यात्मिक मार्ग पर हमारा मार्ग प्रशस्त हो इसलिए वैदिक ऋषियों ने इन समस्त देवताओं की पूजा नित्यकर्म में शामिल की है और आध्यात्मिक स्तर पर हमारी उन्नति जितनी होती जाती है उतने ही स्तर पर स्थान, ग्राम आदि देवता हमारे स्वागत के लिए तत्पर रहते हैं ।

तभी तो यह बात जगजाहिर है कि मानव शरीर में यदि तप की मात्रा बढ़ जाए तो स्थान, ग्राम देव ही नहीं बल्कि इंद्रादि देव की भी समकक्षता उसे प्राप्त हो जाती है।

पूज्य गुरुदेव पूज्य #शंकराचार्य जी बताते हैं कि सामान्य छोटे-मोटे देवताओं के सामने हमारा #दंड भी नहीं झुकता, अर्थात उन देवताओं के द्वारा ही शंकराचार्य आदि #प्रणम्य हैं।

क्योंकि शंकराचार्य आदि का स्थान साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या है छोटे देवताओं से कहीं ऊंचा माना गया है।

अत: किसी संप्रदाय के बहकावे में आकर के #इष्टदेव #स्थानदेव #ग्रामदेव #कुलदेव #पितृदेव इनकी पूजा का परित्याग न करें।

घर में नित्य #संध्यावंदन करें। दोनों समय दीपक जलाएं।

भगवान की आरती करें । गृहस्थी को एक समय स्नान, साधक को दो समय स्नान और सन्यासी को 3 समय स्नान अत्यावश्यक बताया है।

इष्ट देव का कम से कम सवा घंटा जप प्रतिदिन करें।

यही सनातन धर्म है।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली ३१.५.१९

।।#समष्टि_पूजा।।

।। ४।।

हम आस्तिक हो या नास्तिक इस चीज से कोई फर्क नहीं पड़ता हमें यदि ब्रह्मांड में रहना है तो ब्रह्मांड के नियमों का पालन करना अत्यावश्यक है जैसे यदि सड़क पर चलना है तो सड़क के नियमों का पालन करना अनिवार्य है ।

अन्यथा आप संकट में पड़ सकते हैं ।इन संकटों को टालने के लिए तथा जीवन को सुरक्षित करने के लिए समष्टि पूजा का विधान वैदिक साहित्य में दिया हुआ है।

मनुष्य सामान्य तौर पर सही दिखने पर भी निम्न बाधाओं से ग्रस्त हो सकता है---

#पिशाचबाधा

यह शमशान के वासी हैं तथा प्राणियों को पीड़ा दे सकते हैं--

#शमसानादिवासिन:

उल्कामुखा: पिशाचा:।

#हिंसिका:(अपस्मारिका) इनको आधुनिक भाषा में में मिर्गी कहा गया है। अचानक गिर जाना, मुंह से झाग निकलना हिंसिका ग्रस्त लोगों के लक्षण हैं।---

#हिंसिका: आकस्मिकपतनै:

संज्ञफेनमोकादिकृदपस्मार:।

#ब्रह्मराक्षस -

यह राक्षसों की एक प्रजाति है-

#ब्रह्मराक्षसा:

राक्षसप्रजातिविशेषा:।

#ग्रह -मंगलादि ग्रह।

#भौमादिविशेषा

#डाकिनी-- इन्हें डामरी भी कहते हैं-यह जीवों के माध्यम से अनेक वस्तुओं का उपयोग करती हैं--

#स्वादयन्ति_न_तु_घ्नन्ति

छिद्रान्वेषणतत्परा:।।

#रूद्रडाकिनी -

ये पर रहस्य को जानती हैं और रुप बदलने में भी माहिर होती हैं---

#परचित्तगतं_ज्ञानं

रूपस्य परिवर्तनम्।

करोत्यमृतलुब्धा तु

ज्ञेया सा रूद्रडाकिनी।।

#भूत-

इनसे सब परिचित हैं। निर्जन स्थान, खाली मकान ,कुंआ, चौराहे आदि पर इनका स्थान है--

#शून्यकूपैकवृक्षचत्वरादिस्थानस्था: भूता:।

#यक्ष-

बलशाली दिव्यवर्ग है--

यक्षा:#बलिन: सत्वविशेषा:।

#शाकिनी-

ये पशुओं को नुक्सान पहुंचाने वाली हैं--

#पशुशोणिताद्याकर्षिणीशाकिनी।

इत्यादि अनेकानेक पीड़ादायक भूतसमुदाय प्राणियों को प्रताड़ित करता है।

#घर में झगड़ा,#आत्महत्याएं,#अपमृत्यु,#कार्यबाधा,#पुत्र/संतानहीनता

#नुक्सान #घर में खून के छींटे, #पत्थर बरसना,#कपड़े कटे हुए मिलना।

आदि-आदि अनेक बाधाओं से व्यक्ति पीड़ित रहते हैं।पर इसका पता सबको नहीं चलता और नास्तिक घोर समस्या में घिरता जाता है।

इनका वैदिक धर्म में ही पूर्णतया समाधान है।अन्य दावेदार इनका अस्थाई ईलाज कर सकते हैं जो बाद में अत्युग्र होकर परिवार को ध्वस्त कर देता है।(शेष आगे...)

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

०६.६.१९

१०१ गंगा

हिन्दुओं द्वारा बहुत पवित्र मानी जाती है। कतिपय प्रमुख पुराणों में हरिद्वार, प्रयाग तथा गंगासागर में गंगा की सर्वाधिक महिमा बतायी गयी है:-

सर्वत्र सुलभा गंगा

त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा।

गंगाद्वारे प्रयागे च

गंगासागरसंगमे।

तत्र स्नात्वा दिवं यान्ति

ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः।।

हरिद्वार ऋषिकेश यात्रा में आनन्ददायक समय व्यतीत हुआ।

महाभारत में गंगाद्वार (हरिद्वार) को निःसन्दिग्ध रूप से स्वर्गद्वार के समान बताया गया है:-

स्वर्गद्वारेण यत् तुल्यं

गंगाद्वारं न संशयः।

तत्राभिषेकं कुर्वीत

कोटितीर्थे समाहितः।।

हर की पौड़ी पर #ब्रह्मकुंड में स्नान करके पुण्यलाभ मिला। ऐसी मान्यता है कि यहां प्रतिदिन देवता भी वेश बदलकर स्नान के लिए आते हैं।

हरिद्वारे यदा याता

विष्णुपादोदकी तदा।

तदेव तीर्थं प्रवरं

देवानामपि दुर्लभम्।।

सातधाराओं में बंटी हुई मां गंगा में सप्तर्षि आश्रम घाट पर स्नान,तप करके भी मन प्रसन्न हुआ।

अगले दिन सुबह माता मनसा देवी का दर्शन किया।

हर की पैड़ी से प्रायः पश्चिम की ओर शिवालिक श्रेणी के एक पर्वत-शिखर पर मनसा देवी का मन्दिर स्थित है। मनसा देवी का शाब्दिक अर्थ है वह देवी जो मन की इच्छा (मनसा) पूर्ण करती हैं। मुख्य मन्दिर में दो प्रतिमाएँ हैं, पहली तीन मुखों व पाँच भुजाओं के साथ जबकि दूसरी आठ भुजाओं के साथ।

तीसरे दिन स्वामी रामसुखदास जी की तपस्थली ऋषिकेश में स्नानादि करके पूज्य त्र्यम्बकेश्वर चैतन्य जी महाराज का दर्शनलाभ व सत्संग से ज्ञानार्जन हुआ।वे ज्येष्ठ मास में प्रवचन हेतू यहां आते हैं।

कनखल में स्नान करके दक्षमंदिर , यज्ञशाला का दर्शन किया। फिर मित्र #अतुल शर्मा व कुमार गौरव पोखरिया जी के साथ हरिद्वार से बारह किलोमीटर दूर मां सुरेश्वरी देवी के पुराणोक्त शक्तिपीठ के दर्शन किए। बिल्केश्वर महादेव मंदिर दर्शन तथा मां पार्वती जी ने शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए जहां पूजा की थी ,उस कूप के दर्शन भी किए।

अत्यंत प्राचीन काल से हरिद्वार में पाँच तीर्थों की विशेष महिमा बतायी गयी है:-

गंगाद्वारे कुशावर्ते

बिल्वके नीलपर्वते।

तथा कनखले स्नात्वा

धूतपाप्मा दिवं व्रजेत।।

अर्थात् गंगाद्वार, कुशावर्त, बिल्वक तीर्थ, नील पर्वत तथा कनखल में स्नान करके पापरहित हुआ मनुष्य स्वर्गलोक को जाता है।

फिर माया देवी मन्दिर वह आनन्द भैरव जी के दर्शन किए।

माया देवी (हरिद्वार की अधिष्ठात्री देवी) प्राचीन मन्दिर एक सिद्धपीठ माना जाता है। इसे देवी सती की नाभि और हृदय के गिरने का स्थान कहा जाता है। यह उन कुछ प्राचीन मंदिरों में से एक है जो अब भी नारायणी शिला व भैरव मन्दिर के साथ खड़े हैं।

शांति कुंज का सादा जीवन तथा अपने साथ बीस करोड़ हिंदु परिवार को जोड़कर उन्हें सात्त्विक बनाने का सामाजिक कार्य भी सराहनीय है। वहां विशाल साहित्य सम्पदा अनौखी है ,यदि आप हरिद्वार जाएं तो इसे अवश्य देखें।और शान्ति कुंज में कैंटीन में गंगाजल से बने पकवान जो शुद्ध और बाजार की अपेक्षा बहुत सस्ते हैं उनका सेवन भी अवश्य करें।

कुलमिलाकर यात्रा आनन्द पूर्ण रही।

डा०कृष्ण चंद्र शास्त्री दिल्ली २३.५.१९

१०२

#समसामयिक_तंत्र_प्रयोग।।

मंत्र तंत्र के जानकार को यह अहं रहता है कि मैं #विद्या के बल पर कुछ भी कर सकता हूं।यही सूक्ष्म अहंकार साधक को भी रहता है।

पर वो यह भूल जाते हैं कि जिस व्यक्ति पर वे प्रयोग कर रहे हैं वह व्यक्ति किस श्रेणी में आता है।

यदि सामने वाला #सात्त्विक प्रकृति का आचारवान् है तो कोई तंत्र उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा।

क्योंकि एक सार्वभौमिक सत्य आपको ज्ञात होना चाहिए, नहीं पता है तो आज इस #तथ्य को पकड़ लें। यह बड़ा ही कीमिया #सूत्र है---

१०३.#जपमंत्र_से_जीवनमंत्र_प्रबल_है।

इसी को वेदों में #आचार: परमो धर्म: कहकर उद्घोषित किया है।

अर्थात् उच्च आचरण के सामने समस्त साधनाओं का फल #बौना है।

आचारवान् व्यक्ति अध्यात्म की सबसे बड़ी पूंजी तथा ईश्वर का सबसे बड़ा भक्त है।

आचारहीन को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।वेद अर्थात् #समस्त_मंत्र_तंत्र ।

यदि कहीं आचारहीन साधक के द्वारा प्रयुक्त विद्या सफल होती दिखाई दे तो भ्रमित नहीं होना , क्योंकि वह विद्या उसको और अधिक गिराने के लिए लिए ही तत्काल में प्रभावी दिख रही है जो बाद में स्पष्ट हो जाएगी।

ऐसा ही कुछ इस #इलैक्शन में हुआ है। कम्प्यूटरिकृत #बाबाओं ने साध्वी को हराने के लिए अपनी प्रतिष्ठा दांव पर लगा दी।

#मिर्ची से #हवन #मारणमुद्राओं का प्रयोग किया गया।पर परिणाम आपके सामने है??

जिन #प्रयोगों को किया गया वे घातक थे पर #अप्रभावी हो गये।

अब कायदे से तो डूब मरना चाहिए उनको जिन्होंने जल समाधि लेने की बात कही थी।

तंत्र/मंत्र वहां काम नहीं करते यदि---++

१. सामने वाला सात्त्विक भक्त हो।

२. वह ईमानदार सामाजिक व्यक्तित्व हो।

३. सामने वाला उच्च कोटि का साधक होता।

इतिहास में भगवान #श्रीकृष्ण पर मारण प्रयोग किया गया पर करने वाले के ही प्राण पंखेरू उड़ गए।

#भक्त राजा #अम्बरीष पर दुर्वासा जी ने कृत्या( ) छोड़ी ,पर दुर्वासा जी को ही प्राणरक्षा के लिए भटकना पड़ा।

#जड़भरत की बलि देने लगे तो देवी ने तांत्रिकों का ही सफाया कर दिया।

अतः तंत्र/साधक कदापि यह मत समझें कि मैं ही सर्वेसर्वा हो गया हूं। प्रकृति सबसे अपना प्रयोजन सिद्ध करती है।पर #सत्यपक्ष को वह अनदेखा नहीं कर सकती।

जिनके उद्देश्य मानवता हित में हो उनको कोई हरा नहीं सकता।

और ध्यान दें सच्चा साधक किसी के अहित का प्रयास ही नहीं करता। हां वह सत्पुरूष को आशीर्वाद अवश्य दे सकता है।

मोदी/योगी/प्रज्ञा का व्यक्तिगत जीवन देखें। ये महात्मा ब्रह्मचर्य में रची पची आत्माएं हैं। #ब्रह्मचर्य अखंड हो तो सर्वोत्तम है। यदि खंडों में भी रहे तो भी शुभ परिणाम तो मिलता ही है।

#भिगविध्यसींग जैसों को तो दो दिन ब्रह्मचारी रख दें तो वासना के कीड़े कुलबुलाने लगते हैं।

कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

दिल्ली २४.५.१९

१०४।।।।।#साधकों_के_प्रति।।।।।

साधक की दिनचर्या नियमित और सधी हुई होती है। वे व्यवसायिक कार्यों के अतिरिक्त और व्यवसायिक कार्यो में भी परमात्मा में ही डूबे रहते हैं।

इस भाव से कार्य करने पर काम ही पूजा बन जाता है। इसलिए हम उठते ,बैठते ,सोते ,जागते अपने परमात्मा को भजते रहें और अपने कार्य भी संपन्न करते रहे। इससे परमात्मा में अनन्य भक्ति उत्पन्न होगी और कार्य में एकनिष्ठता भी आएगी।

जो ब्राह्मण लोग दूसरों के लिए पूजा #पाठ करवाते हैं उनके लिए तो यह है एक अनोखा अद्वितीय मार्ग है।

#मान लें हम किसी के निमित्त गायत्री जप करते हैं तो छह-सात घंटे हम दूसरों के लिए जपते हैं। जिसकी दक्षिणा हमें प्राप्त होती है और इससे हमारी आजीविका भी चलती है।

इसके साथ हम एक प्रयोग यह भी कर सकते हैं कि जब हम घर पर खाली रहते हैं तो भी हम यह दिनचर्या बनाएं कि हम उस सात 8 घंटे जप के क्रम को न टूटने दें।

पहले हम दूसरे के लिए जपते थे और खाली समय में हम अपने इष्ट को प्रसन्न करने के लिए जप कर सकते हैं ।

#इससे भगवद् कृपा हमें बहुत शीघ्र प्राप्त हो जाएगी। और यह हमारी दिनचर्या का हिस्सा भी बन जाएगा।

#लगभग 40 साल पहले जींद के पास का एक ब्राह्मण भागवत पुराण के मूल पाठ में एकनिष्ठ और अनन्यता रखता था। उनका यह नियम था कि वह प्रातः 3:00 बजे उठ जाते हैं और स्नान आदि करके नित्य प्रति 12:00 बजे तक श्रीमद्भागवत पुराण का मूल पाठ भगवत भक्ति के लिए करते।

यदि वे पुरोहित के रूप में किसी के भागवत यज्ञ में शामिल होते तो उनके भागवत पाठ का अन्य ही अद्वितीय फल मिलता था। जब भी भागवत पुराण के मूल पाठ के लिए आसन पर बैठते तो आसन के साथ बांस का एक डंडा बांधने की प्रक्रिया है।

इस डंडे में प्रेत का निवास माना गया है और प्रेत का आवाहन या बैठकर पुराण सुनने का यह स्थान होता है। कहते हैं कि जब शास्त्री जी मूल पाठ करते तो बांस प्रेत के बोझ से लहराने लगता। और बांस से चूं चूं की ध्वनि निकलती।

जिसको पास के लोग भी बैठकर सुन सकते थे और उन्हें भी यह आभास हो जाता की बांस पर कोई वजनदार वस्तु आकर बैठ गई है।

पुराण का मूल पाठ पूरा होते-होते प्रेत मुक्त होकर के विष्णु लोक को चला जाता था।

इस प्रकार शास्त्री जी की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई।

कहते हैं शास्त्री जी प्रतिदिन भागवत का मूल पाठ अपने लिए भी करते थे और एक बार जब वह मार्ग में जा रहे थे तो शाम का समय हो गया।वह मार्ग में एक पीपल के पेड़ के नीचे संध्या वंदन के लिए आसन बिछाकर बैठ गए।

तभी उस पेड़ पर रहने वाले एक प्रेत ने शास्त्रीजी पर आक्रमण किया।

शास्त्री जी भक्त आदमी थे ।प्रेत के आक्रमण का उन पर कोई असर नहीं हुआ।

पर शास्त्री जी समझ गए कि प्रेत दुखी है। इसको इस कष्ट से मुक्ति दिलानी चाहिए।

शास्त्री जी ने वहीं अपना भागवत पुराण ग्रंथ खोला और उस प्रेत के निमित्त ही मूल पाठ करने बैठ गए और कहते हैं कि 2 दिन तक वे उसी पेड़ के नीचे प्रेत की मुक्ति के निमित्त मूल पाठ करते रहे। तीसरे दिन प्रेत अपने प्रेत योनि से मुक्त हुआ और शास्त्री जी को प्रणाम कर उनसे अपने किए की क्षमा मांगी और उनका बहुत-बहुत धन्यवाद किया।

#अत: जो यजमान वेदपाठी ब्राह्मण हैं और दूसरे के निमित्त अनुष्ठान आदि करते हैं तो वे नियमित रूप से अपने इष्ट देव का जपादि करें और खाली समय में भी कई घंटे अपने लिए अनन्य भक्ति भाव धारण करें तो उनके जप तप में भी दिव्यता उत्पन्न हो सकती है।

डा० कृष्ण चन्द शास्त्री नारनौंद १०.६.१९

१०५ यद्_पिंडे_तद्_ब्रह्माण्डे

साधक के शरीर में जो घटित होता है वह ब्रह्मांड में भी घटित हो जाता है। यत्पिंडे ...... की सूक्ति साधक में ही घटित होती है। मनुजी कहते हैं --महायज्ञैश्च #यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनु:।

अर्थात् यज्ञ महायज्ञों से पिंड(शरीर) को ब्रह्ममय बनाना ही हमारा चरम लक्ष्य है।

आन्तरिक साधना(जप,ध्यान,न्यास,नादानुसंधान, प्राणायामादि) से शरीर को विशुद्ध करना है । इससे कुंडलिनी शक्ति धीरे-धीरे उत्तरोत्तर विकसित होकर प्रवाहित होने लगती है। मनुष्य शरीर में वह प्रवाहित तो है ,पर स्वल्प सूक्ष्म रेशे के समान है।इसे विकसित करना है तो साधना करनी पड़ेगी।

श्वास/धड़कन/अचानक आंख पर प्रहार होने से पहले ही पलक गिरना आदि आदि कुंडलिनी के ही कार्य हैं।

पर तीव्रता के लिए सतत साधना आवश्यक है। इसमें जल्दबाजी करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। यह मार्ग को चलकर पार करने के समान अनन्त ब्रह्माण्ड यात्रा है। अतः इसमें सतत लगे रहें तथा गलतियां न दोहराएं।अन्यथा सांप सीढ़ी की तरह गिर जाएंगे।

जब चक्र जागृत होने लगते हैं तो साधक ऊपर के लोकों तक जाने की योग्यता अर्जित कर लेता है। सहस्रार तक कुंडलिनी को ले जाने का मतलब है अद्वैत वैकुंठ को पाना।

#सत्वं_लघु: प्रकाशकम्---

सत्वगुण हल्का और प्रकाशित होता है। सात्त्विक बनेंगे तो कुंडलिनी हल्की होकर ऊपर बढ़ेंगी और आत्मा की अभिव्यक्ति उर्ध्व लोकों में योग्यता के अनुसार होगी। यह #पिंड(शरीर) और #ब्रह्मांड में साथ साथ घटित होगा।

यहां के साधक ऊपर के लोकों में मिलते हैं तो पहचान जाते हैं कि अमुक अमुक धरती पर कहां रहता है ।

वे यहां भी कुंडलिनी की योग्यता से परस्पर उर्ध्व लोकों की योग्यता पहचान जाते हैं।

#श्री_आनन्दमयी_मां यहीं बैठे बैठे सब लोकों में मौजूद रहती थी। क्योंकि वे शरीर के ब्रह्मांड पर विजय पा चुकी थी।।कुछ चुनिंदा साधक जब उनके चरण स्पर्श करते थे तो हाथ उनके चरणों पर न लगकर जमीन पर लगता था। उनका शरीर दिव्य हो चुका था।

#समस्त योगियों की यही प्रक्रिया है। अतः पिंडशोधन करें।

इस मार्ग पर साधारण से साधारण गुरु व साधारण से साधारण लगने वाला मंत्र भी तुम्हे सही गति देगा। उच्च दिक्षाएं तो खुद में शिष्यत्व आने पर पराशक्ति स्वयं ही देंगी।

क्योंकि फल पकने पर तोता उसे खुद ब खुद ढूंढ लेता है। अतः अपने फल को पकाओ।

और उर्ध्व गति चाहिए तो प्रथम सात्त्विक बनें--

#उर्ध्वं_गच्छन्ति_सत्त्वस्था:।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २०.६.१९

१०६#लाभ_हानि_जीवन_मरण_जस_अपजस_प्रभु_हाथ

परसों राजस्थान में एक रामकथा में आंधी से पंडाल गिरा । जिसमें लगभग १५ भक्तों की मौत हो गई तथा कई लोग घायल हो गए।

इस प्राकृतिक आपदा पर कुछ लोग कथाकार पर ,कुछ भगवान पर दोषारोपण कर रहे हैं।

यह सरासर अनुचित है।

विज्ञजन अपनी संवेदनशीलता बचा कर रखें।तथा #नास्तिक लोग भारतीय हिंदू धर्म पर कोई टिप्पणी न करें। क्योंकि उन्हें हमारे धर्म पर टिप्पणी का कोई अधिकार नहीं है।

अब #घटना को समझिए--

प्रारब्धवश जन्म/मृत्यु का समय निश्चित रहता है।और प्रारब्ध को तो परमात्मा भी नहीं टाल सकते।

तीन प्रकार के कर्म जीवों के हैं-

१.#क्रियमाण(जो हम कर रहे हैं,इनका फल अगले जन्मों के मिलेगा)

२.#संचित(जो हमने गत जन्मों में एकत्रित किए हैं, और फल आगे भोगना होगा)

३ .#प्रारब्ध (जो फल देना शुरू कर चुके हैं, जिनको भोगने के लिए यह जन्म मिला है)

इनमें से #क्रियमाण कर्म हमारे हाथ में हैं ।हम अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छा ही परिणाम होगा।इनका फल हम भक्तिपूर्वक परमात्मा को समर्पित करके भी हम इनसे मुक्त हो सकते हैं।

और #संचितकर्म चाहे अच्छे/बुरे कैसे भी हों इनसे हम भक्तिपूर्वक मुक्त हो सकते हैं।

लेकिन भगवान कहते हैं कि संचित और क्रियमाण को तो मैं माफ़ भी कर दूंगा लेकिन प्रारब्धकर्म को मैं भी नहीं रोक सकता । यदि मैं इसमें भी रोक-टोक करूंगा तो मेरी सृष्टि के मेरे ही बनाए हुए नियमों को बिगाड़ने वाला मैं स्वयं ही कहलाऊंगा।यह अनुचित हो जाएगा।

हमारे मन में प्रश्न उठता है कि भगवान सर्वसमर्थ हैं। फिर क्यों नहीं ऐसे प्रारब्ध को टाल देते??

इसका उत्तर भगवती #पराम्बा ने समझाया कि जैसे बीज को मिट्टी में डाल देने पर अंकुर फूट जाने पर उसे बीच में ही उखाड़ देना , सृष्टि के नियम के खिलाफ है।उसे ऊगने देना ही सही है ,इसी प्रकार #प्रारब्धवश जन्म हो जाने पर उस जन्म की भोगपूर्वक परिणति ही नियमानुसार उचित है।

मेरी भक्ति के प्रभाव से प्रारब्धवश #अपमृत्यु भी होगी तो भी कल्याण ही होगा।

#ऐतिहासिक_तथ्य---

१.महाभारत में भगवान श्री कृष्ण के भानजे सहित अनेक वीर भगवान की उपस्थिति में मारे गए।

२. स्वयं भगवान का परिवार/यदुकुल भगवान के सामने बेमौत मारा गया।

३. दशरथजी #सर्वज्ञ_भगवान के रहते तड़प तड़प कर मर गए।

४. अनेकों भक्त यात्री अमरनाथ/वैष्णोदेवी की यात्रा में मारे जाते हैं।

५. चर्च/गुरुद्वारा/हजयात्रा/शैतान को पत्थर मारने में अनेकों भक्त यात्री मारे जाते हैं।

इसका कारण मात्र #प्रारब्ध ही है।

लेकिन एक बात न भूलें

#न_मे_भक्त: प्रणश्यति।

#भगवान कहते हैं कि मेरा भक्त कभी नष्ट नहीं होता।उसको पार करने वाला मैं स्वयं हूं । मैं उसके प्रारब्ध की परिणति भी उचित प्रकार से करवा दूंगा।

(#ध्यान दें #दुर्घटना और #धर्मयात्रा की मृत्यु में जमीन आसमान का अन्तर है।)

अत: तत्त्व को समझें ।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली २५.६.१९

१०७उमा_दारुयोषित_की_नांई।

#सबहू_नचावत_राम_गोसाईं।।

महाभारत युद्ध में मुख्यत: तीन ब्राह्मण योद्धा थे जो राज से बंधे होने के कारण क्षत्रियत्व प्रधान युद्ध में शामिल हो गए।

लेकिन ईशकृपा से तीनों की परिणति ब्राह्मणानुरूप ही हुई है।

इनमें से पहले थे #द्रोण ।

यह भारद्वाज ऋषि का स्वरूप थे।

युद्ध मध्य में ब्रह्मा जी ने कहा कि ऋषिवर! आपकी आयु का प्रारब्धवश भोग पूर्ण हो गया है।आप क्षत्रियत्व त्यागकर ब्राह्मणोचित विधि से शरीरत्याग करें।

द्रोणजी ने विधि-विधान को समझा और अस्त्र त्याग कर समाधि से योग द्वारा प्राणत्याग किया।

प्राणत्याग के उपरान्त भारद्वाज ऋषि के रूप में द्रोण को जाते हुए श्रीकृष्ण,भीष्म,संजयादि ने देखा।

धृष्टद्युम्न ने तो उनके मृत शरीर का ही छेदन किया था।

दूसरे कृपाचार्य और तीसरे अश्वत्थामा आज तक चिरंजीवी हैं।

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री   दिल्ली।

शेष लेख अगले भाग में........

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री ज्यौतिष,दर्शन,तंत्र के मौलिक तत्त्वों पर कई वर्षों से कार्य कर रहे हैं।इनकी वैदिकधर्म पर सात रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। सात्त्विक तंत्र के मौलिक प्रयोगों और रहस्यों पर आपके अनेक ग्रंथों का प्रकाशन अभी होना है। जिज्ञासु साधक इनसे ज्यौतिष, कर्मकाण्ड , तंत्र दर्शनादि गूढ़ विषयों पर परामर्श ले सकते हैं।

प्रतिक्रिया के लिए krishansanskrit@gmail.com पर लिखें।